

جمله حقوق تجق ناشر محفوظ میں

نام كتاب: حضرت عمر فاروق بالنين كے فيصلے مصنف: مسعود قادرتی مسعود قادرتی پبلشرز: اكبر نكب سيلرز تعداد: 600 قيمت: -300/

المن المنافعة المنافع

رُمِيْ يَعْرِ بِهِ الروازة (آبور 17352022 مِنْ مِنْ الروازة (آبور 17352022 Mob: 0300-4477371



انتساب:

ا بنی والدہ کے نام جن کی دعاؤں،توجہاورعمدہ تربیت کی بناء پر آج میں اس مقام تک پہنچا

جس کی زبان پر خدا نے حق کو جاری کیا جس کے عدل کا معیار ہے ارفع و اعلیٰ جس کے عدل کا معیار ہے ارفع و اعلیٰ جسے دکھ کر شیطان بھی راہ بدل لے اس عمر فاروق برائنٹیڈ کی اعلیٰ قیادت پہ لاکھوں سلام



فهرست

| صفحةبمر | عنوانات |
|---------|--|
| 23 | حرف ابتداء |
| | يبها باب:حضرت عمرِ فاروق طِلْعَنْ كے ابتدائی حالات |
| 27 | ولادت باسعادت |
| 28 | نام ونسب |
| 30 | قبولِ اسلام ہے جالات |
| 30 | علمی قابلیت: |
| 31 | ماضی کو یا د کر کے آنسو بہانا: |
| 33 | اسلام قبول کرنے کا فیصلہ |
| 33 | حضور نبی کریم منت کیا کی وعا: |
| 34 | اسلام قبول کرنے کاحتمی فیصلہ: |
| 38 | ابوجهل كوقبول إسلام كى اطلاع دينے كا فيصله: ٠ |
| 39 | قبول اسلام كا خانه كعبه مين اعلان فرمانا: |

| | 6 | الرونسية عمينية وأروق كياييل |
|-----|----|--|
| 40 | | اعلانية بليغ كافيصله |
| 41 | | مشرکین کے مظالم پر استقامت کا فیصلہ: |
| | | دوسراباب: ہجرت اور مدنی زندگی کے وہم فیصلے |
| 45 | 5 | بجرت مدينه كافيصله |
| 48 | 3 | اعلانيه ججرت: |
| 50 | 0 | مسجد نبوی ﷺ کی تعمیر میں شمولیت: |
| 52 | 2 | اذان کی تجویز دینا |
| 5 | 4 | غزوات میں شمولیت |
| 5 | 4 | غزوهٔ بدر میں شمولیت: |
| 5 | 57 | مشركين كے متعلق آپ بيالين كا فيصله: |
| . 5 | 59 | غزوهٔ احد میں شمولیت: |
| (| 53 | غزوهٔ بدرالموعود میں شمولیت: |
| (| 64 | غزوهٔ بنی مصطلق میں شمولیت: |
| | 65 | عبدالله بن ابی سلول منافق کے متعلق فیصلہ: |
| | 66 | غزوهٔ خندق میں شمولیت: |
| | 68 | معامده حدیبیه میں شمولیت: |
| | 72 | غزوهٔ خيبر ميں شموليت: |
| | 72 | زمین وقف کرنے کا فیصلہ: |

| 7 | المناسخ الموق كرفيها |
|-----|---|
| 73 | بی ہوازن کی سرکونی کے لئے سالارمقرر کیا جاتا: |
| 73 | ابوسفیان (الله الله الله عند الله الله الله الله الله الله الله الل |
| 75 | تاریخ اسلام کے سنہری دور کا آغاز: |
| 78 | حنین میں رسول اللہ ﷺ کا ساتھ نہ جھوڑنے کا فیصلہ: |
| 80 | • غزوهٔ طائف میں شمولیت: |
| 82 | غزوۂ تبوک کے موقع پر نصف مال پیش کرنے کا فیصلہ: |
| 84 | مدنی زندگی کے اہم واقعات |
| 84 | صاحبزادی کی شادی رسول الله مضایقتان کے کا فیصلہ: |
| 86 | تم کسی دھوکہ میں مبتلا نہ ہونا: |
| 88 | بیٹی کو مارنے کا ارادہ کیا : |
| 89 | بنت ابو بمر دلالفنز کی ما نند نه کرو: |
| 89 | واقعه ايلاء: |
| 91 | عبدالله بن ابي منافق كم متعلق آب طالفين كا فيصله: |
| 92 | ججة الوداع ميں شموليت: |
| 93 | منافق کا سرقلم کرنے کا فیصلہ: |
| 94 | حضور نی کریم منظم کا ظاہری وصال |
| 101 | حضرت عمر فاروق طالفنظ نے تلوارمیان سے باہر نکال لی: |

| 8 | |
|-----|---|
| | تيسرا باب: خلافت صديق أسر باللبند اورغمر فاروق بالهنيز |
| 107 | حضرت البوبكر شعد الق البالليمة على بيعت كالفيصليه |
| 109 | تاریخ میں آپ بڑٹو کے فیصلہ کی اہمیت: |
| 111 | حضرت ابوبكرصديق بالبين كا وظيفه مترركرواك كا فيعله: , |
| 112 | دورصد لقی نبالنتنه میں اہم امور پرمشورہ دینا |
| 112 | حضرت اسامه بالتنز كواميراشكرمقررنه كرنے كامشورودينا: |
| 117 | اس نازک موقع پر جمیں جنگ نہیں کرنی جائے: |
| 119 | بدوین قرآن کامشوره دینا: |
| 121 | دورصد التى بالنيز مين الجم عبدول پرتعينات ربنا |
| 122 | امت کی نجات کا ذریعہ: |
| 124 | آن بياوگ ہم ہے زيادہ فضيلت لے گئے: |
| | چوتھا باب: حضرت عمر فاروق بن ^{ائی} ؤ کامنصب خلافت پر فائز ہوتا |
| 127 | حضرت ابو بكرصديق بناتيئ كاخليفه مقرركرنا |
| 128 | حضرت حسن بصری خاند کی روایت . |
| 130 | حضرت عبدالرحمان بن عوف بنائنين كي روايت: |
| 131 | اختراض کا جواب: |
| 132 | حضرت عمر فاروق بالنتي كوامور خلافت ہے متعلق چند تھيئيں: |
| 133 | منرت عثان غنى بنالنيز كو پروانه خلافت لكھنے كا حكم دينا: |

| 9 | |
|-------|--|
| 138 | فيصلح برتشكر كااظبار: |
| 139 | حضرت ابو بكر سديق بنائهم كاوصال: |
| 143 | خلیفہ بننے کے بعد خطبہ ارشاد فرمانا |
| 145 | اميرالمونين كالقب اختياركرنا |
| 148 | دورخلافت کے اہم فنیلے |
| 149 | عراق کی مہم کے متعلق اہم فیصلے: |
| 152 | حضرت جرمرين عبدالتدبجل عليتن كوعراق تبضيخ كافيصله: |
| 153 | قادسیہ کے مقام برخونی معرکہ: |
| 159 | الشكراسلام كی فتح كی خوشخری سننے کے لئے بے چین: |
| 160 | لشكراسلام كى پیش قدمی جاری ر کھنے كا فیصلہ: |
| 162 | سعد بن ابی و قاص طالعین کومفتوجه علاقوں کا گورنر بنانے کا فیصله: |
| 164 | شام پراشکرسی ہے متعلق اہم فیصلے: |
| 165 | معركه برموك: |
| 166 | قبله اول برمسلمانوں کا کنٹرول: |
| 169 | ایران پراشکرکشی کے متعلق اہم نیسلے: |
| . 173 | فتوحات مصرك متعلق البم فيصلح |
| 177 | اسكندريد كى جانب پيش قدى كافيصله: |
| 179 | فنوحات فاروقی میلینیهٔ کا اجمانی جائزه: |

| | |]]] 2000 | |
|----|-----|----------|-------------------------------------|
| 18 | ;1 | | نظام خلافت |
| 18 | 31 | | مجلس شوریٰ کے قیام کا فیصلہ: |
| 18 | 32 | - | صوبوں کی بنیادر کھنے کا فیصلہ: |
| 18 | 83 | | ابل گورنروں کی تقرری کا فیصلہ: |
| 1: | 85 | · · | گورنروں کے احتساب کا فیصلہ: |
| 1 | 92 | | بيت المال كا قيام كا فيصله: |
| 1 | 95 | | ا_خراج: |
| 1 | 96 | l | :_7.7 |
| 1 | 196 | | ٣_عشر: |
| | 196 | | ۳۰_عشور: |
| | 196 | | ۵_زكوة: |
| | 197 | | ۲۰ - صدقات: |
| | 197 | | ے۔ مال غنیمت: |
| | 197 | | بیت المال کے اخراجات: |
| | 197 | | ا ـ وظا نَف : |
| | 198 | | ٢- حضرت عمر فاروق وللنفيز كا وظيفه: |
| | 199 | , | ۳- غیرمسلموں کے وظا نف: |
| | 199 | 9 | تغييرات كافيصله: |

| 11 | المن المن المن المن المن المن المن المن |
|-----|---|
| 200 | يخ شهرآ بادكرنے كا فيصلية: |
| 200 | نبری نظام وضع کرنے کا فیصلہ: |
| 201 | مخلف محكموں كے لئے عمارات تعمير كرنے كا فيصله |
| 201 | خانه کعبه کی توسیع کا فیصله: |
| 201 | مسجد نبوی ﷺ کی توسیع کا فیصلہ: |
| 202 | غله کو محفوظ رکھنے کے لئے گودام بنانے کا فیصلہ: |
| 202 | دریاؤاں پر بند کی تقمیر کا فیصلہ: |
| 202 | مهمان خانوں کی تغمیر کا فیصلہ |
| 203 | محكمه فوج كے قيام كا فيصله: |
| 205 | نغلیمی نظام وضع کرنا: |
| 207 | انصاف کی فراہمی کے لئے عدلیہ کے تیام کا فیصلہ: |
| 208 | ین جمری کا آغاز: |
| 208 | اشاعت اسلام: |
| 210 | دورخلافت میں پیش آنے والے اہم امور |
| 210 | شايدتم اپنے ساتھی کو اس کا اہل مجھتے ہو؟: |
| 211 | خلیفه اور بادشاه میں فرق: |
| 211 | وه موت کے قریب ہی ہیں: |
| 212 | آ زاد شخص کی ماں نہ بیچی جائے: |

| | 12 | |
|---|-----|--|
| | 213 | میں تھے اپنا دیا ہوا عہدہ واپس لیتا ہوں: |
| | 214 | خدمت خلق کا جذبه: |
| | 215 | حضرت عاتك بلينه كوجا در دينے كافيصله: |
| ſ | 216 | حضرت حفاف بنائنو کی بیٹی کواونٹ وینے کا فیصلہ: |
| ſ | 217 | حسنین کریمین ښانتم کویمنی جا دریں دینے کا فیصلہ: |
| | 217 | بينے كو مال نه دينے كا فيصله: |
| | 219 | بیت المال ہے مال نہ لینے کا فیصلہ: |
| | 220 | اطاعت خداوندی اور اطاعت رسول الله ین بین کا فیصله: |
| | 220 | عوف (بالله في) درست كهتا ہے: |
| | 221 | وہ میرے کھر کے کام کرتا ہے: |
| | 221 | یہودیوں کو خیبر سے جلاوطن کرنے کا فیصلہ: |
| | 222 | قبر کے لئے یہی سامان کافی ہے: |
| | 222 | ا یک تکوار اور ایک فرحال: |
| | 223 | میراتمهارے متعلق یمی گمان ہے: |
| | 223 | الی بن معب بنائین کے فیصلے کوشلیم کرنا |
| | 224 | انساف كاتقاضا: |
| | 224 | ایک جاریه کوانصاف فرانهم کرنا: |
| | 22: | حضرت سيدنا عباس منالنين كومال عطاكرنا: |

| . j-y- | www.iqbalkalmati.blogspot.com |
|--------|--|
| 13 | |
| 226 | لوً يُول كى اجازت ہے شبد لینے كا فیصلہ: |
| 226 | حضرت سندنا عباس بنائنو کو پینی برسوار کرنے کا فیصلہ: |
| 227 | يەسب بىمانى بىمانى بىر |
| 228 | حضرت زیدین تابت بالمنز کے فیصلے کوشلیم کرنا: |
| 228 | حضرت باال حبشی نباتنی کو جهاد کی انجازت دینے کا فیصلہ: |
| 229 | بیٹوں کو مال بیت المال میں جمع کروانے کا تھم دینا: |
| 230 | حضرت عمارين ماسر خالفية كو تنبيه كرنا: |
| 230 | میٹے پر شرعی حدخود نافنز کرنے کا فیصلہ: |
| .231 | حق فیصله کرنے کی توفیق: |
| 232 | زوجه ے مال واپس لینے کا فیصلہ: |
| 232 | بینے کورقم بیت المال میں جمع کرانے کا تھم دینا: |
| 233 | عدلِ فاروقی شانعهٔ کا واسطه: |
| 234 | قط کے دوران آپ طالعن کا فیصلہ: |
| 235 | مي عوام كاخادم عمر (بنائغذ) هول: |
| 236 | معامله خلافت کا خوف: |
| 237 | پوندلگالباس: |
| 239 | آخرت کوتر جی وینے کا فیصلہ: |
| 239 | مال خرج كرنے كاطريقه: |

| 14 | www.iqbalkalmati.blogspot.com |
|-----|--|
| 240 | انتابُ رسول الله عنه يخير كا فيصله: |
| 241 | دود حدیث بچول کا وظیفه مقرر کرنے کا فیصله: |
| 242 | حلوه نه کھانے کا فیصلہ: |
| 243 | ا بنا كرته بهننے كا فيصله: |
| 244 | حضرت جابر بن عبدالله بنائية كونصيحت: |
| 245 | پرده پوشی کی تنبیه: |
| 245 | تم نے کوئی بہتر کام نہیں کیا: |
| 246 | · حضرت سلمان فارس بنالتنونهٔ کی تکریم: |
| 247 | ایک براصیا کوراضی کرنے کا فیصلہ: |
| 248 | قافلے کی حفاظت کا فیصلہ: |
| 248 | بدخوله بنت تعلبه مليفها تقيل : |
| 249 | تم پہلے ان کے باپ جیسا باپ لے کرآؤ: |
| 250 | ام المونين حضرت سوده ذانغنا كا اكرام: |
| 251 | امهات المونين بزين كااكرام: |
| 251 | |
| 252 | دوسالن ہرگز نہ چکھوں گا: |
| 25% | |
| 25 | ام المومنين حضرت صفيه ولينجنا كي حق محو تي |

| _www.iqbalkalmati.blogspot.com |
|--|
| 15 (CO) (CO) (CO) (CO) (CO) (CO) (CO) (CO) |
| الانت بي منت في ارق كي نبيل |

| وجه كوعنبراورمثك نه دينے كافيصله: | 254 |
|---|-----|
| ا پنی اولا دیرخوه خرچ کر: | 254 |
| ہے کی وجہ: | 255 |
| ب بوڑھے ذمی کواس کا حق دینے کا فیصلہ: | 255 |
| بلے تم سوار ہو گئے: بلے تم سوار ہو گئے: | 256 |
| مبل كالباس: | 256 |
| ھے ملامت نہ کرو: | 256 |
| ب مقدمه کا فیصله: | 257 |
| رهمی او ثمنی: | 258 |
| رور كا علاج: | 259 |
| ے مجھے اس عظیم ذات کی یاد دلا دی: م | 259 |
| اہری اعمال کے متعلق پوچھا جائے گا: | 259 |
| عرت ابو بكر ولا لفن كى رائے مجھ ہے بہتر ہے: | 260 |
| بیثاشت کے سوالی کھے بھی نہیں: | 260 |
| مدتے کا دودھ: | 260 |
| مرورت کے دفت بیت المال ہے ادھار لیتے: | 261 |
| مف دیت پر فیصله جاری کر دیا: | 261 |
| فاتل کومقتول کے ترکہ ہے کچھ بیس ملے گا: | 262 |

•

| 16 | المنت المستون الوق كيانيا |
|-----|--|
| 262 | قتل کے مقدمہ کا فیصلہ |
| 263 | ا ہے گل نہ کیا جائے: |
| 263 | یہ قاتل کے لئے صدقہ ہے: |
| 263 | قاتل قل سے بری ہو گیا: |
| 264 | تم جومرعنی کہومیرا فیصلہ یبی ہے |
| 264 | ا ہے تو بہ کی ترغیب دیتے : |
| 265 | وسعت دنیا پرآنسو بهانا: |
| 265 | کسریٰ کے خزانے و کمچے کر آنسو بہانا: |
| 266 | حضرت سیدنا عباس بنائین کے وسیلہ ہے بارش کی دعا مانگنا: |
| 266 | زانیہ عورت کورجم کرنے کا فیصلہ: |
| 267 | جرازنا پرآپ بنائنو کا فیصله: |
| 267 | والدین کی تعربیف نامناسب الفاظ میں کرنے کی سزا: |
| 268 | سزامعاف کرنے کا فیصلہ: |
| 268 | شرابی کی سزاای کوڑے کرنے کا فیصلہ: |
| 268 | طلال كوحرام قرارنه دينے كا فيصله: |
| 269 | حضرت مسور بن مخرمه بنائن کے فیصلے کی تائید کرنا: |
| 269 | نماز تراوی کی جماعت کروانے کا فیصلہ: |
| 270 | میرافتویٰ بھی یہی ہے: |

| γ τ W | ww.iqbalkalmati.blogspot.com |
|------------------|--|
| 17 | |
| 271 | عبد فاروقی بناتهمهٔ کامختصر جائزه |
| 274 | اہم مواقع پراو گوں ہے خطاب کا فیصلہ |
| 274 | خلیفہ بننے کے بعد خطبہ ارشاد فرمانا: |
| 276 | اہل عرب سرکش اونٹ کی ما نند ہیں : |
| 276 | اریان پرلشکرکشی کے موقع پر خطاب کرنا: |
| 278 | اہم مواقع پر مکتوبات لکھنے کا فیصلہ |
| 278 | حضرت ابوعبیدہ بن الجراح بنائین کے نام مکتوب |
| 280 | حضرت سعد بن الى وقاص طِلْعَوْ كے نام مكتوب: |
| 281 | حضرت ابوموی اشعری طالبین اور حفاظ قرآن کے نام مکتوب: |
| 283 | حضرت عمرو بن العاص ملائظ کے نام مکتوب: |
| 284 | وریائے نیل کے نام رقعہ |
| 285 | شام وعراق کے گورنروں کے نام مکتوب: |
| 286 | قاضی شریح کے نام مکتوب |
| 287 | حضرت نعمان بن مقرن طالعن کے نام مکتوب: |
| 287 | مسلمان مجاہدین کے نام مکتوب: |
| 289 | صحابه کرام بیرانتم کوهیختیں |
| 289 | ایخ بعد آنے والے خلیفہ کونفیحت: |
| 291 | حضرت ابوعبيده بن الجراح والنفيز كونصيحت: |

| | 18 | الاست المستقال المقال المناسقة |
|---|-----|--|
| 2 | 92 | حضرت ابوموی اشعری خانتینهٔ کونصیحت |
| 2 | 93 | حضرت سعد بن اني و قاص بنائفيرُ كونفيهجت: |
| 2 | 96 | حضرت متنبه بن غزوان منالغة كونصيحت: |
| 2 | 297 | حضرت علاء بن خصر مي نالنئه كونصيحت: |
| | | یا نجوال باب: عمر فاروق زبانتیٔ کے فضائل ومناقب |
| | 301 | فضائل ومناقب |
| | 315 | خلافت کی تائیدا حادیث ہے <u> </u> |
| | 321 | سیرت مبارکہ کے درخشاں پہلو |
| | 321 | حضرت عمر فاروق را النفين كوراضى كرنے كا فيصله: |
| | 322 | حضور نی کریم ﷺ کا لیٹے رہنا: |
| | 323 | بلزے کا وزن: |
| | 324 | تمہارامطالبہ جائز نہیں ہے: |
| | 325 | حضرت امسلمی ملی شائن کے لئے نکاح کا پیغام بھیجنا: |
| | 325 | باطنی اعمال الله عز وجل کے ذمہ ہیں: |
| | 326 | اہل رائے سے مشورہ: |
| · | 326 | محبوب چیز کورا و خدا میں خرج کرنا: |
| | 326 | مال كور د كرنا: |
| | 327 | امت کی نجات کا ذریعه: |

| 19 | المنت بمنت و ارق ك فيسل |
|-----|--|
| 329 | ابو کمر (میان نیز) ہے سبقت لے جاناممکن نہیں: |
| 330 | آئی بیاوگ ہم ہے زیادہ فضیلت لے گئے: |
| 330 | سب ہے بڑھ کرمنصف: |
| 331 | تم مسلمانوں میں فساد پھیلا نا جا ہے ہو: |
| 331 | اونڈی کا گانا: |
| 332 | مجھے قرض کی اوا نیگ کے متعلق کہتے: |
| 333 | مجھے اس کا تھم دیا گیا ہے: |
| 334 | ای میں تیری نجات ہے: |
| 335 | ہم اللہ کے رب ہونے پر راضی ہیں: |
| 336 | عبدالله بن ابی کے جموث کا بول کھل گیا: |
| 338 | تو خودکورسواکرتا ہے: |
| 340 | ان ہے کہو کہ بیہ چوری نہیں کریں گی: |
| 341 | تنهارا مال انبیس عطا کرنا کوئی بردی بات نبیس: |
| 342 | نیکیوں میں کمی کا خوف: |
| 343 | پوند کے کپڑے: |
| 343 | آدمی کے اسراف کی ہات: |
| 343 | یمی تمہاری دنیا ہے: |
| 344 | کیا تنہیں اہل فارس وروم ہے عبرت حاصل نہیں ہوئی؟: |

| | 20 | الاست عمل وق ريسل |
|---|-----|--|
| 3 | 44 | آخرت کی تیاری: |
| 3 | 345 | او گول ہے محبت و شفقت کی انتہاء: |
| 3 | 345 | حریرہ ایسے گھوٹا کرو: |
| 3 | 345 | اللّه عز وجل كافضل: |
| | 346 | حضرت ابوموی اشعری بنائیمهٔ کونصیحت ، |
| | 346 | تیرا فیصله میری تلوار نے کر دیا: |
| | 347 | مسلمانوں کا غلام : |
| | 347 | اقرباء کاحق میرے مال میں ہے: |
| | 347 | علمی مقام ومرتبه: |
| | 349 | میں نے حصور نبی کریم مین کیا ہے ہی ویکھا ہے: |
| | 350 | و ین خدمات: |
| | 353 | عمر (مناتفذ) کے سوا کون ہو سکتے ہیں؟: |
| | 353 | علی (طباتیز) کا ذکر بھلائی کے ساتھ کرو: |
| | 354 | دین مسائل میں مباحثہ کرنا: |
| | 354 | حجراسود کو بوسه دینے کا واقعہ: |
| | 354 | ایک سارنگی نواز کے لئے باعث نجات بن گئے: |
| | 356 | شاهِ روم کا ایکی: |
| | 359 | تم نے ہم سب کے لئے دعا کیوں نہ کی؟: |

| 21 | المناسة بمنت وارق كيسل المناسكة المناسك |
|-----|--|
| 360 | میرے گورنروں میں کوئی منافق ہے؟: |
| 360 | میرا بھی یہی کہنا ہے: |
| 362 | اہل ہیت اطہار منی کھنٹم سے حسن سلوک |
| 371 | كشف وكرامات كابيان |
| 371 | میں تیری بکار پر حاضر ہوں: |
| 372 | بېاژ کې طرف پېڅه پهيراو: |
| 372 | تیرےاوپر عدل ہے کام نہیں لیا جاتا: |
| 373 | میری جا در آگ کو دکھاؤ: |
| 373 | گھروالے جل کرمر گئے ہول گے: |
| 374 | اہل قبر ہے گفتگو: |
| 374 | قتل گاارادہ کرنے والامسلمان ہوگیا: |
| 375 | چور کے ہاتھ کا شنے کا تھم |
| 375 | وریا نیل کا یانی جاری ہو گیا: |
| 376 | حجوثی بات کو جان جاتے: |
| 376 | شان میں گستاخی کرنے والا بندر بن گیا: |
| 377 | شان میں گستاخی کرنے والا کتابن گیا: |
| 377 | خواب کی تعبیر |
| 378 | ابل عراق كو بددعا دينا: |

www.iqbalkalmati.blogspot.com 22 منتسب عمر شناول کافیسلالی اول کافیسلالی ک

| 111- | |
|------|--|
| 379 | الله عزوجل اسے غارت کرے: |
| 380 | یہ حضرت عمر فاروق بنائیز کا پاؤں ہے: |
| 380 | شير كا حفاظت كرنا: |
| | جِهِمًا باب: حضرت عمر فاروق بنائِينَهُ كَي شهادت |
| 385 | حضرت عمر فاروق والتينؤ كوزخمي كياجانا |
| 389 | خلافت کے لئے جیم نامز دگیاں |
| 395 | حضرت عثمان غنى بالنغة كالمخليفه منتخب هونا: |
| 397 | حضرت عمر فاروق بنائنة كاخاندان |
| 399 | اولاد: |
| 412 | حضرت عمر فاروق خِلْعَهُ بِمَ شهادت |
| 415 | صحابه کرام بنی تنتیخ کاغم |
| 419 | حليه مباركه |
| 421 | ارشادات |
| 423 | كتابيات |

O.....O.....O

حرف إبتذاء

الله عزوجل کے نام ہے شروع جو بڑا مہر بان اور انتہائی رحم والا ہے اور حضرت محمصطفیٰ ﷺ کی ذات بابر کات پر بے شار درود وسلام۔

خلیفہ دوم، پیکر عدل و انصاف، منبع فیوض و برکات حضرت عمر فاروق بڑائیڈؤ ہیں جنہوں نے اپنے عدل و انصاف اور اعلی معیارِ حکمرانی کی بدولت شہرتِ دوام پائی۔ آپ بڑائیڈؤ کے بول اسلام کے بعد دین پائیڈ کے بول اسلام کے بعد دین اسلام پردہ سے باہر نکل آیا اور مکہ کی گھاٹیوں میں دین اسلام کے ترانے گو نجنے لگے۔ آپ بڑائیڈ کی شجاعت و بہادری کے قائل اہل عرب بھی ہیں اور اہل مجم بھی اور آہل مجم بھی اور آہل مجم بھی اور آہل عمر بھی آپ بڑائیڈ کے فیصلوں نے جہاں تاریخ اسلام پر انہ خلافت میں اختا کے وہیں پر افترامات کو تحسین کی نگاہ سے دیکھتے ہیں۔

حضرت عمر فاروق بنائنی کے فضائل و مناقب بے شاریں۔ آپ بنائنی نے اعلانیہ بمجرت کی اور کسی مشرک کو اتی جرائت نہ ہوئی کہ وہ آپ بنائنی کو رو کسا۔ آپ بنائنی کو رو کسا۔ آپ بنائنی نے غزوات میں بھی شمولیت اختیار کی اور جرائت و بہاوری کی داستا نمیں رقم کسی ۔ آپ بنائنی کے متعلق حضور نبی کریم ہے بیتی کا بیفر مان آپ بنائنی کی فضیلت کسی ۔ آپ بنائنی کی فضیلت اور مناقب کے لئے بی کافی ہے کہ آگر میرے بعد کوئی نبی ہوتا تو یقدینا عمر (بنائنی)

www.iqbalkalmati.blogspot.com 24 منت منت والعالم العلامات العلام العلم

ہوتا۔ آپ بنائیو کی اجتہادی قوت اور آپ بنائیو کے فیصلوں کی بدولت وین اسلام ملک عرب سے نکل کر دنیا کے گوشے گوشے تک پھیلا اور آپ بنائیو کے زمانہ خلافت میں جتنی فتو حات ہوئیں وہ کسی اور زمانہ میں نہیں ہوئیں۔ آپ بنائیو کے زمانہ میں جن محکموں کا قیام عمل میں لایا گیا اور جواقد امات اٹھائے گئے وہ آج بھی کسی فلاحی ریاست کے لئے بہترین عملی نمونہ ہیں۔

عمر بنائنیٰ کے فیصلے قابل تنحسین ہیں وہ دعائے رسول ہیں ،عطائے رسول ہیں

زیرنظر کتاب "حضرت عمر فاروق رہی تھے کے فیصلے" کی تالیف کا مقصدیہ ہے کہ قار کین کو آپ بھی تی کے حیات طیبہ میں آنے والے وہ امور جن کو کرنے کا بروقت فیصلہ آپ بہاتی کو دیگر صحابہ کرام بھی گئے ہے متاز کرتا ہے اور آپ بھی تی وہ فیصلہ جنہوں نے تاریخ رقم کی اور ان فیصلوں کی بدولت دین اسلام اور مسلمانوں کا سرفخر سے بلند ہوا آئیں ایک کتابی صورت میں بجا کیا جائے۔قار کین کے ذوق کا سرفخر سے بلند ہوا آئیں آپ بھی تی میرت پاک کے گئی پہلوؤں کو بھی اجا گرکیا کے لئے کتاب بند ایس آپ بھی تا کہ قار کین کے ذوق کی سرت پاک کے گئی پہلوؤں کو بھی اجا گرکیا گیا ہے تا کہ قار کین کے لئے ذوق کا باعث بنیں۔ بارگاہِ خداوندی میں عاجزانہ الیا ہے تا کہ قار کین کے لئے ذوق کا باعث بنیں۔ بارگاہِ خداوندی میں عاجزانہ الیتماس ہے وہ میری اس کاوش کو قبول فرمائے اور جمیں صحیح معنوں میں دین اسلام کی تعلیمات پرعمل پیرا ہونے کی تو فیق عطا فرمائے۔ آمین

مسعود قادری



يهلا باب

حضرت عمر فاروق طالنظ كابتدائي حالات

حضرت عمر فاروق بنائیڈ کی پیدائش، نام ونسب، قبول اسلام ہے قبل کے حالات، قبول اسلام قبول کرنے کا فیصلہ اسلام قبول کرنے کا فیصلہ

O.....O.....O

خالی ہے تیرا دل ادب و شرم و حیاء سے نادال تحقیے کیوں بغض ہے ارباب وفا ہے اے اے دیمن فاروق طالغیز تحقیم اتنی بھی خبر ہے! فاروق طالعیز کھی طالعیز کے خدا ہے فاروق طالعیز کو مانگا ہے محمد طالعیز کی خدا ہے



ولادت بإسعادت

O.....O.....O

www.iqbalkalmati.blogspot.com 28 منتسب منتشون اول کے فیسلے

نام ونسب

حفرت عمر فاروق برائن پر آپ برائش پر آپ برائن کا نام ' عمر' رکھا گیا اور آپ برائن کا لقب ' فاروق ' نے جبکہ کنیت' ابوحفص' ہے۔ آپ برائن کا لقب ' فاروق' نے جبکہ کنیت' ابوحفص' ہے۔ آپ برائنڈ کا تارعشرہ مبشرہ میں ہوتا ہے قر بیش کی ایک شاخ بی عدی سے ہے۔ آپ برائنڈ کا شارعشرہ مبشرہ وہ صحابہ بنی آئی ہیں جنہیں حضور نبی کریم مین بیتی فاہری زندگ اور عشرہ مبشرہ وہ صحابہ بنی آئی ہیں جنہیں حضور نبی کریم مین بیتی فاہری زندگ میں بی جنت کی بثارت دی تھی۔ آپ بڑائیڈ کا خاندان اپی ذاتی اور خاندان و جاہت کی بناء پر نہایت متاز اور بلندم بید کا حامل تھا۔

حضرت عمر فاروق بٹائنٹ کا سلسلہ نسب کعب پر حضور نبی کریم منظے ہوئے کے سلسلہ نسب بیدری ذیل ہے۔ سلسلہ نسب سے جاملتا ہے۔ آپ بٹائنٹۂ کاشجرہ نسب پیدری ذیل ہے۔

- ا خضرت عمر فاروق بناتفغهٔ
 - ۲۔ بن خطاب
 - سو۔ بن نفیل
 - سم بن عبد العزيٰ
 - ۵۔ بن رباح
 - ٢- بن عبدالله
 - ے۔ بن قرط

الانت المستقال المالية المستقال المالية المستقال المستقال

۸ بن زراح

۹۔ بن عدی

۱۰ بن کعب

اا ي تن لو كَي

اا۔ بن فہر

۱۳ سار سیا الک

حضرت عمر فاروق بنائین کا سلسله نسب مادری یوں ہے۔

ا حضرت عمر فاروق طلعنظ

ا۔ بن ضتمہ

۳۔ بن ہشام

۵۔ بن عبداللہ

۲۔ بن عمرو

ے۔ بن مخزوم

حضرت ابوعمرو زکوان رئالیمی فرماتے ہیں کہ ہیں نے ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ بنائفیا سے بوجھا حضرت عمر فاروق بنائی کا نام ''فاروق' کس نے رکھا تھا؟ حضرت عائشہ صدیقہ بنائفیا نے فرمایا ان کا نام ''فاروق' حضور نبی کریم بنظر تھا نے درکھا تھا۔

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی دزے کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

قبولِ اسلام ہے قبل کے حالات

حضرت عمر فاروق بٹائٹیئز کی حیائت طیبہ کے متعلق کتب تواریخ میں وہی معلومات دستیاب ہیں جوآب طالفیز کے قبول اسلام کے بعد کی ہیں اور آپ طالفیز کا بچین کیسا گزرااورنو جوانی میں آپ طالغیز کے افعال کیا تھے یا پھر جوانی مین آپ بنائنيَّز كے اشغال كيا تھے اور قبول اسلام ہے قبل آپ مِنائنیز کے انداز واطوار كيا تھے ان سب کے متعلق کتب تو اریخ میسر خاموش ہیں اور نہ ہی اس حتمن میں کوئی مستند روایات موجود ہیں جن سے آپ بٹائٹیز کے قبول اسلام سے قبل کے حالات و واقعات كم متعلق آگابى ملتى موالبت سيح روايات سے يه پية چلتا ہے كه آپ طِلْفَهُ كاشار عرب كيعليم مافتة افراد مين موتاتها اوربيه وه زمانه تفاجب عرب مين علم كارواج نه تھا اور بہت کم افراد ایسے تھے جولکھنا پڑھنا جانتے تھے اور ان میں ایک آپ طالتیٰ: بھی تھے۔ آپ زلائٹوز نو جوانی میں تو اتا جسم اور اعلیٰ صلاحیتوں سے مزین تھے۔ آپ بنائنی علم الانساب کے بھی ماہر تنصاور اس کے علاوہ شعروشاعری کا بھی ذوق رکھتے يتصاور فنون لطيفه سے آب طالفن كو خاص شغف تعار

علمی قابلیت:

حضرت عمر فاروق مِنْ لِنَعْمَة كى علمى قابليت اور اعلى جمتى كى بناء برآب مِنْ لِنَعْمَة

کو قریش کے سفیر کا درجہ حاصل تھا۔ آپ بڑائی کے ذریعے بی جنگ اور امن کے پیغامات دیگر قبائل تک بہنچائے جاتے تھے۔ آپ بڑائی ماہر بہلوان بھی تھے اور عرب میں زمانہ قدیم سے جاری میلول بالخصوص عکاظ کے میلے میں اسپے فن کا مظاہرہ کیا کرتے تھے۔ آپ بڑائی شمشیرزنی میں بھی مہارت رکھتے تھے اور ماہر منظاہرہ کیا کرتے تھے۔ آپ بڑائی شمشیرزنی میں بھی مہارت رکھتے تھے اور ماہر نیزہ بازبھی تھے۔ آپ بڑائی ایک شاندار گھڑ سوار تھا اسے ہوئے گھوڑے پر آسانی سے سوار ہوجاتے تھے۔ آپ بڑائی کی ایک خاصیت یہ بھی تھی کہ سرکش سے سرکش گھوڑ ابھی آپ بڑائی کے ہاتھوں نرم پڑ جاتا تھا۔

حضرت عمر فاروق ولائن نے جب ہوش سنجالا اور جوانی کی حدود میں قدم رکھا تو آپ ولائن نے اپنے آبائی پیشہ تجارت کو ہی بطور روزگار اختیار کیا اور آپ ولائن نے تجارت کی غرض سے کئی مما لک کا سفر کیا۔ آپ ولائن کے علمی ذوق اور وہنی قابلیت کا اندازہ اس بات سے لگایا جا سکتا ہے کہ آپ ولائن وہ جس کمی سک ملک کا سفر کرتے تو اس جگہ کی زبان اور اس کی ثقافت سے بھی آگاہی حاصل کرنے کی کوشش کرتے اور ان محافل کو نے والی علمی محافل میں شریک ہوتے اور ان محافل سے علمی استفادہ کرتے تھے۔۔۔

بینلم ، بیر حکمت ، بیر تدبر ، بیر حکومت بینتے بیں لہو ، دیتے بین تعلیم مساوات

ماضی کو یا دکر کے آنسو بہانا:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق والنین جب خلیفہ مقرر ہوئے تو ایک مرتبدا ہے زمانہ خلافت میں دورانِ سفر ایک وادی سے گزرے اور آ ب والنین ایک مرتبدا ہے زمانہ خلافت میں دورانِ سفر ایک وادی سے گزرے اور آ ب والنین اس وادی میں مجھ دیر کے لئے رک گئے اور اس وقت آ ب والنین کی آنکھوں سے

المنت تمثير أوق كيديل

آنسو جاری تھے۔ آپ بنائیڈ کے ہمراہ موجودلوگوں نے رونے کی وجہ دریافت کی۔ آپ بنائیڈ نے اینے ماضی کو یاد کرتے ہوئے فرمایا۔

''اللہ اکبر! ایک وہ دن تھے جب میں نمدہ کا کرتہ پہنے ای وادی میں اونٹ چراتا تھا اور جب میں سخت مشقت کے بعد تھک جاتا اور آرام کی غرض سے لیٹ جاتا تو میرا باپ مجھے مارتا تھا اور آرام کی غرض سے لیٹ جاتا تو میرا باپ مجھے مارتا تھا اور آج یہ وقت ہے کہ اللہ عز وجل نے مجھے ای وادی میں اس حال میں داخل کیا کہ میر ے اوپر ماسوائے اللہ عز وجل کے اورکوئی ذات حاکم نہیں ہے۔''

O.....O......O

اسلام قبول كرنے كا فيصله

حضور نبی کریم بیشتی کی عمر مبارک جالیس برس ہوئی اور آپ بیشتی اس عرصہ میں اکثر و بیشتر عبادت کی غرض سے غارِ حرا میں تشریف لے جاتے تھے اور کئی کئی دن وہاں مقیم رہتے تھے۔ پھر اللہ عز وجل نے حضرت جبرائیل علیائی کو آپ سی میں اگر وجی دے کر بھیجا اور آپ سی میں کے مضب رسالت پر فائز کیا گیا۔ میں تشریف کی دین اسلام آپ سی میں کی دعوت دی کا آغاز کیا تو حضرت عمر فاروق ڈالٹی کو بھی دین اسلام قبول کرنے کی دعوت دی مگر حضرت عمر فاروق ڈالٹی نے ابتداء میں اس دعوت کور دیا۔ کردیا۔

حضور نبی کریم طفظ نیکیم کی دعا:

روایات میں آتا ہے حضور نبی کریم مضیقی نے جب نبوت کا اعلان کیا اس وقت حضرت عمر فاروق والنی کی عمر مبارک قریباً ستائیس برس تھی۔حضور نبی کریم مضیقی نے جب تو حید کی دعوت دی تو آپ والنی نے ابتداء میں اس دعوت کو قبول کرنے ہے انکار کردیا۔حضور نبی کریم مضیقی نے نے بارگاہ خداوندی میں دعا فرمائی۔

کرنے سے انکار کردیا۔حضور نبی کریم مضیقی نے بارگاہ خداوندی میں دعا فرمائی۔

"البی! عمر (والنی) بن خطاب یا عمر بن ہشام دونوں یا دونوں
میں سے ایک کے ذریعے اسلام کی خدمت فرما۔"
علامہ جلال الدین سیوطی مجھانی نے حضرت عمر فاروق والنی کے حق میں علامہ جلال الدین سیوطی مجھانی نے حضرت عمر فاروق والنی کے حق میں علامہ جلال الدین سیوطی مجھانی نے حضرت عمر فاروق والنی کے حق میں

حضور نی کریم منطقینیم کی دعا کے متعلق حضرت عبداللد بن عباس رہا گھیا کی روایت بیان کی کریم منطقینیم کی روایت بیان کی سے بیٹیم کی سے بیٹیم کے بارگاہ بیان کی ہے جس میں آپ دیائی فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم منطقینیم نے بارگاہ خداوندی میں دعا کی۔

''البی! عمر (طِلْنَیْنَ) بن خطاب کے ذریعے وین اسلام کوقوت عطافر ما۔''

الله عزوجل نے اپنے حبیب حضرت محد مصطفیٰ مضفیکی یا دعا کوشرف قبولیت بخشی اور حضرت عمر فاروق بنالینی دائرہ اسلام میں داخل ہوئے۔

حفرت عمر فاروق والنفؤ نے چالیس مردوں اور گیارہ عورتوں کے بعد
اسلام قبول کیا۔ آپ والنفؤ کے قبول اسلام سے پہلے آپ والنفؤ کے بہنوئی حفرت
سعید بن زید والنفؤ اور آپ والنفؤ کی بہن حضرت فاطمہ والنفؤ بنت خطاب بھی دائرہ
اسلام میں داخل ہو چکے تھے اور انہوں نے اپنے قبول اسلام کو خاندان کے دیگر
لوگوں اور آپ والنفؤ سے چھپارکھا تھا۔ ای طرح آپ والنفؤ کے خاندان کے ایک
اور مخض حضرت نعیم بن عبداللہ والنفؤ بھی اسلام قبول کر چکے تھے۔

اسلام قبول كرنے كاحتى فيصله:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق برالینی اسلام قبول کرنے والوں کے ساتھ نہایت بختی سے پیش آتے تھے۔ ایک دن آپ برالینی اس کیفیت میں آلوار نیام سے نکالے جارہے تھے راستہ میں حضرت نعیم بن عبدالللہ برالینی سے ملاقات ہوئی۔ حضرت نعیم بن عبداللہ برالینی سے ملاقات ہوئی۔ حضرت نعیم بن عبداللہ برالینی نے جب آپ برالینی کواس حالت میں دیکھا تو ہوئی۔ حضرت نعیم بن عبداللہ برالینی نے جب آپ برالینی کواس حالت میں دیکھا تو ہو چھا کیوں عمر (برالینی)! کہاں کا ارادہ ہے؟ آپ برالینی نے کہا میں آج محمد (مطابقی)

حفرت نعیم بن عبداللہ رہائیڈ نے حضرت عمر فاروق رہائیڈ کی بات من کر کہا عمر (دہائیڈ) جمہیں تمہارانفس دھوکہ دے رہا ہے، تم کیا سمجھتے ہواگر تم نے محمہ سطائیڈ کوقل کر دیا تو بنی عبدمناف تمہیں چھوڑ دیں گے، تم زمین پر چلنے کے قابل نہیں رہو گے اور حضور نبی کریم سطائیڈ کوقل کرنے سے پہلے تم اپنے گھر کی خبرلو، تمہاری بہن اور بہنوئی نے اسلام قبول کرلیا ہے اور انہوں نے حضور نبی کریم سطائیڈ کی اطاعت قبول کرلیا ہے اور انہوں نے حضور نبی کریم سطائیڈ کی اطاعت قبول کرلیا ہے۔

یرواہ کئے بغیر کہا۔

حضرت عمر فاروق و النفوائد في حضرت سعيد بن زيد و النفوائد كاسخت لهجه اور بهت المجمع به وه منافع في المحملة والمحملة المحملة والمحملة والمح

''ان صفحات کوکوئی ناپاک شخص نہیں چھوسکتا اس کے لئے پہلے تمہیں عنسل کرنا ہوگا۔''

حضرت عمر فاروق رظائی نے خسل کیا اور اپنی بہن اور بہنوئی سے ان اوراق کا مطالبہ کیا۔حضرت فاطمہ رظائی بنت خطاب نے سورہ طار کی تلاوت شروع کی۔ جب وہ اس آیت پر پہنچیں:

> إِنْنِي أَنَا اللّٰهُ لَا إِلّٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِي وَأَقِمِ الصَّلُوةَ لِذِي كُرِي

"بلاشبه میں ہی اللہ ہوں اور میرے سواکوئی دوسرا معبود نہیں اس کے تم میری عباوت کرد اور میری ہی یاد میں نماز پڑھا کرد۔ "کرد۔ "کرد۔ "

حفرت عمر فاروق و النفؤ كي آنكھوں ہے آنسونكل كے اور كہنے لكے كس قدراجها اور عظمت والاكلام ہے۔ پھر آپ والنفؤ بے اختيار پكارا تھے۔ انتہان كي الله والله والله

www.iqbalkalmati.blogspot.com 37 منت عمر المنتوارق كرفيه لير

'' میں گواہی دیتا ہوں اللہ کے سوا کوئی عبادت کے لاکق نہیں اور حضرت محمد منط کی اللہ کے رسول ہیں۔''

حضرت خباب بن الارت رہائیڈ جو کہ گھر کے اندر چھیے ہوئے تھے انہوں نے جب حضرت عمر فاروق رہائیڈ کی زبانِ مبارک سے بید کلمات سے تو بابرنگل آئے اور کہنے لگے۔

" عمر (خلافینهٔ)! الله کی شم! میں نے کل ہی حضور نبی کریم سے ایک کو دعا فرماتے سنا تھا البی! عمر (خلافیهٔ) بن خطاب اور عمر بن ہشام دونوں میں سے ایک کے ذریعے دین اسلام کو تقویت پہنچا اور الله عزوجل نے حضور نبی کریم میشا کی دعا قبول فرمالی اور دین اسلام کو تمہارے ذریعے تقویت پہنچائی۔"

مصرت عمر فاروق والنفؤ ك قلب بررقت طارى مو گئى اور آپ والنفؤ ك قلب بررقت طارى مو گئى اور آپ والنفؤ ك عضرت خارت ملارت والنفؤ ك قلب بررقت طارى مو گئى اور آپ والنفؤ ك مصرت خباب بن الارت والنفؤ سے كہنے كي مجھے اى وقت حضور نبى كريم منظم اللہ اللہ من كى خدمت ميں لے جاؤ۔

روایات میں آتا ہے حضور نبی کریم مضیقی اس وقت کوہِ صفا کے نواح میں دارِ ارقم میں موجود ہے۔ حضابہ کرام دارِ ارقم میں موجود ہے۔ حضابہ کرام دارِ ارقم میں موجود ہے۔ حضابہ کرام دارُ اُنٹی نے جب آپ دارہ اُنٹی کو آتے ویکھا تو حضور نبی کریم مضیقی کو اس بات کی اطلاع پہنچائی۔ حضور نبی کریم مضیقی کے چچا حضرت سیدنا خمزہ دارہ وقت حضور نبی کریم مضیقی کے جیا حضرت سیدنا خمزہ دارہ وقت حضور نبی کریم مضیقی کے باس موجود تھے انہوں نے جب آپ دارہ مالی ساتھ کے متعلق سنا تو فرمایا۔

"عمر (دلائنے) کو آنے دو اگر تو وہ بھلائی کے اراوے سے آیا

ہے تو اس کے ساتھ بھلائی ہوگی اور اگر وہ کمی برائی کے ارادہ
سے یہاں آیا ہے تو میں اس کا سرقلم کر دوں گا۔"
حضرت عمر فاروق بڑائیڈ جس وقت دار ارقم میں داخل ہوئے تو حضور نبی
کریم میں کی کھی کے آپ بڑائیڈ کا دامن کیٹر کر فر مایا۔
"عمر (بڑائیڈ)! کیا ارادہ لے کر آئے ہو؟"
حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے عرض کیا۔

"يارسول الله مضائقة بن اسلام قبول كرنے كے لئے حاضر ہوا مول ـ"

حفنور نبی کریم منظر کا بھے معترت عمر فاروق والفظ کی بات من کرنعرہ کھیر بلند کیا اور صحابہ کرام دی کھنے ہے جواب میں اللہ اکبر کا نعرہ بلند کیا جس سے کو وِ صفا کی پہاڑیاں گونج اٹھیں۔

ابوجهل كوقبول اسلام كي اطلاع دينے كا فيصله:

حضرت عمر فاروق رالنفؤ نے اسلام قبول کیا تو آپ رالنفؤ ابوجهل کے گھر تشریف نے گئے۔ ابوجہل نے آپ رالنفؤ کو دیکھ کر کہا۔ ''اے بھانج! کیسے آئے ہو؟''

حضرت عمر فاروق رالفين بين فرمايا

"میں تہمیں بتانے آیا ہوں کہ میں نے اسلام قبول کرلیا ہے اور اگر اب تم نے حضور نبی کریم مضرفی کا بارے میں پچھ غلط کیا یا کہا تو مجھ سے برا پچھ نہ ہوگا۔"

ابوجہل نے جب حضرت عمر فاروق والفیز کی بات سی تو عصہ میں آگ بگولا

، ہو گیا اور کہنے لگا۔

"م اورتمهاری اطلاع دونوں ذلیل ہوں۔" قبول اسلام کا خانہ کعبہ میں اعلان فرمانا:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طلائیڈ نے اسلام قبول کرنے کے بعد حضور نہیں کرنے کے بعد حضور نبی کریم مطلع کیا۔ بعد حضور نبی کریم مطلع کیا اوگاہ میں عرض کیا۔

"یارسول الله مین کو پوشیده رکھ کر کیوں عبادت کرتے ہیں؟

تو پھر ہم اپنے دین کو پوشیده رکھ کر کیوں عبادت کرتے ہیں؟

آپ ہے کہ اجازت دہ بحے، رب کعبی قتم! جس نے

آپ ہے کہ کوئل کے ساتھ مبعوث فرمایا ہے اسلام قبول کرنے

سے پہلے میں کفریہ مجالس میں بھی اعلانیہ شرکت کرتا تھا اب

میں دین اسلام کی محافل کا بھی خوب جہ چا کروں گا اور

دیکھوں گاکس میں آئی جرائت ہے کہ وہ آپ ہے کا اور

کرام خوائی کی طرف گندی نظروں سے دیکھ سکے۔"

حضور نبی کریم ہے کہ فرائت دے دی اور حضرت عمر فاروق ڈالٹنڈ فائن کھور تی کریم ہے کہ اور شرکین مکہ کو خاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

فانہ کعبہ تشریف لے گئے اور مشرکین مکہ کو خاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

"جو مجھے جانتا ہے اسے خوب معلوم ہے اور جو مجھے نہیں جانتا

ریب سے معلوم ہونا ہے اسے خوب معلوم ہے اور جو مجھے نہیں جانتا
اسے معلوم ہونا جا ہے کہ میں عمر (طائفیٰ) بن خطاب ہوں۔
میں نے اسلام قبول کرلیا اور حضور نبی کریم مضائفیٰ کی اطاعت
اختیار کرلی ہے میں تہہیں حضور نبی کریم مضائفیٰ کی اطاعت کی
اختیار کرلی ہے میں تہہیں حضور نبی کریم مضائفیٰ کی اطاعت کی
دعوت ویتا ہوں اگرتم نے اس دعوت کو قبول کرنے میں ستی

www.iqbalkalmati.blogspot.com 40 منظور الول المعالمة الم

دَکھائی تو جلد میری تلوارتمہاری گر دنوں پر ہوگی۔''

پھرحضرت عمر فاروق نٹائٹۂ نے خانہ کعبہ کا طواف کیا اور بلند آواز ہے کلمہ

طيبه كاورد جاري ركھا۔

اعلانية بلغ كافيصله:

حضرت عبداللہ بن مسعود بلاقا سے مروی ہے فرماتے ہیں جب حضرت عمر فاروق بلاقا نے اسلام قبول کیا تو اسلام کھل کر سامنے آگیا اور اس کی اعلانیہ دعوت دی جائے گئی۔ ہم خانہ کعبہ کے گرد حلقہ بنا کر بیٹھنا شروع ہو گئے اور خانہ کعبہ کا طواف کرنے بیٹ آنا شروع کے اور خانہ کعبہ کا طواف کرنے لگے اور ظلم وزیادتی کرنے والوں سے ختی سے پیش آنا شروع ہو گئے۔

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق رافین کے تبول اسلام کے بعد ایک روز حضور نبی کریم میں ظہر کی نماز کی ادائیگی کے لئے خانہ کعبہ تشریف لے گئے۔حضور نبی کریم میں ہوئی ہے وائیس جانب حضرت ابوبکر صدیق، بائیس جانب حضرت حمزہ، سامنے حضرت علی المرتضی رخی گئی ہے اور سب سے آگے حضرت عمر فاروق رخی تنفیز جل رہے تنفیہ حضور نبی کریم میں ہوئی ان صحابہ کرام رخی اُنٹیز کے بہر کے فاروق رخی تنفیز جل رہے تنفیہ حضور نبی کریم میں خانہ کے بہر کے میں خانہ کعبہ میں نماز کی ادائیگی کو دیکھ کر مشرکین مکہ سے اور حضور نبی کریم میں خانہ کعبہ میں نماز کی ادائیگی کو دیکھ کر مشرکین مکہ آگ بھولا ہو گئے مگر حضرت سیّدنا حمزہ ور حضرت عمر فاروق رخی گئی کے رعب و دبد بہ آگ بھولا ہو گئے مگر حضرت سیّدنا حمزہ ور حضرت عمر فاروق رخی گئی کے رعب و دبد بہ کے دعب سے وہ بیکھ نہ کر سکے۔

حضرت صہیب بن سنان رومی بڑائنڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ جب حضرت صہید میں کہ جب حضرت علیم اللہ میں کہ جب حضرت عمر فاروق بڑائنڈ اسلام لائے تو اس کے بعد اسلام پردے سے باہر آگیا اور

اعلانیہ دعوتِ اسلام دی جانے تگی ۔ اُ

ابن سعد کی روایت میں ہے کہ جب حضرت عمر فاروق بڑائنٹوڈ نے اسلام قبول کیا اس کے بعد سے اسلام کو بھی زوال نہ آیا اور مسلمانوں کو بھی رسوائی کا سامنا نہ کرنا پڑا۔

مشركين كےمظالم براستقامت كافيصله:

علامه جلال الدین سیوطی عبشیه فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق میالینی نے اسلام قبول لیا تو اینے ماموں عمر بن ہشام جسے تاریخ میں ابوجہل کے نام ہے جانا جاتا ہے اور قریش کے سرداروں میں سے تھا اس کے گھر گئے اور درواز ہ پر دستک وی - اس نے پوچھا کون ہے؟ آپ رٹائٹنٹ نے فرمایا میں عمر (مٹائٹنٹ) بن خطاب ہوں۔ابوجہل نے دروازہ کھولاتو آپ طالنٹھ نے اس سے کہا میں نے اسلام قبول كرليا ہے۔اس نے آپ شائنڈ پراپنے گھر كا دروازہ بندكرليا اور كہنے لگاتم ايها ہر كز نه کرتا۔ آپ بٹائنٹ وہاں سے نکلے اور قریش کے ایک اور سردار کے گھر گئے اور اسے بھی اپنے اسلام قبول کرنے کے متعلق بتایا۔اس نے بھی اپنے گھر کا دروازہ آپ ر بند کر دیا اور کہنے لگاتم ایسا ہر گزنہ کرنا۔ آپ بنائٹیزنے اس سے کہاتم کیے ہوتم دوسرے مسلمانوں پرتشدہ کرتے ہواوران پرظلم کے پہاڑ توڑتے ہواور میں تتهبیں اپنے اسلام قبول کرنے متعلق بتاتا ہوں تو مجھ پر اپنے گھر کا دروازہ بند کر دیتے ہ**واور مجھے پچھ**نہیں کہتے۔ وہ بولاتم کیا جا ہتے ہو کیا تمہارامسلمان ہونا سب ر خلاہر ہو؟ آپ طالبنے نے فرمایا ہاں! میں جاہتا ہوں لوگوں کو بیتہ چل جائے میں نے اسلام قبول کرلیا ہے۔ وہ بولاتم خانہ کعبہ جلے جاؤ اور صحن کعبہ میں فلاں صحف کو بتاؤتم نے اسلام قبول کرلیا۔ آپ طالغۂ خانہ کعبہ جلے گئے اور وہاں موجود اس حض

المنت مُنْ قَدُ وَ رُونِ كُونِي لِي اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ

ے ملے جس کا پہتہ اس سردار نے ویا تھا۔ آپ بٹائٹڈ نے اس سے کہا میں مسلمان ہو گیا ہوں۔اس شخص نے اعلان کیا عمر (مِنْ اللهٰ اسلام قبول کرلیا۔ جیسے ہی اس تحض نے اعلان کیا آپ طالفن پر جاروں جانب سے مشرکین نے حملہ کر دیا اور آپ بنائی کوزدوکوب کرنے لگے۔ آپ طالفی کا ماموں ابوجہل آیا اور اس نے لوگول سے یو چھا کیا ماجرا ہے؟ لوگول نے بتایا عمر (طالفیز) نے اسلام قبول کرلیا ہے اور ہم اے مار رہے ہیں۔ ابوجہل نے لوگوں کو آپ طالتین سے دور کیا اور کہنے لگا میں نے اسے پناہ دی ہے۔ مشرکین نے جب ابوجہل کی بات سنی تو آب طافئۃ کو چھوڑ دیا۔ آب بڑائنی نے فرمایا میں تھے تیری بناہ والیس کرتا ہوں۔ آب بڑائنی کی بات من کرمشرکین ایک مرتبه پھرآ ب طالفند پر ٹوٹ پڑے اور مارنے لگے۔ حضرت عمر فاروق مِنْ النَّفِيُّ نِي بعثت نبوي الشِّيرَة لا وسرے برس اسلام قبول کیا۔ آب طال نے سے بل ایمان لانے والے مردوں کی تعداد جالیس اور عورتوں کی تعداد گیارہ تھی۔آب طالغیز کے قبول اسلام کے بعددین اسلام دن رات ترقی کی منازل ہطے کرتا رہا اور لوگ جوق در جوق اسلام قبول کرتے رہے۔

O___O



دوسراباب:

ہجرت اور مدنی زندگی کے اہم فیصلے

اعلانیہ بھرت، اذان کی تجویز دینا غزوات میں شمولیت، مدنی زندگی کے اہم واقعات حضور نبی کریم مضافقات کا ظاہری وصال

O___O

الاست عمر المقال المعالي المعا

مستغیر نورِ وحدت حضرت فاروق رظائفی بین باله ماهِ رسالت مطفی مشیر حضرت فاروق رظائفی بین بین وصال مصطفی مشیر آپ صدے سے نڈھال بین وصال مصطفی مشیر آپ صدے سے نڈھال غمزدہ ، تصویر حسرت حضرت فاروق رظائفی بین

بهجرت مدينه كافيصله

مشرکین مکہ کے ظلم وستم حد سے تجاوز کر چکے سے گر پھر بھی وہ حضور نبی

کریم ہے ہے اور صحابہ کرام دی گئی کے حوصلوں کو بست نہ کر سکے۔ اس دوران جی کے
ایام میں یئرب جو کہ مدینہ منورہ کا پہلا نام تھا وہاں سے پچھلوگوں کا قافلہ مکہ مکرمہ
آیا۔ حضور نبی کریم ہے ہے گئی نے انہیں دعوت حق دی تو انہوں نے لبیک کہا اور دائرہ
اسلام میں داخل ہو گئے۔ جب مشرکین مکہ کے ظلم وستم میں بے بناہ اضافہ ہوگیا تو
اسلام میں داخل ہو گئے۔ جب مشرکین مکہ کے ظلم وستم میں بے بناہ اضافہ ہوگیا تو
ساانبوی میں حضور نبی کریم ہے تھے تھے ہے نے صحابہ کرام دی گئی کے ایک گروہ کو مدینہ منورہ
کی جانب جرت کرنے کا تھم دیا۔ پھر جب پہلا گروہ کا میا بی کے ساتھ مدینہ منورہ
پہنچ گیا تو تمام صحابہ کرام دی گئی گروہ درگروہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنا شروع
ہو گئے۔

حفرت عروہ طائع نے سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حبشہ کی جانب ججرت
کرنے والے مہاجرین میں سے چندلوگ واپس مکہ مرمہ لوٹ آئے اوراس دوران
مکہ مرمہ میں بھی بے شارلوگ مسلمان ہو چکے تھے جبکہ مدینہ منورہ کے بھی بے شار
لوگ مسلمان ہو چکے تھے۔قریش نے مسلمانوں پرمظالم کی انتہاء کر دی اور وہ مدینہ
منورہ سے آنے والوں کو بھی تنگ کرنے گئے۔اس دوران مدینہ منورہ کے سر نقیب جو
مسلمانوں کے سردار تھے انہوں نے جج کے ایام میں حضور نی کریم میں جو

کی جے بیعت عقبہ کہا جاتا ہے اور انہوں نے عہد کیا آپ سے پہلے اور اپنی جو بھی صحابہ کرام بھائی مدینہ منورہ آئیں گے ہم ان کی معاونت کریں گے اور اپنی جان ان پر نچھاور کریں گے۔ پھر اللہ عز وجل کا حکم آن پہنچا اور اس دوران قریش جان ان پر نچھاور کریں گے۔ پھر اللہ عز وجل کا حکم آن پہنچا اور اس دوران قریش کے ظلم وستم میں بھی بے پناہ اضافہ ہو چکا تھا۔ ۱۳ نبوی میں حضور نبی کریم سے پہنچ اور یہ صحابہ کرام جی آئی کے ایک قافلہ کو مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنے کا حکم دیا اور یہ قافلہ کا میابی کے ساتھ مدینہ منورہ پہنچ گیا۔ اس کے بعد حضور نبی کریم میں ہوئے آئے کے حکم بونے گئے۔ کرام جی اُئی کے ساتھ مدینہ منورہ پہنچ گیا۔ اس کے بعد حضور نبی کریم میں ہوئے آئے کے حکم ہونے گئے۔ کرام جی اُئی کی ایک بڑی تعداد ہجرت کر کے مدینہ منورہ کی جانب روانہ ہونے گئی۔

بخاری کی روایت میں ہے کہ حضور نبی کریم مطابقاً نے ہجرت کے متعلق صحابہ کرام مطابقاً نے ہجرت کے متعلق صحابہ کرام شخطان کو آگاہ کرتے ہوئے فرمایا کہ جھے تمہارا وار ہجرت و کھایا گیا ہے جو تھجوروں والاشہر ہے۔

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق بڑائی نے تبول اسلام کے بعد گیارہ سال مکہ مرمہ میں بسر کئے۔حضور نبی کریم مضابقا کی کی زندگی کا بیدوور نہایت ہی پر آشوب دور ہے۔مشرکین مکہ نے حضور نبی کریم مضابقا اور صحابہ کرام بڑائی پر کی مظالم ڈھائے۔مشرکین مکہ کے سردار جن میں ابولہب، ابوجہل، اسود بن عبد یغوث، حارث بن قیس، ولید بن مغیرہ، امید بن خلف، عاص بن واکل اور دیگر جو کہ سب حضور نبی کریم مضابقا کے پڑوی سے ایڈ ارسانیوں میں مصروف رہے اور انہوں نے حضور نبی کریم مضابقا کم کوئی موقع ہاتھ سے نہ جانے دیا۔

حضرت عمر فاروق والفئز نے کئی مرتبہ حضور نبی کریم مطفیکی ہے درخواست کی کہ وہ مشرکین مکہ کے خلاف انہیں علم جہاد بلند کرنے دیں مرحضور نبی کریم مطفیکی ہ

الانت المنتقول وق كيسل

نے ہرمرتبہ انہیں یہی فرماتے کہ ابھی وہ دفت نہیں آیا۔ کفار کے ظلم وستم جب انہاء کو پہنچ گئے تو حضور نبی کریم میں ہے۔ کہ نبوی میں صحابہ کرام میں گئے کہ کہ کہ کہ دوہ کو حبثہ کی جانب ہجرت کرنے کا حکم دیا۔ اس گروہ میں قریباً سو کے قریب مرد و خوا تین شامل تھے۔ حضرت عمر فاروق والنائی نے چند دیگر صحابہ کرام بی گئے کہ ہمراہ کہ کمرمہ میں رہنے کو ترجیح دی اور ہمہ وقت حضور نبی کریم میں یہ کہ خدمت میں رہ کہ کرتے ہے کہ کہ کا حاصہ کی خفاظت فرماتے رہے۔

حق وصدافت کی تبلیغ کی کوششیں جو ضمیر کا ہم نوا ہو کر کی جا کیں آج تک تا کام نہیں ہوئیں اور تاریخ کے اوراق اس بات کی گواہی دیتے ہیں کہ لوگول کی اصلاح کے لئے درست سمت میں اٹھایا گیا قدم بھی بے کارنہیں گیا اور جولوگ اللہ عزوجل کی وحدانیت کے مثن کو لے کر چلے ان کے نام اور ان کامشن بعد از مرگ مجمی جاری ہے۔حضور نبی کریم مضائیل کی تبلیغ سے رفتہ رفتہ اہل مدینہ کے قلوب بھی روش ہونے لگے اور وہ قبائل جوایام جج میں مکہ مکرمہ تشریف لاتے تصحصور نبی كريم مضيئية ني أنبيس دعوت إسلام ديتر رفته رفته ان لوكول كي دلول ميس اسلام کی محبت اجا گر ہونا شروع ہوئی اور اہل مدینه مسلمان ہونا شروع ہو گئے۔ جب مشركين كمه كے مظالم حدیے زیادہ بڑھ گئے تو اللّہ عزوجل نے حضور نبی كريم مُضّا عَلَيْهَا کو مدینه منوره کی جانب ہجرت کرنے کا حکم دیا جبیا که گذشته سطور میں بیان ہو چکا۔ حضور نبی کریم مضيئة لمنے شخصابه کرام بنی انتخ کوالله عزوجل کے پیغام ہے آگاہ کیا اور اس کے بعد تمام صحابہ کرام مِن اُنتم جوق در جوق قافلہ در قافلہ مدینه منورہ کی جانب جرت كرنے لكے حضور نبي كريم يضينين نے حضرت ابو بكر صديق والفن كے ہمراہ مدینهمنوره کی جانب ہجرت کی۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com المنت ممنت والمنافع المنافع الم

اعلانية ہجرت:

حضور نبی کریم سُتَن این کی جانب سے جب مدینه منورہ کی جانب ہجرت کی اجازت دی گئی تو حضرت عمر فاروق رہائیڈ واحد شخص تھے جنہوں نے اعلانیہ ہجرت کی تھی۔ اس ضمن میں حضرت علی المرتضٰی طالبیٰ سے مروی ہے فر ماتے ہیں ہم میں ہے کوئی بھی ایسلم نہیں سوائے حضرت عمر فاروق طالفیٰ کے جس نے اعلانبہ ہجرت کی ہو۔ آپ طالفہ ہجرت سے پہلے خانہ کعبہ میں تشریف لے گئے اور تلوار نيام سے نكال لى۔ پھر بيت اللّٰدشريف كا طواف كيا اور مقام ابرا ہيم عَداِينَا ۾ رو ركعت ع نماز اداکی۔ پھرسردارانِ قریش کے پاس گئے اور انہیں مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔ ''تم میں سے کوئی ایبا ہے جواپی شکل خراب کرانا جاہے،تم میں سے کوئی ہے جو اپنی مال کو بے اولا دکرنا جائے،تم میں سے کوئی ہے جو اپنی اولاد کو پنتم کرنا جاہے، تم میں سے کوئی ہے جو اپنی بیوی کو بیوہ کرنا جاہے اگر کسی کا ارادہ ہے تو وہ ميرےمقابے ميں آئے۔''

جھنرت علی المرتضی و النظم فرماتے ہیں قریش کے تمام سردار حضرت عمر فاروق میں اس کے تمام سردار حضرت عمر فاروق میں اس میں استدروکتا۔ کا راستدروکتا۔

بخاری کی روایت میں ہے کہ حضرت عمر فاروق ڈلٹٹنز کے ہمراہ ہیں صحابہ کرام ٹی اُنٹز نے ہجرت فرمائی۔

سیرت ابن ہشام میں ان صحابہ کرام شکھنٹے کے نام جنہوں نے حضرت عمر فاروق شائٹنڈ کے ساتھ ہجرت کی بیہ بیان کئے گئے ہیں۔

الانتسار في كيسل المحالي المحا

حضرت عمر فاروق بڑائنی نے مدینہ منورہ میں داخل ہونے سے قبل قبامیں قیام کیا جہاں آپ بڑائنی کے خاندان کے وہ لوگ جومسلمان ہو چکے تھے وہ آپ بڑائنی سے آن ملے اور پھر آپ بڑائنی اپنے خاندان کے تمام افراد کے ہمراہ مدینہ منورہ میں داخل ہوئے۔

حفرت انس بن ما لک داننی فرماتے ہیں جس وقت حضور نبی کریم سطانی اور دیگر صحابہ کرام دی گئی ہم مشمل قافلہ مدینہ منورہ میں داخل ہوا تو یہ قافلہ انسار کے ہرگھر کے آئے ہے گزرا۔ ہر انساری کی خواہش تھی حضور نبی کریم سطانی کا یہ قافلہ اس کے گھر قیام پذیر ہوئے۔حضور نبی کریم سطانی ہی جس کے گھر کے آئے بیٹھے گی میں وہیں قیام فرماؤں گا چنا نچے حضور نبی کریم سطانی کی اونمنی حضرت ابوایوب انساری دائشن کے گھر کے آئے بیٹھ کی اور حضور نبی کریم سطانی کی ایمنی حضرت ابوایوب انساری دائشن کے گھر تیام فرمایا۔

حضور نی کریم مضایقات مدیدمنورہ آمد کے بعد انصار اور مہاجرین کے

ورمیان بھائی جارے کا رشتہ قائم کیا اور ایک انصار اور ایک مہاجر کو بھائی بھائی بنایا۔ حضرت عمر فاروق جل نفیز کا رشتہ حضرت منتبان بن مالک جلائیؤ سے قائم کیا گیا جو کہ قبیلہ بی سالم کے معزز رئیسوں میں شار ہوتے تھے۔

ابن سعد کی روایت میں ہے حضرت متبان بن مالک بڑائیڈ کا قیام قبامیں تھا چنانچہ حضور نبی کریم میں ہے۔ کی مدید منورہ آمد کے بعد جب حضرت عمر فاردق بڑائیڈ اور حضرت متبان بن مالک بڑائیڈ کے درمیان مواخات قائم ہو کیں تو حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے اپنا قیام قبامیں کرلیا اور پھر دونوں کے مابین طے ہوا کہ ایک دن ایک حضور نبی کریم میں ہی خدمت میں حاضر ہوگا چنانچہ حضرت عمر فاروق بڑائیڈ ایک دن حضور نبی کریم میں ہی خدمت میں حاضر ہوتے تھے اور ایک دن حضرت عتبان بن مالک بڑائیڈ ، حضور نبی کریم میں ہی کریم میں ہی خدمت میں حاضر ہوتے تھے اور ایک دن سعادت حاصل کرتے تھے۔

مسجد نبوی مشنط الله کانتمبر میں شمولیت:

حضور نبی کریم بیضا کی آب نه بید منورہ میں حضرت ابوابوب انصاری بڑا گئن کے گھر قیام کیا۔ حضرت ابوابوب انصاری بڑا گئن کے گھر کے سامنے بنو مالک بن نجار کے ایک محلہ کے میدان میں جہال حضور نبی کریم بیضا ہی آب میں جہال حضور نبی کریم بیضا ہی آب بیضی آب بیضا کی ملکت ہے۔ آب میدان کے میدود کم من بھائیوں سہل اور سہیل کی جگہ ہے اور ان کے مر پرست مدینہ منورہ میں سب سے پہلے اسلام قبول کرنے والے حضرت اسعد بن زرارہ و اللی بیا۔

حضور نبی کریم مطفی تناهد اس جگه پرمسجد کی تغییر کا اراده ظاہر کیا۔حضرت

51 (5) Line (5) (5)

سبل اور حضرت مہیل بنی این ہے وہ جگہ فی سبیل اللہ دینی جا ہی مگر حضور نبی کریم بین ہے اسے خرید نے کا ارادہ ظام کیا اور حضرت ابو بکر صدیق جالتی ہے زمین کی خریداری کے معاملہ پر بات کی۔ آپ بڑائیڈ نے حضور نبی کریم ہے جائے گئے کی خواہش پر مسجد نبوی کے لئے زمین خرید نے کا فیصلہ کر لیا اور پھر دس ہزار درہم کے عوض وہ زمین خرید لی۔

O.....O.....O

اذ ان کی تجویز دینا

حضرت عبدالله بن زید و الفخنان نے حضرت عمر فاروق و الفخذ کے خواب کے بعد اسپنے خواب کا ذکر کیا جس میں انہوں نے ایک شخص کو دیکھا تھا جس نے دوسبر چادریں اور اس نے اذان کے کلمات انہیں سکھائے۔حضور نبی کریم عظامت انہیں سکھائے۔حضور نبی کریم مشخص کے ادان کے کلمات انہیں سکھائے۔حضور نبی کریم مشخص کے ادان تبید و ادان کے کلمات انہیں سکھائے۔حضور نبی کریم مشخص کے ادان کے کلمات انہیں سکھائے۔حضور نبی کریم میں کہ وہ ادان

المناسبة عمليات والمالية المعلق المعل

حضرت عمر فاروق بنائنی نے اذان کی آواز س کر حضور نبی کریم ﷺ کی بارگاہ میں عرض کیا۔

حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے اپنے بھینج حضرت عبداللہ بن زید بڑائیما کے بتائے ہوئے کا بیانی کے بتائی کے بتائے کا تعدیق کی تصدیق کی ۔حضور نبی کریم سے کی آپ ڈائیڈ کی بات سن کراللہ عز وجل کا شکرادا کیا اور فرمایا۔

'' مجھے وحی کے ذریعے پہلے ہی بیکلمات بتا دیئے گئے تھے گر 'میں اس کی تقید ایق اینے صحابہ کرام مٹنی کنٹی سے جا ہتا تھا۔'' 'میں اس کی تقید ایق اینے صحابہ کرام مٹنی کنٹی سے جا ہتا تھا۔''

O.....O.....O

www.iqbalkalmati.blogspot.com منت مشتور ارق کے بیلے

غزوات ميں شموليت

حضرت عمر فاروق برائنی نے حضور نبی کریم سے ایک کی حیات طیبہ میں تمام غزوات میں شمولیت اختیار کی۔ ذیل میں ان غزوات کا اختصار کے ساتھ ذکر بیان کیا جا رہا ہے جن میں آپ برائنی نے حضور نبی کریم میں ہے جن میں آپ برائنی نے حضور نبی کریم میں ہے جن میں آپ برائنی نے حضور نبی کریم میں ہے جن میں آپ برائنی کے حضور نبی کریم میں ہے جن میں آپ برائنی کے دوق اور بہادری و جرائت کے بے مثل کارنا ہے انجام دیئے تاکہ قارئین کے لئے ذوق کا باعث بنیں۔

غزوهٔ بدر میں شمولیت: .

حق وباطل کے درمیان پہلامعرکہ بجرت مدینہ کے دوسرے سال رمضان المبارک میں بدر کے مقام پر ہوا جے تاریخ میں غزوہ بدر کے نام سے یاوکیا جاتا ہے۔ بدر کا میدان مدینہ منورہ سے قریباً اسی میل کے فاصلے پر واقع ہے۔ اس غزوہ میں تین سو تیرہ مجاہدین جن میں ساٹھ مہاجرین اور باقی انصار شامل تے حضور نبی میں تین سو تیرہ مجاہدین جن میں ساٹھ مہاجرین اور باقی انصار شامل تے حضور نبی کریم ہے تین کی قیادت میں میدان میں الرے مشرکین کالشکر ایک بزار کی تعداد میں سامانِ جنگ سے لیس ابوجبل کی قیادت میں میدان میں الرا۔ اسلامی لشکر کے بیس جنگ ساز وسامان کی کمی تھی اور مجاہدین میں سب سے بردا امتحان مہاجرین کا تھا جوا ہے بھا کیوں کے مقابلہ میں تھے۔

میدان بدر پہنچنے کے بعد مسرت سعد بن معاذ بنائذ نے ایک میلے پر

حضور نبی کریم مضری این بنایا جہاں حضرت ابو بمرصد این بنائی مخصور نبی کریم مضری بنائی مخصور نبی کریم مضری بنائی مضرر ہوئے اور ای جگہ سے حضور نبی کریم مشری ہوئے اور ای جگہ سے حضور نبی کریم مشری ہوئے اور ای جگہ سے حضور نبی کریم مشری ہوئے آپ بنائی کے ذریعے اشکر کو ہدایات جاری فرمائیں۔

صحیحین کی روایت ہے حضرت عمر فاروق بیلائی فرماتے ہیں کہ جب حق و باطل کے درمیان پہلامعر کہ بدر کے مقام پر بواتو حضور نبی کریم بیلی پیشر نے مشرکین کے اشکر کا جائز ولیا تو ان کی تعداد ایک ہزار کے قریب تھی اور وہ جنگی ساز وسامان سے جبکہ اسلامی اشکر کی تعداد تین سو تیرہ تھی اور ان کے پاس جنگی ساز و سامان کی بھی کی تنی ۔ حضور نبی کریم بیلی پیشر نے قبلہ روہ وکر اللہ عز وجل کی بارگاہ میں دعا کے لئے اینے ہاتھ بلند فرمائے اور دعا کی۔

''اے اللہ! تو نے میرے ساتھ جو وعدہ کیا اسے بورا فرما۔ اگر آئے مشمی بھرمسلمان ختم ہو گئے تو روئے زمین پر تیری عبادت کرنے والا کوئی باقی نہرہے گا۔''

حضرت عمر فاروق بالنفؤ فرماتے ہیں دعا کے دوران حضور نی کریم سے بیٹا کی آنکھوں سے آنسو جاری شے اور حضور نی کریم سے بیٹا کی آنکھوں سے آنسو جاری شے اور حضور نی کریم سے بیٹا کی جاری کے دھوں سے نیچ گر پڑی ۔ حضرت ابو بکر صدیق بالنوز نے جا درکواٹھا کر حضور نی کریم سے بیٹا کے کندھوں پر رکھا اور عرض کیا۔

'' یارسول اللہ ﷺ بہی کافی ہے اللہ عزوجل اپنا وعدہ ضرور 'یورا فرمائے گا۔''

حضرت عمر فاروق بنائنئۂ فرماتے نہیں پھرالٹدعز وجل نے مضی بھرمسلمانوں کی مددفر مائی اور ہمیں جنگ میں کامیابی اصل ہوئی۔ حضرت ابو بکرصدیق بیاتی نے غزوہ بدر کے موقع پر جراکت و شجاعت کی بے مثال داستانیں رقم کیس۔ آپ بیاتی شمشیر بر بند باتھ میں لئے حضور نبی کریم سے بیٹی کی حفاظت فرماتے رہے جبکہ مشرکین مکہ حضور نبی کریم سے بیٹی کی جان کے وثمن سے مشرکین جب بھی حضور نبی کریم سے بیٹی پر حملہ آور ہونے کی کوشش کرتے آپ بڑالنیڈ اپنی بے مثال جراکت سے آئیس بیٹی وظیل دیتے تھے۔ تاریخ گواہ ب کہ اس نازک موقع پر آپ بڑالنیڈ نے ایک لمحہ کی بھی خفلت نہ برتی۔ روایات میں آتا ہے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی سائبان کے نیچ آرام فرما رہے تھے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی سائبان کے نیچ آرام فرما وہ ہے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی سائبان کے نیچ آرام فرما وہ ہے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی سائبان کے دینے آرام فرما دیتے ہے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی سے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی ہے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی ہے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی ہے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی کہ کہ کہ کیس کے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی کہ کے کہ حضور نبی کریم سے بیٹی کہ کہ کہ کہ کے کہ کہ کہ کیس کے کہ کو کیس کے کہ کو کہ کی کہ کہ کہ کہ کہ کیس کے کہ کو کی کو کیس کو کیس کے کہ کو کیس کے کہ کو کہ کی کو کشور نبی کریم سے کھور کبی کے کہ کو کہ کے کہ کیس کے کہ کیسے کے کہ کو کی کو کو کہ کیس کے کہ کو کیس کے کہ کو کہ کے کہ کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کیس کے کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کیس کے کہ کے کہ کو کہ کیس کے کہ کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کیس کے کہ کو کیس کے کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کے کہ کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کیس کے کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کو کر کے کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کو کہ کیس کے کہ کو کہ کیس کے کہ ک

''اے ابو بکر (رٹیائیڈ)! تمہیں مبارک ہواللہ عزوجل نے جس مدد کا وعدہ کیا تھا وہ آن پیچی ہے اور جبرائیل (علیائل) اپنے گھوڑے کی باگیں تھا ہے میدانِ جنگ میں پینچ گیا ہے۔'' غزوہ بدر میں اللہ عزوجل نے لشکر اسلام کو حضور نبی کریم میضی ہے۔ کے طفیل مشرکین پر فتح عطا فرمائی۔اللہ عزوجل نے قرآن مجید میں سورہ آل عمران میں غزوہ بدر کے متعلق فرمائی۔

قَلْ كَانَ لَكُمُ اللهِ وَأَخُراى كَافِرةً فِي فِنَتَيْنِ الْتَقَتَا طَ فِنَةٌ تَقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَأَخُراى كَافِرةً "

" تتبهار ك بحض كے لئے نشانی ہے ان دو مخالف گروہوں میں جو ایک دوسرے سے لڑے ان میں سے ایک وہ تھا جو اللہ کی راہ میں لڑا اور دوسرا گروہ کا فروں کا تھا۔"

غزوهٔ بدر میں چود و صحابہ کرام ہوں کھٹیٹر نے جام شہادت نوش فر مایا ان میں جھ مباجرین اور آئھ انصاری تھے۔مشرکین کے ستر آدمی جہنم واصل ہوئے۔حضور نبی کریم مضریقین کے تکم پرشہدا ، کو بدر میں سپر دِ خاک کیا گیا اور مشرکیین کے ستر آ دمی جوجہنم واصل ہوئے تھے انہیں ایک ٹڑھے میں فن کر دیا گیا۔حضور نبی کریم ﷺ مشركين كے گڑھے يرتشريف لے گئے اور ایک ایک کا نام لے کر پیارا اور فرمایا۔ '' کیاتم نے اللّٰہ عز وجل کے وعدہ کوحق نہ پایا جواس نے میرے ساتھ کیا تھا۔ میں نے اس وعدے کوحق بایا جواللہ عز وجل نے میرے ساتھ کیا تھا۔تم اینے نبی کے سب سے برے رشتہ دار ہے اورتم نے میراانکار کیا جبکہ دوسروں نے میری تصدیق کی۔ تم نے مجھے میری سرز مین سے نکالا اور دوسروں نے مجھے پناہ دی۔تم نے میرے ساتھ جنگ کی جبکہ دوسروں نے میری مدد کی۔''

مشركين كمتعلق آب رائليُّهُ كا فيصله:

غزوہ بدر میں مشرکین مکہ کے ستر کے قریب افراد کو قیدی بنایا گیا جنہیں حضور نبی کریم مشرکین مکہ کے ستر کے قریب افراد کو قیدی بنایا گیا جنہیں حضور نبی کریم مشرکین نے مختلف صحابہ کرام جی آئی کا کہ حضور سے پچھ کو بعد میں فدید لے کر چھوڑ دیا گیا۔ حق و باطل کے اس معرکے میں حضرت ابو بکر صدیق جائی نئے کا کر دار نمایاں تھا۔ حضور نبی کریم مشربی کے حکمت عملی آیے جائی نئے کی مشاورت سے مرتب کی۔

 میں اکثر کا تعلق آپ منے کی آندان ہے ہے انہیں مناسب فدیہ لے کر آزاد کر دیا جائے تاکہ جو فذریہ ان سے حاصل ہو اس سے مسلمانوں کی حالت زار کو بہتر بنانے میں مدد ملے اور ہم اس فدیہ سے اسیے فوجی اخراجات کو بھی پورا کر سکیں۔ حضرت عمر فاروق طالبغذ نے عرض کیا یارسول اللہ ﷺ میری رائے حضرت ابو بمر صدیق طالغیز کا مقابلہ ہیں کر سکتی میری رائے میں ان سب کے سرقلم کر دیئے جا کیں تا كەمشركىن كوعلم ہوسكے كە ہمارے دلوں میں كفار كے لئے زم كوشدموجودنبيں۔ ہماری اس بختی کو دیکھ کر ان کی کمرٹوٹ جائے گی۔حضور نبی کریم مضایقاتھ نے جب ابینے ان دونوں اکابر صحابہ کرام من انتہ کی بات سی تو خاموشی سے خیمہ میں تشریف کے گئے۔ پچھ دہر بعد واپس آئے اور فرمایا اللہ عزوجل نے بعض لوگوں کے ول بہت نرم کئے ہیں اور وہ دودھ سے بھی زیادہ نرم ہے اور بعض کے دلوں کو سخت کیا ہے اور وہ پھروں سے بھی زیادہ سخت ہیں اور ابو بکر (طالفیز) کی مثال ابراہیم علیاتلا كى سى بى جىنبول نى بارگاد خداوندى ميں دعاكى اے الله! جوميرى بات مان لے وہ میرے ساتھ ہے جومیراا نکار کرے تو اس کو بھی بخش دے اور تو ہی رحم فرمانے والا باور ابو بكر (والنفوز) كى مثال عيسى علياته كى سى ب جنبول نے الله عزوجل كى بارگاہ میں عرض کیا کہ اے اللہ! تیراحق ہے اور بیہ تیرے بندے ہیں جا ہے تو انہیں عذاب دے اور جاہے تو بخش دے اور تیرا قول غالب اور حکمت والا ہے اور عمر (ملا نفظ) کی مثال نوح علیاته کی سے جنہوں نے اللہ عزوجل کی بارگاہ میں عرض كيا اے الله! روئے زمين بركسي كافركو باقي نه رہنے دے اور عمر (﴿ اللَّهُورُ) كي مثالَ موی علیاتل کی سی ہے جنہوں نے اللہ عزوجل کی بارگاہ میں عرض کیا کہ اے اللہ! ان کے مال تباہ و ہر باد کر دے اور ان کے دلوں کو سخت کر دے کہ ریہ در دناک عذاب

www.iqbalkalmati.blogspot.com 59 کانگان اوق کانیسلے

دیکھے بغیر کھے مانے والے نہیں ہیں۔ پھر حضور نبی کریم مضافیآ نے حضرت ابو بھر صدیق بنی کریم مضافیآ نے حضرت ابو بکر صدیق بنائی کی رائے اور فیصلے کو ترجیح دی اور متعدد قید بول کو مناسب فدید کے عوض رہا کردیا۔

غزوهُ إحد مين شموليت:

غزوہ بدر میں مشرکین کے جولوگ جہنم واصل ہوئے ان میں بیشتر کا تعلق قریش سے تھا اور وہ قریش کے سرداروں میں سے تھے۔ ان میں وہ لوگ بھی شامل سے جنہوں نے بجرت کی رات حضور نبی کریم سے بھیا کو شہید کرنے کا پردگرام بنایا تھا۔ غزوہ بدر میں شکست کے بعد قریش کی راتوں کی نیندیں حرام ہو پھی تھیں انہوں نے کئی قبائل کو متحد کیا اور جنگ کی تیاریاں شروع کردیں۔ جنگ کے لئے انہوں نے چندہ اکٹھا کرنا شروع کیا اور اس دوران قریش کا ایک قافلہ جو کہ سامان تجارت فروخت کرنے کے بعد ایک گیر منافع لے کرلوٹا تھا اس نے بھی اڑھائی لاکھ درہم فراہم کردیے۔ جضور نبی کریم سے بھیا کے حضرت سیدنا عباس رٹائٹوز جو کہ اسلام قبول کر چکے تھے مگر مکہ مکرمہ میں ہی مقیم تھے انہوں نے قریش کی جنگی تیاریوں کی اطلاع ایک قاصد کے ذریعے حضور نبی کریم سے تھی انہوں نے قریش کی جنگی تیاریوں کی اطلاع ایک قاصد کے ذریعے حضور نبی کریم سے تھی انہوں نے قریش کی جنگی تیاریوں کی اطلاع ایک قاصد کے ذریعے حضور نبی کریم سے تھی تھی تک پہنچا دی۔

رئے الاول مع میں حق و باطل کے درمیان دوسرا معرکہ احد کے مقام پر پیش آیا۔ احد مدینہ منورہ سے تین میل کے فاصلہ پر ایک وادی ہے۔ مشرکین کالشکر جنگی ساز وسامان سے لیس تھا اور تین ہزار کے نفوس پرمشمل تھا۔ حضور نبی کریم مختل ساز وسامان سے لیس تھا اور تین ہزار کے نفوس پرمشمل تھا۔ حضور نبی کریم مختل ہزار مجاہدین کا تھم دیا اور ایک ہزار مجاہدین کالشکر لے کراحد کے مقام پر مہنچ۔ ایک ہزار مجاہدین کے لشکر میں سے تین سولوگ عبداللہ بن ابی سلول منافق کے ساتھی تھے جنہیں وہ راستہ سے ہی واپس لے گیا

اور بول حضور نبی کریم منطقیتا کے جانثاروں کی تعداد سات سورہ گئی جن میں حضرت ابو بکر صدیق مظاہمیٰ بھی ہتھے۔

حق و باطل کے درمیان جب جنگ شروع ہوئی تو حضور نبی کریم مظیر اواحد نے حضرت عبداللہ بن جبیر رفائن کو بچاس تیراندازوں کے ایک دستہ کے ہمراہ احد بہاڑ کی بیشت پر تعینات کر دیا تا کہ اگر دشن پشت سے جملہ آور ہوتو وہ انہیں روک عکیں۔ مجاہدین نے مشرکین کی کمرتوڑ دی اور وہ میدانِ جنگ چھوڑ کر بھاگ نگلے۔ مجاہدین ان کے خیموں تک بہن گئے اور مشرکین نے اپنا سازوسامان و ہیں چھوڑ کر مجاگئے میں عافیت محسوں کی ۔ لشکر اسلام میں پھے مجاہدین ایسے بھی تھے جنہوں نے محال ہی میں اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال علی میں اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال علی میں اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال علی میں اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال علی میں اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال علیہ میں اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال علیہ میں اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال غذیہ سے اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال غذیہ سے اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال غذیہ سے اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مال غذیہ سے اسلام قبول کیا تھا۔

حضرت عبداللہ بن جیر رہائی کا قیادت میں جو تشکر احد پہاڑی پشت پر تعینات تھا اس نے اپنی جگہ چھوڑ دی اور مال غنیمت سمینے میں معروف ہو گئے۔
حضرت خالد بن ولید رہائی ہواس وقت مسلمان نہ ہوئے ہے ان کی سربراہی میں مشرکین کے ایک تشکر نے مسلمانوں پر پشت سے تملہ کردیا جس میں ستر سے زیادہ مسلمان شہید ہو گئے۔حضور نبی کریم بیضائی ہے کہ عاصرہ مسلمان شہید ہو گئے۔حضور نبی کریم بیضائی کا محاصرہ کرلیا اور آپ بیضائی کا دفاع اپنی آخری سانس تک کرتے دہے۔حضور نبی کریم بیضائی کے دانت مبارک شہید ہو گئے اور افواہ پھیل کی کہ حضور نبی کریم بیضائی کے دانت مبارک شہید ہو گئے اور افواہ پھیل کی کہ حضور نبی کریم بیضائی کے دانت مبارک شہید ہو گئے اور افواہ پھیل کی کہ حضور نبی کریم بیدا ہونا شروع ہوگئ شہید کردیا گیا ہے۔صحابہ کرام دی گئی کے جوش وخروش میں کی پیدا ہونا شروع ہوگئ اور پھر اس موقع پر حضرت سیدنا حمزہ رہائی اور کی حضور نبی کریم بیدا ہونا شروع کے خلام حبثی اور پھر ہندہ کے غلام حبثی

الانتراج المنتقال المالية الما

کے ہاتھوں جام شہادت نوش فرمایا۔

غزوہ احد میں سر صحابہ کرام شائیہ نے جام شہادت نوش فرمایا جبکہ بائیس کفار جہنم واصل ہوئے۔حضور نبی کریم ہے ہے کہ کا دفاع کرنے والے حضرت ابو بکر صدیق، حضرت عمر فاروق، حضرت علی المرتضی اور حضرت طلحہ بن زبیر بنی اُنڈی نے اپنی جانثاری کا شوت دیا اور آپ ہے ہے کہ حفاظت فرمائی۔حضور نبی کریم ہے ہے ہے اپنی جانثاری کا شوت دیا اور آپ ہے ہے کہ حفاظت فرمائی۔حضور نبی کریم ہے ہے ہے اکثر و بیشتر احد پہاڑ پر تشریف لے جاتے تھے اور فرماتے تھے بیدوہ پہاڑ ہے جس کے ہمیں محبت ہے۔ آپ ہے ہے ہی ہمیں محبت ہے اور اسے بھی ہم سے محبت ہے۔ آپ ہے ہے ہی شہداء کی قبور پر بھی تشریف لے جاتے اور فرماتے تم پر سلام ہو تمہارے حوصلہ اور صبر کی وجہ ہے تمہیں آخرت میں بہترین انعام ملا ہے۔ اللہ عزوجل نے سورہ آل عمران میں غزوہ احد کرمتعلق فی ال

وَمَا أَصَابُكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعُنِ فَبِاذُنِ اللهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُومِنِينَ وَلِيَعْلَمَ اللهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُومِنِينَ وَلِيَعْلَمُ الّذِينَ نَافَقُوا الْمُومِنِينَ وَلِيَعْلَمُ الّذِينَ نَافَقُوا

"اور جو نقصان تمہیں اس لڑائی کے دن پہنچا وہ اللہ کے حکم سے تھا اور وہ اس لئے تھا تا کہ دیکھے کہتم میں سے کون ایمان والا ہے اور کون منافق ہے۔"

غزوہ احد کے متعلق میے کہنا کہ اس میں مسلمانوں کو شکست ہوئی نلط ہے یہ جنگ بغیر کسی نتیجہ پر بہنچ بغیر ختم ہوئی کیونکہ اس جنگ میں دونوں فریقوں کا نقصان ہوااور کوئی ایک فریق دوسرے پر حاوی نہ ہوسکا۔ مشرکین ایک مرتبہ پھر حضور نبی کریم مضوقی کو شہید کرنے کے اپنے ناپاک منصوبہ میں ناکام رہے اور حضور نبی کریم مضوقی کے جانباروں کے آئے ہے بس نظر آئے۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com 62 منتسون روق کے فیصلے

روایات میں آتا ہے غزوہ احد کے موقع پر حضور نبی کریم مضایق کے شہید ہونے کی خبر مشہور ہوئی تو حضرت عمر فاروق جائئی کا کار پرٹوٹ پڑے اور پھر اس دوران خبر ملی کہ حضور نبی کریم مضایق زندہ ہیں تو آپ جائئی دیگر جانٹاروں کے ہمراہ حضور نبی کریم مضایق کے کہ ایک محفوظ جگہ منتقل ہو گئے۔ اس دوران ابوسفیان حضور نبی کریم مضایق نہ ہوئے تھے انہوں نے اونچی آواز میں کہا۔ (جائٹی کی جواس وقت مسلمان نہ ہوئے تھے انہوں نے اونچی آواز میں کہا۔ (جائٹی کی جواس وقت مسلمان نہ ہوئے تھے انہوں نے اونچی آواز میں کہا۔ (جائٹی کی کی ای کی تا میں کہا۔ کیا تم میں محمد (مضایق) ہیں؟"

حضور نبی کریم ﷺ نے تمام صحابہ کرام میں منظم کو خاموش رہنے کا تھم دیا۔ کچھ دیر بعد کوئی جواب نہ پا کر ابوسفیان (طائفیز) نے اونچی آواز میں پکارا۔ ''اے گردوم محمد (میرین کی آپید)! کیاتم میں ابو بکروعمر (می کنیز) ہیں؟''

اس مرتبہ پھرحضور نبی کریم میشندگانی سنے سخابہ کرام میں کنٹم کو خاموش رہنے کا اشارہ کیا۔ابوسفیان (مٹائنیز) کچھ دیر بعد پھر بولا۔

''ضرور بیلوگ مارے گئے ہیں۔''

حضرت عمر فاروق وظائفیٔ نے اس کی ہرزہ رسائی س کر پکارا۔ ''اے وشمن خدا! ہم سب اللہ تعالیٰ کے فضل سے زندہ ہیں۔'' ابوسفیان (طائفیٰ) نے بیس کر پکارا ہمل بلند ہوا۔ حضرت عمر فاروق وظائفۂ نے حضور نبی کریم مضلفی کی اجازت سے پکارا۔

''اللّه عزوجل بلند و برتر ہے۔''

ابوسفیان (طلائفۂ) نے حضرت عمر فاروق بنائفۂ کا جواب من کر کہا۔ ''معرکہ احد،معرکہ بدر کے برابر ہوگئ یعنی ہم نے بدر کا بدلہ لےلیا۔'' حضرت عمر فاروق بنائنهٔ نے حضور نبی کریم ﷺ کے فرمانے پر بکارا۔ دونبیں ابوسفیان! یہ برابری نبیس کیونکہ ہمارے مقتولین جنت میں بیں اور تمہارے مقتولین جہنم میں ہیں۔''

ابوسفیان (جلٹیئے) نے جب حضرت عمر فاروق جلٹیئے کی ہات سی تو سموڑا دوڑاتے ہوئے بھاگ گئے۔

غزوهٔ بدر الموعود میں شمولیت:

احد سے واپسی کے وقت ابوسفیان (برائٹیڈ) نے اعلان کیا تھا کہ وہ آئندہ سال اپنی فوج کو لے کر دوبارہ بدر کے مقام پر اکٹھا ہو گیا۔ حضرت عمر فاروق برائٹیڈ نے حضور نبی کریم میں تبہاری بات منظور ہے۔ ابوسفیان (برائٹیڈ) کی اجازت سے ہداعلان کیا تھا کہ ہمیں تبہاری بات منظور ہے۔ ابوسفیان (برائٹیڈ) کی بات جھوٹی ہوئی اور وہ جنگ کی تیاری نہ کر سکا۔ اس نے اپنی شرمندگی دور کے لئے مدینہ منورہ نعیم بن مسعود انتجعی کو بھیجا جس نے مدینہ منورہ جا کر پروپیگنڈ اکیا کہ مشرکین مکہ نے ایک عظیم الشان لشکر تیار کر رکھا ہے اور جنگ کی تیاری میں مصروف ہیں۔ نعیم بن مسعود مدینہ منورہ آتے وقت اپنا سرمنڈ واکر جنگ کی تیاری میں مصروف ہیں۔ نعیم بن مسعود مدینہ منورہ آتے وقت اپنا سرمنڈ واکر جنگ کی تیاری میں مصروف ہیں۔ نعیم بن مسعود مدینہ منورہ آتے وقت اپنا سرمنڈ واکر ویا تھا تا کہ مسلمانوں کو پیچ چلے وہ عمرہ کر کے آ رہا ہے۔ اس نے مسلمانوں کو مشورہ ویا کہ وہ مدینہ منورہ سے باہر نہ کلیں۔

حضرت عمر فاروق بٹائٹؤ کو جب اس بات کی خبر ہوئی تو آپ بٹائٹؤ ،حضور نی کریم منطق بینے کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا۔

'' یارسول الله منظیمینی آب سنتی الله عز وجل کے سیجے رسول میں پھرمسلمان اس متم کی خبروں سے کیوں گھبرار ہے ہیں۔'' پھر حصرت عمر فاروق رائینی نے حضور نبی کریم منظیمین کواس غزوہ پر جانے

الرائن المراق المالية المواق المالية المواق المواق

کے لئے آمادہ کیا چنانچہ حضور نبی کریم ﷺ نے اس غزوہ پر جانے کا اعلان کر دیا اور صحابہ کرام بڑی ہے واول ہے کفار کا خوف جاتا رہا اور وہ بھی جوق ور جوق غزوہ میں شمولیت کے حاضر ہونے گئے۔ بعدازال جب ابوسفیان (جائیں کوشکر اسلام کے بارے میں معلوم ہوا کہ وہ جنگ کے لئے نکل پڑے ہیں تو اسے نہایت شرمندگی کا سامنا کرنا پڑا۔

غزوهٔ بی مصطلق میں شمولیت:

غزوہ بن مصطلق ۵ ھ میں پیش آیا۔ حضور نی کریم سے ایک حضرت عرفاروق جلائی کا اللہ کی جا سوی کے لئے بھیجا گیا ہے۔ جا سوی سے اعتراف کروالیا کہ وہ الشکر اسلام کی جا سوی کے لئے بھیجا گیا ہے۔ آپ بڑا فیڈ اس جا سوس کو لے کر حضور نبی کریم سے ایک کے خدمت میں حاضر ہو گئے اور تمام احوال بیان کردیا۔

حضور نی کریم سے ایک اسے دعوت حق دی مگراس نے قبول کرنے سے انکار کر دیا چنانچہ اس بد بخت کو قبل کر دیا گیا۔ حضور نبی کریم سے انکار کر دیا چنانچہ اس بد بخت کو قبل کر دیا گیا۔ حضور نبی کریم سے اسلام قبول فاروق بڑا تھے ہوئے اسلام دیں اگر تو وہ دعوت اسلام قبول کریں تو انہیں امان دے دیں اور اگر وہ انکار کریں تو ان کا فیصلہ مگوار ہے کریں چنانچہ آپ دھائی نے حضور نبی کریم سے کہ تھا ہے فرمان کے مطابق انہیں دعوت اسلام دی جسے انہوں نے رد کر دیا۔ آپ بڑا تھے نے ان پر حملہ کر دیا اور بے شار کھار کو جبنم واصل کیا۔

المنت منتون روق كيديل

عبدالله بن الى سلول منافق كم متعلق فيصله:

منقول ہے غزوہ بی مصطلق کے موقع پر حضرت عبادہ بن صامت بیلائو کے لئکر کے کسی مجاہد نے ہشام بن صبابہ انصاری بیلائو کو نہ جانتے ہوئے قبل کر دیا۔ اس موقع پر عبداللہ بن ابی سلول جور کیس المنافقین ہے اس نے انصار سے کہا تم نے انہیں اپنے گھروں میں بناہ دی اور انہوں نے تمہار ہے بی لوگوں کوقل کرنا شروع کر دیا جیسے ہی یہ واپس لومیس تم آئییں اپنے گھروں سے باہر نکال دو۔ جس فروع کر دیا جیسے ہی یہ واپس لومیس تم آئییں اپنے گھروں سے باہر نکال دو۔ جس وقت عبداللہ بن ابی سلول منافق یہ بات کر رہا تھا اس وقت ایک نوعم صحالی زید بن ارقم جائے اور انہوں نے اس بات کا ذکر حضور نبی کریم ہے جائے ہے کیا۔ اس وقت حضور نبی کریم ہے جائے ہے کیا۔ اس وقت حضور نبی کریم ہے جود تھے۔ اس وقت حضور نبی کریم ہے جائے ہے کیا۔ اس وقت حضور نبی کریم ہے جائے ہے گیا ہے بیاں حضرت عمر فاروق برائیڈ بھی موجود تھے۔ آپ بڑائیڈ نے عرض کیا یارسول اللہ ہے بیا جاد بن بشر بڑائیڈ سے کہیں وہ عبداللہ بن ابی سلول کوئل کر دیں۔ حضور نبی کریم سے بیٹھا نے فرمایا۔

''اے عمر (ٹرائٹئز)! جذباتی ہونے کی ضرورت نہیں وگرنہ لوگ سمجھیں گے کہ میں اینے صحابہ دی ٹیٹن کولل کرواتا ہوں۔''

عبداللہ بن ابی سلول منافق کو اس کی خبر ہوئی تو وہ حضور نبی کریم سے پہلے کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کرنے لگا کہ زید بن ارقم بڑا جہا کو سننے میں خلطی ہوئی ہے اور میں نے ایسی کوئی بات نہیں گی۔ پھر حضور نبی کریم سے پہلے نے صحابہ کرام بھائی کوکوچ کرنے کا تھم دیا تا کہ ایسی افواہوں کو پھیلنے سے روکا جا سکے۔

ابن آخق کی روایت ہے عبداللہ بن ابی سلول منافق کے بیٹے نے حضور نبی کریم سے پہلے کی خدمت میں حاضر ہوکر عرض کیا یارسول اللہ سے پہلے میں نے سنا ہی گئی کریم سے پہلے کی خدمت میں حاضر ہوکر عرض کیا یارسول اللہ سے پہلے میں نے سنا ہے کہا کہ کے اور ایسا اس کی گستاخی ہے آپ سے پیلے ہے اور ایسا اس کی گستاخی

و المستر عمر المالي المالي

کی وجہ سے ہے تو مجھے تھم دیجئے میں اس کا سرقلم کر کے آپ ہے ہے۔ کی خدمت میں پیش کرتا ہوں اور اگر آپ ہے ہے۔ نے کسی اور کو تھم دیا کہ وہ میرے باپ کوتل کر ہے تو میں ایر کا ہوں اور اگر آپ ہے ہے۔ نے کسی اور کو تھم دیا کہ وہ میرے باپ کوتل کر ہے تو میں یہ گوارا نہ کر سکوں گا کہ اپنے باپ کے قبل کا بدلہ لوں۔ حضور نبی کریم ہے ہے۔ نے اس موقع پر حضرت عمر فاروق بڑائی ہے فرمایا۔

"تم نے مجھے عبداللہ بن ابی سلول کوئل کروانے کا مشورہ دیا تھا اور اگر میں اسے قبل کروا دیتا تو لوگ مجھ سے بدطن ہو جاتے اور اب اگر اس کے قبیلہ والوں کو تھم دوں تو وہ اسے خود قبل کردیں گے۔"

غزوهٔ خندق میں شمولیت:

مدیند منورہ اور اس کے گردونواح میں رہنے والے یہود یوں کو حضور نی کریم سے ایک اللہ سے قبل عزت و وقار حاصل تھا۔ حضور نی کریم سے ایک اللہ سے قبل عزت و وقار حاصل تھا۔ حضور نی کریم سے ایک اور مدیند منورہ میں دین اسلام کی ترقی کا دور شروع ہوا تو ان یہود یوں کے ساتھ حضور نی کریم سے ایک خطرہ لاحق ہوگا تو مسلمان ان کا ساتھ دیں گے۔ یہود نہ دیں گے اور اگر انہیں کوئی خطرہ لاحق ہوگا تو مسلمان ان کا ساتھ دیں گے۔ یہود ان معاہدول کے باوجود دل میں بغض رکھتے تھے اور موقع کی تلاش میں رہتے تھے۔ ان معاہدول کے باوجود دل میں بغض رکھتے تھے اور موقع کی تلاش میں رہتے تھے۔ یہود یوں نے مشرکین مکہ بالخصوص قریش کے ساتھ اپنے روابط بردھانے شروع کے۔ یہود یوں نے مشرکین مکہ بالخصوص قریش کے ساتھ اپنے روابط بردھانے شروع کے۔ حضور نی کریم سے ایک و جب یہود یوں کی ان سازشوں کی خبر ہوئی تو حضور نی کریم سے ایک ان سازشوں کی خبر ہوئی تو حضور نی کریم سے ایک ان سازشوں کی خبر ہوئی تو حضور نی کریم سے ایک ان سازشوں کی خبر ہوئی تو حضور نی کریم سے ایک کو جب یہود یوں کی ان سازشوں کی خبر ہوئی تو حضور نی کریم سے ایک کو جب یہود یوں کی ان سازشوں کی خبر ہوئی تو حضور نی کریم سے ایک کی جبر ہوئی تو حضور نی کریم سے ایک کا کا کی ان سازشوں کی خبر ہوئی تو حضور نی کریم سے ایک کا کی دینہ سے باہر نکال دیا۔

ذیقعدہ ۵ ھ کو دشمنانِ اسلام کا بیا گھ جوڑ چوہیں ہزار کے لئے کیا۔ حضور میں مدینہ منورہ کی جانب جنگی ساز وسامان سے لیس ہوکر حملے کے لئے آیا۔ حضور بی کریم میں کی جب اس لئکر کی آمد کی خبر ہوئی تو آپ میں آئے بین ہزار صحابہ کرام جی گئے ہے مشتمل ایک لئکر تشکیل دیا اور حضرت سلمان فاری جائے ہے مشورہ سے شہر کے گردایک خندت کی کھدوائی شروع کی جس کی لمبائی قریباً ساڑھے تین میل اور چوڑائی قریباً بانچ گرتھی۔ اس خندت کی گھدوائی شروع کی جس کی لمبائی قریباً ساڑھے تین میل اور چوڑائی قریباً بانچ گرتھی۔ اس خندت کی گھروں کی خندت کی گھروں کی جس کی لمبائی قریباً ساڑھے تین میل نظنے والی مٹی اور پھروں کو خندت کے کنارے اس طرح لگا دیا کہ اس نے ایک مور چہ کی شکل اختیار کرئی۔

مشرکین کالشکر جب مدینہ منورہ کی سرحد پر پہنچا تو شہر کے گرد خندق دیکھ کر پر بیٹان ہوگیا۔ اس نے شہر کا محاصرہ کرلیا اور تیراندازی شروع کر دی۔ صحابہ کرام بی گئی نے بھی جوابا تیر چلائے۔ کم وہیش ہیں دن کے محاصرہ کے بعد اللّٰدعز وجل نے مسلمانوں کی مدد فرمائی اور ایک تیز آندھی آئی جس نے مشرکین کے خیمے اکھاڑ دیے اکھاڑ دیے اور مشرکین جوخود کئی روز کے اس محاصرے سے تنگ آ چکے تھے اور ان کے دیئے اور ان کے

www.iqbalkalmati.blogspot.com منتسب ممشقون اروق کے فیسلے

یاں کھانے بینے کی اشیاء ختم ہو چکی تھیں میدانِ جنگ سے بھاگ گئے۔

الله بما تَعْمَلُونَ بَصِيرًا وَ مَنْدَق كَمَعْلَقُ سُورة الاحزاب مِن يون ارشادفرمايا له عليه الذين المنوا الذكروا نِعْمَة الله عليه عُمْد إذْ جَآءَ تَكُمْ فَوَ الْذَكُرُوا نِعْمَة الله عليه عُمْد أَذْ جَآءَ تَكُمْ وَوَ وَهُ الله عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَ تَكُمْ وَوَ وَهُ الله عَلَيْكُمْ الْذَا الله عَلَيْهُمْ وَيُحَالُونَ وَعُرُودًا لَمْ تَرُوهًا طُوكانَ جَنُود فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ وَيُحَالَ وَجَنُودًا لَمْ تَرُوهًا طُوكانَ الله بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا

"اے ایمان والو! یاد کرواللہ کے احبان کو جبتم پر فوجیں ٹوٹ پڑی تو ہم نے تیز آندھی بھیجی اور ایسی فوج جس کوتم دیکھ نہیں سکتے اللہ وہ سب کھھ دیکھ رہا تھا جوتم اس وقت کر رہے تھے۔"

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق بڑائیڈ بھی خندق کی کھودائی میں دن رات مشغول رہے۔حضور نبی کریم میشؤیڈ جب تھک جاتے تو آپ میشؤیڈ کے پہرے کے لئے حضرت ابو بکرصدیق اور حضرت عمر فاروق بٹی گئی کھڑے ہوجاتے سے حضرت ابو بکرصدیق اور حضرت عمر فاروق بٹی گئی کھڑے ہوجاتے سے دخندق کی تغییر کے بعد حضرت عمر فاروق بڑائی کو خندق کے ایک جھے پر تعینات کیا گیا جہاں آپ بڑائیڈ نے شب وروز پہرہ دیا اور ٹابت قدمی کا مظاہرہ کیا۔

معامره حديبير مين شموليت:

کیم فریقعد ۲ ہے ہیں حضور نبی کریم سے پہنے چودہ سوسحابہ کرام بنی اُنتہ کی ایک جماعت کے ہمراہ حج بیت اللہ اور عمرہ کی ادائیگی کے لئے مکہ مکر مہ روانہ ہوئے اور فروائحلیفہ کے مقام پر قبیلہ خزاعہ کے ایک شخص کو مکہ مکر مہ میں حالات معلوم کرنے فروائحلیفہ کے مقام پر قبیلہ خزاعہ کے ایک شخص کو مکہ مکر مہ میں حالات معلوم کرنے کے لئے روانہ کیا جس نے واپس آ کر اطلاع دی کہ قریش مزاحمت کا ارادہ رکھتے ہیں۔حضور نبی کریم سے میں حضورہ طلب کیا تو حضرت ابو بکر

69 \\ \(\frac{\text{69}}{\text{30}}\)

صدیق بہتن نے مشورہ ویا کہ یارسول اللہ مضری ہم کعبہ کی زیارت کے لئے جانا چاہتے ہیں اور ہمارا ارادہ جنگ کانبیں ہے۔ آپ بضری شریف لے چلیں اگر کس نے مزاحمت کی تو ہم اس کا مقابلہ کریں گے۔ حضور نبی کریم بضری ہے آپ بہتن آپ بہتن کی رائے کو پہند کیا اور ذوالحلیفہ سے روانہ ہوئے اور مکہ مکرمہ سے باہر حدیبیہ کے مقام پر قیام پذیر ہوئے۔ حضور نبی کریم بضری کی بیتے ہیں اور وہ لڑنا چاہتے ہیں۔

حضور نبی کریم مین پید چونکه عمره کی نیت ہے آئے تھے اس کئے آپ مین پیدا ہے۔ اس کے آپ مین پیدا ہے۔ اس کے آپ مین پیدا ہے۔ اس کر بھیجا۔ اس مین پیلا ہے تھے۔ آپ مین پیدا کے حضرت عثمان عنی بیان کو اسفیر بنا کر بھیجا۔ حضرت عثمان عنی بیان کنی بیان کو شہیں قید کر لیا۔ اس دوران میا فواہ بھیل گئی کہ حضرت عثمان عنی بیان کی کے دھزت عثمان عنی بیان کے دھزت عثمان عنی بیان کے دھزت عثمان عنی بیان کو شہید کردیا گیا ہے۔

حضور نبی کریم مضری ایک درخت کے بیچ تشریف فرما تھے آپ مضریک نے تمام صحابہ کرام میں اُنٹیز کو اکٹھا کیا اور ان کے دست حق پر بیعت لی کہ جب تک ان کے دم میں دم ہے حضرت عثان غنی ڈائٹیؤ کے قاتلوں سے بدلہ لیا جائے گا۔ مشرکین مکہ کو جب بیعت رضوان کی اطلاع ملی تو انہوں نے حضرت عثان غنی مٹائٹیؤ کو رہا کر دیا اور آپ میں ہیں ہے سلح کے لئے ایک وفد بھیجا جس کی سربراہی سبیل بن عمرو کر رہا تھا۔ سبیل بن عمرو نے آپ میں ہیں ہات چیت شروع کی اور جب نماکرات کا میاب ہو گئے تو آپ میں ہیں ہی نے جات جیت شروع کی اور جب نماکرات کا میاب ہو گئے تو آپ میں ہیں ہی خصرت اوس بن خولی انصاری جائٹیؤ کو تمام دیا وہ معاہدہ تحریر کریں۔ سبیل بن عمرو نے اس پراعتراض کرتے ہوئے کہا اس معاہدہ کو یا تو حضرت علی الرتھی جائٹیؤ کو تمام دیا کہ وہ معاہدہ حضور نبی کریم بیٹی ہیں جائے تھریر فرما کیں گئے وقتی دیا کہ وہ معاہدہ حضور نبی کریم بیٹی ہیں ہے کہا کہ دہ معاہدہ حضور نبی کریم بیٹی ہیں ہی کہا تھی الرتھی بڑائٹیؤ کو تکم دیا کہ وہ معاہدہ حضور نبی کریم بیٹی ہیں ہے نے حضرت علی الرتھی بڑائٹیؤ کو تکم دیا کہ وہ معاہدہ حضور نبی کریم بیٹی ہیں ہی خصرت علی الرتھی بڑائٹیؤ کو تکم دیا کہ وہ معاہدہ حضور نبی کریم بیٹی ہیں گئے خصرت علی الرتھی بڑائٹیؤ کو تکم دیا کہ وہ معاہدہ حضور نبی کریم بیٹی ہیں ہی خصرت علی الرتھی بڑائٹیؤ کو تکم دیا کہ وہ معاہدہ حضور نبی کریم بیٹی ہی خطرت علی الرتھی بڑائٹیؤ کو تکم دیا کہ وہ معاہدہ

المنت منت وارق كيديل

تحرير فرمائيل وحضرت على المرتضى بثالثغة نے لکھا بسم اللّٰدالرحمٰن الرحيم بسهيل بن عمرو نے اعتراض کیا کہ ہم حمٰن کونبیں جانتے اس لئے تم لکھوبسمك دحفرت علی المرتضلی ہنائی نے حضور نی کریم منتظم کی جانب دیکھا تو آپ منظم نے فرمایا تم ہے۔ اسم اللهم لكه لو-حضرت على المرتضى طالفن في أن آب المنظمة المان كمطابق لكه ديا يهرآب ﷺ فَيْ الله عِنْ عَلَيْهِ مَا عَالَمُ عَلَيْهِ مَعْمَدُ رَسُولَ الله عِنْ عَلَيْهِ لَكُمُو بِهِ ال بن عمرو نے اس پر بھی اعتراض کیا کہ ہم آب مطابع کا کورسول نہیں مانے اس لئے يهال محمد (ﷺ) بن عبدالله (والنفية) لكها جائية حضرت على المرتضلي والنفية نے آب سُطَعَيْنَ كَى جانب ويكفته بوئے فرمايا ميں ينہيں كرسكتا۔ آپ مِطْفَعَيْمَ نے آگے برُ صَكَرِخُود رسول الله كے لفظ منا دیئے اور ان كی جگہ محمد (مضاعینہ) بن عبداللہ (طالعینہ) لكه ديا اور حضرت على المرتضى مِنْ النَّهُ عنه سے فرمایا میں محمد رسول الله (مضَّا عَیْمَةِ) ہوں اور محمد (ﷺ) بن عبدالله (بنائنية) بھی ہوں۔

حفنرت عمر فاروق رنگانٹیڈ فرماتے ہیں میں صلح حدید بیے بعد حضور نبی کریم ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا۔

> ''یارسول الله منظامین این آب منظامین الله کے سیج نی نہیں؟'' حضور نبی کریم منظامین انسان فرمایا۔

> > ''عمر (طِلْنَبُنُهُ)! میں اللّٰہ کا سچا نبی ہوں۔''

حضرت عمر فاروق بنائنی فرماتے ہیں میں نے عرض کیا۔ ''کیا ہم حق پر اور کفار پر باطل پرنہیں؟''

حضور نی کریم منتظام نے فرمایا۔

" بےشک ہم حق پر ہیں اور وہ باطل پر ہیں۔"

حضرت عمر فاروق بٹائٹئۂ فرماتے ہیں میں نئے عرض کیا۔ ''پھر آ پنے وین کے معاملے میں ہم پریہ ذلت کیوں گوارا کی؟''

حضور نبی کریم ہے بیٹے نے فرمایا۔

" میں اللہ کا رسول ہوں اور میں اللہ کی نافر مانی نہیں کرسکتا وہ میری مدد ضرور فرمائے گا۔"

حضرت عمر فاروق طِلْنَغَ فرمات مِیں میں نے عرض کیا۔ '' یارسول اللّٰہ ﷺ کیا آپ نے نہیں فرمایا تھا کہ ہم خانہ کعبہ کا طواف کریں گے؟''

حضورنی کریم سے اللہ نے فرمایا۔

''کیا میں نے کہا تھا کہ ہم اس سال طواف کریں گے؟'' حضرت عمر فاروق طالغیٰڈ فرماتے ہیں کہ میں نے عرض کیا نہیں۔حضور نبی کریم مضابطیۃ نے فرمایا۔

''انشاءاللّٰہتم ضرور بیت اللّٰہ شریف کا طواف کرو گے۔''

حضرت عمر فاروق والنفيذ فرمات میں کہ پھر میں حضرت ابو بکر صدیق والنفیذ کے پاس تشریف لے گیا اور ان سے وہی سوال بوجھے جو میں نے حضور نبی کریم میں بیان شریف ہے ۔ حضرت ابو بکر صدیق والنا بیان نفیذ نے مجھے سے فرمایا۔

"عمر (جالفیٰ)! یا و رکھو! حضور نبی کریم ہے بیت اللہ کے بند سے اور رسول میں وہ اللہ کی نافر مانی نہیں کرتے تم بھی ان کا دامن کی گرے رکھواللہ کی فتم! حضور نبی کریم میں بھی جن پر ہیں۔'

معاہدہ حدیبیہ میں حضور نبی کریم ہے ﷺ کے علاوہ حضرت عمر فاروق ہٹائیڈ اور دیگر ا کابر صحابہ کرام بنی نیٹم نے بھی بطور گواہ دستخط کئے۔ اس معامدے کے بعد مکه مکرمه میں مسلمانوں کی آمدورفت میں آسانی ہوگنی اور فتح مکہ تک یے شارلوگ دائر ہ اسلام میں داخل ہوئے۔معامدہ حدید خضور نبی کریم مضابقہ کی سیاس سوچ کا عكاس ہے اس معاہدہ كے بعد حضور نبي كريم منظ الله كومشركين مكه كي جانب ہے اس بات پراطمینان ہو گیا کہ اب وہ جنگ کے لئے نہیں نکلیں گے۔

غزوهٔ خيبر مين شموليت:

محرم الحرام عرد میں خیبر کا معرکہ پیش آیا۔ مدینه منورہ سے نکالے گئے تمام یہودی قبائل خیبر کے مقام پر آباد ہوئے اور انہوں نے وہاں بلند و بالا قلع بھی تقمیر کئے۔غزوۂ خندق میں قریش کے ساتھ ان کے گھے جوڑ کی وجہ ہے حضور نبی کریم مُشْرِينِ في يبود يول كوسبق سكھانے كا ارادہ كيا اور اينے سولد سو جا نار صحابہ كرام ا الله المنظم كے بمراہ خيبر روانہ ہوئے۔ ان جانثاروں ميں حضرت ابو بكر صديق الله بين الله الله الله الله الله ال شامل شھے۔حضور نی کریم مضاحیات نے صحابہ کرام نی کہنم کومختلف گروہوں میں تقسیم کیا جنہوں نے خیبر کے تمام قلعول پر کامیانی سے قبضہ کیا اور بہود یوں کو پسپا ہونے پر مجبور کردیا۔ خیبر کے بہودیوں نے جزبیا کی ادائیگی برصلح کر لی اور آئندہ کے لئے عہد کیا کہ وہ مسلمانوں ہے جنگ نہیں کریں گے۔

زمین وقف کرنے کا فیصلہ:

صیح بخاری میں حضرت عبداللہ بن عمر طابع اسے مروی ہے قرمات ہیں والد بزرگوار حضرت عمر فاروق بڑائنڈ کوغزوؤ خیبر کے مال غنیمت میں زمین کا ایک منكوا ملا۔ آب بن تر منور نبي كريم منائجية كى خدمت ميں حاضر ہوئے اور عرض كيا

یارسول اللہ منظمین اسے کھے آج سے قبل ایسا عمدہ مال نہیں ملا آپ ہے ہے۔ کہے کیا مشورہ دیتے ہیں میں اسے کیسے استعال میں لاؤں؟ حضور نبی کریم ہے ہیں نے فرمایا تم جا ہوتو اسے وقف کر دواور جا ہوتو اس کی آمدنی حاصل کر واور اسے صدقہ کر دو۔

حضرت عمر فاروق والنيئ نے حضور نبی کریم ہے کے فر مان کے بعد زمین کی آمدن کواس شرط پرصد قد کر دیا زمین فروخت نہیں کی جائے گی اوراس زمین کی آمدنی مجاہدین ، فقراء ، غلامول کو آزاد کروانے ، مہمان نوازی کے لئے اوراقر باء پر خرج کی جائے گی اور جو اس کا نگہبان ہوگا اسے چاہئے وہ اس زمین سے خود بھی کھائے اور دوست کو بھی کھلائے مگر اس کا مال اپنے پاس جمع نہیں کرے گا چنا نچہ آپ بڑا تھی دور میں وہ پہلے محص میں وہ پہلے محص میں جس نے کسی بھی قسم کی زمین یا جائیداد

بن ہوازن کی سرکونی کے لئے سالارمقرر کیا جانا:

ے ہیں ہی حضور نبی کریم ﷺ نے حضرت عمر فاروق جائی کی سربراہی میں تمیں مجاہدین کا اشکر بنی ہوازن کی سرکو بی کے لئے روانہ کیا اور جب بنی ہوازن کی سرکو بی کے لئے روانہ کیا اور جب بنی ہوازن کی سرکو بی کے لئے روانہ کیا اور جب بنی ہوازن کو اشکر اسلام کی آمد کی خبر ہوئی تو وہ فرار ہو گئے اور بوں آپ جائین بغیر لڑائی کے لئکر اسلام کو لے کرمدیند منورہ واپس لوٹ آئے۔

ابوسفیان (سلینیز) کی مدونه کرنے کا فیصله:

رمضان المبارك ٨ ه میں حضور نبی كريم مين بين ايك بر ساسلام الشكر ك بر مراه مكه مكرمه میں داخل ہوئے اور بدو بی شهرتھا جہاں ہے آپ سے بیت و آئے برس مراه مكه مكرمه میں داخل ہوئے اور بدو بی شهرتھا جہاں ہے آپ سے بیت کو آئی شر تھا قبل انتہائی نامساعد حالات میں ہجرت كرنا پڑی تھی اور بدآپ سے بیت کا آبائی شہرتھا

اور مکه مکرمه پرلشکر اسلام کی چڑھائی کی وجہ یہ ہوئی که مشرکین مکه نے معاہدہ حدیبیہ کی دو برس تک پابندی کی اور پھر انہوں نے بنی بکر کے ساتھ مل کرمسلمانوں کے حلیف قبیلہ بنی خزاعہ کو نقصان پہنچایا۔ آپ سے بیج نے مشرکین مکہ کے سامنے تمین شرائط رکھیں۔

- ا۔ بی خزاند کے مقتولوں کا خون بہا دیا جائے۔
- ا۔ قریش بی بکر کی حمایت سے دستبر دار ہو جائے۔
- ۳- اگر بہل دونوں شرا اَطَامنظور نہیں تو اعلان کر دیں کہ معاہدہ حدیبہ یوٹ گیا ہے۔ ہے۔

مشرکین مکہ نے اس وقت تک گھمنڈ میں ہیہ دیا کہ ہم معاہدہ حدیبیہ و ختم کرتے ہیں مگر بعد میں انہیں احساس ہوا کہ وہ غلطی پر ہیں۔ ابوسفیان (مٹائیز) جو اس وقت مسلمان نہ ہوئے تھے انہوں نے سردارانِ مکہ کوسمجھانے کی کوشش کی کہ اس وقت مسلمانوں کی طاقت بہت زیادہ ہے اور ہم ان سے دشمنی معول نہیں کہ اس وقت مسلمانوں کی طاقت بہت زیادہ ہے اور ہم ان سے دشمنی معول نہیں کے سکتے مگر سردارانِ مکہ نے ان کی باتوں کونظرانداز کر دیا۔

حضرت ابوسفیان بڑائی نے معاہدہ حدیبیہ کو بچانے کی کوشش میں مدینہ منورہ کا سفراختیار کیا اور مدینہ منورہ آنے کے بعدا پی صاحبزادی ام المومنین حضرت ام حبیبہ بڑائی کے مکان پر قیام پذیر ہوئے۔ ابوسفیان (بڑائی کی کے حضور نبی کریم سفری کے بستر پر بیٹھنا جا ہا تو ام المومنین حضرت ام حبیبہ بڑائی نباس بستر پر بیٹھنے سے منع کر دیا اور فرمایا یہ حضور نبی کریم سفری کی استر ہے۔ ابوسفیان (بڑائی کی وریم مناسخ کی خدمت میں حاضر ہوئے اور اپنے آنے وہال رکنے کے بعد حضور نبی کریم سفری کی خدمت میں حاضر ہوئے اور اپنے آنے کی مدمت میں حاضر ہوئے کی بات کا کوئی جواب

الاستراع المالي المالي

نہ دیا جس پر ابوسفیان (راہنیڈ) وہاں سے حضرت ابو بکر صدیق راہنیڈ کی خدمت میں حاضر ہوالیکن انہوں نے بھی ابوسفیان (راہنیڈ) کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ ابوسفیان (راہنیڈ) کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ ابوسفیان (راہنیڈ)، حضرت عمر فاروق راہنیڈ ، حضرت عثمان عنی راہنیڈ اور حضرت علی الرضلی راہنیڈ کے باس بھی گئے لیکن انہوں نے بھی ابوسفیان (راہائیڈ) کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔

تاریخ اسلام کے سنہری دور کا آغاز:

جب حضرت ابوسفیان (خلائیز) ناکام ہوکر واپس اوٹ گئے تو حضور نبی

کریم مضری اور اس مقصد کے

لئے اپنے تمام حلیف قبائل کو بھی تھم نامے بھیج دیئے۔ کسی بھی صحابی نے حضور نبی

کریم مضری استی تی ہے ہیں جات بوچھنے کی جرائت نہ کی کہ وہ کس سے جنگ کی تیاری کا تعلم

دے رہے ہیں یہاں تک کہ حضور نبی کریم مضری ہے بھی سی صحابی حتی کہ اپنے ،

راز دان حفرت ابو بکر صدیق بٹائیز سے بھی اس بات کا ذکر نہیں کیا کہ وہ کس سے

جنگ کرنا جا ہے ہیں؟

حضرت ابو بکر صدیق و الفیز، اپنی صاحبزادی ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ والفیز، اپنی صاحبزادی ام المومنین حضرت عائشہ ملی فیڈ و اس المومنین حضرت عائشہ صدیقہ والفیز، بتھیار نکال رہی تھیں۔ آپ و الفیز نے اپنی صاحبزادی سے حضور نبی کریم میں بیٹر کے فرمان کے بارے میں دریافت کیا تو انہوں نے بھی لاعلمی کا اظہار کر دیا۔ جنگ کی تمام تیاریاں انتہائی خاموثی کے ساتھ ہوتی رہیں حتی کہ مراہ مکم مرمہ روانہ ہوئے۔

الشكراسلام جب مقام جحفه پہنچا تو حضور نبی کریم ہے ہیں نے اشکر کو خیمہ زن

. رون کے فیصل کی اول کے فیصل کی اسلام کی کی اسلام کی کی اسلام کی کی اسلام کی کی کی اسلام کی کی کی کی ا

ہونے کا تھم دیا۔ مقام جھہ پرحضور نی کریم سے بیارے چیا حضرت سیدنا عباس ڈاٹنیڈ جو کہ مکہ مکرمہ میں قیام پذیر تھے اپنے اہل وعیال کے ہمراہ حاضر ہوئے اور حضور نی کریم سے بین شکر میں شامل ہوئے۔

مشرکین مکہ کو جب حضور نبی کریم سے ایک کی اقد کی اطلاع ملی تو انہوں نے تحقیق کے لئے ابوسفیان (میلی نفی کے لئے کا اور جب ابوسفیان (میلی کے لئیکر کا جائزہ لیا تو وہ اتنا عظیم والثان لشکر دیکھ کر چیران رہ گئے۔ ابوسفیان میلی نفی نے واپس جا کر مشرکین مکہ سے کہا ابھی بھی وقت ہے وہ جا کر حضور نبی کریم سے کہا ابھی بھی وقت ہے وہ جا کر حضور نبی کریم سے کہا ابھی بھی اور خطرہ ٹل جائے۔

مشركين مكه في ابوسفيان (بنائني) كى بات ما نے سے انكاركر ديا۔ حضرت ابوسفيان بنائني ، حضور نبى كريم سے بي خدمت ميں حاضر ہوئے اور دائرہ اسلام ميں داخل بو گئے۔ لشكر اسلام فاتحانہ انداز ميں مكه مكرمہ ميں داخل ہوا۔ حضور نبى كريم الله ہوئے المان ہے۔ جو شخص الله علی بناہ لے گااس کے لئے المان ہے اور جو شخص ابوسفيان اپنے مير كا دروازہ بندكر لے گااس كے لئے بھى المان ہے اور جو شخص ابوسفيان (بنائين) كے گھر داخل ہوجائے گااس كے لئے بھى المان ہے۔

حضور نبی کریم سے جس وقت مکہ مکرمہ میں واضل ہوئے تو آپ سے بیٹھ این اومنی آصوی پر سوار سے ۔قصوی وہی اومئی تھی جو بجرت کے وقت حضور نبی کریم سے بیٹھ آصوی پر بیٹھ کرآپ سے بیٹھ کر اس سے بڑی اور آج دین اسلام کی سب سے بڑی فتح مکہ مکرمہ کے وقت بھی آپ سے بیٹھ ای اور آج دین اسلام کی سب سے بڑی فتح مکہ مکرمہ کے وقت بھی آپ سے بیٹھ ای اور آج دین اسلام کی سب سے بڑی فتح مکہ مکرمہ کے وقت بھی آپ سے بیٹھ ای اور آج دین اسلام کی سب سے بڑی فتح مکہ مکرمہ کے وقت بھی آپ سے بیٹھ ای اور آج دین اسلام کی سب سے بڑی فتح اور بیٹھ کے دی برار مجاہدین کا ایک لشکر عظیم تھا۔

روایات میں آتا ہے لشکر اسلام حضور نبی کریم ہے ہے۔ کی قیادت میں مکہ مکرمہ کے گرد مرالظہر ان میں خیمہ زن ہوا۔ حضور نبی کریم ہے ہی مناز عباس منافی نے حضور نبی کریم ہے ہی خدمت میں حاضر ہوا سلام قبول کیا۔ ابوسفیان (منافی کی جب لشکر اسلام کی آمد کی خبر ہوئی تو وہ لشکر اسلام کا جائزہ لینے کے لئے آیا اور حضرت سیدنا عباس منافی کی خدمت میں روانہ ہوئے تو ابوسفیان (منافی کی کر حضور نبی کریم ہے ہی خدمت میں روانہ ہوئے تو حضرت عمر فاروق منافی کی ابوسفیان (منافی کی کے کہ کے ایک کے کہ کے ایک کی خدمت میں روانہ ہوئے تو حضرت عمر فاروق منافی کی ابوسفیان (منافی کی کے کہ کے ایک کے کہ کے ایک کی کہ کے کہ کاروائی کی کہ کے ایک کاروائی کی کہ کے کہ کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کاروائی کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کاروائی کی کاروائی کی کاروائی کاروائ

حفرت عمر فاروق بنائنی ، ابوسفیان (بنائنی) کا سرقلم کرنے کے لئے بڑھے تو حفرت سیّدنا عباس بنائنی نے کہا عمر (بنائنی)! انہیں میں نے بناہ دی ہے۔ آپ بنائنی نے ابوسفیان (بنائنی) کے قل پر اصرار کیا تو حضرت سیّدنا عباس بنائنی نے کہا عمر (بنائنی)! اگر ابوسفیان (بنائنی) بن عدہ بن کعب سے ہوتے تو تم ان کو کچھ نہ کہتے۔ آپ بنائنی نے حضرت سیّدنا عباس بنائنی کی بات من کر کہا۔ کہتے۔ آپ بنائنی نے حضرت سیّدنا عباس بنائنی کی بات من کر کہا۔ معاس (بنائنی)! ایسا مت کہو اللہ عز وجل کی قتم! مجھے جتنی خوثی تمہارے اسلام لانے کی بھی نہ ہوتی۔ ''
اسلام لانے کی بھی نہ ہوتی۔''

پھر حضرت سیدنا عباس دلیانن کی تحریک پر ابوسفیان (براینز) نے اسلام قبول کرلیا اور دائرہ اسلام میں داخل ہو گئے۔

دین اسلام کی اس عظیم الشان فتح کے بعدمشرکین مکہ جوق در جوق دائرہ اسلام میں داخل ہونے لیتے حضور نبی کریم سے بیت ایکے حضور نبی کریم سے بیت ایکے حضور نبی کریم سے بیت ایکے وضور نبی کریم سے عظیم اللہ میں داخل ہو گئے تو عورتوں کی سیعت سے فارغ ہو گئے تو عورتوں کی

www.iqbalkalmati.blogspot.com منت منت وق کے نیسلے 18

بيعت پرحضرت عمر فاروق بنائنيَّهٔ كو مامورفر ما ديا_

حنین میں رسول اللہ ﷺ کا ساتھ نہ جھوڑنے کا فیصلہ:

شوال ۸ ھ میں حنین کے مقام پر حق و باطل کے درمیان ایک اور معرکہ ہوا۔ مکہ مکرمہ کے نواح میں ہوازن اور ثقیف دو جنگجو قبائل رہتے تھے جنہیں دین اسلام اور حضور نبی کریم میں ہوازن اور ثقیف ہے ہی شدید نفرت تھی۔ ابر ہہ نے جب خانہ کعبہ پر چڑھائی کی تھی تو اس وقت بھی ایک ثقفی نے اس کی رہنمائی کی تھی۔ فتح مکہ سے قبل ہی یہ لوگ مکہ مکرمہ کے نواح میں واقع بدوؤں کو اسلام کے خلاف ابھار رہے تھے۔

ہوازن اور ثقیف قبائل کو جب معلوم ہوا کہ مسلمانوں نے مکہ فتح کرایا ہوت انہوں نے مکہ فتح کرایا ہوت انہوں نے مسلمانوں کو انہوں نے مسلمانوں کو شکست دے دی تو طائف کے باغات واملاک اور مکہ مکرمہ کی وادیاں سب ان کی ہوجا کیں گی چنا نچہ یہ قبائل چار ہزار افراد کالشکر لے کر مکہ مکرمہ پر چڑھائی کی غرض سے وادی حنین میں اترے۔حضور نبی کریم میں کوشن کے وادی حنین میں اترے۔حضور نبی کریم میں کوجود ہے آپ میں ہوجود ہے آپ میں گو جب یہ خبر ملی تو آپ میں کی صحابہ کرام شی آئین کو جنگی تیاریاں شروع کرنے کا حکم دے دیا۔

لشکر اسلام کی تعداد بارہ ہزارتھی۔ مقدمۃ الجیش کی کمان حضرت خالد بن ولید رفائن کے سپردتھی جس میں زیادہ تر نومسلم اور ناتجر بہ کار ہے۔ اس کے علاوہ دو ہزار ایسے افراد بھی ہتے جو ابھی اسلام نہیں لائے ہے لیکن مال غنیمت کی لالج میں ساتھ ہو لئے ہے۔ ان تمام کمزور یوں کے باوجود لشکر اسلام کی تعداد بارہ ہزار تھی جبکہ بنو ہوازن اور بنو ثقیف کی تعداد چار ہزارتھی۔ لشکر اسلام کی اس کڑت کو

الاستراعم الناف كي فيلا

بنو ہوازن جو تیراندازی کے ماہر تھے انہوں نے لشکر اسلام پر تیروں کی اور وہ تمام نومسلم صحابہ کرام جی انتہا میں ہھکڈر کچے گئی اور وہ تمام نومسلم صحابہ کرام جی انتہا میدانِ جنگ سے فرار ہونے والوں میں دو ہزار افراد کا وہ گروہ بھی شامل تھا جو صرف مالی غیمت کی لالچ میں لشکر اسلام کے ہمراہ آیا تھا۔ کا وہ گروہ بھی شامل تھا جو صرف مالی غیمت کی لالچ میں لشکر اسلام کے ہمراہ آیا تھا۔ اب میدانِ جنگ میں حضور نبی کریم میں آپر کے جانثاروں کے سواکوئی موجود نہ تھا۔ ان جانثاروں میں حضرت ابو برصد ایق، حضرت عمر فاروق، حضرت عثمان غنی، حضرت علی المرتضی، حضرت ابو عبیدہ بن عبیداللہ، حضرت ابو عبیدہ بن الحوام، حضرت ابو عبیدہ بن الحوام، حضرت ابو عبیدہ بن الحراح، حضرت سیدنا عباس جی الشراح، حضرت ابو عبیدہ کرام جی الشراح، حضرت سیدنا عباس جی الفراح، حضرت سیدنا عباس جی الفراح، حسرت سیدنا عباس جی الفراح، میں جی مسلمان شہید ہوئے جبکہ غزوہ حنین میں فتح لشکر اسلام کی ہوئی اور اس معرکہ میں جی مسلمان شہید ہوئے جبکہ بنو ہوازن کے اکہتر افراد مارے گئے۔

حضرت جابر بن عبداللد واللفظ معدمروي ب فرمات بي مم وادى حنين

کی جانب روانہ ہوئے اور دہمن جو پہلے سے ہی وادی کی گھا نیوں میں گھات لگائے ہیے ہی وادی کی گھا نیوں میں گھات لگائے ہی ہی جیفا تھا اس نے ہم پر حملہ کر دیا اور ہم شکست کھا کر یوں بکھر گئے کہ کی واپس بلٹنے نہیں تھے۔حضور نبی کریم مشر کے گھا کھڑے ہوئے اور آپ مشر کے لیارا۔ نہیں تھے۔حضور نبی کریم مشر کی ایک جگہ کھڑے ہوئے کھڑ ایک جگہ کھڑے ہوئے اور آپ میں اللہ کا رسول ہوں ، میں محمد (مشر کے ہوئے ہوئے) ہوں۔''

حضرت جابر بن عبداللہ رہائی فرماتے ہیں حضور نبی کریم مضور ہے اور انصار کے پیار کا کچھاٹر نہ ہوا اور ہر کوئی بھاگ رہا تھا۔ اس موقع پر مہاجرین اور انصار کے کچھاوگ اور آپ مضابی ہے خاندان کے افراد کے علاوہ حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق رہی گئی شاہت قدم رہے۔حضور نبی کریم مضور ہے خاندان کے افراد میں سے حضرت علی المرتضی، حضرت سیّدنا عباس، حضرت سیّدنا فضل بن عباس، حضرت ابوسفیان بن حارث حضرت اسامہ بن زید، حضرت رہیعہ بن حارث اور حضرت ابوسفیان بن حارث رہی گئی ہے۔

حضرت جاہر بن عبداللہ رٹائٹؤ؛ فرماتے ہیں کہ پھرحضور نبی کریم منطق کیا ہے۔ حضرت سیّدنا عباس رٹائٹؤ؛ ہے فرمایا۔

> ''با آوازِ بلند بکاری که اے معشر انصار! اے بیعت رضوان کرنے والو!''

چنانچہ حضرت سیّدنا عباس طلطیٰ نے یونہی بکارا تو لوگ بلٹے اور جواب میں لبیک لبیک کہنا شروع کر دیا۔

غزوهٔ طائف میں شمولیت:

٨ ه من جب حضور ني كريم مضاعة منين سے واپس لو في تو آب مضاعة م

الانت عمر المنتقون اروق كي فيل المحالي المحالي المحالية ا

نے لشکر اسلام کو تھم دیا کہ وہ طائف کا محاصرہ کرلیں چنانچہ آپ سے ایک کے تھم پر لشکر اسلام نے طائف کا محاصرہ کرلیا جو کئی دن تک جاری رہا مگر اس عرصہ میں لشکر اسلام کوکوئی قابل ذکر کامیابی نہ ملی بلکہ کئی مسلمان شہید ہو گئے۔

روایات میں آتا ہے کہ حضور نبی کریم مضری ہے طائف کے محاصرہ کے دوران ایک خواب دیکھا کہ ایک دودھ کا بیالہ آپ شے بیٹی کے سامنے رکھا ہے اور آپ شے بیٹی نے جیسے ہی دودھ نوش فرمانا چاہا ایک مرغ آیا اوراس نے چونچ مارکر وہ بیالہ النا دیا۔ آپ شے بیٹی نے اس خواب کا ذکر حضرت ابو بکر صدیق مٹائٹ ہے کیا اور حضرت ابو بکر صدیق مٹائٹ کے اس خواب کا ذکر حضرت ابو بکر صدیق مٹائٹ کو تعمیر الرویاء کے ماہر تھے انہوں نے فرمایا۔ اور حضرت ابو بکر صدیق مٹائٹ کو تعمیر الرویاء کے ماہر تھے انہوں نے فرمایا۔ ایک طائف کی فتح نہیں ہے۔''

حضور نبی کریم میشندگیا نے فرمایاتم درست کہتے ہو اور میں نے بھی اس خواب کی بہی تعبیر نکالی ہے۔ پھر حضور نبی کریم میشندی نے اشکر اسلام کو کوچ کرنے کا تھم دیا۔

خولہ فرائن بنت محکیم نے جو حضرت عثمان رظائف بن مظعون کی بیوی تھیں انہوں نے حضور نبی کریم مطبق کی خدمت میں حاضر ہو کرعرض کیا یارسول الله مطبق کی خدمت میں حاضر ہو کرعرض کیا یارسول الله مطبق کی اگر آپ مطبق کی افتح نصیب ہوتو بادیہ بنت غیلان کا زبور مجھے عطافر مائے گا کیونکہ بن تقیف میں کسی اورعورت کے پاس اتنا زبور نبیس ہے۔آپ مطافر مائے گا کیونکہ بن تقیف میں کسی اورعورت کے پاس اتنا زبور نبیس ہے۔آپ مطبق کی خرمایا۔

"ا _ خولد (دلائله المجمل المجمل بن تقیف کے متعلق میر محکم مہیں

حضور نبی کریم منطق این استان ایسان سے حضرت عمر فاروق دلیانی استان کے منظرت عمر فاروق دلیانی نام کے عرض کیا۔ نے عرض کیا۔

''اگر تھم ہوتو میں لشکر کے کوچ کرنے کا اعلان کروں۔''

حضور نی کریم مضائلیّا نے اجازت دے دی اور پھر حضرت عمر فاروق رہائیڈ نے لشکر کے کوچ کرنے کا اعلان کیا۔

غزوهٔ تبوک کے موقع پر نصف مال پیش کرنے کا فیصلہ:

۹ ه میں غزوہ تبوک کا واقعہ پیش آیا۔حضور نی کریم مضطیقاً کواطلاع ملی کہ ملک شام کے روی مسلمانوں پر حملہ کرنے کی تیاری کر رہے ہیں چنانچہ حضور نی کریم مطیقی بھی تمیں ہزار صحابہ کرام جی انتخا کے انتگر کے ہمراہ مدینہ منورہ سے روانہ ہوئے اور تبوک کے مقام پر پڑاؤ ڈالا۔ پچھ دنوں بعد معلوم ہوا حضور نبی کریم مطیقی کو جواطلاع دی گئی تھی وہ غلط تھی۔حضور نبی کریم مطابقی حضور نبی کریم مطابقی انتخا کے مقام یہ برانا فیڈ النے کے مقام یہ برانا فیڈ اللہ کا مطابقی حضور نبی کریم مطابقی است عمر فاروق و النا فیڈ سے مضورہ کیا تو آب برانا فیڈ نے عرض کیا۔

" یارسول الله منظر کی بادشاہ کے پاس بے شار فوج ہے اور سامانِ جنگ بھی بے شار ہے اس لئے ہمیں بیرمہم آئندہ دنوں کے لئے رکھ دینی جا ہے۔"

حضور نبی کریم منظام الم حضرت عمر فاروق والنائظ کے مشورہ پرلشکر اسلام کے



ہمراہ واپس مدینہ منورہ تشریف لے آئے۔

روایات میں آتا ہے جس وقت غزوہ تبوک کے لئے تیاریاں شروع کی گئیں وہ گرمیوں کا موسم تھا اور لشکر اسلام کو مالی وحربی وسائل کی کمی کا سامنا تھا۔ حضور نبی کریم ﷺ نے تمام مسلمانوں سے کہا وہ اپنی استطاعت کے مطابق جنگ میں حصہ لیس اور حضرت عمر فاروق رہائی ٹرنے غزوہ تبوک کے لئے اپنا نصف مال راہ خدا میں فراہم کیا۔۔۔

عمر بن خطاب جب فاروق بن کر آگیا محفل کفر و شرک پر اِک سناٹا حیما گیا

O.....O.....O

مدنی زندگی کے اہم واقعات

حضرت عمر فاروق رفائنی مدینه منوره میں شب و روز حضور نبی کریم سے ایک کی خدمت کو اپنا شعار بنا کی خدمت میں حاضر ہوتے تھے اور حضور نبی کریم سے ایک خدمت کو اپنا شعار بنا رکھا تھا۔ ذیل میں آپ بڑائنی کی مدنی زندگی کے چنداہم واقعات بطور نمونہ بیان کئے جارہ جیں اور آپ رفائنی کی مدنی زندگی کے وہ فیصلے جو حضور نبی کریم سے ایک جارہ جیں اور آپ رفائنی کی مدنی زندگی کے وہ فیصلے جارئ میں سنہری حروف میں کی حیات ظاہری میں آپ رفائنی نے کئے اور وہ فیصلے جارئ میں سنہری حروف میں درج ہیں۔

صاحبزادی کی شادی رسول الله طفظیم سے کرنے کا فیصلہ:

ام المونین حضرت هفسه را الفیا، حضرت عمر فاروق والفیز کی صاحبزادی بین اور آپ والفیز کی بها نکاح حضرت حینس بن خذافه والفیز سے ہوا۔ آپ والفیز نے اپنون سے اور آپ والفیز کے ہمراہ حبشہ کی جانب ہجرت کی اور کے اپنون سے بچھ عرصہ قبل واپس مکہ مکرمہ لوٹ آئیں اور پھر جب مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کا حکم ہوا تو آپ والفیز نے اپنے شوہر کے ہمراہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کا حکم ہوا تو آپ والفیز نے اپنے شوہر کے ہمراہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کا سے میں غزوہ بدر میں حضرت جیس بن خذافہ والفیز بھی شریک ہوئے اور انہی زخموں کی وجہ سے شریک ہوئے اور انہی زخموں کی وجہ سے حضرت حسیس بن خذافہ والفیز کا وصال ہوگیا۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com 85 منت عمران وق كينيل

ایک روایت کےمطابق حضرت حنیس بن خذافہ ٹڑگٹٹڈ غزوۂ بدر میں زخمی ضرور ہوئے تھے مگر بعد میں آپ بنائیڈ؛ سے زخم درست ہو گئے تھے اور آپ بنائیڈ نے پھرغزوۂ احد میں بھی شمولیت اختیار کی اور اس مرتبہ جنگ میں سیچھ گہرے زخم آئے اوران زخموں کی تاب نہلاتے ہوئے آپ جلائے نے جام شہادت نوش فرمایا۔ حضرت عبدالله بن عمر والفيئها ہے مروی ہے فرماتے ہیں جب میری بہن حضرت حفصہ بنی خشا، حضرت حنیس بن حذافہ مہمی خلائمۂ کے وصال کے بعد بیوہ ہوئیں تو والد ہزرگوار حضرت عثمان عنی طبالغہ سے ملے اور ان سے کہا کہ اگرتم جا ہوتو میں تمہارا نکاح حفصہ (طِلْعُبُنا) ہے کر دول۔حضرت عثمان عَنی طِلْعَدُ نے جواباً فرمایا مجھے اس معاملہ میں غور کرنے دو۔ جب سچھ دن گزرنے کے بعد آپ طالفنڈ نے حضرت عثمان عنی ذالفنظ سے اس معالم میں دریافت کیا تو انہوں نے انکار کر دیا۔ حضرت عبدالله بن عمر ذالفَخَهُما فرماتے ہیں والد بزرگوار نے حضرت عثمان عنی طالعین کے اس انکار کے بعد حضرت ابو بکر صدیق طالعینے سے اس معالم میں بات کی اور انہیں کہاا گروہ جا ہیں تو میں ان کا نکاح اپنی بنی حفصہ (خلیجنا) سے کر ویتا ہوں ۔حضرت ابو بمرصد لیں خالفیٰ ان کی بات س کر خاموش ہو گئے۔

حضرت عمر فاروق بنائن المركاهِ رسالت الشيئية ميں حاضر ہوئے اور تمام ماجرا حضور نبی كريم مضافية كي گوش كزار كرتے ہوئے حضرت عثمان غنی بنائن كی شكایت كی حضور نبی كريم مضافية بنائل نے فرمایا۔

''تمہاری بٹی کے لئے اللہ عزوجل نے بہتر رشتہ طے کیا ہے۔ اورعثمان (دلائٹیڈ) کے لئے بھی بہتر رشتہ ہے۔'' حضرت عبداللہ بن عمر دلائٹینا فرماتے ہیں چنانچہ کچھ عرصہ کے بعد میری منت عمر المقاروق كي فيصل 86

بہن کا نکاح حضور نبی کریم مشخ ایشا سے ہو گیا اور حضرت عثمان عنی بنائیز کا نکاح حضور نی کریم سے ایک و وسری صاحبز اوی حضرت ام کلثوم طالعی اسے ہوا۔

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طالفین نے اپنی بیٹی ام المومنین حضرت حفصه طِلْعُظِمًا كا نكاح حضرت عثمان غني طِلْعُنَهُ سے كرنے كى خواہش ظاہركى _ حضرت عثمان عنی طالعی سے انکار کر دیا تو حضرت ابوبکر صدیق طالعین سے اس کی خواہش ظاہر کی۔حضرت ابو بکرصدیق طالبیٰ نے خاموشی اختیار کر لی۔حضور نبی کریم سَنَ اللَّهُ اللَّهُ كُومِعلُوم ہوا تو آپ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ مَنْ اللَّهُ اللَّهِ مَا يا۔ '' تمہاری بٹی کے لئے ایک بہتر رشتہ ہے اور عثان رہائین کے

کئے بھی ایک بہتر رشتہ ہے۔''

چنانچه حضور نبی کریم سطان الم المومنین حضرت حفصه ولای است نکاح كرليا اور حضرت عثمان غنى مِنْ لِلنَّهُ كَا نَكَاحِ ابنى صاحبز ادى حضرت سيّده ام كلثوم طِلْ فِينَا ے کر دیا۔ حضرت ابو بکر صدیق طالعیٰ ام المومنین حضرت حفصہ طالعٰ کے نکاح کے بعد حضرت عمر فاروق طالفن سے ملے اور ان سے فرمایا۔

> 'جب تم نے مجھے سے ان کے نکاح کی خواہش ظاہر کی تو میں خاموش رہا اس لئے کہ حضور نبی کریم مٹنے پیشنے بھے سے ان کا ذكر كيا تقا اور ميس حضور نبي كريم منظائيتا كا رازتم يرتبهي فاش تنہیں کرنا حابتا تھا۔''

تم تسی دھوکہ میں مبتلا نہ ہونا:

روایات میں آتا ہے کہ حضور نبی کریم مضائیتا ایک موقع پر اپنی از واج ہے ناراض ہو گئے اور ان سے الگ ہو کر ایک بالا خانے میں تشریف لے گئے۔ صحابہ

کرام شی افتی میں یہ بات مشہور ہوئی حضور نبی کریم میں پیشانے اپنی از واج کوطلاق
دے دی۔ حضرت عمر فاروق و النیمین کو اس بات کی خبر ہوئی تو آپ بڑائیمیٰ ہے حد
پریٹان ہوئے اور حضور نبی کریم میں پیشانے کی خدمت میں حاضر ہوئے گر ملاقات کی
اجازت نہ ملی۔ آپ بڑائیمیٰ دوبارہ آئے گر اس مرتبہ بھی اجازت نہ ملی۔ پھر جب
آپ بڑائیمیٰ تیسری مرتبہ ملاقات کے لئے آئے تو اس مرتبہ آپ بڑائیمیٰ کو ملاقات کی
اجازت مل گئی۔

حضرت عمر فاروق حِلْنَهُ فَهُ مَاتِ مِن جب مِين بالأخانے مِين داخل ہوا تو میں نے دیکھا کہ حضور نبی کریم میں ایک چٹائی پرتشریف فرما ہیں۔ میں نے عرض نبی کریم ﷺ نے اپنا سرمبارک اٹھایا اور فرمایا نہیں۔ میں نے کہا اللہ اکبر! یارسول الله ﷺ ہم قریش میں جوانی بیویوں پر غالب رہتے ہیں اور جب ہم مدینه منورہ آئے تو ہم نے دیکھا یہاں انصار کی بیویاں ان پر غالب ہیں اور پھر ہاری بیو بوں نے بھی ان کی عادات سکھ لیں۔ ایک دن میں اپنی بیوی سے ناراض ہوا اور اس نے مجھے جواب دیا اور مجھے اس کا جواب دینا برالگا۔ اس نے مجھ سے کہاتھہیں میرا جواب دینا برالگا ہے جبکہ اللّٰہ کی قشم! حضور نبی کریم ﷺ کی بیویاں آپ ﷺ کو جواب دیتی ہیں اور بورا ون آپ سے پہلے کو ناراضگی کی وجہ سے چھوڑے رہتی ہیں۔ میں نے کہا جس عورت نے بھیٰ ایسا کیا وہ رسوا ہوئی اور اگر حضور نبی کریم مٹھنے پیٹی کی ناراضگی کے سبب اللّٰہ عز وجل کا غضب ان پر نازل ہوا تو وہ ہلاک ہو گئیں۔ حضور نبی کریم مین بیلانے جب حضرت عمر فاروق بٹائٹیڈ کی بات سنی تو تنبسم

فرمایا۔ آب ڈائٹنڈ نے عرض کیا۔

''یارسول الله منظمینی آج میں حفصہ طالعی کیا تھا اور میں سالم کی تھا اور میں سنتا نہ ہونا تمہاری سوکن میں سنتا نہ ہونا تمہاری سوکن بنت ابو بکر بنائی تم سے زیادہ حسین وجمیل ہیں اور وہ حضور نبی مریم منظم کو محبوب ہیں۔''

بٹی کو مارنے کا ارادہ کیا:

حضرت جابر بن عبداللہ بنائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ حضرت ابو بکر صدیق بنائیڈ تشریف لائے اور حضور نبی کریم سے بیٹے کی خدمت میں حاضری کی اجازت مانگی مگر انہیں اجازت نہ ملی۔ پھر حضرت عمر فاروق رٹائیڈ بھی تشریف لائے اور انہول نے بھی حاضری کی اجازت مانگی مگر انہیں بھی اجازت نہ ملی۔ پھے دہرگز ری تو حضور نبی کریم سے بھتانے نے دونوں صحابہ کرام بڑی گئی کا وات کی اجازت دے دی۔ جب دونوں صحابہ کرام بڑی گئی اندر داخل ہوئے تو حضور نبی کریم اجازت دے دی۔ جب دونوں صحابہ کرام بڑی گئی اندر داخل ہوئے تو حضور نبی کریم میں بیٹے کئی اندر داخل ہوئے تو حضور نبی کریم میں بیٹے کئی ان واج مطہرات بڑی ہی اس وقت اردگرد موجود تھیں اور آپ مطبرات بڑی ہی اس وقت اردگرد موجود تھیں اور آپ مطبرات بڑی ہی ان واج مطہرات بڑی ہی اور آپ مطبرات بڑی ہی اور آپ مطبرات بڑی ہی اندر واخل موجود تھیں اور آپ مطبرات وقت خاموش بیٹھے مٹھے۔ حضرت عمر فاروق رٹائیڈ نے

"یارسول الله منظ الله منظ اگر آپ منظ الله خواه کی بینی (جو حضرت عمر فاروق برایش کی دوجه تحصی) کود کیفتے تو وہ مجھ سے مان و افقہ کا مطالبہ کر رہی تھی اور امیں نے اسے پکڑا اور اس کا گلادیایا۔

حضور نی کریم منطق الله النه حضرت عمر فاروق طالعی بات من کرتبهم فرمایا یهال تک که آپ منطق این واژهیس و کھائی دینے لگیس۔ پھر آپ منطق اینا فرمایا

الانت تريم الموق كرفيه المحالي المحالي

یہ میری از داج جومیر کے گردجمع ہیں یہ بھی مجھ سے نان ونفقہ کا مطالبہ کررہی ہیں۔
حضرت ابو بحرصدیق ڈائٹیڈ نے ساتو کھڑے ہوئے ادر ام المومنین حضرت عائشہ
صدیقہ ڈائٹیڈا کی جانب بڑھے تا کہ انہیں ماریں اور حضرت عمر فاروق بڑائٹیڈ بھی
کھڑے ہوئے اور ام المومنین حضرت حفصہ ڈائٹیڈیا کی جانب بڑھے تا کہ انہیں
ماریں اور یہ دونوں حضرات فرما رہے تھے کہتم حضور نبی کریم میشی ہے اس چیز کا
مطالبہ کرتی ہوجوان کے پاس نہیں ہے۔ آپ میشی ہی دیگر از واج مطہرات بڑائیں
نے جب یہ صورتحال دیکھی تو کہنے گئیں کہ ہم آئندہ حضور نبی کریم میشی ہی ہے اس
چیز کا مطالبہ نہ کریں گی جو آپ میشی ہی ہے یاس موجود نہ ہو۔

بنت ابوبكر شالنين كى ما نند نەكرو:

حضرت عمر فاروق برائی فرماتے ہیں کہ ہم لوگ زمانہ جاہلیت میں عورتوں کی اہم لوگ زمانہ جاہلیت میں عورتوں کی جمامیت نہ دیے تھے دین اسلام نے عورتوں کو ہرابر کے حقوق عطافرمائے چنانچہ ایک مرتبہ میری ہیوی نے مجھے کسی معاملہ میں رائے دی تو میں نے اسے جھڑک دیا۔ اس نے مجھ سے کہا کہ تم میری بات کو ہرداشت نہیں کرتے جبکہ تمہاری بیٹی دیا۔ اس نے مجھ سے کہا کہ تم میری بات کو ہرداشت نہیں کرتے جبکہ تمہاری بیٹی (حفصہ برائٹین) حضور نبی کریم سے بیٹی کو جواب دیتی ہے۔ میں فوراً حفصہ (خوالٹین) کے باس گیا اور اسے ڈانٹا تم حضور نبی کریم سے بیٹی کو ہرابر کے جواب دیتی ہو میں متمہیں عذاب اللی سے خبردار کرتا ہوں تم بنت ابو بکر برائٹین کی طرح نہ کرو جو حضور نبی کریم سے نبی کریم سے نبی کریم سے خود پر فخر کرتی ہیں۔

واقعدا يلاء:

یہ وہ کا واقعہ ہے اس وقت عرب کے دور دراز صوبے زیر تگیں ہو بیکے سے۔ مال غنیمت، فتو حات اور سالانہ محاصل کا بے شار ذخیرہ وقیا فو قیاید بینہ آتا رہتا

المنت بمنت ول كفيل المال المالية تھا۔ فتح خیبر کے بعد نیلہ اور تھجوروں کی جو مقدار از واج مطہرات بڑائیں کے لئے مقررتھی ایک تو وہ خود کم تھی ، پھر فیاضی اور کشادگی کے سبب سال بھر تک بہمشکل کفایت کرسکتی تھی جس کی وجہ ہے آئے دن گھر میں فاقہ ہوتا تھا۔از واج مطہرات جَيْنَ مِينَ بِرْ مِهِ بِرِ مِهِ مِن مِن مِن عَلِيلَ كَى بِينِيانِ بلكه شهراديان واخل تحين جنهون نے اس سے پہلے خود اینے یا پہلے شوہروں کے گھروں میں ناز ونعم کی زند گیاں بسر کی تھیں اس لئے انہوں نے مال و دولت کی بیہ بہتات دیکھ کرحضور نبی کریم مضافیظ سے مصارف میں اضافہ کی خواہش کی۔ یہ واقعہ حضرت عمر فاروق رٹائنٹنز نے سنا تو نہایت مصطرب ہوئے۔ آپ بڑائٹر نے بہلے اپنی صاحبزادی کوسمجھایا کہتم حضور نی كريم ﷺ ہے مصارف كا تقاضا كرتى ہوتم كو جو يچھ مانگنا ہو مجھ ہے مانگو، الله عزوجل کی قتم! حضور نبی کریم مشایقتامیرا لحاظ فرماتے ہیں ورنہ وہ تم کوطلاق دے دیتے۔اس کے بعد آپ شائن ایک ایک بی بی کے گھر گئے اور ان کوبھی یمی تقیحت كى - ام المونين حصرت ام سلمه ظافية ان آب طالفة سے كها-''اَے عمر(مِثَالِثَغَهُ)! تم ہر چیز میں تو دخل دیتے ہی تنصے اب حضور نی کریم مضایقاً کی بیو بول کے معاملہ میں بھی دخل دیتے ہو۔'' حضرت عمر فاروق رہائیڈ اس جواب سے افسردہ ہو کر خاموش ہو گئے۔ ا یک سرتبه حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق بنی نیم مینم دونوں حضور نبی کریم ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوئے تو دیکھا آپ ﷺ درمیان میں ہیں اور دائیں بالنمين ازواج معلهمرات مؤرثينا لبيتهي اييخ اخراجات كالمطالبه كرربي بين بيدونون حضرات اپنی صاحبزاد بول کو مارنے پر آمادہ ہو گئے تو انہوں نے کہا ہم آئندہ حضور

نی کریم میشائیلاً کوزا کدمصارف کی تکلیف نه دیں گے۔

حضور نی کریم مین کی دیگر از واج مطبرات بی کی اس مطالبہ پر قائم رہیں اور انہی دنوں میں حضور نی کریم مین کی دیگر از واج مطبرات بی کی اور انہی دنوں میں حضور نی کریم مین کی گئی گھوڑے ہے گر کر زخمی ہو گئے۔ آپ میں اور انہی دنوں میں حضور نی کریم مین کی گھوڑے ہے گر کر زخمی ہو گئے۔ آپ مین کی ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ والی کی ججرہ ہے متصل ایک بالا خانہ میں قیام کیا اور عبد کیا کہ ایک ماہ تک اپنی ہویوں کے پاس نہیں جاؤں گا۔ آپ مین کی اس عبد پر منافقین نے مشہور کر دیا کہ آپ مین کی اپنی ہویوں کو اپنی ہور کو اپنی ہور کو اپنی ہور کو اپنی ہور کو اپنی ہور

ازواج مطہرات بی بین نے جب حضور نبی کریم مظیرات بی بین کے متعلق ساتو وہ سب جمع ہو گئیں اور رونا شروع کر دیا۔ صحابہ کرام بی انتیا کی جماعت بھی مسجد نبوی سب جمع ہو گئیں اور رونا شروع کر دیا۔ صحابہ کرام بی انتیا کی جماعت بھی مسجد نبوی سنتی کی جماعت بھی مسجد نبوی سنتی کی جماعت بھی مسجد نبوی سنتی کی جمع ہوگئی۔ حضرت عمر فاروق بی کی گئی بالا خانے میں حضور نبی کریم سنتی کی ایک حاضر ہوئے اور عرض کیا۔

طلاق دے دی ہے۔

"بید یارسول الله مضایقی آب مضیرات بنائیل کوطلاق دے دی ہے؟"

حضور نبی کریم منظ کیا ہے فرمایا نہیں بہ جھوٹ ہے۔ پھر حضرت عمر فاروق دلائیڈ نے حضور نبی کریم منظ کیا ہے تھا کہ اس کی منادی کروا دی اور صحابہ کرام ہی اُئیڈ نے حضور نبی کریم منظ کی ہے تھا ہے تھ

عبدالله بن اني منافق كم تعلق آب طالفيد كا فيصله:

جب عبداللہ بن ابی منافق کی وفات ہوئی تو حضور نبی کریم ﷺ اس کی نماز جنازہ پڑھانے کے لئے تشریف لے گئے۔حضرت عمر فاروق جلائے نے حضور نبی کریم سے بیٹی نے حضور نبی کریم سے بیٹی کے منافق کی نبی کریم سے بیٹی کے سامنے آکر کہا کہ یارسول اللہ منے بیٹی آپ منافق کی منافق کی

نمازِ جنازہ پڑھاتے ہیں جبکہ اس نے فلال وفت میں فلال بات اسلام اور مسلمانوں کے خلاف کی تھی۔حضور نبی کریم ﷺ نے تبسم فر مایا اور فر مایا۔

"اے عمر (بڑائنڈ)! سامنے سے ہٹ جاؤ اور مجھے اس کی نماز جنازہ پڑھنے اور نہ پڑھنے دونوں کا اختیار دیا گیا ہے۔ میں نے اس کی نمازِ جنازہ پڑھنے کو پہند کیا اور مجھے کہا گیا جاہوں تو اس کی نمازِ جنازہ پڑھنے کو پہند کیا اور مجھے کہا گیا جاہوں تو اس کی مغفرت کی دعا کروں تو وہ قبول نہ میں ستر مرتبہ اس کے لئے مغفرت کی دعا کروں تو وہ قبول نہ ہوگ جبکہ اس سے زیادہ کروں گا تو وہ قبول ہوگی اور میں اس کے لئے ستر سے زیادہ مرتبہ مغفرت کی دعا کرتا ہوں۔"،

حضور نبی کریم ﷺ نے عبداللہ بن ابی منافق کی نمازِ جنازہ پڑھائی اور پھراس کی قبر پر کافی دیریک کھڑے رہے۔ پھراللہ عزوجل نے حضرت عمر فاروق چائنڈ کی تائید میں سورۂ التو یہ میں ارشاد فرمایا۔

''اور ان میں ہے کسی کی میت پر بھی نماز نہ پڑھنا اور نہ اس کی قبر پر کھڑ ہے ہونا بلاشیہ میہ اللہ اور رسول سے منکر ہوئے اور فاسق ہی مرے۔''

ججة الوداع مين شموليت:

ذی الحجہ ۱۰ اھ میں حضور نبی کریم میں چھت الوداع کے لئے مکہ مکرمہ تشریف کے گئے۔ حضرت عمر فاروق طالغیز بھی اس مبارک سفر میں حضور نبی کریم میں بیٹنے بھتا کے ہمراہ مناسک جی میں حصور نبی کریم میں بھتا ہے ہمراہ مناسک جی میں حصدلیا اور حضور نبی کریم میں حصدلیا اور حضور نبی کریم میں تھا ہے ہمراہ کریم میں حصدلیا اور حضور نبی کریم میں تھا ہے ہیں امورکی ذمہ داریاں آپ زبائین کو

المنت بمنتون روق كيسل

سونی تھیں انہیں احسن طریقے ہے انجام دیا۔ جمۃ الودائ سے واپسی کے بچوعرصہ بعد حضور نبی کریم منظم کے بجد حضور بعد حضور نبی کریم منظم کی طبیعت ناساز ہوگئی اور چندروز کی ماوالت کے بعد حضور نبی کریم منظم کی فالمری وصال ہوگیا۔

منافق كاسرقكم كرنے كا فيصله:

ایک مرتبہ ایک منافق حضور نی کریم سے پہر کے پاس کسی فیطے کے لئے حاضر ہوا۔ آپ سے بھانے نے فیصلہ اس کے خلاف کیا۔ وہ منافق حضرت عمر فاروق برائیڈ کے پاس گیا اور آپ بڑائیڈ سے فیصلہ کرنے کو کہا۔ آپ بڑائیڈ نے اس سے پوچھا کیا تو حضور نبی کریم سے بھائیڈ کے پاس فیصلے کے لئے نبیس گیا۔ اس نے کہا حضور نبی کریم سے بھائیڈ کے پاس فیصلے کے لئے بیس گیا۔ اس نے کہا حضور نبی کریم سے بھائیڈ نے اس لئے میں آپ بڑائیڈ کے پاس فیصلے کے لئے عاضر ہوا ہوں۔ آپ بڑائیڈ نے اس منافق کی بیہ بات نی تو تلوار نکال فیصلہ سے کہا مور مایا کہ تو نے حضور نبی کریم سے بیٹ کا فیصلہ سالم کردیا اور فرمایا کہ تو نے حضور نبی کریم سے بیٹ کا فیصلہ سالم کردیا اور فرمایا کہ تو نے حضور نبی کریم سے بیٹ کا فیصلہ سالم کردیا اور فرمایا کہ تو نے حضور نبی کریم سے بیٹ کا فیصلہ سالم کردیا اور فرمایا کہ تو نے حضور نبی کریم سے بیٹ کا فیصلہ سالم کردیا اور فرمایا کہ تو نے حضور نبی کریم سے بیٹ کا فیصلہ سالم کردیا اور فرمایا کہ تو نے کو دیا۔

O.....O.....O

حضورنى كريم طشيئة كاظامرى وصال

ابوسعید بنالنیز سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک دن حضور نبی کریم مضاحیاتا منبر پرتشریف فرما تھے آپ منظے کیٹائے فرمایا اللہ عزوجل کا ایک بندہ ایبا ہے جسے الله عزوجل نے اختیار دیا جاہے دنیاوی دولت حاصل کرے جاہے اللہ عزوجل کے پاس رہنا بیند کرے اور پھراس نے اللہ عزوجل کے پاس رہٹا پیند کیا۔حضرت ابو بکر صدیق رنانغذ نے جب آب مضاعیم کی بات سی تو رو پڑے اور جان گئے آپ مضاعیم کم کے وصال کا وقت آن پہنچا ہے۔حضرت ابو بکر صدیق مٹائٹۂ نے رویتے ہوئے عرض کیا جمارے مال باپ حضور نبی کریم مضاعیکا پر قربان ہوں اس بندے سے مراو خود حضور نبی کریم منظار این است این منظار این منظار این است او کول سے زیادہ مجھ پر ابوبكر (ینانیخهٔ)نے احسان کئے اور وہ احسان مال کا بھی تھا اورصحبت کا بھی تھا اور اگر میں اللّٰدعز وجل کے سواکسی کو اپنا دوست بناتا تو یقیناً ابوبکر (مٹائنے:) کو بناتا اور اب خلت نہیں مگر اسلامی اخوت قائم ہے اور مسجد میں تمام دروازے بند کر دو ماسوائے ابوبکر (مٹائنڈ) کے درواز ہے کے۔

حضرت عبداللہ بن عباس رہائے ہا ہے مروی ہے قرماتے ہیں جب سورہ نفر نازل ہوئی تو جس سورہ نفر نازل ہوئی تو حضور نبی کریم سطے ہیں اور ان میں نازل ہوئی تو حضور نبی کریم سطے ہیں ہے خصرت سیدہ فاطمہ الزہراؤ النجنا کو بلایا اور ان مسے فرمایا مجھے میرے وصال کی خبر دے دی گئی ہے۔ یہ من کر حضرت سیدہ فاطمہ

الانتساسية مم ينتقون أوق كي فيصل 95 الزہرا نیکٹنا رونے لگ گئیں۔ آپ منتظ کیا ہے ان سے فرمایاتم مت روؤتم میرے اہل میں سب سے پہلے مجھ ہے آن ملوگی۔حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا طالبینا نے سنا تو مسكرا دير ـ ام المونين حضرت عائشه صديقه والنبيًّا نے حضرت سيّدہ فاطمه الزبرا طَلِّهُما کی رہے کیفیت دلیمی تو وجہ دریافت کی مگر وہ ٹال ٹئیں۔ آپ می<u>شن</u>وری کے وصال کے بعد جب ایک مرتبہ پھرام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ طابعین نے حضرت سیّدہ فاطمه الزہرا والعظم سے وجہ دریافت کی تو انہوں نے بتایا کہ حضور نبی کریم مشاریق نے مجھے اپنے وصال کی خبر سنائی جسے من کر میں رو پڑی۔ پھر آپ مٹے کیٹی انے فرمایا کہ تم میرے اہل وعیال میں سب سے پہلے مجھ نے ملوگ جسے من کر میں ہنس پڑی تھی۔ حضرت عبدالله بن عباس والغظما سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم مِنْ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ الصَّارِ كَمِرِداورعورتين مبحد ميں رور ہے ہيں حضور نی کریم مضایقة تشریف لائے اور فرمایا تمہیں کس چیز نے ولایا ہے؟

حضرت عبداللہ بن عباس ڈالٹھ نا فرماتے ہیں ہم نے عرض کیا یارسول اللہ سطان آئی ہم نے عرض کیا یارسول اللہ سطان آئی ہم آپ مطاب کے وصال کے ڈر سے رور ہے ہیں۔ آپ مطابی منبر پرجلوہ افروز ہوئے اور آپ مطابی آئی نے ایک جا در لیبٹ رکھی تھی جس کے دونوں پلو کندھوں پر شھے۔ آپ مطابی میں اللہ عزوجل پر بی باندھ رکھی تھی آپ مطابی اللہ عزوجل کی حمد و ثناء کے بعد فرمایا۔

"اے لوگو! لوگ تعداد میں بڑھ جا کیں گے اور انصار کم ہو جا کیں گے یہاں تک کہ انصار کھانے میں نمک کی مقدار برابر رہ جا کیں گے یہاں تک کہ انصار کھانے میں نمک کی مقدار برابر رہ جا کیں گے جولوگوں کے امور میں سے کسی امر کا ولی ہواس کے لئے ضروری ہے کہ ان میں سے بھلے لوگوں کے ساتھ اچھا

منت ممنت ول كيدل

سلوک کرے اور ان کے خطا کاروں ہے درگز رفز مائے۔''

حضرت عبدالله بن مسعود طلخها سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ہمیں حضور نبی کریم منتظ ﷺنے اپنے وصال کی خبر ایک روز قبل دی۔ ہم ام المونین حضرت عا مُثهُ صدیقہ بنائخنا کے حجرہ مبارک میں جمع ہوئے آپ سے پیٹے نے ہماری جانب دیکھا تو آب سُن الله الله المحول سے آنسو جاری ہو گئے۔ آپ سُنے اللہ نے فرمایا۔ " الله تم لوگول كوزنده ركھے اور تمہاري حفاظت فرمائے۔ الله تم کواینی پناہ میں لے اور تمہاری مدد کرے اور تمہیں بلندی عطا فرمائے۔اللہ تمہیں مدایت عطا فرمائے اور تمہارے رزق کشاوہ كرے۔الله تهمیں توفیق دے اور تمہیں سیح سالم رکھے۔ میں حمهمیں اللہ ہے ڈرنے کی وصیت کرتا ہوں اور حمہمیں اللہ کے سپرد کرتا ہوں اور اسے تم پر خلیفہ مقرر کرتا ہوں جو تمہیں کھلا ڈرانے والا ہوتا کہتم اللہ کے بندوں اور اللہ کے شہروں کے بارے میں اللہ پر زیادتی نہ کرنا بے شک اللہ نے تمہارے اور میرے متعلق فرمایا ہے کہ رہ عالم آخرت ہم ان ہی لوگوں کے کئے خاص کرتے ہیں جو دنیا میں نہ بڑا بنتا جاہتے ہیں اور نہ فساد پھیلاتے ہیں اور پر ہیز گاروں کے لئے بہترین اجر ہے اور کیا تکبر کرنے والوں کا ٹھانہ دوزخ نہیں ہے۔ موت نزد کیک ہے اور اللہ کی طرف لوث کر جانا ہے اور سدرة المنتی کی طرف اور جنت الماوي كي جانب اور پورے پياله كي جانب اور رفيق اعلیٰ کی جانب بوٹ کر جانا ہے۔''

منت بمنتون رق كيدل المعلق المع حضرت عبدالله بن مسعود طلطفهٔ فرماتے ہیں ہم نے عرض کی یارسول الله ين الما ين المنظمة المحسل كون و الما كا؟ آب النظمة إن فرمايا مير الله مين س نزد كى شخص ـ ہم نے عرض كيا آپ مشائلاً لم كوكفن كوك سا ديا جائے؟ آپ مشائلاً نے فرمایا میرے انہی کپڑوں سے یا نیمنی جا دروں میں سے یامصر کے سفید کپڑے میں ہے۔ہم نے عرض کیا آپ مشے بھٹے کی نمازِ جنازہ کون پڑھائے گا؟ اور بیہ کہہ کر ہم رو پڑے۔ آپ مضاع اللہ عز وجل تمہاری مغفرت فرمائے اور تم لوگ جب میرے عسل سے فارغ ہو چکوتو مجھے میری جاریائی پرمیرے گھر میں میری قبر کے پاس رکھنا اور تھوڑی دہر کے لئے گھر سے باہر چلے جانا اس لئے کہ سب سے پہلی میری نمازِ جنازہ جبرائیل علیائی پڑھیں گے، پھر میکائیل علیائیں، پھر اسرافیل عَلِيْنَا اور پھر ملک الموت مع اینے لشکر کے اس کے بعد تمام ملائکہ اور اللہ ان سب پراپی رحمت نازل فرمائے اور پھرتم جماعت در جماعت داخل ہونا اور مجھ پر درود و سلام کیڑھنا اور کسی رونے والی ہے مجھے کوئی تکلیف نہ دینا۔ ہم نے عرض کیا آپ مِنْ يَكُمُ لَا تَعْرِمبارك مِن كون اتارے كا؟ آپ مِنْ يَعَيْنَ نِے فرمايا ميرے كھركے لوگ مع ملائکہ کے اور ملائکہ تمہیں و مکھ رہے ہوں گے اور تم انہیں نہیں و مکھ سکو گے۔ روایات میں آتا ہے 14 صفر المظفر کوحضور نبی کریم مضایقاتی جنت البقیع تشریف کے گئے اور جنت البقیع سے واپسی پر آپ مضافین کی طبیعت ناساز ہوگئی۔ آب منط كالمران مطهرات بنائيل سهاجازت سلكرام المونين حضرت عائشه صدیقہ ذالغ کے مجرو مبارک میں قیام کیا۔طبیعت کی خرابی کے باوجود آپ ينظير الماز موكن المن المراج المائية ا ينظ المينا المعرف المال المعنى والفنظ كوبلايا اور البيل علم دياكه وه حضرت ابو بمرصديق

صرف ابوبكر (طالفينه) ہى كريں گے۔

ایک دن ظهر کے وقت حضور نبی کریم سے ایک المرتفیٰ المرتفیٰ

"میرے بعد میری قبر کو بہود و نصاریٰ کی طرح سجدہ گاہ نہ بنا اور میں تم کو انصار کے حق میں وصیت فرماتا ہوں کہ یہ لوگ میرے جم کے پیرائن ہیں اور انہوں نے میرے متعلق ایخ حقوق کو پورا کیا ہے اور ان میں سے اچھا کام کرنے والوں کوعزت کی نگاہ سے ویکنا اور لغزش کرنے والوں سے درگزر سے کام لینا۔ تم ایک بندہ ایبا بھی ہے جس کے سامنے و نیا کو پیش کیا گیا گراس نے آخرت کو اختیار کیا۔"

حضرت ابو بكرصديق والنفاذ نے جب حضور نبى كريم مضاع الله كى بات سى تو

''اے ابو بکر (بنائیڈ)! تسلی رکھواور ابو بکر (بنائیڈ) کے درواز ہے کے علاوہ مسجد کی جانب کھلنے والے تمام درواز ہے بند کر دواور کو علاوہ مسجد کی جانب کھلنے والے تمام درواز ہے بند کر دواور کوئی ایبانہیں سوائے ابو بکر (بنائیڈ) کے جسے میں اپنا دوست رکھتا ہوں۔

حضرت ابو بمر صدیق طالفیہ نے بوقت وصال حضور نبی کریم مضابِیہ ہے دريافت كيا يارسول الله مِنْ يَعْنَا أَبِ مِنْ يَعْنَا كَا وصال كا وقت آن بَهْ إِلَا عَهِ آبِ يضائياً نے فرمایا وصال بہت قریب ہے۔حضرت ابو بکرصدیق طالغیز نے عرض کیا جو اللہ کے پاس ہے وہ آپ منظور کھنے کو مبارک ہو کاش ہمیں ہارے انجام کی بھی کچھ خبر ہوتی؟ آپ مضائی الے نے فرمایا سدرۃ انتہی، جنت المادی، فردوسِ اعلیٰ، شرابِ طہور ہے بھرے ہوئے پیا کے اور رفیق اعلیٰ کی جانب مبارک زندگی کی بشارت ہو۔حضرت ابو برصدیق والنفظ نے عرض کیا یارسول الله مضاعیّن آب النفظیّن کونسل كون دے گا؟ آب مضافينة نے فرمايا ميرے اہل۔حضرت ابوبكر صديق طالفن نے عرض کیا آب منظ کیا کوکفن کون سا دیا جائے؟ آب منظ کیا آنے فرمایا میرے انہی کپڑوں سے اور مینی لباس اور مصری سفید جا در سے۔حضرت ابو بکر صدیق طالفیٰ نے عرض کیا یارسول اللہ مضاعی اللہ اللہ مضاعی آب مضاعی کی نماز جنازہ کون پڑھائے گا؟ آب سُطِيَعَةً نے فرمایا اللہ تمہیں بہترین جزا دے جب تم مجھے عسل دیے چکو اور کفن بہنا

چکوتو پھر جھے میرے گھر میں میری قبر کے نزدیک چار پائی پر رکھ دیا اور پھر باہر
نکل جانا۔ سب سے پہلے اللہ عزوجل درودوسلام پڑھیں گے۔ اس کے بعدتم گروہ در
گا۔ پھر فرشتے آئیں گے اور جھ پر درودوسلام پڑھیں گے۔ اس کے بعدتم گروہ در
گروہ اندر داخل ہونا اور جھ پر درودوسلام پڑھنا۔ تم لوگ روکر جھے تکلیف نہ پہنچانا۔
حضرت ابو بکر صدیق بڑائیڈ نے عرض کیا یارسول اللہ بھے بھٹا آپ بھی بھٹا کو قبر میں
کون اتارے گا؟ آپ بھی بھٹانے فرمایا کہ میرے اہل۔

ام المومنين حضرت سيّده عا نشه صديقه والنّخهُ فرماتي بين كه حضور نبي كريم يَصْ اللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّاللَّهُ اللَّهُ اللّ مشورہ سے میرے حجرہ میں قیام کیا۔ میں آپ مضائقۂ کی تیارداری میں مصروف ر ہی۔ ایک روز آپ منطق یکم کا سرمبارک میرے کندھے پر تھا کہ آپ منطق یکم کا سر مبارک میرے سرکی جانب ماکل ہوا۔ میں نے گمان کیا کہ شاید کسی حاجت کا ارادہ میرے سینہ میں ہنلی کی ہڑی کی گہرائی میں جاگرا جس سے میرےجم کی رو تکنے کھڑے ہو گئے۔ میں نے خیال کیا شاید آپ مطاب ہے۔ میں نے آپ مضاعی کا و چادر سے ڈھانی دیا۔ اس دوران حضرت عمر فاروق اور حضرت مغیرہ بن شعبہ ری النہ آ گئے۔ انہوں نے اندر آنے کی اجازت طلب کی اور میں نے ان کو اندر بلا لیا اور یردہ تھینج لیا۔حضرت عمر فاروق مٹائٹے نے جب آپ سُطُوَ اللَّهِ كَا بِ مِوثَى كو ديكها تو كها كه كتنى سخت بِ موثى بي؟ حضرت مغيره بن شعبه و النفظ كہنے كے حضور نبي كريم مضاعظة كا وصال ہو كيا ہے۔ ميں نے كہا كہتم جموث كبتيح بهواور فتنه يهيلانا حابت بهوب شك آب يضيئيكم كاوصال اس وفت تك نه بهو

حضرت عمر فاروق طالفيز نے تلوار میان سے باہر نکال کی:

ام المومنين حضرت عائشه صديقه والغفاظ أفرماتي بي كه جب حضور نبي كريم مضيئة كا وصال مواتو لوگ الحقے مو كئے اور رونے كى آوازيں بلند مونے لگيں۔ فرشتوں نے آپ منظ عِنْه كوآپ منظ كا كروں ميں لبيث ديا۔ آپ منظ كا اُ وصال کے متعلق لوگوں میں اختلاف ہو گیا۔ بعض نے آپ مطابط کی موت کو جھٹلا د یا، بعض گو نگے ہو گئے اور طویل مدت کے بعد بولنا شروع کیا۔ بعض لوگول کی حالت خلط ملط ہوگئی اور بے معنی باتیں کرنے لگے، بعض حواس باختہ ہو گئے اور بعض عم سے نڈھال ہو گئے۔حضرت عمر فاروق طالفنہ ان لوگوں میں سے تھے جنہوں نے آپ ﷺ کی موت کا انکار کر دیا تھا۔حضرت علی الرتضی طالفنوعم سے نڈھال ہوکر بیٹھنے والوں میں تھے اور حضرت عثان غنی طالنیز ان لوگوں میں سے تھے جو کو نگے ہوکررہ گئے تھے۔حضرت عمر فاروق طالفن نے اپنی تکوار میان سے نکال کی اور اعلان کر دیا که اگر کسی نے کہا کہ حضور نبی کریم مضایحیا کا وصال ہو گیا ہے تو میں اس كا سرقكم كر دول گا اور آپ مضيئة تا بھى حضرت موسىٰ عَليْنَامِ كى طرح جاليس دن کے لئے اپنی قوم سے پوشیدہ ہو گئے ہیں اور جالیس دن بعد آب سے ایک میں واپس آجائیں سے۔

ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ ذائی اللہ عضرت ابو بھر صدیق دائی ہیں حضرت ابو بھر صدیق دائی ہے کہ اسلام ملی تو اس وقت آپ دائی ہی عارث بن خزرج کے

المونین حضور نی کریم میضی کی خدمت میں حاضر ہوئے، کو خدمت میں حاضر ہوئے، حضور نی کریم میضی کی خدمت میں حاضر ہوئے، حضور نی کریم میضی کی خدمت میں حاضر ہوئے، حضور نی کریم میضی کی جانب دیکھا، پھر جھک کر بوسہ دیا اور فر مایا۔
"یار سول اللہ میضی کی جانب دیکھا، پھر جھک کر بوسہ دیا اور فر مایا۔
"یار سول اللہ عز وجل آب میرے مال باپ آپ مین پھھائے
"ہوں اللہ عز وجل آپ مین کریم میضی پھٹا جو صال فرما گئے۔"
ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ فران خیا فرماتی ہیں پھر حضرت ابو بحرصد بی ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ فران خیا اے اور فرمایا۔

''اے لوگو! جومحمد منظے کی عبادت کرتا تھا تو یادر کھے محمد منظے کی اور کے منظے کی اور کے منظے کی اور جومحمد منظے کی اور جومحمد منظے کی تا تھا وصال فرما گئے ہیں اور جومحمد منظے کی تا تھا تو یادر کھے کہ دہ زندہ اور بھی نہیں مرے گا۔''

الله عزوجل كا فرمان ہے۔

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدُ خَلَتُ مِنْ قَبْلِهِ الرَّسُلُ ۖ فَا مُخَمَّدُ اللّهِ الرَّسُلُ الْفَالْمَ مُعْمَى الْفَعَابِكُمْ وَمَنْ الْفَالْمَ مُعْمَى الْفَعَابِكُمْ وَمَنْ الْفَالِثُ مَاتَ أَوْ قَبِلُ الْفَلَابُ مُعْمَى اللّهَ مَيْنًا طُوسَيَجْزِى يَنْ فَلْ يَعْمُو اللّه شَيْنًا طُوسَيَجْزِى اللّهُ الشَّاكِرِينَ •

''ادر محمد مضائع آبات ایک رسول ہیں ان سے پہلے بھی کی رسول ہو سے تھے تو کیا اگر وہ وصال فرما جا کیں یا شہید ہو جا کیں تو تم الئے پاؤں پھر جاؤ گے اور جو شخص الٹا پھر جائے گا تو اللہ کا کچھ نقصان نہ کر ہے گا اور اللہ جلد ہی اجر وے گا شکر گزاروں کو۔'' مضرت عبداللہ بن عباس ڈاٹوئنا فرماتے ہیں جب حضرت ابو بکر صدیق

الانت المعلقة في المعلقة المعل

خالفہٰ نے بیآیت مبارکہ تلاوت فرمائی تو معلوم ہوتا تھا کہ ہم میں سے کوئی پہلے اس آیت کو جانتا نہ تھا۔

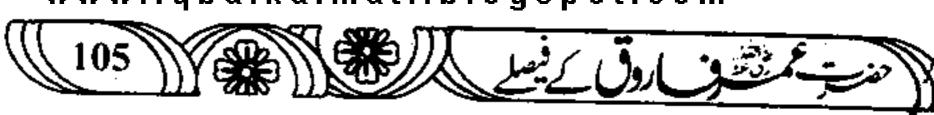
حضرت عمر فاروق منافغة فرمات بين مين نے جب بي آیت مبارکه من تو مجھے یقین ہوگیا کہ حضور نبی کریم مضر کیا ہے۔ مجھے یقین ہوگیا کہ حضور نبی کریم مضر کیا ہے۔

''اے اللہ! ہم گوائی دیتے ہیں کہ جو پھھ آپ ہے گاہر نازل
کیا گیا آپ ہے گئے آپ اس کی تبلیغ فرمائی اور اپنی امت کو
نصیحت فرمائی اور اللہ کے راستہ میں جہاد کیا اور اللہ کے دین کو
عزت بخشی اور اللہ کے کلمہ کو پورا کیا اور اے اللہ! ہمیں بھی ان
لوگوں میں ہے کر دے جو آپ ہے گئے ہے گول کو پورا کرنے
والے ہیں اور ہمیں آپ ہے گئے کے ساتھ جمع کر دے ۔ ہم آپ
سے بھی پیدیر ایمان لائے اور اس کے عوض ہم نے کوئی قیمت طلب
شے کی گئے ہے۔ اور اس کے عوض ہم نے کوئی قیمت طلب
شے کی گئے۔''

مہاجرین وانصار نے اس کے جواب میں آمین کہا۔ سیرت ابن ہشام میں منقول ہے حضور نبی کریم منظام کی تجہیر و تکفین کا

معاملہ پیش آیا تو صحابہ کرام رہی گئی اس شش و نئے میں مبتلا ہوئے حضور نبی کریم مضافیق کی تدفین کہاں کی جائے؟ اس موقع پر حضرت ابو بکر صدیق رہائی نے فرمایا۔
"میں نے حضور نبی کریم مضافیق اسے سنا ہے نبی جس جگہ وصال
فرما تا ہے ای جگہ اس کی تدفین عمل میں آتی ہے۔"
چنانچے حضور نبی کریم مضافیق کوام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ والحق کے جمرہ میں مدفون کیا گیا۔

ان کی نگاہِ لطف کا اعجاز سوچنا ہر سمت بھر وہ ذوقِ ہمہ گیر دیکھنا ہو آقائے دو جہال کی غلامی سے عکس ریز میری جبیں کی تابش تحریر دیکھنا میں۔۔۔۔۔۔



تيراياب:

خلافت صديق اكبر طالتين اورعمر فاروق طالتين

حضرت ابو بمرصد بق طالفند کی بیعت کا فیصله دورِصد بقی طالفند میں اہم امور برمشورہ دینا دورِصد بقی طالفند میں اہم عہدوں برتعینات رہنا

O____O

آپ دامادِ علی طالعی طالعی بین اور مرادِ مصطفی طبیعی بین کون حفصه طالعی ایوت ، حضرت فاروق طالعی بین بین جب فصصه طالعی ایوت ، حضرت فاروق طالعی بین جب فلسطین جا رہے تھے سونیا حبیدر طالعی کو نظام واقف رمز حکومت حضرت فاروق طالعی بین

www.iqbalkalmati.blogspot.com 107) المنتوال كيسل

حضرت ابوبگر صد لین طالعین کی بیعت کا فیصلہ

حضور نی کریم بین بین انسار کا اید دولی تھا کہ وہ حضور نی کریم بین بین کے استان کا ایک اجتماع ہوا اور انسار کا اید دولی تھا کہ وہ حضور نی کریم بین کی انسین ہیں۔ حضرت ابو براسی و برانین کو اس کی خبر ہوئی تو آپ برانین نے حضرت ابو بینیدہ بن الجراح بی المجر ہمارا ہوگا اور ایک تہمارا ہوگا۔ پنجے۔ گفتگو کے دوران انسار نے مطالبہ کیا ایک امیر ہمارا ہوگا اور ایک تہمارا ہوگا۔ انسار کے اس مطالبہ کو قبول کرنے کا مطلب تھا اسلامی اخوت کو خود اپنے ہاتھوں ہی ختم کردیا جائے اور اگر انسار کا مطالبہ مانتے ہوئے انہیں مند خلافت پر فائز کر بی جاتا تو عرب کے دیگر قبائل بالخصوص قریش اس پر بھی راضی نہ ہوئے اور وہ خصے ہی اول انسار کی خلافت کو تسلیم نہ کرتے۔ اس کے علاوہ انسار کے بھی دو گروہ تھے ہی اول اور بی خزرج اوران میں بھی اس مؤتف پر باہم انفاق نہ بایا جاتا تھا لہذا یہ امر محال اور بی خزرج اوران میں بھی اس مؤتف پر باہم انفاق نہ بایا جاتا تھا لہذا یہ امر محال تھا کہ انسار میں سے کسی کو خلیفہ مقرر کیا جاتا۔

حضرت ابو بکرصدیق دلیانیز نے موقع کی نزاکت کو دیکھتے ہوئے فرمایا بیہ جائز نہیں مسلمانوں کے ایک وقت میں دو امیر ہوں اس طرح امور میں اختلاف www.iqbalkalmati.blogspot.com المنتسر عمر في المرق كرفيصلي الموق كرفيصلي الموقى كرفيصلي

بیدا ہوجائے گا اور امت مسلمہ کا اتحاد پارہ پارہ ہوجائے گا۔ اس سے فتنہ و فساد شروع ہوجائے گا۔ اس سے فتنہ و فساد شروع ہوجائے گا اور سنتیں ترک ہوجائیں گی۔ پھر آپ رظافی نے تجویز دی امراء مہاجرین جماعت میں سے ہول گے۔ اس موقع پر آپ رظافیٰ جماعت میں سے ہول گے۔ اس موقع پر آپ رظافیٰ نے ذیل کا تاریخی خطبہ بھی ارشاد فر مایا۔

" بہم تہارے فضائل و مناقب سے انکار نہیں کرتے گر قریش اور عرب کے دوسرے تمام قبائل بھی بھی تہاری خلافت کو تسلیم نہ کریں گے اور ویسے بھی مہاجرین نے حضور نبی کریم مطابق کی دعوت پر سب سے پہلے لبیک کہا اور ان کا حضور نبی کریم مطابق کی دعوت پر سب سے پہلے لبیک کہا اور ان کا حضور نبی کریم مطابق ہیں عمر (رفائق) میں موجود ہیں تم ان میں بھی موجود ہیں تم ان میں بھی موجود ہیں تم ان میں سے جس کے ہاتھ پر چاہو ہیں تک کراوتا کہ امت مسلمہ کا شیراز ہیں جس کے ہاتھ پر چاہو ہیں تک کراوتا کہ امت مسلمہ کا شیراز ہیں بھر نے نہ یائے۔"

حضرت عمر فاروق مڑائٹؤ نے جب حضرت ابو بکرصدیق مڑائٹؤ کا خطبہ سنا تو آگے بڑھ کراپنا ہاتھ آپ مڑائٹؤ کے ہاتھ میں دے دیا اور کہا۔

''آپرائی نظر سے بہتر کوئی نہیں ہے اور آپرائی ہمارے سردار اور حضور نبی سردار اور حضور نبی کریم مضطر کریم مضطر کی اور آپرائی نبید آپرائی نبید کو عزیز رکھا اور آپرائی نبید کی رائے کو تر جے دی۔'

حضرت عمر فاروق وظائف نے جیسے ہی حضرت ابو بکر صدیق وظائف کی بیعت کی تمام مخلوق آپ وظائف کی بیعت کی تمام مخلوق آپ وظائف کی بیعت پر ٹوٹ پڑی اور حضرت ابوعبیدہ بن الجراح وظائف

www.iqbalkalmati.blogspot.com الاستريم المنظر الموالي كي فيصل

کی بیعت کے بعد انصار نے بھی آپ رہائٹیڈ کے دست اقد س پر بیعت کر لی۔ آپ رہائٹیڈ وہاں سے واپس لوٹے اور پھر حضور نبی کریم مضفی آئی۔

حضرت سالم بن عبیدہ رہائٹیڈ سے مروی ہے کہ انصار کے کسی شخص نے کہا کہ ایک خلیفہ ہم میں سے ہواور ایک آپ میں سے؟ حضرت عمر فاروق رہائٹیڈ نے فرمایا۔

"ایک میان میں دو تکوارین ہیں رہ سکتیں۔" تاریخ میں آب والٹیئر کے فیصلہ کی اہمیت:

حضرت عمر فاروق ملافئة وه يهلخض بين جنهول نے حضرت ابو بمرصدیق طلفن کے دست اقدس پر بیعت کی اور انہیں خلیفہ سلیم کیا۔مؤرخین لکھتے ہیں حضرت ابو بکر صدیق والفیز نے خود کو منصب خلافت کے لئے امیدوار مقرر نہیں کیا تھا مگر آپ دائن چونکه سقیفه بی ساعده میں انصار کواس بات پر قائل کرنے گئے تھے کہ وہ خلافت کے امیدوار بن کر امت مسلمہ کو دوگروہوں میں تقسیم کررہے ہیں اور آپ ر النفط نے اس موقع پر جو خطبہ ارشاد فرمایا تھا اسے دیکھتے ہوئے حضرت عمر فاروق وللفنظ نے میہ فیصلہ کیا کہ امت مسلمہ کی خلافت کی ذمہ داری کو اگر کوئی احسن طریقے سے انجام دے سکتا ہے تو وہ حضرت ابو بمرصدیق طالفنا کی ذات ہے اور حضرت ابوبكر صديق وللفؤ كم متعلق اس وفت بهي بدرائ بالاتفاق موجود تقي كداكر روئ زمین پرکوئی مستی ایسی ہے جو انبیاء کرام میل کے بعد تکریم اورعزت کی حقدار ہے تو وه حضرت ابو بمرصد بق والفنظ بي اور حضرت ابو بمرصد بق والفيظ كے فضائل ومنا قب چونکہ حضور نبی کریم مضر کی خود کئی مواقع پر بیان فرمار کھے تھے اور پھراہے مرض وصال میں بھی امامت کی ذمہ داری حضرت ابو بکر صدیق طالفنا کوسونی تھی تو ہاس

جانب واضح اشارہ تھا کہ منصب خلافت کے بلاشبہ حقدار حضرت ابوبکر صدیق رخاتیٰ اور حضرت عرفاروق رخاتیٰ کی ہستی ہی وہ پہلی ہستی تھی جنہوں نے حضرت ابوبکر صدیق رخاتیٰ کواس منصب کے لئے اہل جانے ہوئے سب سے پہلے بیعت کی - تاریخ میں حضرت عمر فاروق رخاتیٰ کے اس فیصلے کی اہمیت اور اس فیصلے کی بعد رونما ہونے والے واقعات میں حضرت ابوبکر صدیق رخاتیٰ کے اجتہادی فیصلوں بعد رونما ہونے والے واقعات میں حضرت ابوبکر صدیق رخاتیٰ کے اجتہادی فیصلوں اور کوششوں نے تابت کر دیا کہ حضرت ابوبکر صدیق رخاتیٰ نے بیعت کے لئے جس کا استخاب کیا وہ کسی بھی طور غلط نہ تھا اور حضرت ابوبکر صدیق رخاتیٰ کے خلیفہ بننے سے است مسلمہ کا اتحاد مزید قوی و مشحکم ہوا اور وہ لمحات جب حضور تبی کریم میں ہوا کے است مسلمہ کا اتحاد مزید قوی و مشحکم ہوا اور وہ لمحات جب حضور تبی کریم میں ہوا کا شکار فلاہری وصال کے بعد امت مسلمہ کا اتحاد بظاہر دکھائی ویتا ہے کہ اختلافات کا شکار ہو جائے گا اس سے امت مسلمہ محفوظ و مامون ہوگئی۔

حضرت عمر فاروق را النين کو چونکه حضرت ابو بکر صدیق را النین کی طبیعت کی اور صلح جو کیفیت کا اندازہ تھا اور آپ را النین جانے تھے کہ حضرت ابو بکر صدیق رفات نین کی اور صلح جو کیفیت کا اندازہ تھا اور آپ را النین جانے تھے کہ حضرت ابو بکر صدیق رفات نین کریم میض کی انعلیمات اور اخلاق کا پر تو ہے لہذا حضرت ابو بکر صدیق رفائن کی وات ہی وہ ذات ہے جواس وقت منصب خلافت کی بجاطور پر اہال ہے اور حضرت ابو بکر صدیق رفائن کو بیشرف بھی حاصل ہے کہ حضرت ابو بکر صدیق رفائن کو بیشرف بھی حاصل ہے کہ حضرت ابو بکر صدیق رفائن کی دائے در حقیقت اللہ عزوج اور رسول اللہ بین بین کی دائے در حقیقت اللہ عزوج اور رسول اور رسول اللہ بین بین کی دائے در حقیقت اللہ عزوج کی اور رسول اللہ بین بین کی دائے دعفرت عمر فاروق رفائن کے اس فیصلے کو تاریخ نے بھی در ست عابت کیا اور امت مسلمہ کو حضور نبی کریم میض کیا ہم کی دصال کے بعد در ست عابت کیا اور امت مسلمہ کو حضور نبی کریم میض کیا ہم کی حقیقت بن کر ابھری ایک خلیفہ کی اطاعت پر امت مسلمہ دنیا کے فقشہ پر ایک ایس حقیقت بن کر ابھری ایک خلیفہ کی اطاعت پر امت مسلمہ دنیا کے فقشہ پر ایک ایس حقیقت بن کر ابھری

الانتساخ المسلول المسل

جس کی مثال تاریخ انسانی میں ملنا محال ہے۔

حضرت ابو بكرصديق طالتين كا وظيفه مقرر كرواني كا فيصله:

حضرت ابو بمرصدیق طالعین منصب خلافت پر فائز ہونے کے بعد کسی قسم کا کوئی وظیفہ یا تنخواہ نہ لیتے تھے بلکہ خلیفہ بننے سے قبل کیڑ ہے کی تجارت کیا کرتے تصے اور خلیفہ بننے کے بعد بھی اپنی گزر بسر کے لئے اس پیشے کو اختیار کئے رکھا اور ایک ون آپ بٹائٹنے کپڑا کندھے پراٹھائے مدینہ منورہ کے بازار میں جا رہے تھے کہ حضرت عمر فاروق اورحضرت ابوعبيده بن الجراح ضِ أَنْتُمْ ہے ملا قات ہوگئی۔حضرت عمر فاروق رالنفظ نے بوجھا آپ رائنفظ کہاں جارے ہیں؟ آپ رائنفظ نے فرمایا میں بازار تجارت کے لئے جارہا ہوں تا کہائے اہل وعیال کے کھانے کا بندوبست کرسکوں۔حضرت عمر فاروق مزالٹنیڈ نے عرض کیا آپ بڑالٹیڈ مسلمانوں کے معاملات کے نگہبان ہیں اس کئے آئی والفن اینے لئے سیجھ وظیفہ بیت المال سے مقرر فرما لیں تا کہ آپ طابقہ مسجد نبوی میں بیٹے کر لوگوں کے معاملات احسن انداز میں نبٹا سلیں چنانچہاں واقعہ کے بعد حضرت عمر فاروق،حضرت علی المرتضٰی مِنی مُناتِثِمُ اور دیگر ا کا برصحابہ کرام من الفتام کی مشاورت سے آب شائن کا وظیفہ تین سو درہم ما ہوارمقرر کردیا گیا۔

O.....O......O

www.iqbalkalmati.blogspot.com المنتشر مستشفر الول كيسل

دور صدیقی طالعیٔ میں اہم امور برمشورہ دینا

حفرت عمر فاروق و فائتن کو حضرت ابو بکر صدیق و فائتن کے زمانہ میں ایک بہترین مشیر کے طور پر دیکھا جا سکتا ہے گو کہ آپ و فائتن کے مشورہ اور فیصلوں پر حضرت ابو بکر صدیق و فائتن نے کی مرتبہ اختلاف بھی کیا مگر یہ اختلاف امت کی بہتری کے لئے تھا اور کئی مواقع ایسے بھی سے جہاں آپ و فائتن کے مشوروں اور فیصلوں کو حضرت ابو بکر صدیق و فائتن نے سراہا اور ان پر عمل بھی کیا اور تاریخ میں بھی آپ و فائتن کے ان فیصلوں اور مشوروں کو قدر کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔ ذیل میں حضرت ابو بکر صدیق و فائن نے فائن فیافت میں پیش آنے والے اہم امور اور ان میں حضرت ابو بکر صدیق و فائن خلافت میں پیش آنے والے اہم امور اور ان میں آپ و فائن کے دیا کیا جا رہا ہوں کیا ہوں ک

حضرت اسامه رنانیز کوامپرلشکرمقرر نه کرنے کا مشورہ وینا:

حضرت ابوبکر صدیق ر النیز کے زمانہ خلافت میں سب سے پہلے جو اہم فیصلہ آپ رالنیز کو کرنا پڑاوہ جیش اسامہ ر النیز کی روائل کا تھا اور حضور نبی کریم مضائل کے ایسے خلا ایک انتخا اور اس انشکر نے اپنے خلا ہری وصال سے قبل ایک انشکر شام کی جانب روانہ کیا تھا اور اس انشکر کے سربراہ حضرت اسامہ بن زید والنی نے اور اسی وجہ سے اسے جیش اسامہ والنیز کہا جاتا ہے۔ اس انشکر میں کئی جید صحابہ کرام دی انتظام کی عظم یہ حضور نبی کریم

ﷺ کی دوراند کری تھی کہ آپ طالفیڈ نے ان جید صحابہ کرام طالفیڈ کی موجودگی میں حضرت اسامہ بن زید طالفیڈ کولشکر کا سربراہ بنایا۔

روایات میں آتا ہے حضرت اسامہ بن زید جائے نا لئگر کو لے کر نکلے اور ابھی مدینہ منورہ کے نواح میں تھے کہ حضور نبی کریم سے بھتے کے وصال کی خبر انہیں ملی اور وہ اپنے لشکر کو لے کر واپس مدینہ منورہ آگئے۔ پھر جب حضرت ابو بکر صدیق جائے نظافہ خلیفہ مقرر ہوئے تو آپ جائے نے کے سب سے اہم فیصلہ بیتھا جیش اسامہ جائے کے فوری روانہ کیا جائے۔ آپ جائے نے خصرت اسامہ بن زید جائے کہ دیا گوئی کو فوری روانہ کیا جائے۔ آپ جائے نے خصرت اسامہ بن زید جائے کہ کہ وہ اپنے لئکر کو بلاتا خیر لے کر روانہ ہوں مگر چندصحابہ کرام جی انہ نے آپ جائے نے آپ جائے نے کہ وہ اس کے معاملات کو کومشورہ دیا کہ حضور نبی کریم سے بھی کے کہ وہ کہ وصال ہوا ہے البندا پہلے ملکی معاملات کو دیکھا جائے اور اس لشکر کی روائی کومؤخر کر دیا جائے۔ آپ جائے نے ان صحابہ کرام جی گھا جائے اور اس لشکر کی روائی کومؤخر کر دیا جائے۔ آپ جائے نے ان صحابہ کرام جی گھا جائے اور اس لشکر کی روائی کومؤخر کر دیا جائے۔ آپ جائے نے ان صحابہ کرام جی گھا جائے اور اس کو منبر پر کھڑے ہو کر ذیل کا خطبہ دیا۔

" حق تعالیٰ کا قتم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے اگر میرے پاس ایک بھی بندہ نہ رہے اور مجھے بیا ندیشہ لاحق ہوکہ مجھے درندے اٹھا کر لے جائیں گے تب بھی میں اسامہ دلائی کے شکر کو ضرور بھیجوں گا کیونکہ اس کا تھم حضور نبی کریم بیلے کوئٹہ نے دیا تھا اور اگر میرے علاوہ کوئی بھی ان آباد ہوں میں نہرے تو میں تنہا ہی حضور نبی کریم بیلے کوئٹہ کے فرمان پر عمل پیرا نہرے تو میں تنہا ہی حضور نبی کریم بیلے کوئٹہ کے فرمان پر عمل پیرا ہوں گا۔"

علامه جلال الدین سیوطی میشند نی "تاریخ الخلفاء "میں حضرت عروه والنین است روایت بیان کی بین حضور نی کریم منظر کی است روایت بیان کی به حضور نی کریم منظر کی است روایت اسامه بن زید والنی کی

www.iqbalkalmati.blogspot.com المناسبة عمر المناسبة عمر المناسبة عمر المناسبة المنا

سربراہی میں ایک کشکرشام کے لئے روانہ کیا اور جب پانشکر جرف کے مقام پر پہنچا تو حضرت اسامه بن زید طالعظما کی زوجه حضرت فاطمه طالعظما بنت قیس نے ایک قاصد کو مقام جرف پر بھیجا جس نے حضرت اسامہ بن زید بنائے کیا کو پیغام دیا کہ حضور نبی کریم سے ایک طبیعت زیادہ ناساز ہے اور مرض شدت اختیار کر چکا ہے چنانچہ حضرت اسامه بن زید و الفینا این لشکر کو لے کر واپس مدینه منوره آ گئے اور پھر چند دنول بعد حضور نبی کریم مضاری کا ظاہری وصال ہو گیا۔ پھر حضرت ابو بکر صدیق طَلِّعَةُ منصب خلافت بر فائز ہوئے تو حضرت اسامہ بن زید طِلِّفَیْمًا نے عرض کیا مجھے اللّٰعَۃُ منصب خلافت بر فائز ہوئے تو حضرت اسامہ بن زید طِلِّفِیْمًا نے عرض کیا مجھے اندیشه لاحق ہے کہ کہیں عرب قبائل مرتد نہ ہو جا کیں اور جب حضور نبی کریم ﷺ نے ہمیں روانہ کیا تھا اس وفت حالات مختلف نتھے مگر اب جمارا یہاں موجود رہنا بھی لازم ہے کیونکہ میرے اس کشکر میں کئی قوی اور بہادر مجاہد ہیں جو ہرفتم کی صورتحال كا سامنا كرنے كو تيار ہيں اور اگر عرب قبائل نے كوئى فتنه كھڑا نه كيا تو ميں اپنے الشكركو كي كرشام روانه مو جاؤل كالدحضرت ابو بكرصديق والنفظ نے جب حضرت اسامه بن زید دلی فخنا کی بات سی تو منبر پر کھڑ ہے ہو کر خطبہ دیا۔ ''اللّٰدعز وجل كى قتم! اگر مجھے كوئى جانور ايك كے توبيہ بات مجھے زیادہ محبوب ہے کہ میں حضور نبی کریم مضاع الم کے علم کی

حضرت عروہ وہ النفیٰ فرمائے ہیں پھر حضرت ابو بکر صدیق وہائیں نے جیش اسامہ وہالنفیٰ کورخصت کیا۔

جیش اسامہ بڑاٹنز کی روائلی کے متعلق حصرت حسن بھری بڑاٹنز سے مروی ہے۔ مروی ہے۔ مروی ہے۔ مروی ہے۔ مروی ہے۔ مروی ہے۔ خرماتے ہیں حضور نبی کریم مطفع کا ہم ہے طاہری وصال سے قبل ایک لشکر جس

المنت عملي المال المالي المالي

ميں حضرت عمر فاروق خالفنا بھی شامل تتصحصرت اسامہ بن زید خلافیا کی سربراہی میں ملک شام کی جانب روانہ کیا۔ ابھی پیشکر تیاری کے آخری مراحل میں تھاحضور نبي كريم مِنْ اللَّهِ كَا ظاهري وصال هو كيا ـ حضرت اسامه بن زيد بنالفينا جومقام جرف میں کشکر کے ساتھ مقیم تھے انہوں نے حضرت عمر فاروق بٹالٹیڈ سے کہا وہ حضرت ابو بکر صدیق طالغین سے واپسی کی اجازت طلب کریں کیونکہ اس کشکر میں اکابر اور بہادر مجاہد اسلام موجود ہیں اور مجھے اندیشہ ہے کہ اس سانحہ تنظیم کے بعد حضرت ابو بمر صدیق بٹائینے اور دیگرمسلمانوں کی جانوں اور املاک کونقصان پہنچ سکتا ہے اور کہیں مشركين اور منافقين انہيں تيجھ نقصان نه پہنجا ئيں۔حضرت عمر فاروق ﴿اللَّهُ وَبِي مدینه منوره روانه ہونے لگے تو انصار کے چندلوگوں نے کہا آپ بٹالٹین ،حضرت ابو بکر صدیق خالفنز ہے کہیں ہارا امیر ایسے خص کومقرر کریں جوعمر میں اسامہ طالفنز سے برا ہواور تجربہ کار ہواور حضرت اسامہ رہائین میم سن اور ناتجربہ کار ہیں۔حضرت عمر فاروق والنفيظ مدينه منوره تشريف لائے اور حضرت ابو بكر صديق والنفيظ سے حضرت اسامہ بن زید بڑا کھنا کی بات بیان کی۔حضرت ابو بمرصد بق بڑا کھنے نے فرمایا۔ ''اگر کتے اور بھیڑئے مجھے کھا بھی لیں تو میں حضور نبی کریم

مِنْ يَعْنِهُ كُورُ مان ير ہرصورت عمل كروں گا۔''

بھر حضرت عمر فاروق والنفظ نے انصار کی درخواست پہنچائی تو حضرت ابو بمرصدیق دلانفیز نے حضرت عمر فاروق طالفیز کی داڑھی بکڑی اور فر مایا۔ ''اے عمر (خلافیز)! تم مجھ ہے ایس بات کہتے ہو اور وہ شخص جے حضور نبی کریم میضور نا اس عہدہ کے قابل جانا میں اسے اس کے عہدہ سے معزول کر دوں۔''

المنتزعم الموق كي فيصل المال المنتفون الموق كي فيصل المال المنتقب الموق كي فيصل المناس المناس

حضرت ابوبکر صدیق طالغیز نے جیش اسامہ کی روانگی کے وقت حضرت اسامہ بن زید طالعین سے فرمایا۔

> ''کیا بیہ مناسب نہ ہو گائم عمر (طالقۂ) کو میرے پاس جھوڑ حاؤ؟''

حضرت اسامہ بن زید رہائی نے عرض کیا جیسے آپ رہائی مناسب سمجھیں۔
جیش اسامہ رہائی کے وضلے نے مشرکین و منافقین کے د ماغوں کے اس فتور کو ہوا کر دیا کہ حضور نبی کریم میضور ہی کے فلا ہری وصال کے بعد مسلمانوں کی قوت اور اجتماعیت مانند پڑگی ہے مگر حضرت ابو بکر صدیق رہائی کے اس فیصلہ نے آپ رہائی کے دوراندیش کو فلا ہر کر دیا اور آپ رہائی کے اس اقد اِم نے مشرکین اور منافقین یر مسلمانوں کے رعب و دید ہے کو مسلمہ کر دیا۔

مؤرمین لکھتے ہیں حضرت عمر فاروق برنائیڈ نے حضرت ابوبر صدیق برنائیڈ کو حضرت اسامہ بن زید برنائیڈ کو امیر اشکر مقرر نہ کرنے کا مشورہ اس لئے دیا تھا حضرت اسامہ بن زید برنائیڈ نا تجربہ کار تھے اور نو جوان تھے گر چونکہ حضرت اسامہ بن زید برنائیڈ کا میر اشکر حضور نبی کریم میں کی مقرر فرمایا تھا ای لئے حضرت ابوبکر صدیق برنائیڈ نے آپ برنائیڈ کے مشورہ کو نہ مانے ہوئے اتباع رسول اللہ میں حضرت اسامہ بن زید برنائیڈ کو بی امیر اشکر کے عہدہ پر برقر اررکھا اور آپ بڑائیڈ کا یہ مشورہ کی بدنیتی پرمبنی نہ تھا بلکہ زیمنی تھا گئی تھا بت کر دیا کہ انہوں نے اتباع رسول اللہ ابوبکر صدیق برنائیڈ کے اقد ام کو درست ثابت کر دیا کہ انہوں نے اتباع رسول اللہ ابوبکر صدیق برنائیڈ کے اقد ام کو درست ثابت کر دیا کہ انہوں نے اتباع رسول اللہ ابوبکر صدیق برنائیڈ کی دوراند لیگ کو ظاہر کرتا تھا۔

اس نازک موقع پر ہمیں جنگ نہیں کرنی جائے: اس نازک موقع پر ہمیں جنگ نہیں کرنی جائے:

حضرت ابو برصدیق برائی کوخلیفہ بنے کے بعد ایک اور اہم فیصلہ یہ کرنا پڑا کہ آپ برائی کو ان لوگوں کے خلاف جہاد کرنا پڑا جنہوں نے دین اسلام کے ایک اہم رکن زکو ق کی ادائیگی سے انکار کر دیا تھا۔ یہ گروہ بظاہر تو خود کومسلمان کہتے تھے اور دین اسلام کے دیگر اہم ارکان پڑمل پیرا بھی تھے گر زکو ق جیے رکن کی ادائیگی سے مخرف ہو گئے تھے۔ آپ بڑائی نے فیصلہ کیا جولوگ زکو ق نہیں دیں گی ادائیگی سے مخرف ہو گئے تھے۔ آپ بڑائی اسلام کے اس بنیادی رکن کی ادائیگی برانہیں دوبارہ مائل کیا جائے تا کہ دین اسلام کے اس بنیادی رکن کی ادائیگی برانہیں دوبارہ مائل کیا جاسے۔

منكرين زكوة كى سركوني كے متعلق حضرت ابو ہرىرہ طالفن سے روایت مردی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم مضائیاتہ کے ظاہری وصال کے بعد جب حضرت ابو برصدیق طالفن خلیفہ بے تو عرب کے قبائل مرتد ہو گئے اور انہوں نے زکو ق ویے سے انکار کر دیا۔ آپ دلائن نے جب ان کی سرکونی کا فیصلہ کیا تو حضرت عمر فاروق وللنفئذ نے مشورہ دیا کہ حالات نازک ہے اور اس وفت امت مسلمہ ابنتثار کا شكار ہے اور پھران قبائل سے كيسے جنگ كى جاسكتى ہے كيونكہ حضور نبى كريم منظا كيا ا كا فرمان ب مجھے لوگوں سے اس وقت تك لانے كا حكم ديا كيا جب تك وہ اللہ عزوجل کی وحدانیت کا اقرار نه کرلیں اور جب وہ اللّٰه عز وجل کی وحدانیت کا اقرار کرلیں گے تو وہ اپنی جان اور مال کو ہم ہے محفوظ کرلیں گے اور پھر وہ کسی ایسے قعل کے مرتکب ہوں جو دین اسلام کی تعلیمات کے خلاف ہوتو اللہ عز وجل ان کا حساب کے گا۔ آپ بڑائٹوز نے حضرت عمر فاروق بڑائٹوز کی بات سی تو فر مایا۔ . " الله عزوجل كي قسم! جوكوئي نماز اور زكوة ميں فرق سمجھے گا تو

www.iqbalkalmati.blogspot.com 118 کونستر عمر شنگ و اروق کے فیصلے

میں اس سے ضرور لڑوں گا کیونکہ زکو ۃ مال کاحق ہے جیسے نماز بدن کاحق ہے اور اللہ عزوجل کی قتم! بیدلوگ آگر بکری کا پٹھا جو حضور نبی کریم منظ کی تیج کو دیتے تھے مجھے نہ دیں گے تو میں ان سے ضرور لڑوں گا۔''

روایات میں آتا ہے حضرت ابو بکر صدیق برالٹیڈ نے مکرین زکوۃ کے فلاف ایک شکر ترتیب دیا۔ بعض اکا برصحابہ کرام بڑائیڈ نے آپ بڑائیڈ کے اس فیصلہ سے اختلاف کیا یہاں تک کہ حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے بھی کہا کہ ان کے خلاف اس نازک موقع پر ہمیں جنگ نہیں کرنی چاہئے۔ آپ بڑائیڈ نے جب اکا برصحابہ کرام بڑائیڈ کا مشورہ ساتو مسجد نبوی میں تشریف لائے اور منبر پر کھڑے ہوکر ذیل کا خطبہ دیا۔

''الله کی قشم! جوشخص حضور نبی کریم میشیکینی کی زندگی میں ایک کمری کا بچہ بھی زکوۃ میں دیتا تھا اور اب اس کے دیئے سے انکاری ہے تو میں اس کا مقابلہ کروں گا۔''

حضرت ابو برصدیق براتین کا به فیصله اس لئے بھی اہم تھا کہ اگر آپ براتین آج ان منکرین زکوۃ کے ساتھ کوئی زم روبیہ اختیار کرتے تو آئندہ کے لئے کچھ لوگ نماز اور روز ہے کہ بھی منکر ہو سکتے تھے اور یوں وین اسلام کی بنیادی تعلیمات کوٹرک کرنے کے بعد لوگ صرف نام کے ہی مسلمان رہ جاتے یہی وجہ تعلیمات کوٹرک کرنے کے بعد لوگ صرف نام کے ہی مسلمان رہ جاتے یہی وجہ ہے کہ آپ بڑائین کے خطاب کے بعد حضرت عمر فاروق بڑائین بھی آپ بڑائین کے فیصل کے قائل ہو گئے اور کہا ان منکرین زکوۃ کی سرکوبی لازم ہے۔ آپ بڑائین کے فیصلے کے قائل ہو گئے اور کہا ان منکرین زکوۃ کی سرکوبی لازم ہے۔ آپ بڑائین کے اس خطبہ نے ان صحابہ کرام بی النظم کو بھی منکرین زکوۃ کے خلاف اقد ام پر قائل کر

الاستار المستراول كيسل

ویا جو کہدر ہے تھے کہ اس نازک موقع پر فی الحال ان منگرین زکوۃ کے خلاف کوئی اقدام نداٹھایا جائے۔

تدوین قرآن کامشوره وینا:

حضرت زید بن ثابت ر النین سے مروی ہے فرماتے ہیں جنگ یمامہ کے موقع پر حضرت ابو بکر صدیق ر النین نے میری جانب ایک قاصد کے ہاتھ بیغام بھیجا کہ میرے پاس اس وقت عمر فاروق (ر النین) بیٹے ہوئے ہیں اور وہ کہتے ہیں کہ جنگ کے دوران بے ثمار حفاظ شہید ہو گئے ہیں اوراگر اسی طرح جنگوں میں حفاظ کرام شہید ہوتے رہوتے ور بوت قرآن مجید کے ایک بہت بڑے حصے کے ضائع ہونے کا خطرہ ہے۔ اس لئے ان کی رائے یہ ہے کہ میں قرآن کریم کو جمع کروں۔

حضرت زیر بن ثابت رظائفہ فرماتے ہیں حضرت ابو بکر صدیق رطانیہ نے حضرت عمر فاروق رطانیہ سے کہا میں وہ کام نہیں کرسکتا جوحضور نبی کریم مضائفہ نے اپنی زندگی میں نہیں کیا مگر پھر اللہ عز وجل نے اس کار خیر کے لئے میرا سینہ کھول دیا اور میری رائے بھی عمر فاروق رطانیہ والی بن گئی۔ تم نوجوان ہو اور حضور نبی کریم اور میری رائے بھی عمر فاروق رطانیہ والی بن گئی۔ تم نوجوان ہو اور حضور نبی کریم سے بھی بھی ہواس لئے تم قرآن کو جمع کرو۔

حضرت زیر بن ثابت رئی نفیز فرماتے ہیں میں نے جوابا کہااللہ کی قسم!اگر مجھے بہاڑ کوایک جگہ ہے دوسری جگہ نفل کرنے کا حکم دیا جاتا تو میں اسے قرآن جمع کرنے سے زیادہ آسان مجھتا۔ حضرت ابو بکر صدیق رٹائٹی نے مجھے سے فرمایا یہ کار خیر ہے اور پھراللہ عز وجل نے میری رائے وہی کر دی جو حضرت ابو بکر صدیق بڑائٹی اور حضرت عمر فاروق رٹائٹی کی تھی۔ میں نے تھجور کے پتوں، کیڑے کے ککڑوں، بقر کے ککڑوں اور صحابہ کرام جی اُنٹی کے سینوں سے قرآن مجیدا کٹھا کیا۔

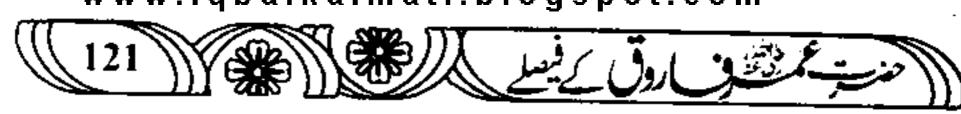
المنت عمر المنتقون الوق كرفيها

مؤرخین لکھتے ہیں کہ حضرت ابو بکر صدیق طابعیٰ کے وصال تک یہ صحیفے آپ طابعیٰ کے پاس محفوظ رہے جو بعدازاں حضرت عمر فاروق طابعیٰ کے سپر دہوئے اور حضرت عمر فاروق طابعیٰ کے سپر دہوئے اور حضرت عمر فاروق طابعیٰ کی شہادت کے بعد یہ حضرت عمانِ غنی طابعیٰ کے پاس بہنچ جنہوں نے اس کی تقلیس کروا کرمختلف علاقوں میں جھیجیں۔

محدثین لکھتے ہیں حضرت زید بن ثابت بڑائیز کوقر آن مجید جمع کرنے کا حکم حضرت ابو بکر صدیق طائیز نے اس لئے دیا کہ وہ کا تب وجی ہے اور حضور نبی کریم میٹے ہیڈ کی ہر وجی انہوں نے تحریر فر مائی تھی اس کے علاوہ وہ حافظ بھی تھے اور حضور نبی کریم میٹے ہیڈ کوقر آن مجید سایا کرتے تھے تا کہ اگر وہ کوئی غلطی کریں تو حضور نبی کریم میٹے ہیڈان کی اصلاح فر ما دیل ۔حضور نبی کریم میٹے ہیڈان کی اصلاح فر ما دیل ۔حضور نبی کریم میٹے ہیڈان کی اصلاح فر ما دیل ۔حضور نبی کریم میٹے ہیڈا کو تمام قر آن پھے روز قبل ہی حضرت زید بن ثابت رہائیز نے حضور نبی کریم میٹے ہیڈا کو تمام قر آن پاک سنایا تھا اور حضور نبی کریم میٹے ہیڈا کو تمام قر آن

قرآن مجید کی تدوین حضرت ابو بکرصدیق طالعی الشان کارنامه استان کارنامه می وجه سے رہتی و نیا تک ہر مسلمان کوقرآن مجید پڑھنے میں آسانی ہوگئی۔ قرآن مجید کو پہلی مرتبہ کتابی شکل آپ طالغی نے ہی دی تھی۔

O___O



دور صديقي طالتين مين

الهم عهدول برتعينات رنهنا

حضرت عمر فاروق طالفنظ کو حضرت ابو بکر صدیق طالفنظ کے زمانہ خلافت میں بے پناہ اہمیت دی جاتی تھی اور آپ طالفظ کے فضائل و مناقب اور آپ طالفظ کے متعلق حضور نبی کریم مطلق کے فرمودات حضرت ابو بکر صدیق طالفظ کے بیش نظر سے بہی وجہ ہے کہ حضرت ابو بکر صدیق طالفظ کے بیش نظر سے بہی وجہ ہے کہ حضرت ابو بکر صدیق طالفظ نے آپ طالفظ کو ابنا مشیر مقرر کر رکھا تھا اور آپ طالفظ کی حیثیت دور صدیق طالفظ میں وزیراعظم کی سی تھی۔

حضرت ابو بکر صدیق و النین نے اپنے زمانہ خلافت میں با قاعدہ مجلس شوری تو قائم نہ کی تھی مگر جیسا کہ گذشتہ اوراق میں بیان ہوا آپ والنین ہر امور میں اکا برصحابہ کرام دی النین کے مشورہ کو ترجیح ویتے تھے اور ان سے مشاورت کے بعد ہی کوئی فیصلہ کیا کرتے تھے۔ آپ دی النین جن اکا برصحابہ کرام دی النین سے مشورہ کرتے تھے ان میں حضرت عمر فاروق ، حضرت عثمان غنی ، حضرت علی المرتضی ، حضرت الی بن کعب، حضرت زید بن ثابت ، حضرت طلحہ بن عبیداللہ ، حضرت زید بن العوام ، حضرت معاذ بن جبل ، حضرت و بید بن ثابت ، حضرت طلحہ بن عبیداللہ ، حضرت زید بن العوام ، حضرت معاذ بن جبل ، حضرت عبدالرحلن بن عوف دی آئی کے نام قابل ذکر ہیں۔ ان حضرات کے علاوہ آپ دائین مہاجرین اور انصار کے اکا برین سے بھی مضورہ کرتے تھے اور

ان کے مشوروں کوتر جیح دیتے اور ملکی معاملات انہی صحابہ کرام رہی آئیم کی مشاورت کے بعد ہی ترتیب دیئے جاتے تھے۔

المستر من المستر المستر

حضرت ابو بکرصدی بنائیڈ کے زمانہ خلافت میں حضرت عمر فاروق بنائیڈ کو منصب قضاء پر فائز کیا اور حضرت عمر فاروق بنائیڈ قاضی القصناء ہے اور کسی کو منصب قضاء پر فائز کیا گیا اور حضرت عمر فاروق بنائیڈ کی عدالت میں ہوتا تھا۔

مؤرضین لکھتے ہیں حضرت ابو بکرصد لیں بنائیڈ کے زمانہ خلافت میں عدل و انصاف کا بیہ عالم تھا کہ آپ بنائیڈ کی جانب سے مقرر کردہ قاضی الفضاء حضرت عمر فاروق جنائیڈ کے پاس اس عرصہ میں کوئی بھی مقدمہ نہ آیا۔

امت کی نجات کا ذریعہ:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طلطیٰ ، حضرت ابو بکر صدیق طالعٰنیٰ ، حضرت ابو بکر صدیق طالعٰنیٰ کے یاس تشریف لائے اور عرض کیا۔

''اے خلیفہ رسول میں آگر کیا یہ جیرانگی کی بات نہیں میرا گزر عثان (طائفیٰہ) کے پاس سے ہوا اور میں نے انہیں سلام کیا۔ انہوں نے میر ہے سلام کا جواب نہیں دیا۔''

" تہارے پاس تمہارے بھائی عمر (مٹائٹین) آئے اور تم نے انہیں ان کے سلام کا جواب نہیں ہیا تمہیں ایسا کرنے پر کس چیز نے آمادہ کیا ہے؟"

www.iqbalkalmati.blogspot.com الانتراكات وق كرفيط

> حضرت عثمان عنی براین نیز نے عرض کیا۔ ''اے خلیفہ رسول مضر کیا۔''

> > حضرت عمر فاروق طلننٹزنے فر مایا۔

"فلم ہے اس خداکی جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے جہتم نے ایسا بی کیا ہے اور تم نے میرے سلام کا جواب نہیں دیا۔"

حضرت عثمان عنی طالعتی خالفین نے حضرت عمر فاروق دلائین کی بات من کرفر مایا۔
'' مجھے آپ زلائین کے گزرنے کی ہر گز خبر نہ ہوئی اور نہ ہی مجھے
معلوم ہوا کہ آپ زلائین نے مجھے سلام کیا ہے۔''
حضرت ابو بکر صدیق زلائین نے فرمایا۔

''تم سیج کہتے ہواللہ عزوجل کی شم! تمہارے متعلق میرا بید خیال تفاکہ تم کسی سوچ میں گم نتھے جس کی وجہ ہے تم نے عمر (دانائیۂ) کے سلام کا جواب نہیں دیا۔''

حضرت عثان عنی میں نے حضرت ابو بمرصد بی رطانی کی بات سی تو کہا۔
''امیر المومنین! آپ طالفیٰ درست کہتے ہیں میں حضور نبی کریم
عند ہے وصال کی وجہ ہے پریشان ہوں اور اس سوچ میں گم
تقا اس امت کی نبات کے بارے میں میں حضور نبی کریم
عند ہے اس امت کی نبات کے بارے میں میں حضور نبی کریم
عند ہے جھے عمر فاروق والفیٰ کے گزرنے اور ان کے سلام کڑنے
کے متعلق بچھ خبر نہ ہوئی۔''

المنتز مُنْ وَاللَّهِ اللَّهِ اللّ

حضرت الوبكرصديق رئائيز نے فرمایا۔
''حضور نبی كريم منظير نے فرمایا ہے جس نے مجھ سے وہ كلمه
قبول كرليا جوكلمہ ميں نے اپنے چچا كو پیش كيا تو اور انہوں نے
اسے رد كرديا پس و بى كلمہ ميرى امت كی نجات كا ذريعہ ہے۔''
حضرت عثمان غنی رہائيؤ نے دريا فت كيا وہ كلمہ كون سا ہے؟ حضرت ابو بكر

'' گواہی وینا اللہ کے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں اور حضور نی کریم مشنے عِینا اللہ عزوجل کے رسول اور بندے ہیں۔''

آج بیلوگ ہم سے زیادہ فضیلت لے گئے:

صدیق طالعین نے فرمایا۔

حضرت عمر فاروق رظائف سے مروی ہے فرماتے ہیں میں حضرت ابوبکر صدیق رظائف ہیں میں حضرت ابوبکر صدیق رظائف ہیں جانف کو ہمراہ اونٹنی پر سوار تھا۔ آپ رظائف جہاں سے گزرتے لوگوں کو السلام علیکم کہتے۔ اس دوران لوگ آپ رظائف کو جواب میں السلام علیکم ورحمتہ اللہ وبرکانہ کہتے۔ آپ رظائف نے مجھے مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔ وبرکانہ کہتے۔ آپ رظائف کے اس جو کے الوگ ہم سے زیادہ فضیلت لے گئے۔''

O___O



چوتھا باب:

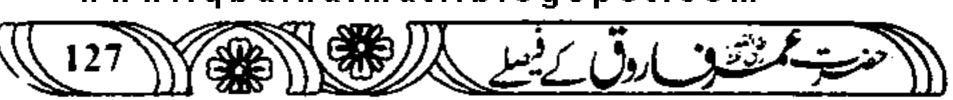
حضرت عمر فاروق طلطه کا منصب خلافت پر فائز ہونا

حضرت ابو بمرصدیق والنفی کا خلیفه مقرر کرنا، خلیفه بننے کے بعد خطبه ارشاد فرمانا، دورِ خلافت کے اہم فیصلے، نظام خلافت، دورِ خلافت میں پیش آنے والے اہم امور

O___O



ان کی حالت دکیے لو بھرتم کہو انصاف سے کیا طلبگارِ خلافت حضرت فاروق رشائین ہیں تا قیامت یار دونوں مصطفیٰ مضائی کے ہیں قریب تا قیامت یار دونوں مصطفیٰ مضائی کے ہیں قریب حاصل اسرارِ قربت حضرت فاروق رشائین ہیں



حضرت ابوبكر صديق طالنيه كاخليفه مقرر كرنا

حضرت ابو بمرصد این جائینی جب مرض وصال میں مبتلا ہوئے تو آپ جائینی نے حضرت عمر فاروق جائینی کواپنے بعد خلیفہ مقرر کرنے کا فیصلہ کیا اور تاری نے یہ خابت کر دیا کہ آپ جائینی کا فیصلہ دوراند کئی پرجنی تھا اور آپ جائینی کے اس فیصلے کے ذریعے دین اسلام کو تقویت ملی۔ آپ جائینی ، حضرت عمر فاروق جائینی کے اندر چھے جو ہر کو پہچانتے تھے اور جانتے تھے کہ آپ جائینی کے بعد اگر کوئی مسلمانوں کی نمائندگی کا حق رکھتا ہے تو وہ حضرت عمر فاروق جائینی ہیں۔ حضرت عمر فاروق جائینی ہیں۔ حضرت عمر فاروق جائینی ہیں کے حضرت عمر فاروق جائینی ہیں کے دمت کو ابنا شعار بنایا اور حضرت عمر فاروق جائینی کے زمانہ میں دین اسلام افریقہ، وسطی پورپ اور بنایا اور حضرت عمر فاروق جائینی مما لک تک پہنچا۔ حضرت عمر فاروق جائینی نے عدل و انصاف کے وہ معیار ایشیائی مما لک تک پہنچا۔ حضرت عمر فاروق جائینی نے عدل و انصاف کے وہ معیار قائم کے جوآئندہ آنے والے کی جھران کے لئے مشعل راہ بن گئے۔

حضرت عبدالله بن مسعود وللفؤنا فرماتے ہیں۔
"صاحب فراست تبن شخص ہیں۔حضرت ابو بکر صدیق وللفؤنہ عضرت مراست عمر فاروق وللفؤنہ کے معاملہ میں کہ انہیں خلیفہ نا مزد کیا۔ حضرت مولی علیائی کی اہلیہ جنہوں نے اپنے والد حضرت شعیب حضرت مولی علیائی کی اہلیہ جنہوں نے اپنے والد حضرت شعیب علیائی کی اہلیہ جنہوں کے اور حضرت یوسف علیائی کی علیائی کی علیائی کی علیائی کی اہلیہ کی ایک اور حضرت یوسف علیائی کی علیائی کی اہلیہ کی ایک اور حضرت یوسف علیائی کی ایک اور حضرت یوسف علیائی کی

المنت المنتقون الوق كيفيل المناسبة المنتقون الوق كيفيل المناسبة المنتقون الوق المناسبة المناس

امليه-'

حضرت حسن بصری طالعید کی روایت:

حفرت حسن بھری رہائی ہے مروی ہے فرماتے ہیں حفرت ابو برصدیق رہائی جب بہت زیادہ بیار ہو گئے تو آپ رہائی نے ارشاد فرمایا میں اختیار دیتا ہوں تم اپنے لئے فلیفہ چن لو۔ لوگوں نے کہا ہمیں اللہ اور اس کے رسول اللہ مطابقی کے فلیفہ کی رائے میں کوئی اعتراض نہیں۔ آپ رہائی نے قدرے فاموش رہنے کے بعد فرمایا۔

''میرے نز دیک عمر (وٹائٹنڈ) بن خطاب سے بہتر کوئی نہیں۔'' حضرت حسن بھری وٹائٹنڈ فرماتے ہیں پھر حضرت ابو بکر صدیق وٹائٹنڈ نے حضرت عبدالرحمٰن بن عوف وٹائٹنڈ سے حضرت عمر فاروق وٹائٹنڈ کے بارے میں پوچھا تو حضرت عبدالرحمٰن بن عوف وٹائٹنڈ نے عرض کیا۔

" آپ طالفید محصے بہتر عمر (طالفید) کو جانتے ہیں۔"

حضرت حسن بھری رہائیئؤ فرماتے ہیں کہ حضرت ابو بکر صدیق رہائیؤ نے میں کہ حضرت ابو بکر صدیق رہائیؤ نے فیصلہ حضرت عثمان عنی رہائیؤ سے حضرت عمر فاروق رہائیؤ کے بارے میں دریا فت کیا تو حضرت عثمان غنی رہائیؤ نے عرض کیا۔

" فلاہر کے خلام کے خلام اس کے خلام سے زیادہ بہتر ہے اور ہم میں اس وقت ان جیبا کوئی نہیں ۔ " حضرت حسن بھری وٹائٹنڈ فرماتے ہیں پھر حضرت ابو بکر صدیق وٹائٹنڈ نے وگر احباب سے مشورہ کیا اور حضرت عمر فاروق وٹائٹنڈ کو خلیفہ مقرر کر دیا اور حضرت عمر فاروق وٹائٹنڈ کو خلیفہ مقرر کر دیا اور حضرت عمر فاروق وٹائٹنڈ کو خلیفہ مقرر کر دیا اور حضرت عمر فاروق وٹائٹنڈ کو خلیفہ مقرر کر دیا اور حضرت عمر فاروق وٹائٹنڈ کو خلیفہ مقرر کر دیا اور حضرت عمر فاروق وٹائٹنڈ کو خلیفہ مقرر کر دیا کہتم تحریر کرو۔

الناسة عمين وق كيدل

"ابو بكر (طلقين) بن ابوقحاف طالفين في عمر (طالفين) بن خطاب كو خليفه تامز دكيا- "

ای قتم کی ایک اور روایت حضرت حسن بھری دیانیڈ سے اس طریقے سے بھی منقول ہے کہ جب حضرت ابو بکر صدیق دیانیڈ بہت زیادہ بیار ہو گئے تو آپ دیانیڈ نے لوگوں کو جمع کیا اور فر مایا تم میری حالت و کیھر ہے ہواور مجھے یقین ہے کہ میرا وصال ہو جائے گا اور اب اللہ عز وجل تمہیں میری بیعت سے آزاد کر رہا ہے اور اللہ عز وجل نے ایک مرتبہ بھر معاملہ تمہار سے سپروکر دیا ہے اور جوگرہ گی ہوئی تھی وہ کھل گئی ہے تم جے جا ہوا پنا امیر مقرر کر لواور اگر تم میری زندگی میں اپنا کوئی امیر مقرر کر لو اور اگر تم میری زندگی میں اپنا کوئی امیر مقرر کر لو اور اگر تم میری زندگی میں اپنا کوئی امیر مقرر کر لو گئے تو یہ اس سے بہتر ہے کہتم میرے بعد اختلافات کا شکار ہو۔

حضرت حسن بھری ڈائٹیڈ فرماتے ہیں لوگوں نے غور کیا مگر وہ کچھ فیصلہ نہ کر پائے اور وہ واپس حضرت ابو کر صدیق وٹائٹیڈ کے باس آئے اور کہا ہم آپ وٹائٹیڈ کے مشورہ کو اپنا مشورہ ما نمیں گے۔ آپ وٹائٹیڈ نے فرمایا تم مجھے کچھ مہلت دو تاکہ میں اللہ، اس کے دین اور اس کے بندوں کے متعلق کچھ غور کروں۔ پھر آپ وٹائٹیڈ نے حضرت عبدالرحمٰن بن عوف وٹائٹیڈ کو بلایا اور ان سے بوچھا کہ تمہاری عمر (وٹائٹیڈ) بن خطاب کے متعلق کیا رائے ہے؟ وہ بولے آپ وٹائٹیڈ انہیں مجھ سے بہتر جانے ہیں۔ پھر آپ وٹائٹیڈ نہیں مجھ سے بہتر جانے ہیں۔ پھر آپ وٹائٹیڈ نے حضرت عثان غنی وٹائٹیڈ کو بلایا اور ان سے بوچھا تم مر (وٹائٹیڈ) بن خطاب کے متعلق کیا رائے ہے؟ وہ بو کے بلایا اور ان سے بوچھا تم عمر (وٹائٹیڈ) بن خطاب کے متعلق کیا گئے ہو؟ حضرت عثان غنی وٹائٹیڈ نے کہا میں انہیں جھتا جانا ہوں وہ یہ ہے کہ ان کا باطن ان کے ظاہر سے بہتر ہے اور ہم میں انہیں جھتا جانا ہوں وہ یہ ہے کہ ان کا باطن ان کے ظاہر سے بہتر ہے اور ہم میں

ان جیسا کوئی بھی نہیں ہے۔ آپ دائن ہے نے فرمایا اگرتم انہیں جھوڑ بھی دیتے تو میں

تم سے بچھ ناراض نہ ہوتا۔ پھر آپ والنفظ نے حضرت اسید والنفظ بن حفیر اور دیگر

المناز ال

مہاجرین وانصار سے مشورہ کیا۔ حضرت اسید والنفی نے کہا اللہ عزوجل گواہ ہے ہم انہیں آپ واللہ عزوجل کی رضا انہیں آپ واللہ عزوجل کی رضا کے ایک واللہ عزوجل کی رضا کے لئے خوش ہوتے ہیں یا عضبنا ک ہوتے ہیں اور ان جیسا کوئی قوی آ دمی نہیں جو منصب خلافت کا حقد ار ہو۔

حضرت عبدالرحمان بن عوف طالعين كي روايت:

حضرت عبدالرحمان بن عوف رالنفظ سے مروی ہے فرماتے ہیں میں حضرت ابو بکر صدیق و النفظ کی علالت کے دنوں میں ان کی عیادت کے لئے گیا۔ میں نے کہا الحمد للہ! آج آپ رالنفظ کی دیکھا کہ آپ رالنفظ کی جیسے ہیں۔ میں نے کہا: الحمد للہ! آج آپ رالنفظ کی طبیعت قدر ہے بہتر ہے؟ آپ رالنفظ نے فرمایا کیا بہتری ای کو کہتے ہیں؟ میں نے طبیعت قدر ہے بہتر ہے؟ آپ رالنفظ نے فرمایا کیا بہتری ای کو کہتے ہیں؟ میں نے عرض کیا ہاں۔ آپ رالنفظ نے فرمایا۔

"آئے جھے بخت تکلیف ہے اور مہاجرین کے گردہ! بیاری کی اس تکلیف سے زیادہ تکلیف جھے اس بات کی ہے کہ میں نے تم میں سے بہتر آ دمی کو خلیفہ مقرر کیا اور تم اس بات پر ناداض ہو کہ جھے خلافت کیوں نہ ملی؟ تم دنیا کو دیکھ رہے ہو کہ تمہاری طرف بڑھ رہی ہے اور جب بیآئے گی تو تم ریشم کے پردے اور جب بیآئے گی تو تم ریشم کے پردے اور جی استعال کرو کے تب تمہاری بیر حالت ہو جائے گی کہ حمہیں آ ذر بائیجان کی اون پر لیٹنے سے اتنی تکلیف ہوگی جتنی خاردار جماڑیوں میں لیٹنے سے ہوتی ہے۔خدا گواہ ہے کہ بغیر خاردار جماڑیوں میں لیٹنے سے ہوتی ہے۔خدا گواہ ہے کہ بغیر کی قصور اور جرم کے تمہاری گردئیں کائے وی جا کیں تو بی کمی قصور اور جرم کے تمہاری گردئیں کائے وی جا کیں تو بی نیادہ بہتر ہے اس چیز سے کہتم دنیا میں الجم جاؤ کی تم بی سوتی ہوگی جن کی سب

سے سلے لوگوں کو بھٹکاؤ گے۔"

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف رظائفۂ فرماتے ہیں کہ میں نے عرض کیا آپ والفیڈ تکلیف میں ہیں اس لئے ذرا نرمی سے کام لیس اللّٰدعز وجل آپ رظائفۂ پررحم فرمائے ہمیں عمر (رظائفۂ) کی نامزدگی پرکوئی اعتراض نہیں۔

اعتراض كاجواب:

روایات میں آتا ہے حضرت ابو بمرصدیق طالفنا جب مرض الموت میں مبتلا ہوئے تو بندرہ روز تک بیار رہے۔ آپ طالفنڈ بخار کی شدت میں بھی مسجد میں تشریف لاتے مگر جب بخار کی شدت میں کوئی کمی نہ آئی تو آب رہائن نے حضرت عمر فاروق والنفذ كوامامت كانتكم وياله كجر جب اينے وصال كاليقين ہو گيا تو اكابر صحابہ کرام می کفتی کو بلایا اور ان کے مشورہ سے حضرت عمر فاروق مٹائنٹ کا نام بطورِ خلیفہ پیش کیا۔حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والغیز نے کہا ہمیں عمر (والغیز) کے خلیفہ بنے برکوئی اعتراض نہیں لیکن ان کا مزاج سخت ہے۔حضرت عثان عَنی طالعَن لیے کہا كدان كا باطن ان كے ظاہر سے بہتر ہے۔حضرت طلحہ بن عبيداللد والنفظ نے بھى حضرت عمر فاروق والفنوز کے مزاج کے سخت ہونے کی شکایت کی۔ آپ والفنوز نے ان سب کی باتیں سننے کے بعد فرمایا جب خلافت کا بوجھ ان کے کندھوں پر پڑے کا تو ان کی طبیعت خود بخو د نرم ہو جائے گی۔ کسی نے کہا کہ آپ ڈاٹٹنڈ نے حضرت عمر فاروق ولانغنز كوخليفه بنايا اب الله كوكيا جواب دي محي؟ آپ دلانغنز نے فرمايا ميں نے اس وقت تم سب میں سے بہترین مخص کو خلیفہ بنایا ہے۔ پھر آپ طالعہ نے حضرت عثان غني ولانفؤ كوحكم ديا وه حضرت سيدنا عمر فاروق ولالفؤ كي خلافت كالروانه تیار کریں۔ جب معرت عثان عن طافع نے خلافت کا پروانہ لکے دیا تو آپ طافعہ

المنت عملات والمالية المنتاع ا

نے اس پراپی مہر ثبت کی اور دعا کی اللّه عز وجل عمر (رقبی نیز) کو اسلام اور اہل اسلام کی طرف سے جزائے خیر عطافر مائے۔ پھر آپ رقبی نیز منبر پر تشریف لائے اور لوگوں سے خطاب کرتے ہوئے فرمایا۔

"میں نے اپنے کسی رشتہ دار کو خلیفہ نہیں بتایا بلکہ عمر (طابقیز) کا استخاب کیا ہے کہ اطاعت پر عمل کرواور اس کی اطاعت کرو۔''

پھر حصرت ابو بکر صدیق طالغیز نے حضرت عمر فاروق طالغیز کو اپنے پاس بلایا اور انہیں امورِ خلافت سے متعلق سیجے تھیں۔

حضرت عمر فاروق طالعُنهُ كوامورِخلافت مسيمتعلق چند تفيحين:

روایات بیس آتا ہے کہ حصرت ابو بکر صدیق رفائیڈ مرض وصال میں مبتلا ہوئے تو آپ رفائیڈ نے صحابہ کرام رفائیڈ کے مشورہ سے حضرت عمر فاروق رفائیڈ کو فلیفڈ کو بلوایا اور آپ رفائیڈ نے جب حضرت عمر فاروق رفائیڈ کی تامزدگ کا حتی فیصلہ کرلیا تو آپ رفائیڈ نے حضرت عمر فاروق رفائیڈ کو بلوایا اور ان سے فرمایا۔
فیصلہ کرلیا تو آپ رفائیڈ نے حضرت عمر فاروق رفائیڈ کو بلوایا اور ان سے فرمایا۔
''عمر (رفائیڈ)! میں تم کو ایسے امرکی رعوت ویتا ہوں جو ہراس آدی کو تھا کو بیا اللہ کی آدی کو تھا کو بیا اللہ کی مانبرداری کرتے رہنا اور اللہ عز وجل سے ڈرتے رہنا۔ اللہ کو مانبرداری کرتے رہنا اور اللہ عز وجل سے ڈرتے رہنا۔ اللہ عز وجل کی اطاعت کرنے میں عز وجل کی اطاعت کرنے میں تقویٰ سے کام لینا۔ یادرکھو کہ تقویٰ قابل تھا طت امر ہے اور میں تم کو خلافت پیش کرتا ہوں اور اس کو وہی آدی اپنے ذیے میں میں تم کو خلافت پیش کرتا ہوں اور اس کو وہی آدی اپنے ذیے میں جس نے حق بات کا تھم دیا

اورخود باطل کام کیا اور بھلی بات کا تھم کیا اورخود منکرات برعمل بیرار ہا۔ وہ دن دور نہیں کہ اس کی آرزوختم ہو جائے اور اس کا عمل ضائع ہوجائے۔ پس اگرتم لوگوں کے امور کے لئے ان کے فلیفہ ہوئے ہوتو تم سے جہاں تک ہو سکے اپنے ہاتھوں کو لوگوں کے خون سے روکنا اور اپنے بیٹ کو ان کے مالوں سے فالی رکھنا اور اپنی زبان کو ان کی آبرور بزی سے بچانا۔ اگرتم فالی رکھنا اور اپنی زبان کو ان کی آبرور بزی سے بچانا۔ اگرتم سے ایبا ہو سکے تو کر لینا اور انڈعز وجل کے بغیر کسی کام پر قدرت حاصل نہیں ہوتی۔'

حضرت سالم بن عبدالله وللفيئة فرمات بين جب حضرت ابو بكر صديق وللفيئة كه وصال كا وفت قريب آياتو آب وللفيئة نے وصيت فرمائی۔ بهم الله الرحمٰن الرحيم!

اما بعد! یہ ابو بر (دافین) کی جانب سے وہ عبد ہے جو ایسے وقت میں دیا جب کداس کی دنیا کا زمانہ اختام پذیر ہے اور وہ دنیا سے جارہا ہے۔ اس کی آخرت کا دور اول شروع ہونے والا ہے اور دار آخرت میں قدم رکھ رہا ہے جہاں کا فربھی ایمان لے آئے گا اور گنبگار بھی متقی بن جائے گا اور جھوٹا شخص بھی سے ہوئے در کر این ہوں ۔ اگر انہوں نے انساف سے کام لیا اور میرا مقرر کرتا ہوں۔ اگر انہوں نے انساف سے کام لیا اور میرا گمان بھی ان کے متعلق بی ہے اور اگر انہوں نے ظلم کیا تو وہ جانیں۔ میں نے جملائی کا ادادہ کیا ہے اور اگر انہوں نے ظلم کیا تو وہ جانیں۔ میں نے جملائی کا ادادہ کیا ہے اور غیب کاعلم جھے جانیں۔ میں نے جملائی کا ادادہ کیا ہے اور غیب کاعلم جھے

المنتزعم المنتاب المنت

نہیں۔اللہ عزوجل کا فرمان ہے جن لوگوں نے ظلم ڈھائے ان کو بہت جلد بہتہ چل جائے گا کہ س کروٹ پر وہ بلٹا کھا کیں گے۔''

ال کے بعد حضرت ابو بکر صدیق والنظر نے حضرت عمر فاروق والنظر کو بلا بھیجا اور جب حضرت عمر فاروق والنظر کو بلا بھیجا اور جب حضرت عمر فاروق والنظر عاضر ہوئے تو آپ والنظر نے ان کومخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

"اے عمر (طالفہ)! بغض رکھنے والے سے تم نے بغض رکھا اور محبت کی اور یہ پرانے زمانے محبت کی اور یہ پرانے زمانے سے تم نے محبت کی اور یہ پرانے زمانے سے جبت کی جبت اور شرارت سے محبت کی جاتی ہے۔ "کہ بھلائی سے عداوت اور شرارت سے محبت کی جاتی ہے۔ "کہ بھلائی سے عداوت اور شرارت سے محبت کی جاتی ہے۔ "ک

حضرت عمر فاروق والنفظ نے کہا کہ جمعے خلافت کی بچھے عاجت نہیں۔ حضرت ابو بکرصدیق والنفظ نے فرمایا۔

" عر (المنافز)! منصب خلافت کو تبہاری ضرورت ہے تم نے سرکار دوعالم مضطفی آخ کو دیکھا ہے اور تم ان کی صحبتوں میں رہے سرکار دوعالم مضطفی آخ کو دیکھا ہے اور تم ان کی صحبتوں میں رہے اس معاور تم نے دیکھا ہے حضور نبی کریم مضطفی آنے ہمارے نفول کو اپر میں ترجیح دی اور یہاں تک کہ ہم لوگ آپ مضطفی آئے ہے کے دیتے ہوئے ان عطیات میں سے ہیں جو آپ مضطفی آئے نے ہم لوگوں کو عطا فرمائے اور بچا ہوا اپنے الل کو ہدید دیا کرتے ہم لوگوں کو عطا فرمائے اور بچا ہوا اپنے الل کو ہدید دیا کرتے سے اور تم سے اور تم سے جمے ویکھا اور میرے ساتھ رہے۔ میں نے تو اس ذات گرامی کے نقش قدم کی بیروی کی جو جمھ سے بہلے اس ذات گرامی کے نقش قدم کی بیروی کی جو جمھ سے بہلے اس ذات گرامی کے نقش قدم کی بیروی کی جو جمھ سے بہلے

تضے۔ اللہ عزوجل کی قتم! یہ باتیں میں سوتے میں نہیں کررہا
ہوں اور نہ ہی خواب و کھے رہا ہوں اور میں کسی وہم کے طور پر
یہ شہادت نہیں وے رہا اور بے شک میں ایک ایسے راستے پر
ہوں جس میں کی نہیں۔

بِ عَمْ اللَّهُ اللَّهِ اللَّه

ا _عر (ذالفنه) المهمين معلوم مونا حابية بي شك الله عز وجل کے لئے کچھ حقوق ہیں رات میں جن کو وہ دن میں نہیں قبول فرما تا ادر بچه حقوق بین دن میں جن کو وہ رات میں قبول نہیں فرمات اور بروزِ قیامت جس کسی کی بھی تراز دیئے اعمال وزنی ہوگی اور تراز وئے اعمال کے لئے حق بھی یہی ہے کہ وہ وزنی اس وفت ہوگی جب اس میں حق کے سوالی کھے نہ ہو گا اور بروزِ قیامت جن لوگوں کے اعمال کا بلیہ بلکا ہوگا وہ وہی ہوں کے جنہوں نے باطل کی پیروی کی ہوگی اور میزان عمل کے لئے حق ہے کہ بجز باطل کے اور کسی چیز سے اس کا بلیہ بلکا نہ ہو۔ اے عمر (طائفنہ)! نے شک سب سے پہلی وہ چیز جس سے میں حمہیں ڈراتا ہوں وہ تمہارانفس ہے اور میں تم کولوگوں سے بھی برہیزگاری کا تھم دیتا ہوں۔لوگوں کی نظریں بہت بلند وبالا و سی مین اور ان کی خواہشات کامشکیزہ پھونگوں سے كر كيا ہے اور لوكوں كے لئے لغزش سے خبريت ہو جائے كى · تم لوگوں کولغزشات میں پڑنے ہے بیجاؤ سے اس لئے لوگوں کو ہمیشہ تمہاری جانب سے خوف رہے گا اور تم سے ڈرتے

www.iqbalkalmati.blogspot.com المعترف المعترف

رہیں گے جب تک کہتم اللہ عزوجل سے ڈرتے رہو گے اور
یہ میری وصیت ہے اور بیل تمہیں سلام کرتا ہوں۔'
حضرت مجاہد میں آتھ سے مروی ہے فرماتے بیں جب حضرت ابو بکر صدیق
دخالفیڈ کا آخری وقت آیا تو آپ رہائفیڈ نے حضرت عمر فاروق رہائفیڈ کو بلایا اور ان
سے فرمایا۔

''ال عمر (رفی الله عروجل سے ڈرتے رہنا اور تہہیں معلوم ہے کہ الله کے لئے جوا عمال دن میں کرنے کے ہیں وہ رات میں تبول نہیں ہوتے اور جوا عمال رات میں کرنے کے ہیں وہ دن میں قبول نہیں ہوتا اور بے شک نوافل اس وقت تک قبول نہیں ہوتے جب تک کہ فرائض اوا نہ کئے جا کیں اور جس کی نہیں ہوتے جب تک کہ فرائض اوا نہ کئے جا کیں اور جس کی کے اعمال کا بلہ بروز قیامت وزنی ہوگا وہ دنیا میں حق کی پیروی کرنے والا ہوگا اور تر از وئے اعمال کے لئے جس میں کل حق رکھا جائے گا بیری ہے کہ وہ وزنی ہواور بروز قیامت کل حق رکھا جائے گا بیری ہے کہ وہ وزنی ہواور بروز قیامت کی اعمال کا بلہ بلکا ہوگا وہ ان کے دنیا میں باطل جن لوگوں کے اعمال کا بلہ بلکا ہوگا وہ ان کے دنیا میں باطل جن لوگوں کے اعمال کا بلہ بلکا ہوگا وہ ان کے دنیا میں باطل کی وجہ سے ہوگا۔

اے عمر (من النور) اسب شک الله عزوجل نے اہل جنت کا تذکرہ فرمایا ہے اور الن کا تذکرہ الن کے اجھے اعمال کی وجہ ہے۔ جب جب میں اہل جنت کو یاد کرتا ہوں تو میں کہتا ہوں مجھے خطرہ جب کہ میں اہل جنت کو یاد کرتا ہوں گا اور الله عزوجل نے اہل ہو دوز خ کا بھی تذکرہ فرمایا ہے اور الن کا تذکرہ الن کی بدا تھا لیوں ووز خ کا بھی تذکرہ فرمایا ہے اور الن کا تذکرہ الن کی بدا تھا لیوں

الانترام المناسل كيسل المناسل المناسل

کی وجہ سے ہے اور جب میں اہل دوزخ کو یاد کرتا ہوں تو کہتا ہوں کہ مجھے خطرہ ہے کہ کہیں میں ان کے ساتھ نہ ہوں۔ اگر تم نے میری اس نصیحت کی حفاظت کی تو کوئی چیز تمہیں موت سے زیادہ محبوب نہ ہوگی اور موت آنے والی ہے اور تم کسی بھی طرح موت سے عاجز نہیں ہو۔''

حضرت عثمان غني طالفيَّهُ كويروانه خلافت لكصنے كاحكم دينا:

روایات میں آتا ہے حضرت ابو بکر صدیق رطانی نے حضرت عمر فاروق رظافی کو خلایا وظافی کو خلایا اور آپ رطانی کو خلایا جو آپ رطانی کو خلایا جو آپ رطانی کو خلایا کہ وہ حضرت عثمان عنی رطانی کو جارا کا جو آپ رطانی کے کا بت کیا کرتے ہے اور انہیں تھم دیا کہ وہ حضرت عمر فاروق دلائی کے لئے خلافت کا پروانہ کھیں اور پھر آپ رطانی نے آبیں پروانہ خلافت کو است کو است کو کر مرفر مایا۔

بسم اللدالرحمن الرحيم

''بیوہ عہد ہے جو ابو بھر بن ابی قافہ رہا گہنا نے دنیا ہے آخرت
کی جانب جاتے ہوئے تحریر کروایا بلاشبہ عمر (رہا گئے:) کوتم پر ظیفہ مقرر کیا جاتا ہے اور تم پر لازم ہے کہ تم اس کا حکم بجالا و اور اس کی اطاعت کرواور آگر وہ عدل کریں اور میں ان کے بارے میں بہی رائے رکھتا ہوں اور آگر وہ بدل جا میں تو پھر تم بارے میں بہی رائے رکھتا ہوں اور آگر وہ بدل جا میں تو پھر تم وہی کرو جو تم بارا گمان ہواور میں نے تو بھائی کا ارادہ کیا اور میں خیس غیب کا علم نہیں رکھتا تم لوگوں کو میراسلام ہواور اللہ عز وجل کی رحمت تم یرنازل ہو۔''

www.iqbalkalmati.blogspot.com المعترف المعترف

ابن عساکر کی روایت میں ہے جب حضرت عثان غنی دائیڈ نے فلافت کا پروانہ تحریر کرلیا تو حضرت ابو برصد بی رفائیڈ پرغشی طاری ہوگئی۔ جب آپ دفائیڈ کو ہوٹ آیا تو آپ برفائیڈ نے فرمایا تم مجھے پڑھ کر سنایا۔ حضرت عثان غنی دفائیڈ نے پروانہ خلافت پڑھ کر سنایا اور آپ رفائیڈ نے تکبیر بلند کی اور فرمایا مجھے بی فدشہ لاحق ہوا کہ میں میری عثنی میں میری جان چلی جاتی اور لوگ اختلاف کا شکار ہوجاتے۔ بھر آپ رفائیڈ نے باہر جاکر بھر آپ رفائی اور حضرت عثان غنی دفائیڈ نے باہر جاکر بھر آپ رفائی کی بیعت کرو سے کہا مجھے جو نام کھوایا گیا ہے کیا تم اس کی بیعت کرو سے کہا مجھے جو نام کھوایا گیا ہے کیا تم اس کی بیعت کرو سے کہا بھے تک کریں گے۔

ایک روایت میں ہے جب حضرت ابو بکر صدیق رفائظ کی طبیعت ناساز ہوئی تو آپ رفائظ کی طبیعت ناساز ہوئی تو آپ رفائظ نے کھڑکی سے جھا تک کرلوگوں سے فرمایا بلاشہ میں نے تم سے ایک عہد کیا اور کیا تم اس عہد پر راضی ہو؟ لوگوں نے عرض کیا ہم راضی ہیں۔ حضرت علی الرتضی رفائظ کھڑے ہوئے اور فرمایا جب تک منصب امارت کو حضرت عمر فاروق رفائظ کے سپر دنہیں کیا جائے گا ہم راضی نہ ہوں گے اور پھر حضرت ابو بکر صدیق رفائظ نے سپر دنہیں کیا جائے گا ہم راضی نہ ہوں گے اور پھر حضرت ابو بکر صدیق رفائظ نے ایسا ہی کیا۔

فيصلے برتشكر كا اظهار:

طبقات ابن سعد میں منقول ہے جب لوگوں نے حضرت عمر فاروق ملائنے؛ کی خلافت پر رضامندی ظاہر کر دی تو حضرت ابو بحرصد بی مظافعۂ نے اپنے ہاتھ

بارگاهِ خداوندي ميس بلند كئے اور كها-

"اے اللہ! اس بیعت سے میری خواہش صرف اتی تھی کہ لوگوں کی معلائی ہواور مجھےان کے متعلق فتنے کا اندیشہ تھا پس میں نے وہ کام کیا جس کے متعلق تو بہتر جانتا ہے اور میں نے اپنی رائے سے اجتہاد کیا اور اس مخص کو اپنا جائیں بنایا جوان میں بہتر اور قوی ہے اور جو لوگوں کو ہدایت پر رکھنے والا ہے اور مجھ پر تیری جانب سے بھیجی گئی حالت طاری ہے اور اب تو ان کا وارث ہے اور یہ تیرے بندے ہیں اور ان کی باگ دوڑ تیرے ہاتھ میں ہے اور ان کے لئے ان کے امیر کی اصلاح فرما دے اور اسے نبی رحمت میں ہیروی کرنے والا بنادے اور اسے اپنے نبی رحمت میں ہیروی کرنے والا بریا در اللہ تیرے باتھ میں ہے اور ان کے لئے ان کے امیر کی اصلاح فرما دے اور اسے اپنے نبی رحمت میں ہیروی کرنے والا بریا در اللہ تیرے اور اس کے لئے عوام کو درست کردے۔ "

حضرت ابوبكر صديق والفين كاوصال:

حضرت ابو بکر صدیق والنیز کے مرض الموت کی ابتداء سات جمادی الثانی کو ہوئی۔ اس روز سوموار کا دن تھا۔ آپ والنیز نہائے تو آپ والنیز کو بخار ہو گیا جو پندرہ دن تک رہا۔ اس دوران حضرت عمر فاروق والنیز ، آپ والنیز کے حکم پر امامت فرماتے رہے۔ بالآخر ۲۱ جمادی الثانی ساہجر کی کو آپ والنیز اس جہانِ فانی سے کوچ فرما گئے۔

ابن سعد کی روایت میں ہے حضرت ابو بمرصدیق والفنو کی خدمت میں طوے کی ایک فدمت میں طوے کی ایک فتم کہیں سے بطور تخفہ آئی اور آپ والفنو اور حارث والفنو بن کلدہ وہ طوہ تناول فرما رہے منعے کہ حارث والفنو نے کہا اے خلیفہ رسول الله منظم اینا اپنا

المنت عمر المنت المنتاح المنتا

ہاتھ روک دیں اس طوہ میں زہر ہے جو سال بعد اثر کرے گا اور ہم دونوں سال بعد ایک ہی دن اس دنیا ہے کوچ کریں گے۔ آپ رظافیٰ کے مرضِ وصال کی ابتداء اس طوہ کو نوش فر مانے کے ایک برس بعد جمادی الآخر کی سات تاریخ کو ہوئی اور آپ رظافیٰ نے اس دن عسل کیا اور سردی شدید تھی۔ آپ رظافیٰ کو بخار ہو گیا جو پندرہ دن تک جاری رہا یہاں تک کہ آپ رظافیٰ نماز کے لئے بھی نہ جا سکتے تھے۔ آپ رظافیٰ نے حضرت عمر فاروق رظافیٰ کو کھم دیا کہ وہ لوگوں کو نماز پڑھا کمیں اور آپ رظافیٰ کی عیادت کے لئے آتے تھے۔ اس جو الگائے کے اس کے ایس کے اس کو سے کہ اس کے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کا کہ دران لوگ آپ رظافیٰ کی عیادت کے لئے آتے تھے۔

ام المومنین حضرت عائد صدیقه بناتینا سے مروی ہے فرماتی ہیں کہ والد بزرگوار حضرت ابو بکر صدیق بناتین مرض الموت میں جتلا ہوئے اور بندرہ دن تک مرض الموت میں جتلا ہوئے اور بندرہ دن تک مرض الموت میں جتلا ہوئے واروق بناتین مرض الموت میں جتلا رہے اس دوران آپ بناتین کے تکم پر حضرت عمر فاروق بناتین نماز میں امامت کرتے رہے اورلوگوں کی کثیر تعداد آپ بناتین کی عیادت کے لئے حاضر ہوتی رہی۔

روایات میں آتا ہے حضرت ابو بکر صدیق وظافی نے وصال فرمایا تو آپ طالع نے در ایا تو آپ طالع نے در اس میں آتا ہے حضرت المال کے چھ ہزار درہم قرض تھا۔ آپ دائی نے دورانِ مرض فرمایا۔

''عمر (خلافز) نے مجھ پر چھ ہزار درہم بنا دیئے۔'' پھر حضرت ابو بکر صدیق خلافظ نے وصیت فرمائی میرا فلاں باغ فروخت کر کے بیت المال کے چھ ہزار درہم ادا کر دینا۔ جعفرت عمر فاروق والفظ نے بین کر فرمایا۔

"الله عزوجل ابوبكر (والنفظ) پر رحم قرمائے وہ جاہتے ہیں اسپنے

المنت عمين وفي كيسل المال

بعد کسی کے لئے کوئی بات نہ چھوڑ جا کیں۔''

حضرت ابو بمرصدیق طالفین کا وصال ۲۱ جمادی الثانی ۱۳ هروز سوموار کو تربیسته برس کی عمر میں ہوا۔

خضرت ابو بکر صدیق و النفی کوشل آپ و النفی کی اہلیہ حضرت اساء والنفی است میس اکثر روزہ ہے ہوتی بنت میس اکثر روزہ ہے ہوتی بنت میس اکثر روزہ ہے ہوتی تصین اور جس دن آپ و النفی کے وصال کا وقت قریب ہوا تو آپ و النفی نے انہیں فتم دے کرروزہ رکھنے ہے منع فرمایا تا کہ بوقت مسل کہیں نقابت نہ ہوجائے۔

پڑھائی اور قبر مبارک حضور نبی کریم مطابق کے پہلو میں کھودی گئی۔ قبر مبارک میں حضرت عمر فاروق، حضرت عثمان غنی، حضرت طلحہ بن عبیداللہ اور حضرت عبدالرحمٰن بن ابو بکر دی گئی نظرت عبداللہ بن عمر دان کھیا نے بھی لحد میں اتر نا جا ہا تو حضرت عبداللہ بن عمر دان کھیا نے بھی لحد میں اتر نا جا ہا تو حضرت عمر فاروق دی گئی نے آئیں منع کرتے ہوئے فرمایا۔

"بس کافی ہیں۔"

ام المومنين حضرت عائشه صديقه ذالفي السيمروي بفرماتي بي كهجس

المنت عملي الوق كيسل

رات والد بزرگوار حضرت ابو بکر صدیق ظافی نے وصال پایا اسی دن آپ ظافی کو فرات و رات و الله بنائی کو فرات و ابو بکر صدیق ظافی نے تدفین کے بعد مسجد نبوی میں جا کرتین و تر یا گیا اور حضرت عمر فاروق ظافی نے تدفین کے بعد مسجد نبوی میں جا کرتین و تر یا صحد۔

ابن سعد میں ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ طابخیا ہے مروی ہے فرماتی ہوئی ہے است مروی ہے فرماتی ہوئے تو ہیں والد بزرگوار حضرت ابو بمرصدیق طابغیۂ جیب مرض الموت میں گرفتار ہوئے تو آپ طابغیۂ نے فرمایا۔

"میں نے اپنے دورِ خلافت میں مسلمانوں کے مال میں سے
ایک درہم اور دیتارہیں لیا سوائے اپی گزراوقات کے لئے۔
ابتم میرے مال کا جائزہ لے لینا اور دیکھنا میرے خلیفہ بننے
کے بعد میرے مال میں اضافہ ہوا ہے یانہیں اور جومیرا سامان
ہوجاؤں۔ "
ہوجاؤں۔ "

ام الموسین حضرت عائشہ صدیقتہ فراتی ہیں جب والد بزرگوار کا وصال ہوا تو آپ فراتی عاں ایک حبثی غلام تھا جو بچوں کو کھانا کھلاتا تھا، ایک اونٹ تھا جس پر پانی ڈھویا جاتا تھا اور ایک بھٹی پرانی چاورتھی۔ہم نے بیترام چیزیں حضرت عمر فاروق فرات فرات کے۔

" الوبكر (ولا النيز) نے اسپ بعد آنے والوں كوتھكا ديا ہے۔ "

الانتراكيسي رق كيسل 143

خلیفہ بنے کے بعیدخطبہ ارشادفرمانا

حضرت عمر فاروق وطالفية في السناني الثاني ١٣١٥ منصب خلافت سنجالا۔اس وفت آپ رٹی نیخ کی عمر مبارک قریباً باون برس تھی۔ آپ رٹی نیکٹی منصب خلافت پر فائز ہونے کے بعد منبر پرتشریف لائے اور ذیل کا خطبہ دیا۔ ''اے لوگو! میں بھی تمہاری طرح انسان ہوں اگر <u>مجھے</u> حضرت ابوبكرصد بق ملافظ كى نافرمانى كاخيال نه ہوتا تو ميں مجھى تمہارا حاتم بنايندنه كرتار ___ ا ب الوگو! الله عز وجل نے مجھے تمہارے لئے آز مائش بنایا ہے اور تمہیں میرے لئے آزمائش بنایا ہے۔ جو نیک کام کرے گا میں ہمی اس کے ساتھ نیکی کروں گا اور جو برائی کا مرتکب ہوگا میں اس کوعبر تنا ک سزا دوں گائ[،] مجر حصرت عمر فاروق والنفيز نے اللہ عز وجل کی بارگاہ میں یوں دعا کی۔ ''البی! میں سخت ہوں مجھے زم کر دے۔ الني امي كمزور مول مجھے طاقتور بنا دے۔ الني! من بخيل ہوں مجھے تی بنا دے۔''

جب لوگوں کے دلوں میں حضرت عمر فاروق بڑاٹنڈ کی سختی کے متعلق

منت عمر المقال كرفيه لي

شکوک بیدا ہوئے تو آپ رہائی نے انہیں مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔
''اے لوگو اِتمہیں علم ہونا چاہئے کہ میری تخق اب کم ہو چکی ہے
البتہ میں مسلمانوں پر کسی ظلم اور ظالم کا وجود برداشت نہیں
کروں گا۔ میں امن اور سلامتی اختیار کرنے والوں کے ساتھ
نرم رہوں گا اور ظالموں کو حرف غلط کی ماند صفح ہت ہے منا کر
دم لوں گا۔''

حضرت سعید بن میتب رظائفہ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رظائفہ جب منصب خلافت پر فائز ہوئے تو آپ رظائفہ مسجد نبوی میں تشریف لائے اور منبر پر کھڑے ہوکر اللہ عز وجل کی حمد و ثناء بیان فرمائی اور حضور نبی کریم مطابقہ پر درود وسلام پڑھنے کے بعد فرمایا۔

"اما بعد! میں جانتا ہوں تم مجھے تخت دیکھتے ہواور میری تخی کی وجہ یہ ہے کہ میں نے حضور نی کریم مضافیاً کے ہمراہ ایک عرصہ گزارا ہے اور میں حضور نی کریم مضافیاً کا خادم تھا اور حضور نی کریم مضافیاً کا خادم تھا اور حضور نی کریم مضافیاً لوگوں پر کریم شخطافیاً کے مقابل ایک کوار کی مانند تھا جے حضور نی کریم مضافیاً نے مقابل ایک کوار کی مانند تھا جے حضور نی کریم مضافیاً نے میان میں رکھا اور مجھے جس امر سے منع کیا میں اس سے باز رہا اور پھر حضور نی کریم مضافیاً اس ونیا سے کوچ کر گئے اور حضور نی کریم مضافیاً اس ونیا سے کوچ کر گئے اور حضور نی کریم مضافیاً اس ونیا سے کوچ کر گئے اور حضور نی کریم مضافیاً اس ونیا سے کوچ کر گئے اور حضور نی کریم مضافیاً اس ونیا سے کوچ کر گئے اور حضور نی کریم مضافیاً نے جب وصال فرمایا اس وقت مجھ سے راضی حضرت ابو بکر صدیق دائی ڈائیڈ خلیفہ مقرر ہوئے اور میں حضرت ابو بکر صدیق دائیڈ کے ساتھ رہا اور وہ رقبق القلب حضرت ابو بکر صدیق دائیڈ کے ساتھ رہا اور وہ رقبق القلب

اور رحم کرنے والے نتھے اور میں ان کا بھی خادم تھا اور میری تخی ان کی نرمی کے ساتھ مل جاتی تھی۔اگر حضرت ابو بمرصدیق خِالِتُونُ مجھے کسی بات ہے رکنے کا حکم دیتے تو میں اس ہے رک جاتا تھا اور پھر حضرت ابو بمر صدیق طالنیڈ بھی اس دنیا ہے کوچ کر گئے اور جب ان کا وصال ہوا تو وہ مجھ ہے راضی تھے اور انہوں نے مجھے خلیفہ مقرر کیا۔ اب جبکہ میں خلیفہ بن چکا ہوں تو تم مجھے جانتے ہواور تمہیں میرا بخو بی تجربہ ہےاور تم حضور نی کریم سطاعین کی سنت سے بھی بخوبی آگاہ ہو۔ میں کمز دروں کو ان کا حق دلوانے والا ہوں۔ اے اللہ کے بندو! الله عزوجل سے ڈرو اور خود کو میری مدد بر آمادہ کرو اور این جانوں کومیری سزایے محفوظ رکھواور مجھے امریالمعروف اور نہی عن المنكر كے ذریعے تنبیہ كرواوراللّٰدعز وجل نے مجھے تمہارے جن امور کا بگہبان مقرر کیا ہے ان کے متعلق مجھے نفیحت کرنے سے بھی خوفز دہ بنہ ہوتا۔"

امير المونيين كالقب اختيار كرنا:

حضرت ابو بکر صدیق و النفی خلیفه رسول الله منطقی کی القب سے بیکارے مات سے بیکارے مات سے دور آپ و کالنفی سے بیک مات سے بیلے مات سے اللہ منطق کی القب سب سے پہلے معرب مات میں فاروق و النفی نے اختیار کیا۔

ایک روایت کے مطابق حضرت عدی بن حاتم دلائنی نے حضرت عمر فاروق دلائنی کو اس لقب سے بکارا اور پھر بیالقب اتنامشہور ہوا کہ آپ دلائنی کے نام کا

حصه بن گیا۔

حضرت عمر فاروق شائعةٔ نے امير المونين کے لقب کا استعال خود بھی کيا ہے اور بوقت وصال جب آپ طالفن نے اپنے بیٹے حضرت عبداللہ بن عمر طالفن کو ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رہائٹنا کے پاس بھیجا تا کہ وہ اپنے حجرہ میں تدفین کی اجازت دیں تو آپ ٹٹائٹٹڑ نے جیٹے سے فرمایا انہیں امیرالمومنین کی جانب ہے نہیں بلکہ عمر (طالفیٰ) کی جانب سے کہنا کہ انہوں نے بیخواہش ظاہر کی ہے۔ ابن الی ضیممہ طالفنے فرماتے ہیں میں نے اپنی دادی شفاء طالفی است یو چھا حضرت عمر فاروق طالفيَّه كو امير المومنين كب كبها گيا؟ حضرت شفاء طالفيًّا نے فرمايا آپ رہنا نیڈ سنے عراق کے گورنر کو ایک مکتوب لکھا میرے یاس دو دانا اور ہوشیار آ دمی مجیجو تا کہ میں ان سے عراق کے حالات دریافت کروں۔ گورنرعراق نے حضرت عدى بن حاتم اور حضرت لبيد بن ربيعه رئ أنتم كو مدينه منوره بهيجار جب بيد دونول حضرات مدیندمنورہ بہنچ تو انہوں نے اپنے اونٹوں کومسجد نبوی مضایق کے باہر بٹھایا اور خود مسجد نبوی مضاعیًا بین داخل ہوئے۔مسجد نبوی مضاعیًا بین ان کی ملاقات حضرت عمرو بن العاص والنفيز سے ہوئی۔ ان حضرات نے حضرت عمرو بن العاص و النفط المير المومنين كهال بين بم ان سے ملنا جاہتے ہيں؟ حضرت عمر و بن العاص رِنْ النَّهُ فَيْ سِنَهِ قَرْما يا واللَّه ! ثمّ نے حضرت عمر فاروق رِنْ النَّهُ کے لئے عمدہ لقب اختیار کیا اور وہ امیر ہیں اور ہم مومنین ہیں۔ پھرحصرت عمرو بن العاص مزائنیز نے حصرت عمر فاروق مِثَالِثُنُهُ كَى خدمت مِين حاضر ہوكرعرض كيا اب امير المومنين! آپ مِثَالِمُنَهُ نے یو چھاممہیں بیکس نے کہا؟ حضرت عمرو بن العاص ملافظ نے کہا عراق کے محور زنے عدی بن حاتم اور لبید بن ربیعہ ری انتخ کو بھیجا ہے اور انہوں نے مجھ ہے

الانتستة عملين وأن كرفيد المسلك المسل

كہاوہ امير المومنين ہے ملنا جا ہتے ہیں۔

ابن الی خیشمہ دنائنی فرماتے ہیں میری دادی حضرت شفاء خِلِن فِهَا نے فرمایا اس دن سے پہلے حضرت عمر فاروق خِلائی کوخلیفہ خلیفہ رسول اللہ منظمی کہا جاتا تھا اور کسی بھی مکتوب پر ایسے ہی لکھا جاتا تھا اور پھراس دن کے بعد امیر المومنین عمر (خِلائنی) بن خطاب لکھا جانے لگا۔

ایک قول بی بھی ہے کہ حضرت مغیرہ بن شعبہ رٹائٹیڈ نے حضرت عمر فاروق رٹائٹیڈ کوسب سے پہلے امیر المومنین کے لقب سے بکارا تھا۔

ایک روایت میرسی ہے حضرت ابو بمرصدیق رٹی ٹیٹیڈ چونکہ خود کو خلیفہ رسول اللہ مضطفی کھا کرتے تھے لہذا حضرت عمر فاروق رٹی ٹیٹیڈ نے خلیفہ خلیفہ رسول اللہ مضطفی کھا شروع کیا مگر چونکہ میدلقب طویل تھا لہذا خود ہی لوگوں سے فرمایا میں تمہارا امیر ہول اور تم مومن ہولہذا تم مجھے امیر المومنین کہا کرواور پھراس دن کے بعد آپ رٹیٹیڈ کے ہرمکتوب پر امیر المومنین لکھا جانے لگا۔

O____O

www.iqbalkalmati.blogspot.com المنتسب كمنتشور ادول كريسل

دورِخلافت کے اہم فیصلے

حضرت عمر فاروق رظائفہ نے جب خلافت کا منصب سنجالاتو سب سے پہلے فوجی معاملات اور عراق کی مہم کی جانب اپنی توجہ مبذول فرمائی اور آپ رظائفہ نے حضرت ابو بکر صدیق رظافت میں جاری مہمات اور دیگر مہمات نے حضرت ابو بکر صدیق رظافت میں جاری مہمات اور دیگر مہمات کے مشورہ کو بھی کے متورہ کو بھی اکا برصحابہ کرام رش گفتہ کے مشورہ کو بھی اہمیت دی۔

حضرت عمر فاروق وظائفۂ نے سب سے پہلے جو اہم فیصلہ کیا وہ حضرت فالد بن ولید وظائفۂ کوشکر اسلام کے چیف آفیسر کے عہدہ سے معزول کرنا تھا۔ آپ فالد بن ولید وظائفۂ کوشکر اسلام کے چیف آفیسر کے عہدہ بن الجراح وظائفۂ کولشکر وظائفۂ نے حضرت فالد بن ولید وظائفۂ کی جگہ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح وظائفۂ کولشکر اسلام کا چیف آفیسرمقرر کیا۔

حضرت خالد بن ولید رٹائٹن کومعزول کرنے کے متعلق کی روایات ہیں اور بالعموم یہی مشہور ہے کہ حضرت عمر فاروق رٹائٹن نے حضرت خالد بن ولید رٹائٹن کو خلامت کی مشہور ہے کہ حضرت عمر فاروق رٹائٹن نے حضرت خالد بن ولید رٹائٹن کو خلیفہ بننے کے بعدمعزول کر دیا تھا۔

ایک روایت بیہ ہے حضرت خالد بن ولید رخانفی کو سامے میں ان کے عہدے سے معزول کیا گیا گئی کا سمعزول کی عہدے سے معزول کیا گیا۔ کئی لوگ حضرت خالد بن ولید بڑائی کی اس معزول کی وجہ ذاتی عناد کو قرار دیتے ہیں حالانکہ حضرت خالد بن ولید جائی نے جب معزول

الانت تركي الموق كرفيدل

ہونے کے بعد مدینہ منورہ واپس آ کر حضرت عمر فاروق طلاعی معزولی پرشکوہ کیا تو آپ طلاعیٰ نے فرمایا۔

"اے خالد (بڑائٹیڈ)! مجھے تم سے ولی ہی محبت ہے جیسی کہ ہونی جا ہے اور میں تمہاری عزت کرتا ہوں۔ تمہیں معزول کرنے کی وجہ سے کہ لوگ تمہارے کارناموں کی وجہ سے فتنہ میں مبتلا ہورہ سے فتنہ میں مبتلا ہورہ سے تھے۔ میں نے تمہیں معزول اس لئے کیا کہ لوگ جان جا نمیں کہ جو پچھ کرتا ہے وہ اللہ کرتا ہے۔'

تاریخ اسلام میں کوئی بھی صخص حضرت عمر فاروق بڑائیڈؤ کے پاید کا فاتکے نہیں ہوا۔ آپ ڈائیڈو کی فقوحات کا اندازہ اس بات سے لگایا جا سکتا ہے آپ ڈائیڈو کے دورِخلافت میں چھتیں سو(۱۳۰۰) علاقے فتح ہوئے، ۹۰۰ جامع مساجد کی تغییر ہوئیں اور ۹۰۰۰ عام مساجد تغییر ہوئیں۔ آپ ڈائیڈو کے دورِخلافت میں مفتوحہ علاقول کا کل رقبہ بائیس لاکھ مربع میل ہے۔

ذیل میں حضرت عمر فاروق طائعۂ کے دورِ خلافت میں ہونے والی فتو حات جن میں آپ طائعۂ کے فیصلے اور اقدامات بے احدا ہم تصےان کا تذکرہ اختصار کے ساتھ کیا جارہا ہے۔

عراق کی مہم کے متعلق اہم فیصلے:

عراق پراریان کے ساسانی خاندان کی حکمرانی تھی۔حضرت ابو بکرصدیق دلائٹیز کے دورِخلافت میں عراق میں فتو حات کا سلسلہ شروع ہو چکا تھا اور عراق کے تمام سرحدی علاقے حضرت ابو بکر صدیق دلائٹیز کے دورِ خلافت میں فتح ہو چکے

المنت المنتواروق كيديل

مہم پر بھیج دیا جس سے عراق میں فتوحات کا سلسلہ رُک گیا۔ حضرت عمر فاروق طالعہٰ فاروق طالعہٰ کے خلیفہ منتخب ہونے کے بعد اپنی پہلی توجہ عراق کی مہم کی جانب مرکوز فر مائی اور عراق کی مہم کی جانب مرکوز فر مائی اور عراق کی مہم سے متعلق اہم فیصلے کئے۔

حضرت عمر فاروق طالعنی نے جب خلافت کی ذمہ داریاں سنجالیں تو چہار جانب سے مسلمان جوق در جوق بیعت کے لئے حاضر ہونے لگے۔ آپ طالعنی است سیم مسلمان جوت ہوئے لوگوں کوعراق جہاد کی ترغیب دی۔

حضرت مننیٰ بن حارثہ بٹائنز نے حضرت عمر فاروق مٹائنز کے فیصلے کی تائید کرتے ہوئے مجمع عام میں تقریر کرتے ہوئے فرمایا۔

''عراق پراہل ایران کا قبضہ ہے اور میں نے ان مجوسیوں سے مقابلہ کر کے دیکھا ہے وہ میدانِ جنگ میں ٹابت قدم نہیں رہتے اور تم سب جانتے ہو کہ عراق کے تمام سرحدی علاقے ہمارے قبضے میں ہیں۔''

حضرت منی بن حارثہ دلی نفر کے تعدلوگ جوق در جوق فوج میں شامل ہونے لگے۔ حضرت عمر فاروق ولی خات ہے ہائے ہزار سپاہیوں کا ایک دستہ تیار شامل ہونے لگے۔ حضرت عمر فاروق ولی نفر نے پانچ ہزار سپاہیوں کا ایک دستہ تیار کیا اور حضرت ابوعبیدہ ثقفی ولی نفر کو اس کشکر کا سالار مقرد کرتے ہوئے انہیں عراق سجیجے کا فیصلہ کیا نہ

ساسانی خاندان کی سربراہ ایک عورت پوران دخت تھی جو فارس کے متوقع کم من حکمران کی دوجہ سے تخت نشین تھی۔ اس عورت پوران دخت نے رہتم کو وزیر دفاع مقرر کیا ہوا تھا جواس وفت اہل مجم میں سب سے بہادر، دلیراور جنگی معاملات میں دوجہ تے۔ ت

المنابع المالي كالمنابع المالي المنابع المنابع

رسم کو جب اشکراسلام کی آمد کی خبر ہوئی تو اس نے ایک بڑی فوج تیار کی اور اس پر جابان کو سید سالار مقرر کیا جو کہ عراق کا ایک نامور رکیس تھا اور عربوں کے مخالفین میں شار ہوتا تھا۔ حق اور باطل کے درمیان پہلا ٹکڑاؤ نمارق کے مقام پر ہوا۔ اسلامی لشکر جو تعداد میں ایرانی لشکر سے کم تھا گر جہاد کے جذبہ سے سرشار تھا۔ لشکر اسلام نے تعداد میں کم ہونے کے باوجود ایرانی لشکر کا ڈٹ کر مقابلہ کیا اور آنہیں شکر اسلام نے تعداد میں کم ہونے کے باوجود ایرانی لشکر کا ڈٹ کر مقابلہ کیا اور آنہیں شکر اسلام نے دوجار کیا۔

ارانی افواج کی شکست کی خبر سن کررتم پریشان ہو گیا اور اس نے فوری طور پر بہمن جارویہ کو تین ہزار فوج اور تین سوجنگی ہاتھیوں اور دیگر فوجی ساز وسامان کے ہمراہ روانہ ہوا۔ بہمن جارویہ این اس شکر کو لے کر مدائن سے روانہ ہوا اور راستہ میں لوگوں کو اہل عرب کے خلاف بھڑ کا تا ہوا اور اپنی فوج میں شامل کرتا ہوا دریائے فرات کے کنارے قسنا طف کے مقام پر پہنچا۔

اس دوران حضرت ابوعبیدہ تقفی والنفیز کالشکر نمارق سے ہوتا ہوا سقاطیہ کے مقام پر پہنچا اور وہاں ان کا مقابلہ نرس کے لشکر سے مقابلہ ہوا۔ نرس کالشکر بھی لشکر اسلام سے تعداد میں کی گنا بڑا تھا گر ایک زبردست مقابلہ کے بعد لشکر اسلام نے نری کے لشکر کو بھی عبرتناک شکست سے دوجار کیا۔ حضرت ابوعبیدہ تقفی بڑائیڈ نظر اسلام کے ہمراہ دریائے فرات کے دوسرے کنارے پر بہنچ۔

حضرت ابوعبیدہ تقفی فرائٹئ اشکر اسلام کے سالار ہونے کے باوجود جنگ میں خود بھی چیش پیش پیش سے اور جہاں جنگی فیصلے انتہائی دیدہ دلیری ہے کر رہے تھے وہاں جنگی فیصلے انتہائی دیدہ دلیری ہے کر رہے تھے وہاں بخوفی ہے خود بھی الڑر رہے تھے یہاں تک کہ آپ فرائٹئ نے بھی اس معرکہ میں جام شہادت نوش فرمایا۔ اس مقابلہ میں چھ ہزار دشمن بھی جہنم واصل ہوئے گر

الران المستر عمر المستر المستر

پهر بھی کشکر اسلام کو یہاں شکست کا سامنا کرنا پڑا۔

حضرت جرير بن عبدالله بحلى طالفيَّ كوعراق تصحيح كا فيصله:

لشكر اسلام كى شكست بجاطور يرحضرت عمر فاروق مِنْ النَّهُ كُوغضبناك كرنے کے لئے کافی تھی۔ آپ ٹیٹینڈ نے اب انتہائی سخت اقد امات اٹھانے کا فیصلہ کیا اور اب آپ بنائنیٔ ہر حال میں ایرانیوں کو شکست سے دوحیار کرنا جا ہتے تھے۔ آپ بنائیڈ نے ایرانی کشکر سے مقابلہ کے لئے تمام عرب قبائل میں اینے قاصدروانہ کئے اور انہیں جہاد کے لئے مکتوب لکھے جن میں عربوں کو ایرانیوں کے خلاف جنگ پر ابھارا کیا۔ آپ بنائٹو کے ان اقد امات کی وجہ ہے بے شار عرب جنگجو جہاد کے لئے آمادہ ہو گئے۔ آپ بٹائٹن سے کشکر اسلام کا سالا رحضرت جربر بن عبداللہ بحل بٹائٹن کومقرر كرنے كا فيصله كيا اور انہيں تھم ديا وہ لشكر اسلام كو لے كرعراق كے سرحدي علاقوں میں موجود حضرت متنیٰ بن حارثہ طالغیٰ کے پاس پہنچیں جہاں وہ لشکر اسلام کے ہمراہ موجود ہیں۔ ایرانی کشکر کو جب کشکر اسلام کے منظم ہونے اور دوبارہ حملہ کی خبر ملی تو انہوں نے بھی اینے بارہ ہزار سیاہیوں پرمشمل خصوصی فوج مہران بن مہرویہ کی سربراہی میں اپنی سرحدی فوج کی مدد کے لئے روانہ کی۔

دریائے فرات کے کنارے ہویب کے مقام پرلشکر اسلام اور ایرانی لشکر
کا آمنا سامنا ہوا۔ خونر پر معرکہ کے بعدلشکر اسلام کو فتح ہوئی اور مہران بن مہرویہ
میدانِ جنگ میں مارا گیا۔ اس معرکہ میں بے شار مسلمان بھی شہید ہوئے جن میں
حضرت نتی بن حارشہ بڑاتین کے بھائی حضرت مسعود بن حارشہ بڑاتین بھی شامل تھے۔
مگرلشکر اسلام کے مقابلہ میں ایرانی لشکر کو انتہائی ہزیت کا سامنا کرنا پڑا اور ان
کے قریباً ایک بلاکھ جنگجو اس معرکہ میں جہنم واصل ہوئے اور اس معرکہ نے ایرانی

الاستار المستوال المس

لشکری تمرتو ژکرر کھ دی تھی۔

حضرت عمر فاروق جلائی کولشکر اسلام کی فتح کی نوید سنائی گئی تو آب برافی خواند منائی گئی تو آب برافی خواند کی اور مسلام کومرحدی علاقول کی جانب واپس بلائے کا فیصلہ کیا اور شکر اسلام کو فی الوقت پیش قدمی سے روک دیا۔

قادسیہ کے مقام پرخونی معرکہ:

لشکر اسلام کے ہاتھوں زبر دست شکست نے ایرانیوں کا غرور خاک میں ملا دیا تھا۔مسلمان عراق کے بیشتر علاقوں پر قابض ہو چکے تھے۔اس دوران ایرانی تخت پر بزدگر متمکن ہوا۔ بزدگرد کی حکمت عملی کی بناء پر ایرانیوں نے عراق کے ان مفتوحه علاقوں میں جن پر اب اسلامی حکومت قائم ہو چکی تھی شرانگیزی شروع کر دی۔ یز دروی اس منصوبه بندی کی وجه سے بے شارمفتوحه علاقے ایک مرتبه ارانی مملکت کے زیرتسلط چلے گئے۔حضرت عمر فاروق بٹائٹیڈ کو جب ان واقعات کی خبر ہوئی تو آپ بنائغ: نے ایک مرتبہ پھر اریانیوں کوسبق سکھانے کا فیصلہ کیا اور اس مرتبہ آپ طالفن نے بوے پیانے پر جہاد کی تیاریاں شروع کر دیں۔ آپ طالفن نے فیصلہ کیا کہ اس مرتبہ خود کشکر اسلام کی قیادت کریں گے اور ایرانیوں کو ایبا سبق سکھا تیں کے کہ وہ آئندہ شرانگیزی ہے تو بہ کرلیں گے۔ آب بنائنڈ جب لشکر کی تیاری کے بعد خود مدینه متوره سے جانے لگے تو اس موقع پر حضرت عثان غنی اور حضرت علی الرتضلي دي نيئم اور ديكر صحابه كرام جي نيئم نے آپ بنائين كو جہاد پر جانے سے روك ديا اوركها كه آب بنائفي چونكه امير المؤمنين بين للبذا يون دارالخلافه كو حجور كرجانا آب وللفنزك كي كت مناسب نه بوكا بلك آب وللفنز كوجائة كدارانيوس كى سركوبي ك كنيحسى قابل إورابل تمخص كوسالا رمقرر فرما كمير_

المنت بمنت وارق كيسل المحالات

حفرت عمر فاروق رالین نے ان اکابر صحابہ کرام رہی تین کے مشورہ کو ترجیح دیتے ہوئے ان سے لشکر کے سالار کے متعلق مشورہ کیا کہ ان کی نگاہ میں کے لشکر کا امیر مقرر کیا جائے؟ حفرت عبدالرحمٰن بن عوف رہائی نئے نے مشورہ دیا حفرت سعد بن ابی وقاص بڑائی کو کشکر کا سالار مقرر کریں۔ آپ بڑائی نئے اس مشورہ کو پہند کیا اور حفرت سعد بن ابی وقاص بڑائی کو کشکر کا سالار مقرد کریا کہ وہ لشکر اسلام کو لے کر حضرت مثنی اور حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائی کو کشم دیا کہ وہ لشکر اسلام کو لے کر حضرت مثنی بن حارثہ بڑائی کے باس پہنچیں جواس وقت عراق کے ایک سرحدی علاقے سیراف بین حارثہ بڑار کے لشکر کے ہمراہ موجود ہے۔

روایات میں آتا ہے ابھی حضرت سعد بن ابی وقاص رفی تینے لئے کے سید بن ابی وقاص رفی تینے لئے کر سید بن ابی سیراف پہنچ ہی تھے حضرت میں بن حارثہ رفی تینے وصال فر ما گئے ۔ حضرت سعد بن ابی وقاص رفی تینے نے لئکر اسلام کا جائزہ لیا تو ان کا لئکر تمیں ہزار نفوس پر مشمل تی جن میں ستر اصحاب بدر تھے اور تین سوصحابی وہ جنہیں بیعت رضوان کی سعاوت حاصل میں ستر اصحاب بدر تھے اور تین سوصحابی وہ جنہیں بیعت رضوان کی سعاوت حاصل تھی ۔ حضرت سعد بن ابی وقاص رفیا تینئ لئکر اسلام کو لے کر قادسیہ کے مقام پر پہنچ اور حضرت عمر فاروق رفیا تینئ کے علم پر قادسیہ میں پڑاؤ ڈالا۔ قادسیہ کوفہ سے قریباً اور حضرت عمر فاروق رفیا تینئ کے علم پر قادسیہ میں پڑاؤ ڈالا۔ قادسیہ کوفہ سے قریباً ساٹھ کلومیٹر کے فاصلے پر واقع تھا جہاں لئکر اسلام کو دو ماہ تک ایرانی لئکر کا انتظار کرنا پڑا۔

ایرانی گشکر کا سبہ سالار رستم ایک لاکھ بیس بزار افراد کے گشکر عظیم کے ساتھ گشکر السلام کے مقابلے کے لئے نکلا۔ حضرت عمر فاروق والفیڈ نے ایک تیز رفتار شخص حضرت سعد بن ابی وقاص والفیڈ کی جانب روانہ کیا اور انہیں ایرانیوں کے خطیم الثان گشکر کے بارے میں مطلع فر مایا اور ساتھ بی تکم دیا کہ وہ جنگ شروع مونے سے پہلے رستم کے یاس اپنا سفیر بھیجیں۔

المنت عملي وق كيد المعلى المعل

حضرت سعد بن ابی وقاص طباتی نے حضرت عمر فاروق طباتی کے تکم پر چودہ افراد کو سفارت کے فرائض انجام دینے کے لئے شاہِ ایران کے پاس بھیجا۔ ان سفیروں نے یز دگرد سے ملاقات کی مگر بید ملاقات بے بتیجہ ربی چنانچہ بیسفیر شاہِ ایران کے پاس سے ناکام واپس لوٹے اور سفارتی ناکامی کے بعد شکر اسلام نے ایک مرتبہ پھر جوش وخروش سے جنگ کی تیاری شروع کردی۔

ایرانی فوج کا سالار اعلی رستم اس وقت اپنائنگر کے ہمراہ حضرت سعد

بن ابی وقاص ر النفیز کی قیادت میں موجود لشکر اسلام کے سامنے قادسیہ کے میدان

میں پڑاؤ ڈال چکا تھا۔ رستم کی کوشش تھی کہ معاملہ بغیر جنگ کے سفارتی ذرائع سے

حل ہو جائے چنانچہ اس نے حضرت سعد بن ابی وقاص ر النفیز کے پاس اپنا ایک

سفیر بھیجا جس نے صلح کا پیغام ویا۔ حضرت سعد بن ابی وقاص ر النفیز نے حضرت

ربعی بن عامر ر النفیز کوصلح کی شرائط طے کرنے کے لئے رستم کے پاس بھیجا۔ حضرت

ربعی بن عامر ر النفیز نے رستم کے پاس جا کراسے دین اسلام قبول کرنے کی دعوت

دی اور کہا کہ اگر ایرانیوں نے اسلام قبول نہ کیا تو پھر آئیس جزید دینا ہوگا اور اگر وہ

جزیہ بھی نہیں دیں گے تو پھر آئیس جنگ کے لئے تیار ہونا ہوگا۔

جزیہ بھی نہیں دیں گے تو پھر آئیس جنگ کے لئے تیار ہونا ہوگا۔

حضرت ربعی بن عامر بڑائنڈ کی بات س کررستم کی فوج میں ہے کسی نے ان پر تیر چلایا جسے حضرت ربعی بن عامر بڑائنڈ نے ڈھال سے روک لیا۔ حضرت ربعی بن عامر بڑائنڈ نے ڈھال سے روک لیا۔ حضرت ربعی بن عامر بڑائنڈ نے رستم کومخاطب کرتے ہوئے پھر فرمایا۔

''اے رستم! تم نے خوراک اور لباس کوعزت دیے رکھی ہے۔ لیکن ہم ان چیزوں کوحقیر جانتے ہیں۔''

المنت مم المنتوال المالي المناسبة الموق المناسبة الموق المناسبة الموق المناسبة المنا

حضرت ربعی بن عامر خالتی واپس لوٹے اور تمام صورتحال ہے حضرت معد بن ابی وقاص خالتی کوآگاہ کیا۔ حضرت معد بن ابی وقاص طالعی نے حضرت حذیفہ بن محصن طالعیٰ کوسفیر بنا کر بھیجا۔

حضرت حدیفہ بن محصن بڑائیڈ کوبھی ایرانی لشکر کی کثیر تعداد مرعوب نہ کر سکی اور حضرت حدیفہ بڑائیڈ بغیر کسی سے مرعوب ہوئے رستم کے پاس بہنچ۔ رستم نے حضرت حدیفہ بڑائیڈ سے کہا تمہیں کیا چیز یہاں لائی ہے؟ حضرت حدیفہ بڑائیڈ نے خارت حدیفہ بڑائیڈ نے خار مایا۔

''التدعز وجل نے ہم پر دین کے معاملہ میں بڑا احسان کیا ہے بمیں این آیات کے ذریعے تعلیم دی یہاں تک کہ ہم نے اسے پیچان لیا۔ اللہ عزوجل نے ہمیں تھم دیا کہ ہم لوگوں کو تین باتوں کی دعوت ویں اور وہ ان تینوں میں ہے جسے پہند كري ال يرعمل كرير ان ميس سے يبلى بات اسلام كى دعوت ہے اگرتم اسلام قبول کرلوتو ہم یہاں سے چلے جا کیں گے۔ دوسری بات تم جزیہ ادا کرو اگرتم جزید ادا کرو گے تو ہم تمبارے بلبان ہول گے۔ تیسری بات یہ ہے کہ اگرتم دونوں باتیں نہ مانو گے تو پھر ہم تمہارے خلاف جہاد کریں تھے۔'' رستم نے حضرت حذیفہ بن محصن مائٹنز کی با تیں سنیں تو سکنے لگاتم ہمیں تین دن کی مہلت دو اور ہم تین دن میں اپنا جواب تم تک پہنچا دیں گے۔حضرت حذیفہ بن محصن بڑائنے واپس لفکر اسلام میں لوٹے اور تمام صورتحال مے حضرت سعد بن الى وقاص طلينية كوآ كاه كيا_

حضرت سعدین الی وقاص خالفیٰ نے تین دن انتظار کیا اور جب تمین دن کی مہلت ختم ہوئی تو حضرت سعد بن ابی وقاص طالغیٰ کے باس رستم کا ایک قاصد آیا جس نے پیغام دیا کہ اپنا کوئی سفیر ہمارے پاس بھیجیں۔حضرت سعد بن الی وقاص بنائنی نے حضرت مغیرہ بن شعبہ بنائنی کوسفیر بنا کررتتم کے یاس بھیجا۔ جس وقت حضرت مغیرہ بن شعبہ طالعُنیٰ ، رستم کے باس پہنچے تو اس وقت اینے تخت پر جیٹھا ہوا تھا۔حضرت مغیرہ بن شعبہ جائٹؤ آگے بڑھے اور بغیرکسی ادب کوملحوظ رکھے رستم کے پاس اس کے تخت پر براجمان ہو گئے۔رستم کے حفاظتی سیابیوں نے جب بیہ معاملہ دیکھا تو انہوں نے حضرت مغیرہ بن شعبہ نٹائٹیڈ کوتخت ہے نیچے اتار نا جا ہا۔ رستم اس دوران خاموش تماشائی بنا بیشا تھا۔حضرت مغیرہ بن شعبہ رہائیڈ نے کہا۔ ''ہم تہاری عقول کی بربادی کے قصے سن کھیے ہیں گرتہاری ه نمینگ**ی اور جهالت کوبھی آج** دیکھ لیا۔ دین اسلام میں ہر شخص برابر ہے اور کوئی کسی کا غلام نہیں ہے۔ ہمارے پیغمبر منظافیا نے ہمیں بھائی جارے اور مساوات کی تعلیم وی ہے اور تم میرے ساتھ ابیا سلوک کرتے اس سے قبل مجھے بتا دیتے کہتم میں بعض کوبعضوں برفضیلت حاصل ہے اور ہم ایبا ہر گزنہیں کرتے بلکہ مہمان اور سفیر کی قدر کرتے ہیں اور میں تہارے یا سنبیں آیا بلکہ تم نے بلایا ہے۔اس واقعہ کے بعد مجھے یفین ہو گیا کہ ہم جلدمغلوب ہو گئے۔''

حضرت مغیرہ بن شعبہ والنفظ کی بات بن کررستم کے لشکر میں ہے چند افراد کہنے کے اللہ عزوجل کی تتم! اس عربی نے سے کہا ہے اس کی اس بات سے

ہمارے خلام اس کی طرف نکل جائیں گے۔ رستم جو خاموثی ہے تمام گفتگون رہاتھا
اس نے حضرت مغیرہ بن شعبہ جائٹی کو مخاطب کرتے ہوئے کہا کہ تمہارے یہاں
آنے کا مقصد کیا ہے؟ حضرت مغیرہ بن شعبہ جائٹی نے فرمایا۔
"میں تمہیں دین اسلام کی دعوت دیتا ہوں اگر تمہیں اسلام کی
دعوت قبول نہیں تو جزیہ ادا کرواور اگرتم جزیہ بھی ادانہ کروگے
تو پھر تمہارا فیصلہ ہماری تکوار کرے گی۔"

رستم نے جب حضرت مغیرہ بن شعبہ رظائفۂ کی بات سی تو کہا کہ تم لوگ ا پی واپسی کا ارادہ کرو ہم تمہیں انعام دینے کے لئے تیار ہیں۔حضرت مغیرہ بن شعبہ بنائن نے رستم کی بات من کر فرمایا ہم اینے مطالبہ سے پیھے نہیں ہٹیں گے۔ رستم نے جب حضرت مغیرہ بن شعبہ رٹائنؤ کی بات سی تو طیش میں آ گیا اور کہنے لگا آ فناب كى قتم! ميں كل عرب كو برباد كر دول كا۔حضرت مغيرہ بن شعبه رظائمُو نے رستم كى بات ى توكشكر اسلام مين واليس لوث كئة اور حضرت سعد بن الى وقاص طالفيز كوتمام صورتخال سے آگاہ كيا۔ اس واقعہ كے بعد سفارت اور ملح كى تمام اميريں دم تو ٹر گئیں اور اب دونوں لشکروں کے مابین خونریز معرکہ شروع ہونے کو تھا۔ حضرت مغیرہ بن شعبہ رٹائٹی واپسی کے بعدرستم نے اپنی فوج کوفوری تیاری کا تھم دیا۔ رستم کی فوج کی تیاریوں کا سن کر حضرت سعد بن ابی وقاص مٹائفیڈ نے بھی اپنی فوج کو تیاری کا تھم دے دیا۔ اسکلے دن لشکر اسلام نے نعرہ تگبیر بلند کیا اور جنگ کا آغاز ہو گیا۔انفرادی مقابلے کے بعد با قاعدہ جنگ شروع ہوئی اور ایک و زبردست معركه كالآغاز موا_

قادسیه کے مقام پر جنگ شدت اختیار کر چکی تعی اور اشکر اسلام ہے مسلسل

نعرہ تحمیر کی صدائمیں بلند ہور ہی تھیں۔ تین دن تک میدانِ جنگ زوروشور سے گرم رہاور بالآخر ستم کے قل کے بعدار انی لشکر نے ہمت ہار دی۔ لشکر اسلام نے مسلسل حملے جاری رکھے اور بالآخر اللہ عزوجل کی مدد آن پینچی اور ایرانی لشکر نے شکست سلیم کر لی۔ جنگ قادسیہ میں لشکر اسلام کے ہاتھ بے شار مال نینیمت لگا۔ جنگ قادسیہ میں چھ ہزار مسلمانوں نے جام شہادت نوش فرمایا جبکہ بجیس ہزار ایرانی جہنم واصل

الشكراسلام كى فتح كى خوشخرى سننے كے لئے بے چين:

روایات میں آتا ہے قادسیہ کے مقام پر جب سے حق وباطل کا معرکہ شروع ہوا تھا حضرت عمر فاروق طالغیٰ روزانہ مدینه منورہ سے باہرنکل جاتے اور حضرت سعد بن الى وقاص طلفظ كى جانب سے بھيج جانے والے قاصد كا انتظار كرتے۔ جنگ قادسيہ ميں فتح ہوتے ہی حضرت سعد بن ابی وقاص طلفنی نے ایک تیزرفآر گھڑسوار کو فتح کی نوید سنانے کے لئے مدینہ منورہ روانہ کیا۔حضرت سعد بن ا بی وقاص ملافعنهٔ نے جس گھڑسوار کو مدینه منوره روانه کیا وہ حضرت عمر فاروق طلعیٰهٔ سے ناواقف تھا۔ وہ گھڑ سوار جس وفت مدینہ منورہ کی حدود میں داخل ہوا آپ ڈلٹھنڈ مدیندمنورہ کے نواح میں حضرت سعد بن ابی وقاص طالفیز کی جانب سے بھیجے جانے والے قاصد کی آمد کی انتظار کر رہے تھے۔جس وفت وہ گھڑ سوار مدینہ منورہ کی حدود میں واقل ہوا آپ طالعن نے اس سے دریافت کیاتم کون ہو؟ اس نے محموڑا دوڑاتے ہوئے جواب دیا مجھے حضرت سعد بن الی وقاص بٹائٹنڈ نے بھیجا ہے؟ آپ مٹائنٹ اس کے محورے کے ساتھ دوڑتے جاتے ہتے آپ بٹائنڈ نے یو جھا کہ سعد (دلان فنه) نے کیا پیغام بھیجا ہے؟ اس گھڑ سوار نے کہالٹنگر اسلام کو فتح ہو گئی اور

ایرانی نشکر شکست کھا کرمیدانِ جنگ ہے بھاگ گیا۔ آپ جانی اس گھر سوار کے ساتھ مسلسل بھاگے رہے یہاں تک کہ وہ یہ بنہ منورہ کی حدود میں واخل ہوا۔ لوگوں نے آپ بڑائی کو جب بوں بھا گئے دیکھا تو پکارا امیر المومنین! کیا بات ہے؟ اس گھڑ سوار نے لوگول کی زبانی امیر المومنین کا لقب ساتو فوراً گھوڑا روک کر نیچ از آیا اور اپنی گستاخی پر معافی کا خواستگار ہوا۔ آپ بڑائی نے فرمایا کوئی بات نہیں تم مجھے جنگ کے متعلق تفصیل ہے بتاؤ۔

حفزت عمر فاروق جلائؤ قادسیہ کے میدان میں مسلمانوں کی اس فتح سے بے حد خوش تھے کیوں اور کئی ہے حد خوش تھے کیونکہ مسلمانوں کو بیہ کامیابی تین زبردست خونی معرکوں اور کئی شہادتوں کے بعد ملی تھی۔

لشكراسلام كى پېش قدمي جاري ركھنے كا فيصله:

قادسیہ میں ایرانی لشکر کو زبردست شکست دینے کے بعد آگے کی جنگی حکمت عملی طے کرنے کے لئے حضرت سعد بن ابی وقاص والفیز نے حضرت عمر فاروق والفیز سے مشاورت کے لئے ایک شخص کو بھیجا۔ آپ والفیز نے لشکر اسلام کی پیش قدمی جاری رکھنے کا فیصلہ کرتے ہوئے حکم دیا کہ سعد (والفیز) سے کہووہ لشکر اسلام کو لے جاری رکھنے کا فیصلہ کرتے ہوئے حکم دیا کہ سعد (والفیز) سے کہووہ لشکر اسلام کو لیا کر ایرانی لشکر جو قادسیہ میں شکست کے بعد بابل کر ایرانی لشکر جو قادسیہ میں شکست کے بعد بابل بیجھا کر دود کو دوبارہ منظم کر رہا تھا حضرت سعد بن ابی وقاص والفیز نے اس کا پیچھا کرتے ہوئے بابل شہر کا محاصرہ کرلیا۔

حفرت سعد بن ابی وقاص ر النفو کو بابل شبر کا محاصرہ کے ابھی کہ ہی دن گزرے نے احکامات آئے اور ان دن گزرے نے احکامات آئے اور ان احکامات آئے اور ان احکامات کے بعد احکامات آئے اور ان احکامات کے بعد احکامات

المنت المنتفون وق كفيل

صورتعال سے گھبرا گیا اور اس نے جنگ کی بجائے یہاں سے بھی فرار ہونے میں ہی اپنی عافیت جانی اور مدائن کی جانب چلا گیا یوں بابل بغیر جنگ کے باآسانی فتح ہوگیا اور مدائن کی جانب چلا گیا یوں بابل بغیر جنگ کے باآسانی فتح ہوگیا اور مملکت اسلامیہ کا حصہ بن گیا۔

حضرت سعد بن ابی وقاص رظائفیا کو جب ایرانی لشکر کے مدائن پہنچنے کی خبر ہوئی تو آپ رظائفیا لشکر اسلام لے کر مدائن روانہ ہو گئے۔لشکر اسلام کوئی کے راستے مدائن کے علاقے بہرہ شیر میں داخل ہوا جو مدائن کے نواح میں ایک مضبوط قلعہ اور شہر تھا۔لشکر اسلام جب کوئی پہنچا تو وہاں ان کا مقابلہ شہریار نے اپنی فوج کے ہمراہ کیا۔ ایک مختصر معرکہ کے بعد شہریار قبل ہوگیا اور اس کا لشکر میدانِ جنگ ہے بھاگ گیا۔

انگراسلام کا ایرانی نشکر کے ساتھ بہرہ شیر کے مقام پر مقابلہ ہوا جہال ایک زبردست معرکہ کے بعد ایرانی نشکر میدانِ جنگ چھوڑ کرفرار ہوگیا۔ نشکر اسلام نے بہرہ شیر میں بھی فتح کے جعنڈ ہے گاڑے۔ بہرہ شیر کی فتح کے بعد حضرت سعد بن ابی وقاص ڈائٹیو نشکر اسلام کو لے کر مدائن روانہ ہوئے۔ مدائن اس وقت ایرانی حکومت کا دارالخلافہ تھا۔ پر دگرد نے جب تمام صورتحال دیکھی تو وہ مدائن چھوڑ کر طوان کی طرف بھاگ گیا۔ مدائن میں نشکر اسلام اور ایرانی نشکر کے درمیان ایک اور زبردست معرکہ ہوا اور ایرانی نشکر ایک مرتبہ پھرمیدانِ جنگ سے فرار ہوگیا۔ محضرت سعد بن ابی وقاص ڈائٹیو نشکر اسلام کے ہمراہ شاہی محل میں داخل ہوئے اور ایوانِ شاہی میں منبر کی تنصیب کا تھم دیا۔ مدائن کی فتح نے مسلمانوں پر موسے اور ایوانِ شاہی میں منبر کی تنصیب کا تھم دیا۔ مدائن کی فتح نے مسلمانوں پر مائٹی میں داخل میں داخل میں داخل میں داخل کی مردا نے درواز ہے کھول و سے ۔ حضرت سعد بن ابی وقاص ڈائٹیؤ نے جب مائی خزانے کا جائزہ لیا تو اس خزانے سے انتہائی بیش قیمت نوادرات برآ مدہوئے مثابی خزانے سے انتہائی بیش قیمت نوادرات برآ مدہوئے شاہی خزانے سے انتہائی بیش قیمت نوادرات برآ مدہوئے شاہی خزانے کا جائزہ لیا تو اس خزانے سے انتہائی بیش قیمت نوادرات برآ مدہوئے میں دائل میں داخل

اور وہ نوادرات ایسے تھے کہ ایرانیوں نے خود بھی ایسے نوادرات نہ دیکھے ہوں گے۔
ان نوادرات میں سونے کا ایک بلند قامت گھوڑا بھی تھا اور ان نوادرات میں چاندی
کی اونٹی بھی تھی جبکہ ایک عجیب وغریب فرش بھی تھا جو قیمتی جواہرات سے مزین
تھا۔ حضرت سعد بن ابی وقاص رہائیڈ کے تھم پر مال غنیمت کاخمس مدینہ منورہ حضرت عمر فاروق رہائیڈ کے باس بھیج دیا گیا جبکہ باقی تمام مال لشکر اسلام میں برابری کی بنیاد پر تقسیم کر دیا گیا۔ پھر حضرت سعد بن ابی وقاص رہائیڈ کے تھم پر شاہی محل میں برابری کی بنیاد پر تقسیم کر دیا گیا۔ پھر حضرت سعد بن ابی وقاص رہائیڈ کے تھم پر شاہی محل میں برابری کی بنیاد پر تقسیم کر دیا گیا۔ پھر حضرت سعد بن ابی وقاص رہائیڈ کے تھم پر شاہی محل میں برابری کی

سعد بن ابی وقاص طالعی کومفتوحه علاقوں کا گورنر بنانے کا فیصلہ:

نمازِ جمعہ بھی ادا کی گئی۔

شاہِ ایران پردگرد جو مدائن کی فتح کے بعد طوان کی جانب فرار ہوگیا تھا
ال نے حلوان میں ایک مرتبہ پھر اپنے لشکر کو پھر سے ترتیب دیا اور لشکر اسلام کے خلاف جنگ کی تیاریاں شروع کر دیں۔ حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائیڈ کواس کی خبر ہوگئی اور آپ بڑائیڈ اس وقت مزید پیش قدمی مؤخر کر چکے تھے اور حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کی جانب سے اگلے حکم کے منتظر تھے۔ حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائیڈ فاروق بڑائیڈ کی جانب سے اگلے حکم کے منتظر تھے۔ حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائیڈ کی ایک فاروق بڑائیڈ کو آگاہ کرنے کے لئے ایک کتوب لکھا۔ آپ بڑائیڈ چونکہ عراق اور ایران کے بیشتر شہروں میں بطور تا جرسفر کر چکے تھے اس لئے ان علاقوں کے خدو خال سے بخو بی آگاہ تھے۔ آپ بڑائیڈ نے بیشتر شہروں میں بطور تا جرسفر کر چکے تھے اس لئے ان علاقوں کے خدو خال سے بخو بی آگاہ تھے۔ آپ بڑائیڈ نے کا خششہ تیار کیا اور تمام معاملات کو صحابہ کرام بڑی گئی کے ساتھ زیر بحث لانے جند کے بعد حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائیڈ کواپے منصوبہ اور دیگر تفصیلات سے بذریعہ کوئو۔ آگاہ کیا۔

طوان کا قلعہ ایران کے سب سے مضبوط قلعوں میں سے تھا اور اس کے

النت عملان المحال المحا

گردکانی چوڑی خندق تھی جے عبور کرنا خاصا مشکل تھا۔ حضرت عمر فاروق را النوز کے مکتوب اور فیصلے کی روشنی میں حضرت سعد بن ابی وقاص والنوز نے حضرت ہاشم بن عتبہ والنوز کو بارہ ہزار کے شکر کے ساتھ جلولا روانہ کیا۔ حضرت ہاشم بن عتبہ والنوز کو بارہ ہزار کے شکر کے ساتھ جلولا روانہ کیا۔ حضرت ہاشم بن عتبہ والنوز کے سامنے پہنچ گئے۔ ایرانیوں نے جب لشکر اسلام کو درواز ہے کے سامنے پہنچ گئے۔ ایرانیوں نے جب لشکر اسلام کو دیکھا تو وہ قلعہ بند ہو گئے۔ ایرانی لشکر دو ماہ تک قلعہ بند رہا اور پھر بالآخر ایرانی لشکر نے اپنے کمانڈر مہران سے کہا اس طرح قیدر ہے سے تو بہتر ہے کہ میدان میں جا کرلڑا جائے چنانچہ مہران اپنا شکر جس کی تعدادا کی لاکھ سے زیادہ تھی اسے میں جا کرلڑا جائے چنانچہ مہران اپنا شکر جس کی تعدادا کی لاکھ سے زیادہ تھی اسے لئے کرقلعہ سے باہر آگیا۔

حضرت ہاشم بن عتبہ رہائیں کی مدد کے لئے حضرت قعقاع بن عمرو طالعیٰ جو کہ ایک اور بارہ ہزار کے کشکر کے سالارمقرر کئے گئے تھے پہنچ گئے اورنعرہ تکبیر بلند کیا۔ ابرانیوں نے قلعہ میں بے شار جنگی ساز وسامان اکٹھا کر رکھا تھا لیکن وہ سامان بھی ان کے کسی کام نہ آیا اور مسلمانوں نے نہایت دلیری ہے اور ڈٹ کر مقابلہ کیا جس سے ایرانی فوجوں کے قدم اکھڑ گئے اور انہوں نے میدانِ جنگ سے بھا گئے کی کوشش کی۔لشکر اسلام نے اریانی سیاہیوں کو چن چن کرقل کرنا شروع كرديا۔ابرانی لشكر بسیا ہو گیا اور لشكرا سلام قلعه میں داخل ہونے میں كامياب ہو گيا۔ قلعه پراسلامی پرچم لہرا دیا گیا۔ پرزگر دجو کہ حلوان میں موجود تھا وہ حلوان ہے بھی فرار ہو کر رے چلا گیا۔معرکہ جلولا میں ابرانی کشکر کا بے پناہ نقصان ہوا اور قریباً ایک لا کھ ایرانی سیابی جہنم واصل ہوئے اور قریباً تین کروڑ مالیت کا مال غنیمت لفتکر اسلام کے ہاتھ آیا اور مال غنیمت کاخمس حضرت عمر فاروق طالنیز کو مدینه منورہ جمجوا

www.iqbalkalmati.blogspot.com المناسب عمر المناسب عمر المناسب عمر المناسب عمر المناسب عمر المناسب ال

حضرت ہاشم بن عتبہ رہائیٰ کی قیادت میں اشکراسلام نے پیش قدی جاری رکھی اورجلولا کی فتح کے بعد اسلام نے حلوان پہنچ کر قلعہ کا محاصرہ کرلیا اور بوں ایک مختصر جنگ کے بعد حلوان پر بھی مسلمانوں کا قبضہ ہو گیا۔ حلوان کی فتح کے ساتھ ہی عراق کے تمام علاقے مملکت اسلامیہ کے زیر تسلط چلے گئے اور اب عراق پر مسلمانوں کی حکومت تھی۔ یز دگر دعراق پر ایرانی تسلط کے خاتمہ کے بعد ایران کے شہر رے کی جانب فرار ہو گیا۔ حضرت عمر فاروق رہائی ہی وجب حلوان کی فتح کی بھی فیر سائی گئی تو آپ رہائی ہی اس پرخوشی کا اظہار کیا اور حضرت سعد بن ابی وقاص فوید سائی گئی تو آپ رہائی نے اس پرخوشی کا اظہار کیا اور حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائی کی وجب این کا گورز مقرر کرتے ہوئے انہیں تھم دیا کہ وہ مدائن کو ہی اپنا دارالخلافہ بنا کیں اور یہیں قیام کریں۔

شام برلشكركشي يهم تعلق انهم فيصله:

حضرت عمر فاروق براتین نے جب منصب خلافت سنجالا تو لشکرا سلام دشق شہرکا محاصرہ کر چکا تھا اور حضرت ابو بکر صدیق بڑائین نے حضرت خالد بن ولید براتین نے کی براتین کو شام کی مہم میں سبہ سالار بنا کر بھیجا تھا۔ حضرت خالد بن ولید بڑائین نے کئ ماہ تک وشق کا محاصرہ کے رکھا لیکن روی افواج قلعہ سے باہر نہ لکلیں۔ بالآخر ایک رات حضرت خالد بن ولید بڑائین نے قلعہ کی دیوار پر کمند ڈالی اور اس پر چڑھ گئے۔ رات حضرت خالد بن ولید بڑائین نے قلعہ کی دیوار پر کمند ڈالی اور اس پر چڑھ گئے۔ آپ بڑائین نے نے قلعہ کی دیوار وکمند ڈالی اور اینچا آتر کر قلعے کے درواز وں کو کھول دیا۔ لشکر اسلام قلعہ کر قلعے کے درواز وں کو کھول دیا۔ لشکر اسلام قلعہ کے اندر داخل ہو گیا۔ لشکر اسلام کو دیکھ کر روی فوجوں نے ہتھیار ڈال دیئے اور صلح کے اندر داخل ہو گیا۔ لشکر اسلام کو دیکھ کر روی فوجوں نے ہتھیار ڈال دیئے اور صلح کی درخواست کی۔ حضرت خالد بن ولید بڑائین نے ان کی درخواست قبول کر لی اور حضرت ابوعبیدہ بن الجراح بڑائین جو کہ لشکر اسلام کے سپریم کمانڈ رمقرر کئے جا چکے حضرت ابوعبیدہ بن الجراح بڑائین جو کہ لشکر اسلام کے سپریم کمانڈ رمقرر کئے جا چکے حضرت ابوعبیدہ بن الجراح بڑائین جو کہ لشکر اسلام کے سپریم کمانڈ رمقرر کے جا چکے

تضان کی خدمت میں تمام معاملہ پیش کر دیا۔ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح والنفی نے وشق کے میسا کی خدمت میں تمام معاملہ پیش کر دیا۔ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح والمان دے دی اور یوں دمشق شہر پرمسلمانوں کا قبضہ ہوگیا۔ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح والنفی نے حضرت عمر فاروق والنفی کو دمشق فتح ہونے کی اطلاع پہنچائی اور حضرت بزید بن ابی سفیان والنفی کو مناسب جنگی لشکر کے ہمراہ اطلاع پہنچائی اور حضرت بزید بن ابی سفیان والنفی کو مناسب جنگی لشکر کے ہمراہ

ومثق میں جھوڑ کرفل کی جانب روانہ ہو گئے۔ فل کے مقام پر ہرقل کے مشہور سردار سقلار بن محزاق نے اپنی لاکھوں کی فوج کے ساتھ لشکر اسلام سے مقابلہ کیا مگر گھسان

کی لڑائی کے بعد مارا گیا۔اس معرکہ میں اسی ہزار رومی فوجی ہلاک ہوئے اور لشکر

اسلام نے فحل فتح کر لیا۔

فخل کی فتح کے بعد حضرت ابوعبیدہ بن الجراح والنظر ،حضرت عمر فاروق والنظر کے حکم پرنشکر اسلام کو لے کر بیسان روانہ ہوئے جہاں کے حاکم نے جزیدادا کر کے امان طلب کی اور حضرت ابوعبیدہ بن الجراح والنظر نے اسے امان دے دی۔ بیسان کی فتح کے بعد حضرت ابوعبیدہ بن الجراح والنظر اشکر اسلام کو لے کر حصرت ابوعبیدہ بن الجراح والنظر اشکر اسلام کو لے کر حمص روانہ ہوئے۔

قیصروم برقل کو جب نشکر اسلام کی جمعی کی جانب پیش قدی کی خبر ہوئی تو اس نے ذر بطریق کو ایک نشکر دے کر بھیجا۔ نشکر اسلام اور رومی نشکر کے درمیان معرکہ ذوا کلاع کے مقام پر ہوا جہاں ایک زبردست معرکے کے بعد ذر بطریق مارا عمی اور رومی فوج پہیا ہوگئی۔ برقل کو نشکر اسلامی کی فتح کا پند چلا تو وہ تمص چھوڑ کر بھاگ گیا اور رقی اسلامی با آسانی حمص شہر میں واضل ہوگیا۔

معركه رموك

الشكراسلامي كى ان مسلسل فتوحات نے قیصرروم برقل كوغفیناك كردیا۔

المناسر عمر المناسر عمر المناسل المناس

اس نے کشکر اسلامی سے فیصلہ کن معرکہ کی تیاری شروع کر دی۔حضرت ابوعبیدہ بن الجراح بناتنيز نے تمام حالات و واقعات کی اطلاع حضرت عمر فاروق مناتنیز کو دی۔ حضرت عمر فاروق طالفين نے حضرت سعید بن عامر طالفیز کو ایک ہزارلشکر کے ساتھ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح مٹالٹنڈ کی مدد کے لئے روانہ کیا۔لشکر اسلام اور روی افواج کے درمیان برموک کے میدان میں معرکہ حق و باطل ہوا۔ رومی افواج کی تعداد دو لا کھ سے بھی زیادہ تھی جبکہ کشکر اسلام کی تعداد پینیتیں ہزار (۴۰۰۰م) تھی۔لشکراسلام نے رومی افواج کواس فیصلہ کن معرکہ میں شکست فاش ہے دوجار کیا اور ان کے ایک لا کھ سیاہی جہنم واصل ہو گئے۔ رومی افواج میدانِ جنگ چھوڑ كر بھاگ گئيں اور قسطنطنيه ميں جا كر دم ليا۔معركه برموك ميں قريباً تين ہزارمسلمان شہیر ہوئے۔معرکہ برموک کے بعد ملک شام پرمسلمانوں کا کنٹرول ہو گیا۔حضرت ابوعبیدہ بن الجراح طالفنظ نے حضرت عمر فاروق طالفنظ کو اس فنتے کی اطلاع دی۔ حضرت عمر فاروق طالنیز؛ فنح کی اطلاع ملتے ہی سجدہ ریز ہو گئے۔

رموک کی فتح کے بعد حضرت ابوعبیدہ بن الجراح رفائی نے حضرت خالد بن ولید رفائی کو دی۔
بن ولید رفائی کو ایک لشکر کے ہمراہ قشر بن روانہ کیا اور خود حلب پر چڑھائی کر دی۔
مختصر معرکوں کے بعد قشر بن اور حلب دونوں فتح ہو گئے اور اس کے بعد حضرت ابوعبیدہ بن الجراح رفائی کی چھوٹے چھوٹے گر وہ بنا کرمختف علاقوں کی جانب روانہ کیا جنہوں نے بتدریج کامیابیاں حاصل کیں اور ملک شام میں اسلامی سلطنت کی بنیا در کھ دی۔

<u>قبله اوّل برمسلمانوں کا کنٹرول:</u>

حضرت عمرو بن العاص طالعن جوحضرت ابو بكرصد يق طالعن كان مان مين

www.iqbalkalmati.blogspot.com الانتساس الموقع كي فيصل الموقع كي فيصل الموقع ال

را المقدى كى مهم پر بھیجے گئے تھے انہوں نے فلسطین کے بعض شہروں لد، عمواس، بیت جبرین اور نابلوس کو فتح کر لیا تھا اور وہ بیت المقدس کا محاصرہ کئے ہوئے تھے کہ

حضرت ابوبكرصديق طالفنظ كاوصال ہو گيا۔

حضرت عمر فاروق و النفوذ نے جنگ برموک میں رومیوں کو عبرت ناک شکست سے دو چار کرنے کے بعد حضرت ابوعبیدہ بن الجراح و النفوذ کو بیت المقدی پہنچنے کا تھم دیا کہ وہ وہاں پہنچ کر حضرت عمرو بن العاص و النفوذ کی مدوکریں۔ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح و النفوذ جب لشکر اسلام کو لے کر بیت المقدی پہنچ تو عیسائیوں نے اتنی بڑی تعداد میں لشکر اسلام و کھے کر بتھیار ڈال دیئے اور سلح کی درخواست کی اور اس خواہش کا اظہار کیا کہ معاہدہ امن امیر الموضین حضرت عمر فاروق و النفوذ یہاں آکر خود تحریر فرمائی کی سے دھزت ابوعبیدہ بن الجراح و النفوذ نے ساری صور تحال سے آکر خود تحریر فرمائی ہے۔ آپ والنفوذ کو مدینہ منورہ آپ والنفوذ کو مدینہ منورہ المقدی و النفوذ کو مدینہ منورہ میں ماکم مقرر کر کے خود بیت المقدی روانہ ہوئے۔

حضرت عمر فاروق و التغیر بیت المقدی کی جانب روانگی کے لئے اپنے ایک غلام کے ہمراہ مدینہ منورہ سے روانہ ہوئے۔ آپ والتغیر نے اپنے غلام کے ساتھ یہ طے کیا کہ بچھ راستہ وہ اونٹ برسوار ہوں گے اور وہ پیدل چلے گا اور بچھ راستہ وہ اونٹ برسوار ہوں گے اور وہ پیدل چلے گا اور بچھ راستہ وہ اونٹ برسوار ہوگا اور وہ پیدل چلیں گے چنا نچہ اس طرح قریبہ بہ قریبہ سفر کرتا ہوا یہ قافلہ بیت المقدی پہنچ گیا۔ جس وقت یہ دونوں حضرات بیت المقدی مہار میں داخل ہوئے تو اس وقت اونٹ بی علام سوارتھا اور آپ والتی نے اونٹ کی مہار میں داخل ہوئے تو اس وقت اونٹ بی غلام سوارتھا اور آپ والتی نی اس لئے انہوں نے مراب کے انہوں نے بری خاطر مدارت کی اور شاندار استقبال کیا۔ اس دوران حضرت الوعبیدہ بن نے بری خاطر مدارت کی اور شاندار استقبال کیا۔ اس دوران حضرت الوعبیدہ بن

الجراح، حضرت خالد بن ولید اور حضرت یزید بن الی سفیان بنی گفتیز آگئے اور انہوں الجراح، حضرت خالد بن ولید اور حضرت یزید بن الی سفیان بنی گفتیز آگئے اور انہوں نے جب آپ بنائیز کو دیکھا تو اس وقت آپ بنائیز کے لباس پر بے شار پیوند لگے ہوئے تھے۔ آپ بنائیز نے جب ہوئے تھے اور ان حضرات نے قیمتی لباس پہن رکھے تھے۔ آپ بنائیز نے جب انہیں اس حال میں دیکھا تو نہایت غضبناک انداز میں فرمایا کرتم لوگوں نے اتی جلدی عجمیوں کی می صورت بنالی۔ انہول نے عض کیا کہ امیر المونین! ہمارے ان

لباسوں کے نیچے ہتھیار ہیں اور ہم اب بھی عربی اخلاق پر قائم ہیں جس پر آپ ٹاٹنیز

کی تسلی ہوئی۔

جس وقت حفرت عمر فاروق والتغیز امراء بیت المقدی سے ملنے کے لئے روانہ ہونے گئے تو آپ والتغیز کو قیمی لباس پہننے کے لئے دیا گیا جے آپ والتغیز کو قیمی لباس پہننے کے لئے دیا گیا جے آپ والتغیز کو قیمی کر پہننے سے انکار کر دیا کہ ہماری عزت اسلام سے ہے نہ کہ لباس سے پھر آپ والتغیز اور امراء بیت المقدی کے درمیان امن معاہدہ طے پایا گیا جس پر دونوں جانب سے اکابرین نے دستخط کئے۔ آپ والتغیز بیت المقدی میں داخل ہوئے۔ آپ والتغیز ہو حضرت ابوعبیدہ بن الجراح والتغیز ہو حضرت ابوعبیدہ بن الجراح والتغیز کی حضرت کے فیم میں شامل سے ان کواذان دینے کی ورخواست کی حضرت بلال حبثی والتغیز کی درخواست کی حضرت بلال حبثی والتغیز کی فرمائش پراذان دی جس سے زمانہ نبوی میشانوں کے ایک باتازہ ہوگئی اور روتے روتے اہل اسلام کی ہجگیاں بندھ گئیں۔

حضرت عمر فاروق را النفر کھے عرصہ بیت المقدی میں قیام فرمانے کے بعد دوبارہ مدینہ منورہ روانہ ہو گئے۔ آپ را النفر کے جانے کے بعد ان علاقوں میں طاعون کی وبا بھیل گئی جس سے بے شار صحابہ کرام رہی گئی وصال یا گئے جن میں حضرت ابوعبیدہ مخترت ابوعبیدہ مخترت ابوعبیدہ

الانتساخ المنتسان الم

بن الجراح طلائن کے وصال کے بعد حضرت یزید بن الی سفیان طلخان کو قیساریہ کی مہم میں ستر ہزار کے اسلامی کشکر کے ساتھ جانے کا حکم دیا۔

حضرت یزید بن الی سفیان بطی الشکر اسلام کے ہمراہ قیساریدروانہ ہوئے اور وہاں بہنج کر قیسارید کا محاصرہ کرلیا۔ اس دوران حضرت یزید بن الی سفیان بطی تھا کی طبیعت خراب ہوگئ اور حضرت یزید بن الی سفیان بطی تھا کی حضرت امیر معاوید بطی تھا کہ حضرت ایزید بن معاوید بطی تھے کہاں حضرت یزید بن الی سفیان بطی تھا وصال یا گئے۔ حضرت امیر معاوید بطی تھئے نے کافی عرصہ تک قیسارید کا محاصرہ جاری رکھا۔ قیسارید کی افواج اس طویل محاصرے سے تنگ آ کر قلعہ سے باہرنگل آئیں اور بالآخر تھمسان کی لڑائی کے بعد قیسارید فتح ہوگیا۔ اس جنگ میں بڑارعیسائی جہنم واصل ہوئے۔

اریان برکشکر کشی کے متعلق اہم فیصلے:

جیبا کہ گذشتہ اوراق میں بیان ہوا عراق کی فتح کے بعد یز دگر د بھاگ کر رہے چلا گیا تھا اور پھر یز دگر د وہاں سے اصفہان اور کر مان سے ہوتا ہوا خراسان چلا گیا اور مرو میں مقیم ہوا۔ اھ میں حضرت عمر فاروق زلائن نے حضرت ابوموی اشعری ولائن کی جانب لشکر کشی کا حکم دیا۔ اشعری ولائن کی جانب لشکر کشی کا حکم دیا۔ حضرت ابوموی اشعری ولائن کی جانب لشکر کشی کا اور اس کو فتح کر دیا جس پر جمیعے تو اہواز نے جزیہ دینا بند کر دیا جس پر حضرت ابوموی اشعری ولائن نے ابواز پر فوج کشی کی اور اس کو فتح کر دیا جس پر حضرت ابوموی اشعری ولائن نے ابواز پر فوج کشی کی اور اس کو فتح کر ایا۔ ابواز کی فتح کے بعد حضرت ابوموی اشعری ولائن نے مناذر پر فوج کشی کی اور اس کو فتح کے ایوران حضرت ابوموی اشعری ولائن کو خبر ملی کہ خوز ستان میں اسے فتح کیا۔ اس دوران حضرت ابوموی اشعری ولائن کو خبر ملی کہ خوز ستان میں ہرمزان لشکر اسلام سے مقابلے کے لئے فوج تیار کر رہا ہے۔ حضرت ابوموی اشعری اشعری اسلام

الاستان اوق كيسل

طالع المحالی کے ملنے کے بعد خوزستان روانہ ہو گئے۔ پیچھ دنوں کے مقابلے مقابلے کے ہمزان نے شکست سلیم کر لی اور اس شرط پر گرفتاری دی کہ اس کا فیصلہ امیر المونین حضرت عمر فاروق طالع کے کریں گے۔

حضرت ابوموی اشعری را انتخار نے ہرمزان کی شرط منظور کر لی اور اسے مدینہ منورہ حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کی خدمت میں روانہ کر دیا۔ ہرمزان کی ہدعہدی کی وجہ ہے آپ بڑائیڈ نے اس کا سرقلم کرنے کا تھم دیا۔ ہرمزان نے کہا پہلے جھے پانی پلا دو۔ جب اس کے لئے پانی لایا گیا تو اس نے پانی پینے ہے انکار کر دیا اور کہا میں پانی نہیں پیوں گا کیونکہ تم جھے پانی پیتے ہوئے قبل کر دو گے۔ آپ رڈائٹیڈ کم جسے ان کی نہیں کیا جائے گا تو اس نے بانی کیا جائے گا تو اس نے بانی کیا جائے گا تو اس نے بانی کا بیالہ زمین پر گرا دیا اور کہا اب آپ رڈائٹیڈ جھے قبل نہیں کر سکتے کیونکہ وہ پانی بی نہ رہا جس کے پینے کے بعد آپ رڈائٹیڈ جھے قبل کرائے۔ اس کے بعد ہرمزان نے کلمہ پڑھ لیا اور دائرہ اسلام میں داخل ہوگیا اور کہنے لگا کہ میں پہلے ہی ہرمزان نے کلمہ پڑھ لیا اور دائرہ اسلام میں داخل ہوگیا اور کہنے لگا کہ میں پہلے ہی ایمان لا چکا تھا لیکن اس وجہ سے اقرار نہیں کیا کہیں آپ رڈائٹیڈ نے نہ سمجھیں کہ میں جان بچانے کی غرض سے ایمان لا یا ہوں۔

ہرمزان نے اسلام قبول کرنے کے بعد مدینہ منورہ میں رہائش اختیار کی اور حضرت عمر فاروق مٹی رہائش اختیار کی اور حضرت عمر فاروق مٹلائیڈ نے اس کا دو ہزار سالانہ وظیفہ مقرر کیا۔ آپ مٹلائڈ ایران کی مہمات کے بارے میں اس سے مشورہ کیا کرتے ہتھے۔

یزدگرد جو کدمرو میں اپنی بادشاہت قائم کئے بیٹھا تھا اسے جب ہرمزان کی شکست اور اس کے اسلام قبول کرنے کی خبر ملی تو اس نے ایک زبردست لشکر تیارکیا جس کا سیدسالار مردان شاہ کومقرر کیا اور اے نہاوند کی طرف روانہ کیا۔ کوفہ

الناسة عمالية في المالية المال

کے گورز حضرت عمار بن پاسر وٹائٹنڈ نے حضرت عمر فاروق وٹائٹنڈ کوتمام حالات سے آگاہ کیا۔ آپ وٹائٹنڈ نے حضرت نعمان بن مقرن وٹائٹنڈ کوتمیں ہزار مجاہدین کے لشکر کے ہمراہ نہاوند بھجوانے کا فیصلہ کیا۔ حضرت نعمان بن مقرن وٹائٹنڈ نے حضرت مغیرہ بن شعبہ وٹائٹنڈ کوسفیر بنا کر مردان شاہ کے پاس بھیجالیکن کوئی مفید نتیجہ برآ مدنہ ہوا اور نوبت جنگ تک آن بہنچی۔ حضرت نعمان بن مقرن وٹائٹنڈ نے اپنے لشکر کو دو حصول میں تقسیم کیا اور ایک جھے کی قیادت حضرت قعقاع وٹائٹنڈ کے سپردکی جنہوں نے نہاوند کے قلعے برحملہ کردیا۔

مردان شاہ نے جب دیکھا کہ اشکر اسلامی نے حملہ کر دیا ہے تو وہ اپنی فوج لے کر قلعے سے باہر نکل آیا۔ جس وقت مردان شاہ اپنی فوج لے کر قلعے سے باہر نکلا حضرت قعقاع بڑائوں نے منصوبے کے مطابق پیچھے بٹنا شروع کر دیا جس سے مردان شاہ کی فوج مزید آگے بڑھتی چلی گئے۔ جب مردان شاہ اپنی فوج کے ہمراہ ایک مخصوص مقام پر پہنچ گیا تو حضرت نعمان بن مقرن رٹائیڈ نے دوسر لے اشکر کے ساتھ اس کے اوپر حملہ کر دیا جس سے مردان شاہ اور اس کی فوج سنجل نہ سکی اور بہا ہوکر میدانِ جنگ سے بھا گنا شروع کر دیا۔ حضرت نعمان بن مقرن رہائیڈ نے اور بہا ہوکر میدانِ جنگ سے بھا گنا شروع کر دیا۔ حضرت نعمان بن مقرن رہائیڈ نے اس کا پیچھا کیا لیکن خودگھوڑے سے گر کر شدید زخمی ہو گئے۔

حضرت نعمان بن مقرن و النفظ كے زخمی ہونے كے ان كے بھائی حضرت نعیم بن مقرن و النفظ كے براہ کرعلم سنجالا۔ اللہ عزوجل نے مسلمانوں کو فتح عطا فرمائی اور نہاوند قلعہ فتح ہو گیا۔ حضرت نعمان بن مقرن و النفظ جن كی سانسیں ابھی اکھڑر ہی تھیں انہوں نے جب لشكر اسلام كی فتح كا اعلان سنا تو كلمہ پڑھتے ہوئے اپنی جان جان جان آفرین كے سپرد كر دی۔ حق و باطل كے اس معركہ میں تمیں ہزار ایرانی جان جان جان آفرین كے سپرد كر دی۔ حق و باطل كے اس معركہ میں تمیں ہزار ایرانی

المنت عمل المال ال

سیابی جہنم واصل ہوئے۔

قلعہ نہاوند کی فتح کے بعد لشکر اسلام آگے بڑھتا چلا گیا اور حضرت عمر فاروق رفائی مضبوط جنگی حکمت عملی کی بدولت لشکر اسلام نے پہلے آ ذر بائیجان فتح کیا اس کے بعد طبرستان، پھر آ رمینیہ، سبستان اور مکران بھی فتح کرلیا۔ مکران کی فتح کے بعد سندھ کے علاقے تک مسلمانوں کی رسائی آسان ہو چکی تھی لیکن آپ ڈائٹوڈ نے اس سست میں مزید آگے بڑھنے سے فی الحال منع فرما دیا۔

ایرانی مہمات کے متعلق اہم فیصلوں میں سے ایک فیصلہ حضرت عمر فاروق رفائیڈ کا حضرت احنف بن قیس جائیڈ کو خراسان کی جانب بھیجنا تھا جنہوں نے پہلے ہرات فتح کیا۔ یزدگرد کو ہرات کے فتح ہونے کی خبر ملی تو وہ بلخ بھاگ گیا۔ حضرت احنف بن قیس رفائیڈ نے ہرات کے بعد بلخ پر حملہ کر دیا جو کہ معمولی جنگ کے بعد فتح ہو گیا۔ یزدگرد نے جب دیکھا کہ اسلامی افواج نے بلخ پر حملہ کر دیا ہے تو وہ بھاگ کر دیا جو وہ بھاگ کر دیا جو دہ بھاگ کہ اسلامی افواج نے بلخ پر حملہ کر دیا ہے تو وہ بھاگ کر دیا جو دہ بھاگ کر دریا عبور کر گیا اور چین پہنچ گیا جہاں خاتانِ چین نے اس کی خوب تو اضع کی اور ایک بہت بڑی فوج کے ہمراہ خود یز دگرد کے ہمراہ روانہ ہوا۔

حضرت احف بن قبیس و الفیز کو اطلاع ملی تو آپ و الفیز لشکر اسلام لیے کر ان پر چڑھ دوڑے جس سے خاقان چین گھبرا کر فرار ہو گیا۔ یزدگرد کو جب خاقان چین گھبرا کر فرار ہو گیا۔ یزدگرد کو جب خاقان چین کھبرا کر فرار ہو گیا۔ یزدگرد کو جب خاقان چین کے فرار ہو گیا ادر خاقان کے دارالسلطنت فرعانہ جا پہنچا۔

حضرت احنف بن قبس و النفرز في حضرت عمر فاروق و النفرز كواران كى فقح كى خوشخبرى سنائى - آب و النفرز في النف

الناسية عمليت والمالية المالية المالية

نی کریم مینی کی پیشین گوئی تج ثابت ہوگئی تھی۔ حضور نبی کریم مینی کی خب خسر و پرویز شاہ فارس کو اسلام کی دعوت دی تھی تو اس نے حضور نبی کریم مینی کی خط جس پر اللہ عز وجل اور حضور نبی کریم مینی کی گئی کا نام لکھا تھا چاک کر دیا تھا۔ حضور نبی کریم مینی کی کی مینی کی کی مینی کی کہ مینی کی کہ مینی کریم مینی کی کہ مینی فر مایا تھا کہ خسر و پرویز نے میرا خط نہیں اپنی سلطنت کو چاک چاک کر دیا ہے اور عنقریب ملک فارس کا نام دنیا سے مث جائے گا۔ آپ ڈالٹون نے حاضرین محفل کو مخاطب کرتے ہوئے فر مایا۔

گا۔ آپ ڈالٹون نے حاضرین محفل کو مخاطب کرتے ہوئے فر مایا۔

"اللہ عز وجل نے کئی سوسالہ قدیم مضوط مجوی حکومت کو تباہ و برباد کر دیا آگر ہم نے بھی راہ راست کو چھوڑ دیا تو ہمارا انجام برباد کر دیا آگر ہم نے بھی راہ راست کو چھوڑ دیا تو ہمارا انجام بھی ان جیسا ہی ہوگا۔"

فتوحات مصرك متعلق الهم فيصله:

حضرت عمر فاروق والنفؤ جب بیت المقدی تشریف لے گئے تھے تو ای وقت حضرت عمر و بن العاص والنفؤ نے آپ والنفؤ سے معر پر الشکر کشی کی اجازت طلب کی تھی اور آپ والنفؤ نے آب معر پر حملہ کی اجازت دیتے ہوئے چند اہم فیلے بھی کئے اور آئیں ان فیصلوں سے آگاہ کیا جس پر حضرت عمر و بن العاص والنفؤ نے چار ہزار مجابدین کے اور آئیں ان فیصلوں سے آگاہ کیا جس پر حضرت عمر و بن العاص والنفؤ کی مدد کے ہمراہ معر پر حملہ کر دیا تھا۔ آپ والنفؤ کی قیادت میں دی ہزار العاص والنفؤ کی قیادت میں دی ہزار مجابدین کالشکر روانہ کر دیا تھا۔ جس وقت حضرت عمر و بن العاص والنفؤ نے معر پر حملہ کہا ای وقت معر کا حاکم مقوس تھا۔ حضرت عمر و بن العاص والنفؤ معر پر حملہ کہا ای وقت معر کا حاکم مقوس تھا۔ حضرت عمر و بن العاص والنفؤ معر پر حملہ کہا ای وقت معر کا حاکم مقوس تھا۔ حضرت عمر و بن العاص والنفؤ معر پر حملہ کرنے سے پہلے ایک سفیر مقوس کے در بار میں روانہ کیا جس نے مقوش کو اسلام کی وعوت دی اور آگر اسلام قبول نہیں کرتے تو جزیدادا کریں اور آگر اسلام قبول نہیں کرتے تو جزیدادا کریں اور آگر اسلام قبول نہیں کرتے تو جزیدادا کریں اور آگر اسلام قبول نہیں کرتے تو جزیدادا کریں اور آگر واسلام تھوں کو اسلام

المنت ممنت ول كيسل 174

كريں كے تو پھر جنگ كى جائے گی۔

حضرت عمرو بن العاص رفائنی نے حضرت عبادہ بن صامت رفائنی کوسفیر بنا کر بھیجا تھا جن کا رنگ سیاہ تھا۔مقوس نے حضرت عبادہ بن صامت رفائنی کی بنا کر بھیجا تھا جن کا رنگ سیاہ تھا۔مقوس نے حضرت عبادہ بن صامت رفائنی نے مقوس با تیں سننے کے بعد ان کا تمسخر اڑایا تو حضرت عبادہ بن صامت رفائنی نے مقوس سے فرمایا۔

"الله كانتم! مميں تمہارى كچھ پرواہ نہيں بلكه ان باتوں سے
ہمارا شوق جہاد مزيد بردھتا ہے۔ جہاد كرنے سے مين ہميں دو
ميں سے ايك نعمت حاصل ہوتی ہے يا تو ہم شہيد ہوجا ہے ہيں
يا چرہميں مالي غنيمت حاصل ہوتا ہے۔ اے مقوس! بيہ بات
يا دركھوكہ ہم ميں سے كوئى مسلمان ايمانہيں جوضح وشام الله
عزوجل سے شہادت كى موت نہ مانگا ہو۔"

مقوص نے جب حضرت عبادہ بن صامت رہائیڈ کی تقریر سنی تو وہ جیران رہ گیالیکن اپنی فوج کے زعم میں اس نے حضرت عبادہ بن صامت رہائیڈ کی شرا لط ماننے سے انکار کر دیا۔

حفرت عمروبن العاص و النين في مقوس كانكارك بعدمهم بهمله كر ديا-اس دوران حفرت زبير بن العوام والنين بهى دس بزار مجابدين كالشكر لي كريبني كي -مقون في جب الشكر اسلامي ديكها تو قلعه بند بو گيا-حفرت زبير بن العوام والنين قلعه ي درواز عفول دين العوام والنين قلعه كي درواز عمول دين العوام والنين قلعه كي درواز محول دين العوام اسلام قلعه بين داخل بو گيا-مقوس في جب الشكر اسلامي كا غلبه ديكها تو اس في ملكي درخواست كي جومنظور كرلي كي درخواست كي جومنظور كرلي گي درخواست كي جومنظور كي كي درخواست كي جومنظور كي درخواست كي جومنظور كي درخواست كي جومنظور كي كي درخواست كي درخواست كي درخواست كي خومنظور كي كي درخواست كي درخواست كي درخواست كي خومنظور كي درخواست كي در در در كي كي درخواست كي درخواست كي درخواست كي درخواست كي در كي درخواست كي درخواست كي درخواست كي در در در در كي كي درخواست كي درخواست كي درخواست كي درخواست كي درخواست كي در در در در در كي درخواس

روایات میں آتا ہے کہ مصر کی جنگ میں حضرت عمر و بن العاص و النافہ نے اسپے لشکر کے ہمراہ فسطاط کے قلعہ کا محاصرہ کیا اور بیر محاصرہ کی دن تک جاری رہا مگر فتح کی کوئی سبیل دکھائی نہ دی۔ حضرت عمر و بن العاص و النافہ نے حضرت عمر فاروق و النافہ فوج کی مزید فاروق و النافہ فوج کی مزید کاروق و النافہ فوج کی مزید کمک بھیجیں۔ آپ و النافہ نے دس ہزار کا الشکر بھیجا اور ساتھ ہی چار گران بھی بھیجے اور فرمایا یہ گران دس ہزار کا الشکر بھیجا اور ساتھ ہی چار گران بھی بھیجے اور فرمایا یہ گران دس ہزار گئر کے برابر ہیں اور ان میں حضرت زبیر بن العوام و النافہ و بھی بھے۔

حضرت عمروبن العاص و النفظ نے حضرت زبیر بن العوام و النفظ کو محاصرین کا انتجارج بنایا اور حضرت زبیر بن العوام و النفظ نے نے قلعہ کا جائزہ لے کر فر مایا اسے فتح کرنا مشکل ہے مگر میں خود کو دین اسلام پر قربان کرتا ہوں۔ یہ فر ما کر حضرت زبیر بن العوام و النفظ نے نے قلعہ کی فصیل پر پہنچنے زبیر بن العوام و النفظ نے نے قلعہ کی دیوار پر سیر ہی لگائی اور چڑھ گئے قلعہ کی فصیل پر پہنچنے کے بعد نعرہ تکبیر بلند کیا اور نیچے انز کر قلعہ کا دروازہ کھول دیا اور اس کے ساتھ ہی لشکر اسلام قلعہ میں داخل ہو گیا۔

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق والفن کے فیطے کے بعد حضرت عمر و بن العاص والفن نے مصر پر چرھائی کی تو عیسائی لشکر کے سپہ سالار جرجیس نے تمام عیسائی ممالک سے افواج جمع کیس اور ایک بروالشکر لے کرمسلمانوں کے مقابلہ میں اترا مگر لشکر اسلام کے سامنے اس کا بیظیم الشان لشکر ریت کی دیوار ٹابت ہوا۔ جب جرجیس نے دیکھا کہ کامیابی کے پچھآ ٹار دکھائی نہیں دے رہے تو اس نوا۔ جب جرجیس نے دیکھا کہ کامیابی کے پچھآ ٹار دکھائی نہیں دے رہے تو اس نے منادی کروائی جوکوئی لشکر اسلام کے سپہ سالار کا سرکاٹ کرلائے گا میں اسے انعام واکرام سے نوازوں گا اورا نی بیٹی بھی اسے دے دول گا۔ اس اعلان کوئ کرا

المنت المنتقال المالية المنتقال المالية المنتقال المالية المنتقال المنتقال

ہوں برست عیسائی اس کوشش میں مصروف ہوئے کہ وہ حضرت عمرو بن العاص برائی کا سرقلم کر دیں۔ آپ بڑائی کو مدینہ منورہ میں جب اس بات کی اطلاع ملی تو آپ بڑائی کا سرقلم کر دیں۔ آپ بڑائی کو مدینہ منورہ میں جب اس بات کی اطلاع ملی تو آپ بڑائی نئے سے خطرت عبداللہ بن زبیر زبات کی ایک برا سے لشکر کے ساتھ حضرت عمرو بن العاص بڑائی کی مدد کے لئے روانہ کیا۔

حضرت عبداللہ بن زبیر وظافی اپنے لشکر کے ہمراہ انتہائی تیز رفاری کے ساتھ سفر کرتے ہوئے حضرت عمرہ بن العاص وظافین سے جا ملے اور جب حضرت عمرہ بن العاص وظافین سے جا ملے اور جب حضرت عمرہ بن العاص وظافین ہے آپ وظافین ہیں عمرہ بن العاص وظافین سے ملاقات ہوئی تو کہا مجھے جیرائگی ہے آپ وظافین جسے مردیجاہد کے لئے اس کا توڑ بہت آسان ہے اور آپ وظافین اعلان کروا دیں کہ لشکر اسلام کا جو بھی سیابی جرجیس کا سرقلم کر کے لائے گا اسے انعام میں جرجیس کی بیٹی اور بے شار مال ملے گا۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com المسترقم المستراك المسلول كالمسلول المسلول المس

کا سرقلم کرنے والے مجاہد ہے درخواست کرتا ہوں کہ وہ اپنے آپ کو ظاہر کرے تا کہ سرقلم کرنے والے مجاہد ہے درخواست کرتا ہوں کہ وہ اپنے آپ کو ظاہر کرے تا کہ حسب وعدہ انعام ہے سرفراز کیا جائے اس اعلان کے بعد کچھ دیرا نظار کیا گیا مگر کئیا۔ کسی نے آگے بڑھ کرا پنانام بیش نہ کیا۔

حضرت عبداللہ بن زبیر طاق کی اور کی مجاہد خود کو ظاہر کرنے پر آمادہ نہیں ہوتا لہذا بہتر ہے کہ جرجیس کی اور کی سپہ سالا راسلام خود قبول فر مالیں۔حضرت عمرو بن العاص طاق نے معذرت کے ساتھ کہا مجھے آپ ڈائٹو کا مشورہ قبول نہیں کرسکتا۔ میں اس بہادراور مر دِمجاہد کی حق تلفی نہیں کرنا چاہتا۔ اگر میرا قیاس غلط نہیں تو میں اس بہادراور مر دِمجاہد کی حق تلفی نہیں کرنا چاہتا۔ اگر میرا قیاس غلط نہیں تو میں اس بتیجہ پر پہنچا ہوں اور میرا دل گواہی دے رہا ہے کہ اس مبارک اقدام کا مہرا آپ بڑائی ہی کے سر ہونا چاہئے۔

حضرت عبداللہ بن زبیر ظافینا نے کہاتم نے جو کھ فرمایا میں اس کاشکریہ ادا کرتا ہوں لیکن اس میدان کے سرکرنے والا ابھی تک تو آگے بڑھانہیں۔ سب مجاہدین کہنے لگے اب اظہارِ حقیقت میں دیر نہ سیجے ہم نے آپ بڑائیڈ کو بے تحاشہ جرجیس کی طرف بڑھتے ہوئے و یکھا ہے بلکہ ہم کو اندیشہ تھا کہیں وشمنوں میں گھر کرآپ بڑائیڈ شہید نہ ہوجا کیں اور جرجیس کا قاتل آپ بڑائیڈ کے سواکون ہوسکتا کرآپ بڑائیڈ شہید نہ ہوجا کیں اور جرجیس کا قاتل آپ بڑائیڈ کے سواکون ہوسکتا ہے؟ آپ بڑائیڈ نے جب سب لوگوں کا اصرار دیکھا تو فرمایا اللہ عز وجل خوب جانتا ہے میں نے یہ کام بغیر کسی شہرت اور لا کچ کے کیا ہے اور یہ میرا فرض تھا اور اگر سب کی خوائش کہی ہے تو جھے اس پر پھھا عتر اض نہیں چنانچہ جرجیس کی لڑکی کا نکاح اسلامی رواج کے مطابق آپ بڑائیڈ سے ہوگیا۔

اسكندرىيى جانب پېش قدمى كافيصله:

روایات میں آتا ہے شاہِ مصرمقوس نے اگر چدسارے مصرکے حوالہ سے

المنتر عمل المعلى المعل

صلح کی تھی لیکن قیصر روم ہرقل نے انکار کر دیا اور اس نے مقوش کولکھا۔
"اگر قبطیوں میں کشکر اسلام سے لڑنے کی ہمت نہ تھی تو وہ
رومیوں کو کہتا ہم ایک بڑی فوج کشکر اسلام کے مقابلے کے
لیے بھیج دیتے۔"

ہرقل نے مقوش کی طرف سے صاف جواب کے بعد اسکندریہ میں اپنی فوج اکھٹی کی۔حضرت عمر و بن العاص رہائیڈ نے اس کی اطلاع حضرت عمر فاروق رہائیڈ کو دی اور آپ رہائیڈ نے انہیں اسکندریہ کی جانب پیش قدمی کا تھم دیا۔ ہرقل کی اس پیش قدمی کا تھم دیا۔ ہرقل کی اس پیش قدمی کے بعد حضرت عمر و بن العاص رہائیڈ بھی لشکر اسلام کو لے کر اسکندریہ بہنچ گئے۔

لشکر اسلام کی قوت دیچے کر برقل کی فوج قلعہ بند ہوگئی۔ لشکر اسلام نے قلعہ کا محاصرہ کرلیا۔ محاصرے کے دوران بھی بھی رومی فوج کے پچھ سپاہی قلع سے باہر آ کرلڑتے لیکن وہ لشکر اسلام کے ہاتھوں ہزیمت اٹھا کر واپس بھاگ جاتے۔ اس دوران رومی فوج کا کافی جانی نقصان بھی ہوا بالآ خررومی فوج قلعے سے باہرنگل آئی اور زبردست لڑائی کے بعد لشکر اسلام کامیاب رہا اور رومی افواج کوایک انتہائی ذلت آمیز شکست سے دو جارکیا۔

حضرت عمر و بن العاص ر النيئة نے حضرت عمر فاروق ر النیئة کی جانب ایک تیز رفتار شر سوار کو مدینه منوره روانه کیا کیونکه آپ ر النیئة اسکندریه کے طویل محاصره کی وجه سے پریثان تھے۔ آپ ر النیئة کو جس وفت اسکندریه کی فتح اور رومیوں کی وجہ سے پریثان تھے۔ آپ ر النیئة کو جس وفت اسکندریه کی فتح اور رومیوں کی ذلت آمیز شکست کے بارے میں پہتہ چلا تو آپ ر النیئة نے ای وفت بطور شکرانه بارگاہ خداوندی میں سجدہ کیا۔

الانتراكي أول كيفيل المحالية ا

فتوحات فاروقي طالتين كالجمالي جائزه:

حضرت عمر فاروق والنونية كے ساڑھے دس سالہ دور حكومت ميں كئى بڑے علاقے اور ملک فتح ہوئے۔ آپ والنون كى بہترين جنگى حكمت عملى اور بروقت فيصلوں كى بدولت مسلمان ملک عرب سے باہرنگل كرايك بڑے حصے پر قابض ہوئے اور اسلام كا حجنڈ الہرایا۔ آپ والنون كے دور خلافت میں اشكر اسلام نے عراق ، ایران ، شام ، فلسطین اور دیگر علاقوں کے بہترین جنگجوؤں كوشكست فاش سے دوجاركیا۔ فابل میں آپ والنون کے دور خلافت میں ہونے والی فقو حات كا جائزہ تاریخی لیاظ دیل میں آپ والنون کے دور خلافت میں ہونے والی فقو حات كا جائزہ تاریخی لیاظ سے چیش كیا جارہا ہے۔

| سپدسالارکا نام | جس سال فنتح ہوا | علاقے کا نام | نمبرشار |
|-----------------------------------|-----------------|---------------|-------------|
| حضرت ابوعبيده ثقفي طالغيظ | ۳۱۵ | نمارق کی فتح | _1 |
| حضرت ابوعبيده ثقفي طالنظؤ | ۳اھ | سقاطیه کی فتح | _r |
| حضرت ابوعبيده تقفى رئائفة | سااھ | مروجه کی جنگ | ٣ |
| حضرت سعد بن الي وقاص طالفذ | ۰ ها ۱۳ | قادسیه کی جنگ | _۴_ |
| حضرت خالدبن وليد خالفنه | سماھ | دمشق کی فتح | ۵۔ |
| حصرت ابوعبيده بن الجراح والنفذ | سم ا ھ | فخل کی جنگ | _4 |
| حضرت خالدبن وليد بنائفذ | سماره | حمص کی فتح | _4 |
| حضرت ابوعبيده بن الجراح بنالغيّهٔ | ۵۱۵ | ر موک کی جنگ | _A [|
| حضرت سعد بن ابي وقاص طالففه | ۲اھ | جلوله کی جنگ | _9 |
| حضرت عبدالله بن المعتم طالفين | ۲اھ | جزیرہ کی فتح | _1• |
| حصريت ايوموى اشعرى بنالنفذ | ۲۱ھ | اہواز کی جنگ | _11 |

| [180] [180] | اکے فیسلے | «ستة عمر الأنت وال | | |
|---|-------------|------------------------|--|--|
| معترت عمرو بن العاص بنائعة | ۳۱۳ | ا۔ | | |
| حضرت ابوعبيده بن الجراح خالتية | ⊿ا⊿ | ۱۳۰ – حمض کا د فاع | | |
| حضرت يزيد بن الى سفيان طلقهما | 19 ھ | سما۔ قیسار یہ کی جنگ | | |
| حضرت عمروبن العاص طالغية | ø F• | ۱۵۔ مصرکی فتح | | |
| حضرت عمروبن العاص بنائنيز | ۲۱ ص | ۱۶۔ اسکندر بید کی فنتح | | |
| حضرت نعمان بن مقرن بناتين | 11 ھ | ےا۔ | | |
| حضرت عتبه بن فرقد طالبينة | ۲۲ھ | ۱۸ - آذربائیجان | | |
| حضرت سويد رشالغين | ørr | ۱۹۔ طبرستان کی فنتح | | |
| حصرت بكير منالفيز | ۲۲ھ | ۲۰- آرمینیه کی فنتخ | | |
| حضرت مهيل بن عدى طالعين | ۳۲۳ | ۲۱۔ کر مان کی فنتح | | |
| حضرت تفكم بن عمر وتتالينيذ | ۳۲۳ | ۲۲_ سبستان کی فنتخ | | |
| حضرت احنف بناتين | ۳۲۳ <u></u> | - - | | |
| نوٹ: ۱۸ اھ میں طاعون کی وہا کی وجہ سے جہادمکن نہ ہوسکا۔ | | | | |
| O OO | | | | |



نظام خلافت

خلافت کا آغاز حضور نبی کریم منظ کیٹائے کے وصال کے بعد حضرت ابو بکر صدیق بٹالٹیڈ کے خلیفہ بنتے ہی شروع ہو گیا تھا مگر انتظامی امور جن کے لئے محکموں کا قیام ضروری تھا وہ حضرت ابو بکر صدیق طالعہ کے دورِ خلافت میں معرض وجود میں نہ آسکے تھے اور اس کی ایک وجہ رہ بھی تھی کہ حضرت ابو بمر صدیق طالفنڈ جب منصب خلافت پر متمکن ہوئے تو اس وفت مختلف فتنے بریا ہو گئے جن میں نبوت کے حجوثے دعوبدار، منکرین زکوۃ وغیرہ شامل تھے اور پھر حضرت ابو بکر صدیق طالغیّنہ نے امت مسلمہ کی بیجہتی کے لئے ان کے خلاف جہاد شروع کیا اور اینے مختصر دورِ خلافت میں ان تمام فتنوں کا سدباب کیا گیا۔حضرت عمر فاروق رہائیئے نے جب منصب خلافت سنجالا تو آب رہائٹن نے اس بات کی ضرورت محسوں کی کہ نظام حکومت جلانے کے لئے محکموں کا قیام ضروری ہے۔ ذیل میں آپ طالفنڈ کی خلافت کے اہم امور اور امورِ خلافت جلانے کے لئے آپ بنائٹی کے جو فیلے تھے ان کا اجمالی جائزہ پیش کیا جارہا ہے۔

مجلس شوری کے قیام کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق ولائن کے دور خلافت میں جومجلس شوری قائم کی گئی جس میں جلیل القدر صحابہ کرام میں کنتی کو شامل کیا گیا۔ ان صحابہ کرام میں کنتی میں حضرت میں جلیل القدر صحابہ کرام میں کنتی کو شامل کیا گیا۔ ان صحابہ کرام میں کنتی میں حضرت

المنت ممنت وارق كيديل

عثمان غنی، حضرت علی المرتضی، حضرت عبدالرحمٰن بن عوف، حضرت معاذ بن جبل، حضرت زید بن ثابت اور حضرت ابی بن کعب رشی آنتی شامل تھے مجلس شوریٰ کا کام تھا کہ وہ روز مرہ کے معمولی اور اہم نوعیت کے تمام معاملات کو نبرتائے۔ جب کوئی اہم مسکلہ درپیش ہوتا تو مجلس شوریٰ کے ارکان اکابر مہاجر وانصار کا اجلاس طلب کرتے مسکلہ درپیش ہوتا تو مجلس شوریٰ کے ارکان اکابر مہاجر وانصار کا اجلاس طلب کرتے جس میں سب کی رائے معلوم کرنے کے بعد فیصلہ کیا جاتا۔

صوبوں کی بنیادر کھنے کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق رظائفۂ نے مملکت اسلامیہ کو آٹھ صوبوں میں تقسیم فرمایا جن کے نام یہ تھے۔ مکہ مکرمہ، مدینہ منورہ، شام، جزیرہ، بھرہ، کوفہ، مصراور فلسطین۔ صوبول کے انتظامی امور چلانے کے لئے گور نرمقرر کئے گئے اور گورنر کی مدد کے لئے دیگر عہد یدارمقرر کئے گئے جن کی تفصیل ذیل ہے۔

ا- صاحب بيت المال يعني وزيرخزانه

۲- قاضی جس کا کام ہرفتم کے مقدمات کا فیصلہ کرنا تھا

سم- صاحب الخراج جوكه محكمه زكوة كاانجارج نقا

۵۔ کا تب دیوان یعنی فوجی دفتر کامنشی

۲- کاتب جو که گورنر کی خط و کتابت کرتا

حضرت عمر فاروق و النفاذ کی جانب سے حکومت کے تمام عہد بداروں کو تنخواہ دی جاتی تھی تا کہ وہ حکومتی کام کے علاوہ اور کوئی کام نہ کریں کیونکہ آپ والنفؤ سنخواہ دی جاتی تنخواہ دار ملاز میں نہیں ہوتے تھے اور وہ اپنی گزر اوقات کے لئے مختلف کام بھی کیا کرتے تھے۔

المنظمة في المنظمة الم

ابل گورنرول کی تقرری کا فیصله:

حضرت عمر فاروق جلائي نے صوبوں کے گورزوں کی تقرربوں میں اپنی فطری جو ہر شاخی ہے کام لیا اور وہ لوگ جو اپنی کسی خوبی میں خاص شہرت رکھتے تھے مثلاً حضرت عمرو بن العاص، حضرت مغیرہ بن شعبہ اور حضرت البر معاویہ بنی آئی جو کہ ساسی امور کے ماہر تھے یا پھر حضرت طلحہ بن خالد، حضرت خالد بن ولید اور حضرت عمرو بن معدی کرب جی آئی جو کہ جنگی معاملات کوخوب سمجھتے تھے اور ان کو کوئی بھی عہدہ و سے پہلے آزمائش کی ضرورت نہ تھی۔ آپ جلائی نے ایسے افراد کوعہدوں پر تعینات کیا جو ان عہدوں کے لئے موزوں تھے۔

حضرت عمر فاروق وللنظر مسى بھى گورنر كااس كے عہدہ پرتقرر كرتے وقت اس ہے ہدہ پرتقرر كرتے وقت اس ہے ہيد ليتے تھے كہ وہ تركی گھوڑے پرسوار نہ ہوگا، بار يك كپڑانہيں پہنے گا، دروازے پر دربان ہرگز نہ رکھے گا، اپن حكومت كا دروازہ ہرسوالی كے لئے كھلا ركھے گا اور جھنا ہوآٹا نہ كھائے گا۔

حضرت عمر فاروق والنيء برگورز ہے اس عہد نامے پر تحق ہے مل درآمد

کرواتے اوراگر کسی گورز میں کچھکوتا ہی پاتے تو اس کا تحق ہے احتساب کرتے تھے۔

ایک مرتبہ مصر کے گورز حضرت عیاض والنیء کو باریک لباس پہننے کے جرم میں آپ
والنیء نے کمبل کا لباس پہنا دیا تھا۔ ایام جج میں تمام گوروں کی حاضری لازی تھی اور
اس موقع پر آپ والنیء لوگوں کی شکایات سنا کرتے تھے اور ایک مرتبہ مصر کے گورز
حضرت عمرو بن العاص والنیء کے بیٹے کو ایک قبطی سے زیادتی پر اس قبطی کے ہاتھوں

ہی کوڑے لگوائے۔

حضرت عمر فاروق وللنفؤ بميشه گورنرول كى تقررى ميں اس بات كى احتياط

| | • |
|--|---------------------------|
| 184 | 1111 4 |
| | |
| (((181 \\Y\~\$\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ | ١١١ سنت منت ر ارول كريسار |
| | |
| | |

کرتے کہ اوّل وہ نظم وضبط کا ماہر ہواور انتظامی امور احسن طریقے سے چلانا جانتا ہواور اس کے علاوہ وہ تندرست وتوانا ہو۔

ذیل میں حضرت عمر فاروق بٹائٹٹے کی جانب سے مقرر کردہ گورنروں کی فہرست بیان کی جارہی ہے۔

گورنر کا نام

ا حضرت ابوعبیده بن الجراح مِنْالِنَهُ:

حضرت يزيد بن الى سفيان طالفيما

حضرت امير معاويه بنالنينة

حضرت عمروبن العاص طالغة

حضرت سعد بن الي وقاص طِلْعَهُ:

حضرت عتبه بن غز وان رنگانینهٔ

حضرت ابوموى اشعرى طالنينة

حضرت عثمان بن العاص طالفيز

· حضرت نافع بن عبدالحارث طالفيز

حضرت خالد بن العاص بنالنين

حضرت يعلى بن اميه طالفينة

حضرت حذيفه بن اليمان خالفنيز

حضرت عياض بن عنم رخالتُهُ:

حضرت عمرو بن سعيد رهاينه

حضرت علقمه بن مجرز مثالفيّن

صوبے یا علاقے کا نام

شام

ممصر

كوفه

بقره

طا نف

مكهمعظمه

يمن

مدائن

o/7.

خمص.

رمله

النات عملات والله المعلقة والمواق كي أسل

حضرت علقمه بن حاتم رفالنبوّة

گورز چونکه ملکی خدمات میں اپنا وقت بسر کرتے تھے اس کئے ان کی تخواہ مقرر کی گئی۔ حضرت عیاض بن عنم بنائیڈ ممص کے گورز تھے ان کوروزانہ ایک اشر فی اور ایک برار معاویہ بنائیڈ شام کے گورز تھے انہیں ایک بزار دیار ماہور تخواہ ملتی تھی۔ حضرت امیر معاویہ بنائیڈ شام کے گورز تھے انہیں ایک بزار دیار ماہور تخواہ ملتی تھی۔ الغرض ہرایک کو اس کی قابلیت اور علاقے کے حساب سے تخواہ دی جاتی جس میں ان کا گزربسر با آسانی ہو سکے۔

حضور نی کریم مین اللہ کام کرتے تھے اور اپنے اہل وعیال کے میں تمام صحابہ کرام دی گئی کے دور میں اور حضرت ابو بکر صدیق دہائی کے دور میں تمام صحابہ کرام دی گئی کئی اللہ کام کرتے تھے یہی وجہ تھی جب حضرت عمر فاروق الخراجات کے لئے تجارت یا مزدوری کرتے تھے یہی وجہ تھی جب حضرت عمر فاروق دہائی نے اپنے دورِ خلافت میں تنخواہ کا نظام رائے کیا تو بیشتر صحابہ کرام دی گئی نے تنخواہ لینے سے انکار کردیالیکن حضرت عمر فاروق دی گئی نے مستقبل قریب میں بڑھتی ہوئی اسلامی سلطنت اور اس کی ضروریات کے پیش نظر تمام صحابہ کرام دی گئی ہوکہ کہوئی اسلامی عہدے پر کام کررہ سے تھے ان کو تخواہ لینے پر قائل کیا تا کہ دہ ملکی معاملات کو احسن طریقے سے چلا سکیس۔

گورنروں کے اختساب کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق خالفنی جب بھی کسی شخص کو گور نرمقرر کرتے تو سب سے پہلے اس کی منقولہ اور غیر منقولہ تمام جائداد کی تفصیل حاصل کرتے جسے سرکاری ریکار ؤ میں محفوظ رکھا جاتا اور وقتا فو قتا ان کا جائزہ لیا جاتا کہ کہیں اس گورنر نے غیر قانونی طور پراپنے عہدے کا ناجائز استعمال کرتے ہوئے کوئی جائیداد تو نہیں بنائی۔ حضرت عمر فاروق خالفی نے گورنروں کی تحقیقات کا طریقہ بالکل صاف

المنت تم المنت المول كي أيسل

اور شفاف رکھا اور آپ بڑائیڈ نے حضرت محمد بن مسلمہ بڑائیڈ کو گورزوں کا تحقیقاتی افسر تعینات کیا۔ آپ بڑائیڈ کو جب کسی گورز کے بارے میں کوئی شکایت موصول ہوتی تو آپ بڑائیڈ اس پر فوری کاروائی کرتے اور اگر تحقیق کے بعد اس گورز کے خلاف موصول ہوئی شکایت درست ہوتی تو اس کا ازالہ کیا جاتا۔ حضرت محمد بن مسلمہ بڑائیڈ چونکہ حضور نبی کریم سے بھی کی خدمت میں عرصہ دراز تک رہے تھا اس کے کردار کے بارے میں کسی کوکوئی شک نہ تھا اور یبی وجہ تھی گہ جب وہ کوئی ر بورٹ چیش کرتے تو وہ کمل اور درست ہوتی۔

حفرت عمر فاروق رفی نفیز نے حضرت عمر و بن العاص رفی نیز کومصر کا گورنر بنایا تو کچھ عرصہ کے بعد آپ رفیلین کو اطلاع ملی حضرت عمر و بن العاص رفی نیز نے اپنے ذرائع سے بے شار دولت اکشی کرلی ہے۔ آپ رفی نیز نے حضرت عمر و بن العاص رفی نیز نے جوابا آپ العاص رفی نیز نے جوابا آپ العاص رفی نیز نے جوابا آپ العاص رفی نیز کو جوابا آپ رفی نیز کو کور رفر مایا۔

"امیر الموسین! جس مال کا آپ رائین نے ذکر فرمایا ہے تو وہ میرے پاس اس لئے جمع ہوگیا ہے کہ ہم ایسی سرز مین میں موجود بیں جہاں چیزیں بہت قیمتی ہیں اور دشمنوں ہے جنگیں بھی بکٹرت ہوتی ہیں جس کی وجہ سے میرے پاس مال و دولت کی کثرت ہوگئ ہے، اللہ عزوجل کی قتم! اگر آپ رائین کے ساتھ خیانت کرنا حلال بھی ہوتا تو میں بھی نہ کرتا۔ آپ رائین کے ساتھ خیانت کرنا حلال بھی ہوتا تو میں بھی نہ کرتا۔ آپ رائین کے میرے ذمہ امانت لگائی ہے اور میرانسب بھی ایسا ہے کہ میں خیانت کا سوچ بھی نہیں سکتا اگر آپ رائین کے یاس کوئی بیس خیانت کا سوچ بھی نہیں سکتا اگر آپ رائین کے یاس کوئی

المناز ال

ایباشخص ہے جو مجھ نے بہتر مصر کا گورنر ٹابت ہوسکتا ہے تو آپ طالفیٰ اس کو تعینات کر سکتے ہیں۔''

حضرت عمر فاروق طلفنۂ نے حضرت عمرو بن العاص طلفۂ کے خط کے جواب میں تحریر فرمایا۔

''اے عمرو(طالغنز)! میں نے تم سے جو بوچھ کی ہے اس میں میرا کوئی ذاتی مفاد نہیں ہے میں تمہارے پاس محمد بن مسلمہ طالغنز کو بھیج رہا ہوں تم اپنا آ دھا مال اس کے حوالے کر دو۔''

حضرت جابر وللفنز سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ اہل کوفہ میں کے چند لوگوں نے حضرت سعد بن الی وقاص بٹائینڈ کی شکایت حضرت عمر فاروق بٹائینڈ سے كرنے كے لئے مدينه منورہ يہنيے۔آب رظافف نے ان لوگوں كى شكايات سننے كے بعد چندمعتبر صحابه كرام من أنتم كوكوفه روانه كياتاكه وه ابل كوفه سے حضرت سعد بن ابی وقاص طالفیز کے متعلق دریافت کریں۔ بیصحابہ کرام رہی منظم کوفیہ بہنچے اور انہوں نے کوفہ کی مساجد میں ہرنمازی ہے قتم دے کر حضرت سعد بن ابی و قاص طالفہٰ کے متعلق دریافت کیا۔ ہرنمازی نے حلفا کیا کدانہوں نے حضرت سعد بن ابی وقاص طلفن کو ایماندار پایا ہے اور انہوں نے حضرت سعد بن الی وقاص طلفن کی تعریف کی۔ان صحابہ کرام مِنَ اُنتُمْ ہے کوفہ کے متعدد لوگوں کی رائے جانی اور ان سب کی رائے حضرت سعد بن ابی وقاص ڈائٹئز کے متعلق بہی تھی حضرت سعد بن ابی وقاص مِنْ اللَّهُ الله منصب كے حقد ارجي ماسوائے ايك مخص كے جس نے حضرت سعد بن ابی وقاص وللفنز کے خلاف تین شکایات پیش کیس اور کہا حضرت سعد بن ابی وقاص و النفط ال غنیمت تقتیم کرتے وقت انصاف سے کام نہیں کیتے اور لشکروں کے ساتھ

المنت عمر المنتوب الوق ك فيهل

خود جہاد میں شریک نہیں ہوتے اور نہ ہی مقدمات کا فیصلہ کرتے وقت انصاف سے کام لیتے ہیں۔ حضرت سعد بن الی وقاص بڑھنٹ کو ان الزامات کاعلم ہوا تو آپ بڑائٹ نے بیں۔ حضرت سعد بن الی وقاص بڑھنٹ کو ان الزامات کاعلم ہوا تو آپ بڑائٹ نے بارگاہ الہٰی میں دعا ما تگی۔

''اے اللہ! اگر بیر جھوٹا ہے تو اس کی عمر دراز فرما دے اور اس کی مختاجگی کو بھی دراز کر دے اور اس کوفتنوں میں مبتلا فرما دینا۔''

عبدالمالک بن عمیر ر النفی فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت سعد بن ابی وقاص ر النفی کی اس دعا کا اثر دیکھا ہے اور اس شخص نے طویل عمر پائی اور وہ اس قدر بوڑھا ہو چکا تھا کہ اس کی بھنو تیس دونوں آنکھوں پر لئکتی تھیں اور وہ بھیک مانگا تھا اور اس نے انتہائی محتاجگی کی زندگی بسر کی۔ وہ بڑھا پے میں بھی راہ چلتی عورتوں کو چھٹا تو کو چھٹرتا تھا اور ان کے بدنوں پر چئکیاں بھرتا تھا اور جب کوئی اس کا حال پو چھٹا تو کہتا میں ایک بوڑھا ہوں جوفتوں میں مبتلا ہو چکا ہے اور مجھے سعد بن ابی وقاص کہتا میں ایک بوڑھا ہوں جوفتوں میں مبتلا ہو چکا ہے اور مجھے سعد بن ابی وقاص کا فائن کی بددعا لگ گئی۔

حضرت ابو ہریرہ بڑائیڈ بحرین کی امارت سے معزولی کے بعد حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کے پاس آئے تو آپ بڑائیڈ نے پوچھا اے ابو ہریرہ (بڑائیڈ) بتم نے امارت کو کیسا پایا؟ حضرت ابو ہریرہ بڑائیڈ نے کہا جس وقت آپ بڑائیڈ نے جھے اس منصب پر فائز کیا تو میں اے ناپند کرتا تھا اور اب جب معزول کر دیا تو میں اے پہند کرتا ہوں۔ حضرت ابو ہریرہ بڑائیڈ بحرین سے چار لاکھ درہم لائے اور وہ سب پیند کرتا ہوں۔ حضرت ابو ہریہ بڑائیڈ بحرین سے چار لاکھ درہم لائے اور وہ سب بیت المال میں جمع کروانے کے لئے آپ بڑائیڈ کی خدمت میں پیش کے۔ آپ بڑائیڈ نے کہا میں بڑائیڈ نے کہا میں بی پھوا کیا جمری ہڑائیڈ نے کہا میں نے المال میں جمع کروانے کے لئے آپ بڑائیڈ کے کیا لائے ہو؟ حضرت ابو ہریرہ بڑائیڈ نے کہا میں نے الیا کی خدمت میں بریہ بڑائیڈ نے کہا میں نے الیا کی خدمت ابو ہریرہ بڑائیڈ نے کہا میں نے الیا کی خدمت ابو ہریرہ بڑائیڈ نے لیا جھوا اپنے لئے کیا لائے ہو؟ حضرت ابو ہریہ

الانت تعمل المحالي الم

ظلفہ نے کہامیرے پاس ہیں ہزار درہم ہیں۔ آپ طلفہ نے یو چھاوہ درہم تمہارے پالٹی نے کہامیرے پاس ہیں ہزار درہم ہیں۔ آپ طلفہ نے کہا میں نے تجارت کے ذریعے پاس کہاں ہے آئے؟ حضرت ابوہریرہ بڑائی نے کہا میں نے تجارت کے ذریعے کمائے۔ آپ طلفہ نے فرمایاتم اپنے سرمایہ اور شخواہ کے علاوہ باتی مال بیت المال میں جمع کروا دو۔

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق نٹائنٹڈ نے حضرت سعید بن عامر بنالفيُّهُ كوحمص كا گورنرمقرر كيا اور پھر آپ بنالفيُّهُ ايك مرتبه خودخمص تشريف لائے اور لوگوں سے بوجھاتم نے اینے گورنر کو کیسا یا یا؟ اہل حمص نے حضرت سعید بن عامر طالعًا کی شکا بیتیں شروع کر دیں اور حمص کو حیصوٹا کوفہ بھی کہا جاتا تھا کیونکہ بی^{کسی بھی} گورنر سے راضی نہ ہوتے تھے۔ اہل حمص نے آب رٹائٹنڈ سے کہا ہمیں ان سے جار شکالیتیں ہیں۔ بہلی شکایت تو یہ ہے جب تک دن نہیں چڑھ جاتا اس وقت تک حضرت سعید بن عامر والنفوز جازے یاس گھرسے باہر نہیں آتے۔ آپ والنفوز نے فرمایا واقعی بیشکایت درست ہے۔اس کےعلاوہ اور کیا شکایت ہے؟ اہل حمص نے کہا حضرت سعید بن عامر رہائٹینڈ رات کے وقت کسی کی بات نہیں سنتے۔ آپ مٹائٹینڈ نے فرمایا بیشکایت بھی جائز ہے اس کے علاوہ اور کیا شکایت ہے؟ اہل حمص نے کہا حضرت سعید بن عامر دلالفنظ مہینے میں ایک دن گھر میں ہی رہتے ہیں ہمارے پاس باہرآتے ہی نہیں۔آپ رٹائن نے فرمایا تمہاری بیشکایت بھی ہجا ہے اس کے علاوہ اور کیا شکایت ہے؟ اہل حمص نے کہا حضرت سعید بن عامر بٹالٹنز کو بے ہوشی کا دورہ بھی پڑتا ہے۔ آپ بٹائٹز نے اہل حمص اور حضرت سعید بن عامر بٹائٹز کو ایک حكه جمع كيا اور بارگاہِ خداوندي ميں دعا ما نگي۔

"اے اللہ! تو سعید بن عامر (طالفینه) کے متعلق میرے اندازہ

الاست المشتون روق كرفيها

كونلط نەكرناپ''

پھر حضرت عمر فاروق بڑائنی نے حضرت سعید بن عامر بڑائنی سے اہل حمص کی شکایات کے متعلق دریافت کیا۔ حضرت سعید بن عامر بڑائنی نے ان شکایات کے جوابات دیئے جس سے تمام لوگ اور آپ بڑائنی مطمئن ہو گئے۔ آپ بڑائنی نے فرمایا اللہ عزوجل نے میری فراست کو غلط نہیں ہونے دیا۔

حضرت عمر فاروق و النفظ نے حضرت عمیر بن سعد و النفظ کو محص کا گورنر بنا کر بھیجا اور ایک سال تک آپ و النفظ کو محص کے حالات کی پچھ خبر نہ ہوئی۔ آپ و النفظ نے نے اپنے کا تب سے کہا تم عمیر (و النفظ) کو خط لکھوا ور میرا گیان ہے شاید اس نے ہم سے خیانت کی ہے۔ پھر کا تب نے حضرت عمیر بن سعد و النفظ کو ایک خط لکھا جس کا مضمون تھا کہ جیسے ہی ہے خط مطے تم فوراً میرے پاس آ جانا اور وہ تمام مال بھی ساتھ لے کر آنا جو تم نے بطور مال غیمت جمع کیا ہے۔

حضرت عمير بن سعد رفائنو کو حضرت عمر فاروق طالقو کا خط ملا تو آپ رفائنو کا خط ملا تو آپ رفائنو کا خط ملا تو آپ رفائنو کا خط کا تحمیلا لیا جس میں آپ رفائنو کا تو شداور ایک بیالہ تھا اور چمڑے کا لوٹا آپ رفائنو نے ساتھ لاٹکا یا اور اپنی لاٹھی لے کرحمص سے پیدل مدیند منورہ کی جانب روانہ ہوئے۔ جب آپ رفائنو مدیند منورہ پہنچ تو آپ رفائنو کے چمرے کا رنگ بدلا ہوا تھا اور چمرہ غبار آلود تھا جبکہ بال بھی بہت بڑھ چکے تھے۔ جب آپ رفائنو ، حضرت عمر فاروق رفائنو کی خدمت میں حاضر ہوئے اور سلام کیا تو حضرت عمر فاروق رفائنو نے یو چھا۔ حضرت عمر فاروق رفائنو کی خدمت میں حاضر ہوئے اور سلام کیا تو حضرت عمر فاروق رفائنو کی خدمت میں حاضر ہوئے اور سلام کیا تو حضرت عمر فاروق رفائنو کی خدمت میں حاضر ہوئے اور سلام کیا تو حضرت عمر فاروق رفائنو کی خدمت میں حاضر ہوئے اور سلام کیا تو حضرت عمر فاروق رفائنو کی نارکھا ہے؟''

حضرت عمير بن سعد والفيز نے عرض كيا كيا آب والفيز مجھے صحت مندنہيں

المنت عمل اول كرفيه لي

و یکھتے اور دنیا میرے ساتھ ہے۔حضرت عمر فاروق بٹائٹیڈ نے سوحیا شاید آپ بٹائٹیڈ اینے ساتھ بے شار مال غنیمت لائے ہیں جو پیچھے آ رہا ہے لہٰذا بوچھاتم کیا لائے ہو؟ آپ بٹائٹڈ نے عرض کیا میرے یاس میرا ایک تھیلا ہے جس میں میں اپنا تو شہ اور پیالہ رکھتا ہوں اور اس پیالہ میں بوقت ضرورت کھا بھی لیتا ہوں اور اینے کپڑے اور سر بھی دھو لیتا ہوں اور ایک لوٹا ہے جس سے میں وضو کرتا ہوں اور پینے کا یانی اس میں رکھتا ہوں اور میرے پاس میری ایک لاٹھی ہے جس سے میں ٹیک لگا تا ہوں اور جب کوئی متمن سامنے آجائے تو پھراس کا مقابلہ بھی اس لاکھی ہے کرتا ہوں۔ حضرت عمر فاروق طلفن نے حضرت عمیر بن سعد طلفن کی باتیں سنیں تو يوجها كياتم حمص سے بيدل آئے ہو؟ آپ طِلْفَيْ نے عرض كيا ہاں! ميں پيدل آيا ہوں۔حضرت عمر فاروق مِنْالِنَّمَةُ نے کہا کیا تمہارا وہاں کوئی ابیا جانبے والا بندتھا جو تنهبیں این سواری دے دیتا؟ آپ طالفیز نے عرض کیا وہاں کے لوگوں نے مجھے کوئی سواری نبیں دی اور نہ ہی میں نے ان سے کوئی سواری مائلی۔حضرت عمر فاروق گورنر کا میچھ خیال نہ کیا۔ آپ رٹائٹنڈ نے کہا اے عمر (مٹائٹنڈ)! اللہ عز وجل سے ڈریئے، اللہ عزوجل نے غیبت سے منع کیا ہے اور میں نے انہیں ویکھا وہ صبح کی نماز پڑھ رہے تھے۔حضرت عمر فاروق ڈٹاٹنٹز نے فرمایا میں نے تمہیں کہاں بھیجا اور تم نے کیا کیا؟ آپ رٹائٹۂ نے یو جھا امیر المونین! آپ رٹائٹۂ کیا یو جھ رہے ہیں میں آپ نٹائنڈ کی بات کا مطلب نہیں سمجھا؟ حضرت عمر فاروق نٹائنڈ نے فر مایا میرا سوال تو واصح ہے۔ آپ ذائن نے عرض کیا امیر المومنین نے مجھے جہاں بھیجا میں نے وہاں جا کروہاں کے نیک لوگوں کو جمع کیا اور مال فنیمت جمع کرنے کی ذمہ داری

المنت عمر الناسية عمر الناسية المنتقب الموق كر فيصل

ان کے سپردکر دی اور جب وہ میرے پاس مال لے کرآتے تو میں اس مال کو جائز مصارف پرخرج کر دیتا اور اگر اس میں شرعاً آپ بڑائنڈ کا بھی سچھ حصہ ہوتا تو میں وہ ضرور لے کرآتا۔

حضرت عمر فاردق رنائنیُ نے حضرت عمیر بن سعد مناتلیٔ کی بات سی تو فرمایا اس کا مطلب ہےتم ہمارے پاس کچھنہیں لائے؟ آپ بٹائیڈ نے عرض کیا تہیں۔ حضرت عمر فاروق مٹائٹیڈ نے فرمایاتم بہت اچھے گورنر ہو اور پھر حضر یہ عمر فاروق بَنْالِغَيْدُ نِے تَكُم دِیا عمیر (مِنْالِغَیْرُ) کے لئے خمص کی گورنری لکھ دو۔ آپ مِنالِغَیْدُ نے عرض کیا مجھے اس کی ضرورت نہیں اور میں آپ مٹائن کی طرف سے گورنر ننے کو تیار نہیں اور نہ ہی آپ طالفیز کے بعد کسی اور کی جانب سے اس عہدہ کو قبول کروں گا کیونکہ اللہ عزوجل کی قتم! میں بھی اس گورنری کے وبال سے محفوظ نہیں رہ سکا اور میں نے ایک نصرانی سے کہا تھا تھے اللہ عزوجل رسوا کرے اور کسی بھی ذمی کو ایذا يبنجانا انتهائى براكام ب يس ائتمر (طالفينه)! كورزى نے مجھے بھى برى خرابى ميں مبتلا کر دیا اور میری زندگی کے سب سے برے دن وہ ہیں جب میں آپ طالفہٰ کے ساتھ پیچھے رہ گیا۔ پھر آپ مٹائنڈ نے حضرت عمر فاروق مٹائنڈ سے اجازت کی اور اینے گھرلوب گئے جو مدینہ منورہ سے چندمیل دور تھا۔

بيث المال كا قيام كا فيصله:

بیت المال کا قیام بھی حضرت محمر فاروق بڑائٹؤ کے دورِ خلافت میں معرض وجود میں آیا۔ حضرت ابو ہریرہ بڑائٹؤ سے مروی ہے کہ حضرت ابوموی اشعری بڑائٹؤ آئے انکھ لاکھ درہم لے کر آب بڑائٹؤ کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ آئی کثیر رقم چونکہ فوری طور برخرج نہیں کی جاسکتی تھی اس لئے آپ بڑائٹؤ نے اس رقم کو اپنے پاس

الانتسار عملي المالي المالي

ر کھ لیا۔ اس رات آپ رٹائنیڈ رات بھرسو نہ سکے اور یہی سوچتے رہے کہ اتنی بڑی رقم کا کیامصرف ہونا جاہئے۔ فجر کی نماز کے وفت آپ شائنٹنز کی زوجہ نے آپ شائنٹز سے دریافت کیا کہ کیا وجہ بھی کہ آپ رہائٹنڈ رات بھرسونہ سکے؟ آپ رہائٹنڈ نے فرمایا میرے پاس لوگوں کی امانت تھی اور اتنا مال دین اسلام کے بعد بھی ہمارے پاس تنہیں آیا، مجھےخطرہ تھا کہ نہیں میں مرجاؤں اور بیرمال میرے پاس رہ جائے۔اس کے بعد آپ رٹائنڈ نے مبح تمام اکابر صحابہ کرام رٹن ٹیٹن کو اکٹھا کیا اور ان سے رائے طلب فرمائی که انبیں اس رقم کا کیا کرنا جاہئے؟ کیا میں لوگوں کو ناپ تول کر ساری رقم تقتیم کر دوں۔ اکا برصحابہ کرام شِیَالْتُنْم نے بیک زبان ہوکر کہا کہ ایسے مت سیجئے لوگ اسلام میں داخل ہوتے رہیں گے اور مال کثیر ہوتا رہے گا آپ طالفنا لوگوں کو لکھ کر دیجئے کیں جب مجھی لوگ زیادہ ہوں اور مال زیادہ ہوتو آپ طالنے اس تحریر كے مطابق ان كودية رہے گا۔ آپ طالفن نے فرمایا كه پھر میں اس كی تقسيم حضور نی کریم منظر کیا کے خاندان سے شروع کروں گا اور اس کے بعد حضرت ابو بکر صدیق والنفظ كاخاندان اور پهرترتيب سے چنانچدرجسرتياركيا كيا جس ميں بى ہاشم بہلے، بی مطلب دوسرے، بی عبد شمس تیسرے، بی نوفل چوہتے، بی عبدمناف پانچویں، بن عبد من حصے اور اس طرح باقی ترتیب بنائی منی۔

بیت المال کا قیام ۱۵ھ میں ہوا۔ روایات میں آتا ہے کہ حضرت عثان غنی دلائٹنڈ نے حضرت عمر فاروق والنٹنڈ کو ملک شام کی طرح بیت المال کے قیام کا مشورہ دیا چنانچہ آپ دلائٹنڈ نے بیت المال کے قیام کا مشورہ دیا چنانچہ آپ دلائٹنڈ نے بیت المال کے قیام کے بعد حضرت عبداللہ ابن ارقم دلائٹنڈ کواس کا انچارج مقرر فرمایا کیونکہ وہ حساب کتاب کے ماہر تھے۔

حضرت جبیر دلالفن سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق ولالفنوسے

المنت بمن أول كيدي المناسبة ال

رجسٹر اور عملہ کےمقرر کئے جانے میںمشورہ کیا تو حضرت علی المرتضلی بٹائٹیڈ نے فرمایا ہر سال آپ طالغیز کے باس مال جمع ہوتو اسے تقتیم کر دیا سیجئے گا۔حضرت عثان غنی نٹائٹنز نے فرمایا میراخیال ہے تمام لوگوں کے لئے مال کثیر کی ضرورت ہو گی اور اگر لوگوں کا شار نہ ہو گا تو کیسے پتہ جلے گا کس کو مال مل چکا ہے اور کس کونہیں ملا؟ اس ووان حضرت ولید بن ہشام بن مغیرہ طالفیٰ کھڑے ہوئے اور انہوں نے عرض کیا امیرالمومنین! میں نے شام میں بادشاہوں کو دیکھا تھاانہوں نے رجسٹر اور کارندے مقرر كرركھ تھے جوتمام مال كاحساب وكتاب ركھتے تھے چنانچہ حضرت عمر فاروق ر النیز نے اس تبویز برعمل کرتے ہوئے حضرت عقبل بن ابی طالب اور حضرت محزمہ بن نوفل ش کینے کو بلوایا جو کہ قریش کے نسب سے واقفیت رکھتے تھے اور ان کو حکم دیا تم مراتب کے حساب سے ابتداء کرو چنانچہ ان حضرات نے بنی ہاشم سے ابتداء کی اور اس کے بعد حضرت ابو بکر صدیق طالبنی کے اہل خانہ اور پھر حضرت عمر فاروق ر طال نیز کے اہل خانہ کا اندراج کیا اور اس کے بعد دیگر لوگوں کا۔حضرت عمر فاروق ملائن نے ان کی تحریر کو پیند فرماتے ہوئے فرمایا۔

> '' میں بھی بہی جاہتا تھا کہ حضور نبی کریم مضططیقا کا خاندان عمر (طالفیٰ کے سے اوپر ہو یہاں تک کہتم مجھے اسی ترتیب پر رکھو جہاں اللہ نے رکھا ہے۔''

حضرت عمر فاروق رفائن نے بیت المال کے قیام کے بعد تمام صوبوں کے گورنروں کو ہدایت کی کہ وہ اپنے مصارف کے لئے رقم نکال کر بقایا رقم اور مال مرکزی بیت المال کو روانہ کر دیا کریں چنانچہ مختلف ذرائع سے جو رقوم اور مال و اسباب بیت المال میں اکھنا ہوتا اس کا حساب کتاب رکھا جاتا تھا۔

المنت عملية وفي كيسك

روایات میں آتا ہے ایک مرتبہ صدقہ کے کچھ اونٹ بیت المال میں آئے۔حضرت عمر فاروق وظائی نے کھٹرت عثان غنی اور حضرت علی المرتضی نے کہ المرتضی نے کہ المرتضی نے کہ کہ المرتضی نے کہ کہ اللہ بھیجا تا کہ ان کے کواکف تیار کئے جا کیں۔ اس دوران آپ زلائی خود دھوپ میں کھڑے ہوکران اونوں کے رنگ ،عمر اور حلیہ لکھواتے رہے۔

حضرت عمر فاروق رہائیڈ نے بیت المال کے لئے عمارات تغییر کروائیں جن کومسجدوں سے ملحقہ رکھا گیا تا کہ مسجدوں میں ہروفت لوگوں کی موجودگی کی وجہ سے چوری کا امکان نہ رہے۔ بیت المال میں آمدنی کے ذرائع وضع کئے گئے جن کا مخضراً ذکر ذیل میں کیا جارہا ہے۔

ا_خراج:

بیت المال میں آمدنی کا سب سے بڑا ذریعہ خراج تھا کیونکہ جب اللہ عزوجل نے اسلام کو ملک عرب سے باہر نکالا تو لشکر اسلام کے سپاہیوں نے تقاضا کیا مفتوحہ علاقوں کی زمینیں ان میں تقسیم کر دی جا ئیں۔ حضرت عمر فاروق والنئونئ نے ان کی اس تجویز کورد کر دیا اور تھم جاری کیا کہ زمینیں ان کے سابقہ مالکوں کے باس بی رمین گی اور ان پر ایک ٹیکس کا نظام نافذ کیا جائے گا جس پر زمینوں کے مالک سالا نہ رقم کی اوائیگ کریں گے چنانچہ اس مقصد کے لئے عراق کی قابل کاشت زمینوں کی بیائش کی گئی تو ان کا رقبہ تین کروڑ ساٹھ لاکھ مربع میل نکلا جس پر ٹیکس نافذ کیا گیا۔ عراق زمینوں پر نافذ ٹیکس کی سالا نہ رقم آٹھ کروڑ ساٹھ لاکھ درہم تھی۔

کیا گیا۔ عراق زمینوں پر نافذ ٹیکس کی سالا نہ رقم آٹھ کروڑ ساٹھ لاکھ درہم تھی۔

کیا گیا۔ عراق کے علاوہ دوسر ہے مفتوحہ علاقوں کی پیائش نہیں کی گئی اور ان علاقوں کی بیائش نہیں کی گئی اور ان علاقوں کی تائل کاشت زمینوں کا پرانا ریکارڈ ہی قبول کیا گیا۔ مصر کا کل خراج ایک کروڑ

منت عمر المقال كرفيد المقال ال

لشكراسلامی جن علاقوں پرحملہ آور ہوتا تو ان كے ساتھ جنگ كرنے ہے بہلے انہیں اسلام کی وعوت ریتا جولوگ وعوت اسلام قبول کر کیتے ان کو امان دی جاتی۔ اس کے بعد جولوگ دعوت اسلام قبول نہ کرتے ان سے جزید کا مطالبہ کیا جاتا تا كەانبىس امان دى جائے چنانچە بىت المال كى آمدنى كا ايك اور ذريعه جزيدتھا جو کشکر اسلام لوگوں کو امان دینے کے سلسلے میں وصول کرتا تھا۔ تاریخ گواہ ہے کہ اگر مسى وجد سے تشكر اسلام نے ان لوگوں كو امان دينے كا فيصلہ واپس ليا تو ان كى ادا كرده رقم بھى ان كو واپس لوڻا دى_

حضرت فاروق مٹائنیؤ نے جوزمینیں مسلمانوں کی ملکیت تھیں ان برخراج کی بجائے عشر کا نظام رائج کیا جس کے مطابق وہ اپنی پیداوار کا دسواں حصہ بیت المال میں جمع كروانے كے يابند تھے۔

عشور کا نظام خالص حضرت عمر فاروق والفنظ کی ایجادتھی جس کے مطابق جب بھی کوئی مسلمان تا جرا پناسامانِ تجارت دوسرے ملک لے کر جائے گا تو وہ پہلے اہیے مال کا دس فیصد تیکس بیت المال میں جمع کروائے گا اور اس طرح دیگر ممالک سے اپنے سامانِ تجارت فروخت کرنے والے تاجر بھی اینے مال کا دس فیصد ٹیکس بیت المال میں جمع کروا ئیں گئے۔

حضرت عمر فاروق والنفظ نے زكوة كا نظام بھى بيت المال سے مسلك كر

المناف المحالي المحالية المحال

دیا اور مسلمانوں کے اموال پر سالانہ اڑھائی فیصد جوز کو ق وصول کی جاتی تھی وہ سب بیت المال میں جمع کی جاتی اور بوفت ضرورت اسے مختلف مصارف اور اخراجات کے لئے خرچ کیا جاتا تھا۔

٢ _صدقات:

حضرت عمر فاروق والنفظ نے لوگوں کو حکم دیا کہ وہ اپنے صدقات و خیرات بھی ہیت المال میں جمع کروا کمیں تاکہ بوقت ضرورت ان صدقات کا بہترین استعمال کیا جا سکے۔

ے۔ مال غنیمت:

بیت المال کی آمدی کا ایک اور بردا ذریعه مالی غنیمت تھا جو نشکر اسلام جنگ کی صورت میں مخالفین کی شکست کے بعد حاصل کرتے تھے۔حضرت عمر فاروق دائین نے المال رہے ہر سپہ سالار پر بیہ واضح کیا تھا کہ وہ مالی غنیمت کاخمس بیت المال میں جمع کروا کمیں جبکہ باقی چار حصے اپنی فوج میں برابر تقسیم فرما کمیں۔

بیت المال کے اخراجات:

حضرت عمر فاروق والنفظ نے بیت المال کے اخراجات کے لئے مدارج مقرر فرمائے جن کے تحت بیت المال کی رقوم کوخرج کیا جاتا رہا۔ ذیل میں اخراجات کے مصارف کامخضرا ذکر کیا جارہا ہے۔

ارولما نف.:

حضرت عمر فاروق والنفزؤ نے حضور نبی کریم مضیط اور حضرت ابو بکر صدیق والفیز کے دور کی طرح وظا نف کا سلسلہ جاری رکھا جس کے تحت مساکین اور فقراء

المستر ممتن و الوق ك يسل کو بیت المال سے ماہانہ خرج دیا جاتا رہے۔ اس کے علاوہ مال غنیمت اور دیگر اموال کی تقتیم اور ان کا بیانہ بھی مقرر کیا گیا۔ آپ مظافظ نے مجلس شوریٰ کے اراكين كى مدد سے ايك فهرست مرتب كى جس كى تفصيل حسب ذيل ہے۔ بنو ہاشم کے ہرفرد کے لئے نمالانہ يندره بزار درجم حضرت سيّدنا عباس مثالثنة كے لئے سالانہ چوده برار در بم اصحاب بدر کے لئے سالانہ يانج ہزار درہم ہرانصاری کے لئے سالانہ جار ہزار درہم مہاجرین حبشہ کے لئے سالانہ جار ہزار درہم اسامہ بن زید ڈکھٹنا کے لئے سالانہ جار ہزار درہم حضرت عبدالله بن عمر را الغنينا کے لئے سالانہ تنين ہزار درہم از داج مہاجرین وانصار کے لئے سالانہ دو ہزار چھ سو در ہم ابل مكه كے لئے سالانہ آثھ سو درہم صفیہ خالتی استعبد المطلب کے لئے سالانہ جير بزار در ہم هرمعصوم بيح كاسالا بنه وظيفه سودرہم بيح كابالغ ہونے يرسالانه وظيفه یا کچ سو در ہم

اس کے علاوہ تمام وہ لوگ جو کسی نہ کسی طرح حکومتی کام میں مددگار تھے اور حکومت کے ملازم تھے ان کی تنخواہیں بھی ان کے کام کے حساب سے مقرر کی گئیں۔

٢-حضرت عمر فاروق رئي عنه کا وظیفه:

حضرت عمر فاروق والتنفذ خليفه مقرر ہونے سے پہلے تجارت كيا كرتے تھے

www.iqbalkalmati.blogspot.com 199 كالمنتر تمريق كي فيصل كي فيصل

جس کے ذریعے وہ اپنے اہل وعیال کے گزر بسر کا انتظام کرتے تھے۔ جب آپ بڑائی کے کندھوں پر خلافت کا بوجھ آیا تو تجارت کو مزید جاری رکھناممکن ندر ہا چنا نچہ لوگوں نے آپ بڑائی کو حضرت ابو بکر صدیق بڑائی کی طرح بیت المال سے وظیفہ لیے گی تجویز پیش کی۔ آپ بڑائی نے اپنے لئے وہی وظیفہ مقرر کیا جو حضرت ابو بکر صدیق بڑائی نے کتے وہی وظیفہ مقرر کیا جو حضرت ابو بکر صدیق بڑائی نے کئے مقرر تھا۔ بچھ عرصہ گزرنے کے بعد یہ وظیفہ آپ بڑائی نے کئے ناگزیر ہوگیا اور گزر بسر بیس مشکلات کا سامنا کرنا پڑا۔ حضرت علی الرتضلی بڑائی نے نے آپ بڑائی کے وظیفہ میں اضافہ کی درخواست دیگر اکا برصحابہ کرام بڑی انٹی کے سامنے بیش کی جس پر تمام صحابہ کرام بڑی اُنٹی نے متفقہ طور پر آپ بڑائی کے وظیفہ میں اضافہ کی درخواست دیگر اکا برصحابہ کرام بڑی اُنٹی کے وظیفہ میں اضافہ کی منفوری دے دی۔

سا غیر مسلموں کے وظائف:

حضرت عمر فاروق و النين نے ایسے غیر مسلم جو کہ مفلس اور نادار تھے ان

کے لئے بیت المال سے وظائف مقرر کئے اور بیت المال میں ہدایت کی کہ جب
یہ لوگ خوشحال ہوتے ہیں تو ہم ان سے جزیہ لیتے ہیں اور جب یہ لوگ معذور اور
بے سہارا ہوتے ہیں تو ہم انہیں کیوں بھول جا کمیں۔

تغیر مرد فی ا

تغميرات كافيصليه:

حضرت عمر فاروق را النائی کے دور خلافت کا ایک سنہری پہلو یہ بھی ہے کہ آپ را النائی نے بیت المال کی اضافی رقم سے بہت ی تعمیرات بھی کروائیں جن میں سب سے اہم سر کول کی تعمیر ہے تا کہ لوگوں کو آمد ورفت میں آسانی ہو۔اس مقصد کے لئے ہر کول کا جال بچھایا گیا، پل تعمیر کئے گئے اور چوکیاں قائم کی گئیں۔ اھ میں حرمین شریفین کے درمیان سرک کا کام مکمل ہوا جہاں ہر منزل پر ایک فوجی

ر المنترجم المنتقب الموق كيسل المنتقب الموقى كيسل المنتقب الموقى كيسل المنتقب المنتقب

<u>نځشېرآباد کرنے کا فیصله:</u>

حضرت عمر فاروق وظافت میں کی نے شہر بھی آباد کئے گئے جن کا مقصد دفاع اسلامی کو مضبوط کرنا تھا۔ ان شہروں میں کوفہ، بھرہ، فسطاط، موصل اور جیزہ جیسے بڑے شہر بھی شامل تھے۔ ان شہروں کی تغییر سے اسلامی حکومت مزید مضبوط اور پائیدار ہوئی اور ان شہروں کی تغییر میں بھی اس بات کا دھیان رکھا گیا کہ ان شہروں کی تغییر میں بھی اس بات کا دھیان رکھا گیا کہ ان شہروں کی تغییر دفاعی نقط نظر سے ہوتا کہ جنگ کے دنوں میں انہیں بطورِ قلعہ اور رسدگاہ کے استعال کیا جاسکے۔

نهری نظام وضع کرنے کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق رظافیۃ کے دورِ خلافت میں ایک اور سنہری کام نہروں کی تغییر کا ہوا۔ آپ رظافیۃ نے تمام مفتوحہ علاقوں کی زمینوں کی پیائش اور ریکارڈ کے بعد ان زمینوں پر با قاعدہ کاشت کاری کے لئے نہری نظام وضع کیا جس کی بدولت لاکھوں ایکڑ بنجر زمینیں بھی سیراب ہوئیں اور کاشت کاری میں اضافہ ہوا۔

حفرت عمر فاروق و النفظ كے دور خلافت كا نهرى نظام دنیا كاسب سے برا اللہ نهرى نظام تفاجس كے لئے دریائے نیل سے فسطاط شہر كے لئے ایک نهر نكالى كئ جس كى لمبائى ١٩ میل تھی جس سے جہاز گزر كر مدینہ منورہ كی بندرگاہ پر تنگرا تداز موت تھے۔ اس كے علاوہ دریائے وجلہ ہے میل لمبی ایک نهر نكالی گئی جو بھرہ شہر كوسيراب كرتی تھی۔ اس كے علاوہ بے علاوہ بے شار نہریں بنائيں گئیں جن كی وسعت كا

معریں ایک لاکھ بیں ہزار مزدور سالانہ کام کررہے تھے۔

مختلف محكموں کے لئے عمارات تغیر كرنے كا فيصلہ:

حضرت عمر فاروق والنفئ نے خلافت کا منصب سنجا لئے کے بعد اس امر پر بھی توجہ دی کہ مختلف شعبوں کے لئے عمارتوں کا قیام ضروری ہے جس کے لئے آپ والنفئ نے نے نہ بہی شعبہ قائم کیا جس کے تحت چار ہزار کے قریب مساجد تغییر کی گئیں۔ان عمارات کے علاوہ بیت المال کی عمارات اور دیگر عمارات جن میں فوجی چھاؤنیاں ، جیلیں اور مہمان خانے شامل ہیں تغییر کی گئیں۔

خار كعبه كي توسيع كا فيصله:

حضرت عمر فاروق برالنفیز کے دورِ خلافت میں فتو صات کا دائرہ وسیع ہوا اور ۔
لوگ جوق در جوق دائرہ اسلام میں داخل ہونے لگے تو ہر سال جج کرنے والے زائرین کی تعداد میں بھی اضافہ ہونے لگا جس کے باعث خانہ کعبہ کی توسیع ناگزیر ہوگئی۔ آپ دلائٹو نے کا دہ میں خانہ کعبہ کے گردو پیش کے مکانات خرید کر گرا دیے اور اس جگہ کو خانہ کعبہ کے حکن میں شامل کر کے چاردیواری تغییر کروا دی۔ اس کے علاوہ آپ دلائٹو نے بیت اللہ شریف کی آرائش وزیبائش پر بھی بھر پور توجہ دی۔ علاوہ آپ دلائٹو نے بیت اللہ شریف کی آرائش وزیبائش پر بھی بھر پور توجہ دی۔

مسجد نبوى مضيّعيّن كى توسيع كا فيصله:

عاھ میں حضرت عمر فاروق طائن نے مسجد نبوی مشیقی کی توسیع کا بھی تھم دیا کیونکہ حضور نبی کریم مشیقی کا بھی تھم دیا کیونکہ حضور نبی کریم مشیقی کا بھی تھی اس شہر کی آبادی دن بدن بڑھ رہی تھی اور باہر سے بھی لوگ صرف حضور نبی کریم مشیقی ہے محبت کی خاطر مدینہ منورہ میں

المنت ممنت وارق كيسل

آباد ہور ہے تھے اور ان سب کی خواہش ہوتی تھی کہ وہ نماز مسجد نبوی ہے ہے۔ اس کریں جس کی وجہ سے مسجد نبوی ہے ہے۔ ان ان کے لئے کم پڑر ہی تھی۔ آپ رٹائین نے از واج مطہرات بڑائیں کے جرول کو ویسے رہنے دیا اور ان کے علاوہ گردو پیش کے از واج مطہرات بڑائیں کے جرول کو ویسے رہنے دیا اور ان کے علاوہ گردو پیش کے مکانات کو خرید کر مسجد نبوی ہے ہے گئی ہے کے مکانات کو خرید کر مسجد نبوی ہے ہے گئی ہے کے مکانات کو خرید کر مسجد نبوی ہے ہے گئی ہے کے طول میں ۲۰ گز کا اضافہ کیا گیا جبکہ عرض میں ۲۰ گز کا اضافہ کیا گیا جبکہ عرض میں ۲۰ گز کا اضافہ کیا گیا جبکہ عرض میں ۲۰ گز کا اضافہ کیا گیا۔

غله كومحفوظ ركھنے كے لئے كودام بنانے كا فيصله:

حضرت عمر فاروق رہائنڈ نے غلہ کو محفوظ رکھنے کے لئے تا کہ قحط سالی میں مسی بھی فتم کی کوئی پریشانی نہ ہو غلہ کے گودام تغییر کروائے جس میں سرکاری غلہ کو محفوظ رکھا جاتا۔

درياؤں پر بند کی تغمير کا فيصله:

حضرت عمر فاروق و النيخ نے دریاوک پر بند تغییر کروائے تا کہ سیلاب کے دنوں میں جو پانی شہروں میں داخل ہوکر تابی مجاتا تھا اس سے شہر محفوظ رہ سکیں۔ اس مقصد کے لئے آپ و النیخ نے سب سے پہلے مکہ مکرمہ کے نواح میں بند تغییر کروایا تا کہ خانہ کعبہ اور اس کی حدود جو کہ عموماً سیلاب کے دنوں میں پانی سے بھر جاتی تھی اس کی روک تھام ہو سکے۔

مهمان خانوں کی تغییر کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق وللنفرز نے اپنے دورِ خلافت میں مہمان خانوں کی بھی تعمیر فرمائی تاکہ دوسرے شہروں سے آئے ہوئے مسافروں کوسی بھی فتم کی پریشانی نہ ہو۔ اس مقصد کے لئے سب سے پہلے کوفہ میں ایک مہمان خانہ تعبیر کیا گیا۔ محکمہ فوج کے قیام کا فیصلہ:

حضورنبي كريم ينضينينه حضرت ابوبكر صديق اور حضرت عمر فاروق شأكنتم کے ابتدائی زمانہ خلافت میں فوج کا با قاعدہ محکمہ موجود نہ تھا اور نہ ہی بنخواہ دار فوج موجودتھی۔ جب بھی بھی جہاد کا موقع ہوتا تو اعلان کیا جاتا جس پر ہزاروں مسلمان رضا کارانہ طور پر جہاد کے لئے تیار ہو جاتے۔حضرت عمر فاروق رٹائٹیڈ نے رفتہ رفتہ تھیلتی ہوئی اسلامی مملکت کی ضرورت کو مدنظر رکھتے ہوئے فوج کامحکمہ قائم کیا جس میں با قاعدہ لوگوں کو بھرتی کیا گیا اور ان کی تنخواہیں مقرر کی گئیں تا کہ بوقت ضرور ت اس بات کا انتظار نہ کرنا پڑے کہ لوگ استھے ہوں اور جہاد شروع کیا جا سکے۔محکمہ فوج کے قیام کے بعد آپ مظافیز نے مدینه منورہ ،فلسطین ،اردن جمص ، دمشق ،مصر ، فسطاط،موصل، بھرہ اور کوفہ میں فوجی مراکز قائم کئے۔اس کے علاوہ اسلامی مملکت کے مختلف حصوں میں جیماؤنیوں کی تقمیر کی گئی، بیرکوں کی تقمیر کی گئی اور اس بات کا خاص خیال رکھا گیا کہ فوج کی با قاعدہ تربیت کی جائے اور انہیں ہرتشم کی سہولیات میسر کی جائیں۔

حضرت عمر فاروق را النائية نے فوج کی آسانی کے لئے بہت سے انظامات کے جن میں کوچ کی حالت میں فوج کو حکم تھا کہ وہ جمعہ کے روز قیام کریں تاکہ تازہ دم ہونے کے بعد اپناسفر جاری رکھ سکیں۔ فوج کو دوسرے علاقوں میں بھجواتے وقت اس بات کا خیال رکھا جاتا کہ فوج کو وہاں کس قتم کے حالات کا سامنا کرنا پڑ سکتا ہے۔ فوجی لشکر کے ساتھ قاضی ، محاسب، طبیب، جراح ، مترجم اور افسر خزانہ کا تقرر کیا جاتا تاکہ دورانِ جنگ کسی بھی قتم کی مشکل کا سامنا نہ ہو۔

المنتر بمنت وارق كرفيدل

. حضرت عمر فاروق را النفيز نے فوج کے حساب کتاب کے لئے ایک علیحدہ

فوجی دفتر قائم کیا جہال ہرفوجی کا حساب کتاب رکھا جاتا تھا۔ شہید ہونے والے فوجیوں کو فوجی کے لواحقین کی بھر پور مالی امداد کی جاتی تھی۔ زخمی ہونے والے فوجیوں کو باقاعدہ ماہانہ وظائف دیئے جاتے تھے۔ فوجیوں کی چھٹیوں اور دیگر معاملات کا حساب کتاب بھی اس محکمہ کے ذمہ سے بھی کام تھا کہ وہ ہرسال فوج میں نئی بھرتیاں بھی کریں تا کہ بوقت ضرورت فوج کی کثیر تعداد موجود ہو۔

جنگ کی تیار یوں کے لئے آبا قاعدہ اصطبل قائم کیا گیا تھا جس میں ہر وقت چار سے پانچ ہزار گھوڑ ہے موجود ہوتے تھے جن کی دیکھ بھال بھی فوجی ناظم الامور کے ذمہ تھی۔ اس کے علاوہ دورانِ جنگ رسد کی فراہمی کے لئے فوجی دفتر کا ایک ذیلی محکمہ قائم کیا گیا جس کے ذمہ دورانِ جنگ فوجیوں کو بوقت ضرورت رسد کی فراہمی تھی۔ فوج کے لئے خوراک اورلباس کا بھی انظام کیا گیا تھا اور اس مقصد کی فراہمی تھی۔ فوج کے لئے خوراک اورلباس کا بھی انظام کیا گیا تھا اور اس مقصد کے لئے یہ اعلان کیا گیا تھا کہ فوج صرف عربی لباس استعمال کرے اور عمامہ سر پر باندھنا ضروری تھا۔ فوج کے لئے ایک ضابطہ اخلاق تیار کیا گیا تھا جس کی پابندی ہرفوجی پرضروری تھی۔

حضرت عمر فاروق ملائنی کے دور خلافت میں فوج کو اس طرح ترتیب دیا

جاتاتھا۔

قلب سیرسالاراس مصے میں موجود رہتا تھا مقدمہ قلب کے آگے قدرے فاصلے پر چاتا تھا میمنہ قلب کے دائیں جانب رہتا تھا میسرہ قلب کے دائیں جانب رہتا تھا www.iqbalkalmati.blogspot.com 205 كالمنتر عمر التنافي المراق كي فيريل

ساقہ جس کا کام دشمنوں کی فوج کی نقل وحرکت پرنظررکھنا تھا
طلعہ ساقہ ہے بھی پیچھے فوج کوعقب سے تحفظ دیتا تھا
راکہ فوج کے لئے کھانے پینے کا انتظام کرتا تھا
رکبان شتر سوار دستہ تھا
فرسان گھڑ سوار دستہ تھا
راجل پیدل دستہ تھا
راجل پیدل دستہ تھا
راجل پیدل دستہ تھا

حضرت عمر فاروق بڑا تھؤ نے قلعوں پرسنگ باری کے لئے بنیق اور دبا بے تیار کروائے تاکہ قلعوں پر حملہ کرنے میں آسانی رہے۔ اس کے علاوہ خبر رسانی اور جاسوی کا شعبہ بھی قائم کیا گیا تاکہ حملہ سے پہلے و شنوں کی فوج کے بارے میں اطلاعات بروفت ملتی رہیں۔ اس کے علاوہ ہر لشکر کے ہمراہ پر چہ نولیس کا انتظام کیا جو جنگ کے بتمام احوال بروفت آپ و النظ کو پہنچانے کا ذمہ دار تھا۔ اس کے علاوہ فوج کے راستے کو صاف کرنے اور ان کے گزرنے کے لئے دریاؤں پر بل بنانے فوج کے راستے کو صاف کرنے اور ان کے گزرنے کے لئے دریاؤں پر بل بنانے کے لئے ایک علیمہ ہی محملہ قائم کیا گیا تاکہ فوج کی نقل و حرکت میں کسی بھی قشم کی کوئی رکاوٹ کھڑی نہ ہو۔

تعلیمی نظام وضع کرنا:

 کے لئے بھی با قاعدہ ایک محکمہ قائم کیا۔ آپ رہی نیڈ نے نصابِ تعلیم میں قرآن پاک
کی ناظرہ تعلیم اور حفظ قرآن پاک، عربی لغت اور عربی ادب کی تعلیم کونصابِ تعلیم
کا جزو بنایا اور اس مقصد کے لئے اساتذہ کا بندوبست بھی کیا جو ان شعبوں کے ماہر تھے۔ رفتہ رفتہ جب نظام تعلیم چل پڑا تو آپ رہی نیڈ نے نظام تعلیم میں حدیث وفقہ کی تعلیم اور فن کتابت کو بھی اس نصاب کا حصہ بنا دیا۔ اس کے علاوہ ہر طالب علم کو بنزہ بازی اور شہسواری کی بھی خاص تعلیم دی بنزہ بازی اور شہسواری کی بھی خاص تعلیم دی جاتی تھی۔

حضرت عمر فاروق رالین نظام تعلیم کوروانی سے چلانے کے لئے ان احا تذہ کا بندو بست کیا جو حفاظ تھے، مفسر تھے، محدث تھے، فقیہہ تھے، ادیب تھے، مجاہد تھے اور خاص کر بارگاہِ نبوی مطبق سے فارغ التحسیل تھے۔ آپ رائین نے اسا تذہ کی معقول تخواہیں مقرر کیس تا کہ وہ دلجمعی سے طلباء کوتعلیم دے سکیس۔ اسا تذہ کی معقول تخواہیں مقرر کیس تا کہ وہ دلجمعی سے طلباء کوتعلیم دے سکیس۔ حضرت فاروق اعظم رائین نے نظام تعلیم کو روانی سے چلانے کے لئے مداری تعمیر کر بھی بھر پور توجہ دی۔ الغرض مداری تعمیر کر روائے اور ہر مسجد کے ساتھ مدرسہ کی تعمیر پر بھی بھر پور توجہ دی۔ الغرض مطابق اور وفت کے تقاضوں کے مطابق اور وفت کے تقاضوں کے مطابق میں بر بھر پور توجہ دی۔

حضرت عمر فاروق ر النائن کے خزد یک تعلیم کا پہلا مقصد یہ تھا کہ تو حید کے دیوانے تیار کئے جا کیں جو کہ راوحق کے متلاثی ہوں اور ان کا مقصد حیات صرف تو حید ہو۔ لوگوں کے دلوں میں عشق مصطفیٰ میض کے اور ان کو حضور نبی تو حید ہو۔ لوگوں کے دلوں میں عشق مصطفیٰ میض کی تعلیم دی جائے۔ لوگوں کورشتہ اخوت کریم میض کی اور انہیں حقوق اللہ اور حقوق العباد سے آگاہی دی جائے۔ لوگوں کورشتہ اوگوں میں باندھا جائے اور انہیں حقوق اللہ اور حقوق العباد سے آگاہی دی جائے۔ لوگوں

الاستراع المول كرفيد المول المولاد الم

کومفید شہری بنایا جائے تا کہ وہ معاشرے میں عزت کی نگاہ ہے دیکھے جائیں۔ انصاف کی فراہمی کے لئے عدلیہ کے قیام کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق طِلْتُونِ کے دورِ خلافت کا بلاشبہ سب سے بڑا کارنامہ آزاد عدلیہ کا قیام تھا تا کہلوگوں کوفوری اور ہرفتم کے تعصب سے بالاتر ہوکر انصاف مہیا کیا جائے۔ آپ طِلْتُونِ نے اس مقصد کے لئے مجلس شوریٰ کے اراکین کو ہی قاضی کے فرائض سونے۔ آپ طِلْتُونِ نے قاضیوں کی تقریری کے بعد ان کے لئے فیل کا ضابطہ اخلاق تیار کیا۔

- ا۔ قاضی کا سلوک سب لوگوں کے ساتھ بکساں ہونا جا ہئے۔
 - ا۔ مقدمہ کی پیشی کی آیک تاریخ مقرر کی جائے۔
- س۔ اگرمقررہ تاریخ پرِ مدعا علیہ حاضر نہ ہوتو مقدمہ کا فیصلہ اس کے خلاف کیا جائے۔
 - سم۔ ثبوت کی فراہمی مدعی کے ذمہ ہے۔
- ۵۔ اگر مدعا علیہ کے پاس کوئی ثبوت یا گواہی موجود نہ ہوتو اس سے اس معاملہ برشم لی جائے۔
- ۲۔ ہرمسلمان گوائی دینے کے قابل ہے گر جو سزا یافتہ یا حصوٹا ہو اس کی
 ۳۔ گوائی شلیم نہ کی جائے۔
 - 2۔ اخلاق کا تقاضا ہے ہے قاضی غصے میں نہ آئے۔
- ٨۔ امورِ قانونی کے علاوہ فریقین کو ہر حال میں صلح کی اجازت دی جائے۔
 - 9۔ قاضی اینے فیلے پرنظر ٹانی کرے۔
 - ا۔ قاتل،مفتول کی جائیداد کا وارث قرار نہ دیا جائے۔

المنت عمر المنتقب الموق كر فيصل المنتقب الموق كر فيصل المنتقب الموق كر فيصل المنتقب ال

حضرت عمر فاروق وظائفت نے عدلیہ کو انتظامیہ سے علیحدہ کر دیا تا کہ عدلیہ ہر حال میں آزادر ہے اور انصاف سے مبنی فیصلے کر سکے۔ آپ وظائفت نے عدلیہ میں رشوت کے خاتمے کے لئے مؤثر اقدامات کئے جس کے لئے قاضیوں کی تخواؤں میں خاطر خواہ اضافہ کیا گیا تا کہ وہ رشوت کی طرف راغب نہ ہوں۔

حفرت عمر فاروق وظافئ نے تغزیر و حدود کی سراؤں کا تغین کیا۔ شراب نوشی کرنے والوں کی سرا چالیس کوڑوں سے اس کوڑے کردی گئی۔ اشتہاری ملزمیں کی گرفتاری کے لئے اعلانات کا سلسلہ شروع کیا گیا۔ آپ وظافئ کے دورِ خلافت میں بھانی کی سرزارائج کی گئی۔ مجرموں کوقید میں رکھنے کے لئے با قاعدہ جیلیں بنائی گئیں۔ آپ وظافئ نے انصاف کے نقاضوں کو پورا کرتے ہوئے کسی بھی قانون کو گئیں۔ آپ وظافئ نے انصاف کے نقاضوں کو پورا کرتے ہوئے کسی بھی قانون کو نافذ کرنے سے بہلے تمام اکا برصحابہ کرام وٹھائٹ سے اس سلسلے میں مشورہ کیا اور جب تمام اکا برکا کسی انقاق ہوا اس کو قانونی حیثیت دی گئی۔

س جحری کا آغاز:

حضرت عمر فاروق رفی نیخ نے اپنے دورِ خلافت میں باقاعدہ ہجری سال کا آغاز کیا اور اس مقصد کے لئے حضرت علی الرتضی والفیٰ ملائی کے مشورہ سے حضور نبی کریم کیے نیک کی ہجرت سے نئے سال کا آغاز کیا اور سال کا آغاز محرم الحرام سے کیا گیا۔

اشاعت اسلام:

حضرت عمر فاروق والنفؤ نے اپنے دور خلافت میں دین کی اشاعت کے لئے بڑھ چڑھ کر کام کیا اور دین اسلام کی تبلیغ کے لئے دور دراز علاقوں میں وفود بھیے۔مفتوحہ علاقوں میں لوگوں کو اسلامی تعلیمات سے آگاہ کرنے کے لئے معلمین نبیجے۔مفتوحہ علاقوں میں لوگوں کو اسلامی تعلیمات سے آگاہ کرنے کے لئے معلمین

المنظر المول كيسل المحالية الم

کا انتظام کیا جوان علاقوں میں جا کرلوگول کو اسلامی تعلیمات اور تو حید کا در س دیت ۔

آپ بڑائیؤ نے اپنے دور میں اپنی فوج کو ہدایت کر رکھی تھی وہ کسی کو زبردی اسلام قبول کرنے پر مجبور نہ کریں بلکہ انہیں اپنے اخلاق سے متاثر کریں تا کہ بیہ شہور نہ ہو کہ اسلام تلوار کی زور پر پھیلا ہے۔ آپ بڑائیؤ فرمایا کرتے تھے دین میں زبردی نہیں نہیں یہی وجہ ہے کہ آپ بڑائیؤ کے دور خلافت میں بے شار فتو حات کے علاوہ لاکھوں لوگ دائرہ اسلام میں بھی داخل ہوئے اور دین اسلام کی اشاعت میں پیش پیش رہے۔ آپ بڑائیؤ کی دوراندیش اور معالمہ بھی کی بدولت لوگوں کے دلول میں اسلام کی حقانیت واضح ہوئی اور دین اسلام کی بہتر اور درست سلریقے سے اشاعت میں ہوئی۔۔۔

سب کارنامے زندہ جاوید اس کے ہیں۔ اسلام کا وقار وحشم سر بسر عمر طالبنیٰ

O....O....O

المنت عمر المنتاب الموق كرفيه لي المنتاب المنت

دورِخلافت میں پیش آنے والے اہم امور

حضرت عمر فاروق طالغُنُهُ کے زمانہ خلافت میں جواہم امور پیش آئے یا پھر وه كام جوآب بناتنی كا دوراندیش كا ثبوت تھے اور خدمت حلق پر بنی تھے ذیل میں ان کا تذکرہ مخضراً کیا جارہا تا کہ قارئین کے لئے ذوق کا باعث بنیں۔ شايدتم اينے ساتھی کواس کا اہل سمجھتے ہو؟:

حضرت عبدالله بن عباس مِثْنَافِهُمَا ہے مروی ہے فرماتے ہیں میں ایک دن حضرت عمر فاروق رظائفن کے پاس بیٹھا ہوا تھا کہ اجیا تک آپ رظائفن نے سائس لیا۔ مجھے گمان ہوا کہ شاید آپ ر النفظ کی پہلیاں ہٹ گئی ہیں۔ میں نے دریافت کیا کہ امير المومنين! آب رالنفظ كابير سانس كسي شرك خوف سے نكلا ہے؟ آپ رالنفظ نے فرمایا ہاں! شرکی وجہ سے، میں نہیں جانتا کہ اپنے بعد اس امر (خلافت) کوکس کے سپرد کر کے جاؤں۔ پھر آپ رٹائنڈ نے فرمایا شایدتم اپنے ساتھی کو اس کا اہل سمجھتے ہو؟ میں نے کہا بیتک وہ اپن سبقت فی الاسلام اور فضیلت کی وجہ ہے اس کے اہل ہیں۔ آپ رٹائنٹ نے فرمایا بے شک وہ ایسے ہی ہیں لیکن وہ ایسے آ دی ہیں کہ ان میں مزاح کی عادت ہے۔ بیامراس کے لئے ہے جوتوی ہومگراس میں اکڑ نہ ہو، نرم ہو مگراس میں کمزوری نہ ہو، تخی ہو مگر فضول خرج نہ ہو، مال رو کنے والا ہو مگر بخیل

الاستراعم المنتاب المسلم المسل

حضرت عبدالله بن عباس والفيئة فرمات بين ميتمام اوصاف بيك وقت عضرت عبدالله بين موجود تنظيم المنطقة المنافقة المن موجود تنظيم المنطقة المن موجود تنظيم المنطقة ا

خلیفه اور با دشاه میں فرق:

حضرت سفیان بن ابی عوجا طالعتی سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق طالعی نے فرمایا۔ '

> ''اللّٰہ عزوجل کی قتم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے میں نہیں جانتا کہ میں خلیفہ ہوں یا بادشاہ؟''

حضرت سفیان بن ابی عوجا فران نئی فرماتے ہیں محفل میں موجود ایک شخص نے اٹھ کر کہا امیر المونین! خلیفہ اور بادشاہ میں بہت فرق ہے، خلیفہ بجرحق کے کہونہیں لیتا اور جو کچھ لیتا ہے اسے سوائے حق کے کہیں خرچ نہیں کرتا اور آپ فران نئی نئی المحد بند خلیفہ ہیں، بادشاہ تو عوام پرظلم ڈھاتے ہیں۔ حضرت عمر فاروق بڑائی نئی اس کی بات بن کر خاموش ہو گئے۔ پھر حضرت سلمان فاری والنی نئی کھڑے ہوکر فرمایا۔

''اگرآپ بڑائیئے نے مسلمانوں کی زمین سے ایک درہم یا اس سے کم و بیش وصول کیا بھر اس کو غیر حق میں استعمال کیا تو آپ بڑائیئے بادشاہ بیں خلیفہ نہیں۔''

حضرت سفیان بن الی عوجا دالنیم فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رالنیم نے بیات میں ناروق رائیم نے بیات سفیان بن الیم موسے آنسو جاری ہو گئے۔

وہ موت کے قریب ہی ہیں:

حضرت ابوموی اشعری ذائفی سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ امیر المومنین

المستريم الموق كيديل

حضرت عمر فاروق برائی نے جب ملک شام میں طاعون کی وبا کے متعلق ساتو آپ برائی نے خضرت ابوعبیدہ بن الجراح برائی نئ کو خط لکھا کہ مجھے تمہاری کچھ ضرورت در پیش ہے اس لئے تم میرا خط ملتے ہی فوراً واپس چلے آؤ۔ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح برائی نئے نے جب خط پڑھا تو جواباً آپ بڑائی کولکھ بھیجا کہ میں آپ بڑائی کی الجراح برائی نئے نے جب خط پڑھا تو جواباً آپ بڑائی کی میں موجود ہوں اور میں خود کولئی پر ضرورت سمجھ چکا ہوں اس وقت میں اپنے لشکر میں موجود ہوں اور میں خود کولئی پر برجے نہیں وینا چاہتا، آپ بڑائی اس کو باقی رکھنا چاہتے ہیں جو باقی رہے والانہیں۔ میرا خط آپ بڑائی کو ملے تو میری معذرت قبول فرما لیں اور مجھے میر کے لشکر میں رہنے دیں۔ آپ بڑائی کو جب خط ملا تو آپ بڑائی رود ہے۔ حاضرین محفل نے رہنے دیں۔ آپ بڑائی کو جب خط ملا تو آپ بڑائی کا وصال ہو گیا ہے تو آپ بڑائی نے فرمایا نہیں! گویا وہ موت کے تر یب بی ہیں۔

آزاد شخص کی ماں نہ بیچی جائے:

حضرت بریدہ رٹائٹو فرماتے ہیں کہ میں حضرت عمر فاروق رٹائٹو کے پاس بیٹھا ہوا تھا ایک بیچے کے رونے کی آواز سنائی دی۔ آپ رٹائٹو نے مجھ سے فرمایا۔
بیٹھا ہوا تھا ایک بیچے کے رونے کی آواز سنائی دی۔ آپ رٹائٹو نے مجھ سے فرمایا۔
''اے بریدہ (رٹائٹو)! جاؤ اور معلوم کرو کہ یہ بیچہ کیوں رور ہا ہے؟''

حضرت بریدہ رفائن فرماتے ہیں میں باہر آیا اور آکر آپ رفائن کومطلع کیا کہ قریش کی ایک جاریہ ہے۔ آپ رفائن نے ای کیا کہ قریش کی ایک جاریہ ہے جس کی مال بچی جا رہی ہے۔ آپ رفائن نے ای وقت مہا جرین اور انصار کو بلایا۔ پچھ ہی دیر میں تمام لوگ اکتھے ہو گئے تو آپ رفائن نے ایک نے اللہ عزوجال کی حمد و ثناء بیان کی اور حضور نبی کریم مضافی بردود وسلام پڑھنے

المنت في المحالي المحالية المح

''اے لوگو! کیا تمہیں معلوم ہے جو چیز حضرت محمد مصطفیٰ ﷺ کے کراتہ ئے اس میں قطع رحم کا بھی ذکر ہے۔''

لوگوں نے کہا ہمیں علم نہیں۔ آپ طابعی نے سورہ محمد کی آیت تلاوت فرمائی جس کامفہوم ہے۔

> ''اگرتم کناره کش ہو گےتو بیاحثال ہے کہتم دنیا میں فساد مجاؤ گےاور قطع تعلقی کرو گے۔''

> > <u>پھرحضرت عمر فاروق خلائین</u> نے فرمایا۔

''اس سے برٹھ کر کوئی قطع حی نہیں کہ ایک آدمی کی ماں تم میں سے بیٹی جا رہی ہے جالانکہ اللہ عزوجل نے تم لوگوں کو بہت وسعت دے رکھی ہے۔''

اس کے بعد حضرت عمر فاروق ٹائٹنڈ نے بیفنوی جاری کر دیا کسی آ زاد شخص کی ماں نہ بیجی جائے گی۔

میں تجھے اپنا دیا ہوا عہدہ والیں لیتا ہوں:

حضرت ابوعثان نہدی دِنائِیْ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رِنائِیْ نے ایک بی اسدی کوسی عمل پر عامل بنایا۔ وہ اسدی آیا اور آپ دِنائِیْ اس ہے عہد لینے لگے اس دوران ایک بچر آ گیا۔ آپ دِنائِیْ نے اس بچے کو گود میں اٹھا لیا اور اس کا بوسہ لیا۔ اس اسدی نے یہ د کھے کر کہا امیر المونین! اللّٰہ کی قسم میں نے تو جھی کسی بچ کا بوسہ بیس لیا۔ آپ دِنائِیْ نے اس اسدی کی بات من کر فرمایا۔

بوسہ نبیں لیا۔ آپ دِنائِیْ نے اس اسدی کی بات من کر فرمایا۔

'' اللّٰہ عزوجل کی قسم تو لوگوں میں سب سے زیادہ قلیل الرحم

ہے اس لئے میں تخصے اپنا دیا ہوا عہدہ واپس لیتا ہوں۔''

خدمت خلق کا جذبه:

حضرت الملم وللنوزجو كه حضرت عمر فاروق ولانتوز كے غلام ہیں فرماتے ہیں كه آب طالفن روزانه رات كوكشت كياكرت تصدايك دن آب طالفن كاكزرايك عگہ سے ہوا جہاں آپ رہائٹن نے ایک گھر میں چھوٹے چھوٹے بچوں کو روتے ہوئے دیکھا۔ آپ بنالننڈ نے ان بچول کی مال سے بچوں کے رونے کی وجہ بوچھی تو اس عورت نے کہا یہ بھوک سے روتے ہیں۔ آپ رہائن نے یو چھا تو اس ہانڈی میں کیا ہے جوتو نے چو لہے پر چڑھار کھی ہے؟ اس عورت نے کہا گھر میں ایکانے کو میچھنہیں اور میں نے بچوں کو تعلی وینے کی خاطر ہانڈی میں یانی ڈال کر اسے چو کہے پر چڑھارکھا ہے۔ آپ ڈالٹنز اس عورت کی بات س کررو دیئے۔ آپ طالٹنز ای وفت بیت المال گئے اور وہاں سے آٹا، تھی، کھانے کا سامان، کھجوریں، کپڑے اور درہم ایک تھیلے میں ڈالے اور مجھ ہے کہا کہ اے اسلم (مِثَانِیْز)! بیتھیلا مجھ پر لاو دو- میں نے عرض کیا امیر المونین! آپ مٹائنز؛ میتھیلا میرے کندھے پر رکھ دیں میں اس تھلے کو اس عورت کے گھر پہنچا دیتا ہوں۔ آپ مٹائنڈ نے فرمایا اے میں ہی لے کر جاؤں گا کیونکہ اس عورت کے متعلق آخرت میں مجھے سے سوال کیا جائے گا۔ حضرت الملم طلائفةُ فرمات بين مين نے وہ تھيلا حضرت عمر فاروق طالفةُ کے کندھوں پر لا د دیا اور وہ اس تھلے کو لے کر اس عورت کے گھر چلے گئے۔ آپ و النفظ نے اس عورت کے گھر جانے کے بعد وہ سامان اتارا اور اپنے ہاتھوں سے خود کھانا تیار کر کے اس عورت کے بچوں کو کھلایا۔ جب ان بچوں کا پید جرگیا تو آپ و النافذ ال عورت کے مکان سے نکلے اور اس عورت کے مکان کے باہر یوں بیٹھ کے جیے کوئی درندہ بیٹھتا ہے۔ اس دوران میں آپ مالٹنز سے بات کرنے میں

المنت عمل المناسل المن

خوف محسوس کررہاتھا۔ آپ بڑگائیز کچھ دیراس عورت کے مکان کے باہر بیٹھے رہے یہاں تک کہ اس عورت کے جیے جننے کھیلنے گئے۔ آپ بڑائیز نے مجھے مخاطب کرتے ہوئے فرمایا اے اسلم (جُلائیز)! مجھے پتہ ہے میں اس عورت کے مکان کے باہر کیوں بیٹھا؟ میں نے عرض کیانہیں۔ آپ بڑائیز نے فرمایا میں نے جب پہلے ویکھا تو یہ بچے رورہ ہے تھے اوراب جب میں نے انہیں کھانا کھلا دیا تو میں نے ارادہ کیا تو یہ بی اس وقت تک اس مکان سے نہ جاؤں گا جب تک میں ان بچوں کو ہنتا ہوا کہ میں ان بچوں کو ہنتا ہوا

حضرت عاتكه فالنفنا كوجادر ويخ كافيصله

حضرت محمد بن سلام والنفئة فرماتے ہیں که حضرت عمر فاروق طالفنے نے حضرت شفاء بنت عبدالله عدویه ذالتها کے پاس ایک آ دمی بھیجا وہ صبح ان کے پاس آئين وفت حضرت شفاء بنت عبدالله عدوبيه والغفها آئين تو اس وفت حضرت عاتكه دو يمنى جا دري منگوائيں جس ميں سے قيمتی جا در انہوں نے حضرت عابيكه ولي خات كو وے دی اور کم درجہ جا در حضرت شفاء ذائفہا کو دی۔حضرت شفاء ظالم النفہانے آپ طِلْعَدْ ہے کہا میں نے اسلام لانے میں عاتکہ (خِلْعُنْ) سے جلدی کی اور میں تمہاری چپری بہن بھی ہوں،تم نے میرے پاس آ دمی بھیجا جبکہ عاتکہ (خلیفٹا) تمہارے یاس خود چل کر آئی ہیں۔ آپ طالفنڈ نے فرمایا وہ حیادر میں نے تمہارے لئے ہی ر کھی تھی لیکن جب تم وونوں جمع ہو گئیں تو مجھے یاد آیا حضرت عا تکہ ڈاٹنٹٹنا تمہاری نسبت حضور نی کریم ﷺ کے زیادہ قریب ہیں اس کئے میں نے اپی قرابت پر حضور نبي کريم پينه ينه کي قرابت کوتر جيح ويا۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com 216 كيسل 216 كيسل 216 كيسل

حضرت حفاف طالغير كى بيني كواونث ديينے كا فيصله:

حضرت اسلم بنالغيز ہے مروی ہے فرماتے ہیں میں حضرت عمر فاروق جالغیز کے ساتھ بازار گیا۔ بازار میں ایک نوجوان عورت آپ طائفۂ ہے ملی۔ اس نے آب طلقیٰ کومخاطب کرتے ہوئے فرمایا امیر المومنین! میرا شوہر وفات یا چکا ہے اور چھوٹے چھوٹے نیجے چھوڑ گیا ہے، خدا کی قتم! مجھےان کے لئے بکری کے یائے تک پکانے کومیسر نہیں، نہ ہی ان کے لئے کھیتی باڑی کرنے کوکوئی زمین ہے، ان کے لئے دودھ کا عانور نہیں، مجھے خوف ہے کہ نہیں بیراس قحط کا شکار نہ ہو جا کیں، میں حفاف رشائیۂ بن ایماءغفاری کی بیٹی ہوں اور میرے بایب صلح حدیبیہ میں حضور نی کریم سے ایک کے ساتھ تھے۔ آپ طالفہ نے اس عورت سے فرمایا کہ بری خوشی کی بات ہے کہ قریب کا ہی نسب نکل آیا اس کے بعد آپ ٹائٹنڈ اپنے گھرتشریف لائے اور اپنے اونٹ پر دو بڑے بڑے تھلے کھانے سے بھرے لا دے اور ان دونوں کے نتیج میں سامانِ خرج اور کیڑا رکھا۔ پھراس عورت کی جانب گئے اور اس اونٹ کی نگیل اس کے ہاتھ میں پکڑا دی اور فرمایا۔

> ''اے کے لواور اسے تھینج کر لے جاؤیباں تک کہ اللہ عزوجل اور مال عطا فرمائے گا۔''

ایک آ دمی نے حضرت عمر فاروق رخالفنڈ سے کہا امیر المومنین! آپ رخالفنڈ نے اس عورت کو بہت دے دیا۔ آپ رٹالفنڈ نے فرمایا۔

''اللہ تیری ماں گم کرے اس کا باپ حدیدیہ میں حضور نبی کریم سطان کی اس کے ہمراہ تھا، اللہ کی قتم میں نے اس کے بھائی اور باپ کو دیکھا ہے جنہوں نے ایک عرصہ تک قلعہ کا محاصرہ کیا اور www.iqbalkalmati.blogspot.com

پھر اللہ عزوجل نے ہمیں فتح نصیب فرمائی اور ہمارے جھے بہت سامال غنیمت آیا۔'

حسنین کریمین شی انتها کو یمنی جا دریں وینے کا فیصلہ:

حضرت محمد بن سلام طلائفۂ ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق طلائفۂ کے باس مین سے دو حادریں آئیں۔لوگوں نے وہ حادریں آپ طالفہُ کو بہنا دیں۔آپ بڑالفیڈ وہ جا دریں بہن کرمنبر نبوی ﷺ پر بیٹھے ہوئے تھے اور لوگ آپ طالفیز کی خدمت میں حاضر ہورہے تھے۔ آپ طالفیز نے اس دوران دیکھا كمحضرت ستيدنا امام حسن اور حضرت ستيدنا امام حسين شي تنتيم ايني والده حضرت ستيده فاطمه ظلی فیا کے گھرے نکلے اور ان کے کندھوں پر اس وقت کچھ نہ تھا۔ آپ طالفیٰڈ کی آنکھوں سے آنسو جاری ہو گئے۔ لوگوں نے آپ بنائنیڈ سے رونے کی مجہ دریافت کی تو آپ رہائی نے فرمایا کہ مجھے اس بات پررونا آرہا ہے کہ میرے پاس دو جا دریں ہیں جبکہ حسنین کریمین شائنڈم کے پاس ایک بھی جا درنہیں۔میرے پاس جو جا دریں ہیں وہ ان کے لئے بڑی ہیں۔اس کے بعد آپ طالعہٰ نے یمن خط لکھا اور دو جا دریں حسنین کریمین رہی گئٹے کے لئے منگوا ئیں۔ جب دونوں جا دریں آ ب ر طلعیٰ کے ماس پہنچ میں تو آب طالعہٰ نے خودحسنین کریمین شائیہ کے باس جا کر . انہیں وہ دونوں جا دریں پہنا نمیں۔

<u>بیٹے کو مال نہ دینے کا فیصلہ:</u>

حضرت اسلم وللنفظ فرماتے ہیں میں نے حضرت عبداللہ بن ارقم بلی بنا کو دیکھا کو دیکھا وہ حضرت عمداللہ بن ارقم بلی بنا کے دیکھا وہ حضرت عمر فاروق بلی بنائے کے پاس آئے اور کہا اے امیر المومنین! ہمارے پاس جلولا کے زیوروں میں سے بچھزیور آئے ہیں اور ان میں جاندی کا ایک برتن

المنت منت وارق كيسل

بھی ہے اگر آپ طالفیز کوکسی دن فرصت ہوتو انہیں آ کر دیکھے لیجئے گا اور اس کے بارے میں جو جاہیں ہم تھم دیجئے گا۔ آپ بٹائٹیڈ نے فرمایا کہ جب تم مجھے فارغ ويكهو مجھے اطلاع دے دينا چنانچه ايك دن حضرت عبدالله بن ارقم طافخنا آئے تو انہوں نے آپ شائن کو فارغ دیکھا تو کہا کہ آج میں آپ شائن کو فارغ دیکھر ہا مول-آب طِلْعَدُ نے فرمایا ہاں! تم میرے لئے چڑے کابستر بچھاؤ میں آرہا ہوں۔ اس کے بعد آپ بٹائٹۂ بیت المال تشریف لے گئے اور مال کے پاس کھڑے ہوکر آب طالفنے نے سورہ آل عمران کی آیت تلاوت کی جس میں ارشادِ باری تعالیٰ ہے۔ "اکثر لوگوں کو محبت مرغوب چیزوں کی ہوتی ہے جیسے عورتیں ہوئیں، بیٹے ہوئے، سونے جاندی کے ڈھیر ہوئے، تمبر لگے ہوئے گھوڑے،مولی ہوئے، زراعت ہوئی، یہ چیزیں د**نیوی** استعال کی ہیں اور انجام کار کی خوبی اللہ کے پاس ہے۔" پھر حضرت عمر فاروق مٹائٹنڈ نے سورہُ الحدید کی آیت تلاوت کی جس کا

زجمه ہے۔

''جو چیزتم سے جاتی رہے اس پر رنج نہ کرواور جو چیزتم کوعطا کی جائے اس پر اتراؤنہیں اور اللہ کسی اترانے والے پیخی باز کو پیندنہیں کرتا۔''

حضرت عمر فاروق طالنی نے ان آیات کی تلاوت کے بعد قرمایا۔ ''اے اللہ! نو ہم کو ان لوگوں میں کر دے جو اسے حق میں خرج کریں اور میں تیری بناہ جاہتا ہوں اس (مال) کی شرارت

المنافق أول كيل

حضرت اسلم والنيخة فرماتے ہیں اس دوران حضرت عمر فاروق والنيخة كے صاحبزاد ہے عبدالرحمٰن (والنیخة) آگئے، انہوں نے اپنے والد سے كہا كہ ایک انگوشی محصے بہہ كر دیں۔ آپ والنیخة نے فرمایا اپنی مال کے پاس جاوہ تجھے ستو پلائے۔ محصے بہہ كر دیں۔ آپ والنیخة کہتے ہیں خدا كی تسم! حضرت عمر فاروق والنیخة نے اپنے عیم نے کہتے ہیں خدا كی تسم! حضرت عمر فاروق والنیخة نے اپنے عیم نے کہتے ہیں خدا کی تسم! حضرت عمر فاروق والنیخة نے اپنے عیم نے کہتے ہیں خدا کی تسم! حضرت عمر فاروق والنیخة نے اپنے عیم نے کو بچھے نہ دیا۔

بيت المال عدمال نه لين كا فيصله:

حضرت ابراہیم والنفیز سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق والنفیز تجارتی سامان کسی تجارتی تجارتی سامان کسی تجارتی قافلے کے ہاتھ بھیجا کرتے تھے۔ ایک مرتبہ آپ والنفیز نے ملک شام ابنا تجارتی سامان بھیجنے کے لئے حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز سے جار ہزار دینار بطورِ قرض لینے کے لئے ان کے پاس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس کے پاس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے اس آ دمی بھیجا۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفیز نے کہا۔

" أنبيل كبوكه وه بيت المال مع قرض لے ليس اور بعد ميں بيه قرض بيت المال كو واپس لوٹا ديں۔"

www.iqbalkalmati.bloqspot.com

المنت مم المنتون اروق كريسال

اطاعت خداوندي اور اطاعت رسول الله ين عَيْنَا كَا فيصله:

حضرت سعید بن زید رہا تھئے ہے مردی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق برماہ بالی کے حضرت عبداللہ بن ارقم رہا تھئے ہیں کے حضرت عبداللہ بن ارقم رہا تھا کے حصر بعد فرمایا کہ مسلمانوں کے بیت المال کو ہر جمعہ تقسیم میں ایک مرتبہ تقسیم کر دیا کرو۔ پھر پھے وصہ بعد فرمایا کہ تم بیت المال کو ہر جمعہ تقسیم کیا کرو۔ پھر پھے وصہ گزرنے کے بعد فرمایا کہ تم بیت المال کو ہر دن میں ایک مرتبہ تقسیم کیا کرد۔ کسی نے آپ بڑائی ہے کہا بیت المال میں سے پچھ مال کو باقی بھی رہے وہ کسی سے بھے مال کو باقی بھی رہے وہ کسی سے بھے بھالیا اللہ عزوجال بھی رہے وہ کسی سے بھے بھالیا۔ میں اس بھی رہے اس امری دلیل کی تلقین کی اور اس امری شرارت سے جھے بچالیا۔ میں اس کے لئے آپ طرح تیاری کروں گا جس طرح بھے سے پہلے حضور نبی کریم میں بھی کے لئے آپ طرح تیاری کروں گا جس طرح بھے سے پہلے حضور نبی کریم میں بھی ہی کہ سے دخترت ابو ارصد بی بھی بھی اور وہ اللہ عزوجال اور حضور نبی کریم میں بھی کی اور وہ اللہ عزوجال اور حضور نبی کریم میں بھی کی اور وہ اللہ عزوجال اور حضور نبی کریم میں بھی کی تھی اور وہ اللہ عزوجال اور حضور نبی کریم میں بھی کی تھی اور وہ اللہ عزوجال اور حضور نبی کریم میں بھی کی تھی۔ ا

عوف (طالمنز) درست كہتا ہے:

حفرت عمر فاروق بالنائذ کے دور خلافت میں پجھالوگوں نے کہا کہ ہم نے حضرت عمر فاروق بالنائذ سے زیادہ ہو حکر منصف کی کوئیں ویکھا اس لئے حضور نبی کریم بیشاؤ ہے بعد آپ بنائنڈ سب سے زیادہ افضل ہیں۔حضرت عوف بن مالک بنائنڈ نے بنائنڈ نے ان کی بات من کر فر مایا تم جھوٹ ہولتے ہو۔حضرت عمر فاروق بنائنڈ نے حضرت عواب بن مالک بنائنڈ کی بات کی تائید کرتے ہوئے فرمایا۔ حضرت عوف (خلائنڈ کی بات کی تائید کرتے ہوئے فرمایا۔ اللہ کی فتم! ابو بکر (جائنڈ) ' محسوب کہتا ہے۔ اللہ کی فتم! ابو بکر (جائنڈ) ' محسوب بھی زیادہ پاکیزہ تھے اور میں اپنے گھر کے اونٹ سے زیادہ پاکیزہ تھے اور میں اپنے گھر کے اونٹ سے زیادہ بول۔''

الانت المنتقول وق كيسل

وہ میرے گھر کے کام کرتا ہے:

حضرت عمر فاروق بڑائیڈ ایک مرتبہ رات کی تاریکی میں گھرے نگے۔
حضرت طلحہ بن عبیداللہ بڑائیڈ نے آپ بڑائیڈ کو بول اندھرے میں نکاتا دیکھ لیا اور
آپ بڑائیڈ کے پیچھے چل دیئے تا کہ دیکھیں آپ بڑائیڈ کہاں جاتے ہیں؟ آپ بڑائیڈ ایک گھر میں داخل ہوئے اور بچھ دیر بعد جب اس گھرے نکلے تو ایک اور گھر میں داخل ہوئے اور وہاں بھی بچھ دیر رکنے کے بعد واپس لوٹ گئے۔ حضرت طلحہ بن عبیداللہ بڑائیڈ صبح کے وقت پہلے گھر گئے اور وہاں ایک اندھی اور بوڑھی اپا بج عورت رہتی تھی۔ حضرت طلحہ بن عبیداللہ بڑائیڈ نے نے اس سے بوچھارات کی تاریکی میں ایک شخص بہاں آیا تھا وہ کون کیا ہے اور وہ میرے گھر کے کام کرتا ہے اور گھر کی صفائی وقت سے میرے گھر کے کام کرتا ہے اور گھر کی صفائی وقت سے میرے گھر آ رہا ہے اور وہ میرے گھر کے کام کرتا ہے اور گھر کی صفائی وغیرہ کر کے چلا جاتا ہے۔ حضرت طلحہ بن عبیداللہ بڑائیڈ نے اس بوڑھی اپا بج عورت کی بات نی تو خود سے کہا۔

''اے طلحہ (ڈائٹٹ)! تیری ماں گم ہوتو کیے عمر (ڈائٹٹ) کے نقش قدم پرچل سکتا ہے؟'' یہود بوں کو خیبر سے جلا وطن کرنے کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق و النفوذ کے زمانہ خلافت میں حضرت زبیر بن العوام، حضرت عبداللہ بن عمر اور حضرت مقداد بن الاسود و النفوز اپی ان زمینوں کی جانب کے جو انہیں خیبر میں ملی تھیں۔ رات کے وفت تمنیوں حضرات اپی اپی زمینوں پر الگ الگ جگہ پرسو گئے۔ رات کے وفت کسی یہودی نے حضرت زبیر بن العوام الگ الگ جگہ پرسو گئے۔ رات کے وفت کسی یہودی نے حضرت زبیر بن العوام واللہ کے صاحبزادے حضرت عبداللہ بن زبیر والفی نا جو اس وقت اپنے والد کے والد کے صاحبزادے حضرت عبداللہ بن زبیر والفی نا جو اس وقت اپنے والد کے

المنت بمنت و اروق كينسل

ہمراہ تھے ان کی کلائی شرارت سے موڑ دی جس پر وہ درد سے چلا اٹھے۔حضرت زبیر بن العوام بڑائیڈ شور سے اٹھے اور اس یہودی کو پکڑنے کے لئے لیکے مگر وہ یہودی فرار ہونے میں کامیاب ہو گیا۔ پھر اس واقعہ کا ذکر حضرت عمر فاروق بڑائیڈ سے کیا گیا اور آپ بڑائیڈ نے فیصلہ کیا کہ یہودیوں کو خیبر سے جلاوطن کر دیا جائے چنا نجہ اس کے بعد خیبر کو یہودیوں سے ضالی کروالیا گیا۔

قبرکے لئے یمی سامان کافی ہے:

حضرت عروہ بنائیڈ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق بنائیڈ ایک مرتبہ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح بنائیڈ کے پاس گئے تو آپ بنائیڈ نے حضرت ابوعبیدہ بن الجراح بنائیڈ کو کجاوے کی جاور لیلئے ہوئے دیکھا اور گھوڑے کو دانہ کھلانے والے تھلے کو انہوں نے تکیہ بنا رکھا تھا۔ آپ بنائیڈ نے ان سے کہا تمہارے ساتھیوں نے مکان اور سامان بنا لئے مگرتم نے بچھ نہیں بنایا؟ حضرت ابوعبیدہ بن الجراح و النیڈ نے کہا امیر المونین! قبر کے لئے بہی سامان کافی ہے۔

ایک تلوار اور ایک و هال:

روایات میں آتا ہے جب حضرت عمر فاروق بنائیڈ ملک شام گئے اور آپ بنائیڈ کا استقبال کیا گیا تو آپ بنائیڈ نے پوچھا میرا بھائی کہاں ہے؟ لوگوں نے پوچھا کون سا بھائی؟ آپ بنائیڈ نے فرمایا ابوعبیدہ (بنائیڈ)۔لوگوں نے کہا وہ بھی ابھی کچھ دیر میں آپ بنائیڈ کے پاس آ جا کیں گے۔ پھر کافی دیر گزرگی اور حضرت ابھی کچھ دیر میں آپ بنائیڈ تشریف نہ لائے۔آپ بنائیڈ خود بی ان کے گھر تشریف ابوعبیدہ بن الجراح بنائیڈ تشریف نہ لائے۔آپ بنائیڈ خود بی ان کے گھر تشریف لے گئے اور دیکھا کہ گھر میں صرف ایک تکوار اور ایک ڈھال موجود تھی۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com 223

میرانمهارے متعلق یمی گمان ہے:

اہل کوفہ نے حضرت عمر فاروق بڑائٹیڈ سے حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائٹیڈ کی نماز کی شکایت کی۔ آپ جوائٹیڈ نے انہیں کوفہ سے بلوایا اور کہا اہل کوفہ تمہاری نماز کے متعلق شکایت کرتے ہیں؟ حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائٹیڈ نے کہا۔
''میں حضور نبی کریم ہے بیٹیڈ کی مانند نماز پڑھتا ہوں اور اس میں بچھ کی وبیشی نہیں کرتا۔ میں انہیں پہلی دور کعتیں کمبی پڑھا تا ہوں اور کھیں ہوں اور اس میں بچھ کی وبیشی نہیں کرتا۔ میں انہیں پہلی دور کعتیں کمبی پڑھا تا ہوں اور کھیں کہی پڑھا تا ہوں۔''

حضرت عمر فاروق مٹائٹئے نے حضرت سعد بن ابی وقاص مٹائٹئے کی بات سی تو کہا میراتمہارے متعلق یہی گمان ہے۔

ابی بن کعب طالعنظ کے فیصلے کوشلیم کرنا:

حضرت زیر بن اسلم برای شخیا ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق برای نے مسجد نبوی شخیا کی توسیع کا ارادہ کیا تو مسجد نبوی شخیا کے گرد مکانات خرید کر انہیں مسجد نبوی شخیا ہیں شامل کرنے کا ارادہ کیا۔ مسجد نبوی شخیا ہے ملحقہ مکانوں میں ایک مکان حضرت سیّدنا عباس برای نفی کا کہ علی مکان حضرت سیّدنا عباس برای نفی نے دونوں حضرات حضرت برائی نفی نے اس مکان کو فروخت کرنے سے انکار کر دیا چنانچہ دونوں حضرات حضرت برائی نفی نے اس مکان کو فروخت کرنے سے انکار کر دیا چنانچہ دونوں حضرات حضرت فرانی بن کعب برائی نفی نے فیملہ حضرت ابی بن کعب برائی نفی نے فیملہ حضرت ابی بن کعب برائی نفی نے فیملہ حضرت ابی بن کعب برائی نفی کے حق میں کرتے ہوئے کہا کہ کسی حاکم کو یہ ذیب نمیس دیتا کہ وہ اپنی رعایا کی ملکیت کو زبردی خرید فرمائے۔ حضرت عمر فاروق برائی نفی میں کرتے ہوئے کہا کہ کسی حاکم کو یہ زبات کیا کہ دوہ اپنی رعایا کی ملکیت کو زبردی خرید فرمائے۔ حضرت ابی بن کعب برائی نفی کہ سے دریا فت کیا کہ ان کا یہ فیصلہ قرآن کی روشنی میں نے حضرت ابی بن کعب برائی نفی کے دریا فت کیا کہ ان کا یہ فیصلہ قرآن کی روشنی میں

www.iqbalkalmati.blogspot.com

224 <u>224</u> <u>2</u>

ہے یا سنت نبوی سے بیٹی کی روشی میں؟ حضرت ابی بن کعب بنائیڈ نے جواب دیا کہ میرا فیصلہ سنت نبوی سے بیٹی کی روشی میں ہے۔ حضرت عمر فاروق بنائیڈ نے حضرت ابی بن کعب بنائیڈ کے فیصلے کو تسلیم کر نیا۔ حضرت سیّدنا عباس بنائیڈ نے اس فیصلے ابی بندی کعب بنائیڈ کے فیصلے کو تسلیم کر نیا۔ حضرت سیّدنا عباس بنائیڈ نے اس فیصلے کے بعد اپنا مکان فی سبیل اللہ حضرت عمر فاروق بنائیڈ کو دے دیا تا کہ وہ مسجد نبوی سے بیٹی کی توسیع فرمائیس۔

انصاف كاتقاضا:

حضرت الس بن ما لک رظائفیہ فرماتے ہیں کہ مصر کے باشدوں میں سے
ایک حضرت عمر فاروق رظائفیہ کی خدمت میں ایام جے کے دوران حاضر ہوا اورع ض
کرنے لگا امیر المومنین! مجھے بناہ دیجئے۔ آپ رظائفیہ نے اسے امان دی تو اس نے
عرض کیا کہ میرا مقابلہ حضرت عمر و بن العاص رظائفیہ کے صاحبز ادے محمد بن عمر و سے
دوڑ کا مقابلہ ہوا۔ میں اس سے دوڑ جیت گیا تو اس نے مجھے کوڑے مارنا شروع کر
دینے اور کہتا گیا کہ میں بڑے آدمی کا بیٹا ہوں۔ آپ رظائفیہ نے یہ بات من کر
حضرت عمر و بن العاص رظائفیہ کوطلب فر مایا اور پھر اس مصری کوکوڑ ادیتے ہوئے تھم
دیا وہ ان کو مارنا شروع کردے۔ اس مصری نے کوڑے مارنا شروع کے تو آپ
دیا وہ ان کو مارنا شروع کردے۔ اس مصری نے کوڑے مارنا شروع کے تو آپ

"مار ملامت کئے گئے ہوئے کے بیٹے کو۔"

ایک جاریه کوانصاف فراجم کرنا:

حضرت سیّدنا عبدالله بن عباس منطقینا سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک جاریہ نے حضرت عمر فاروق منطقین کی خدمت میں حاضر ہوکر شکایت کی کہ میرے www.iqbalkalmati.bloqspot.com

الاستراعم المنظر في المال المنظر المن

آ قانے مجھ پرالزام لگایا اور مجھے آگ پر بھایا یہاں تک کہ میری پیشاب گاہ جل گئی۔ آپ بھایا نے اس سے دریافت کیا کہ کیا تیرے آ قانے وہ عیب خود دیکھا جس کا اس نے الزام لگایا۔ اس جاریہ نے کہانہیں۔ آپ بھائیڈ نے اس شخص کو طلب کیا اور اس شخص سے دریافت کیا کیا تو نے اس عورت میں وہ عیب دیکھا جس کا تو نے اس پرالزام لگایا؟ اس شخص نے کہانہیں! میں نے اس میں عیب نہیں ویکھا بس مجھے اس کے بارے میں بدگمانی پیدا ہوگئ تھی۔ آپ بھائیڈ نے فرمایا۔

بس مجھے اس کے بارے میں بدگمانی پیدا ہوگئ تھی۔ آپ بھائیڈ نے فرمایا۔

میں نے رسول اللہ بھائیڈ کو فرماتے سا ہے کہ غلام اپنے آ قا سے اور بچہا ہے والد سے قصاص نہ لے اور اگر میں نے بینہ ساہوتا تو میں تجھے سے اس کا بدلہ ضرور لیتا۔''

حضرت سیّدنا عبدالله بن عباس ولی فیان فر ماتے ہیں اس کے بعد حضرت عمر فاروق ولی فیان فیان نے استحض کوسوکوڑے لگائے اور اس عورت کوآزاد کردیا اور فر مایا۔
'' میں نے رسول الله مین کی میں جا یا گیا وہ اللہ اور اس کے رسول میں بھا کا گئی یا جوآگ میں جلایا گیا وہ اللہ اور اس کے رسول میں بھا کا آزاد کردہ غلام ہے۔''

حضرت سيدنا عباس طالنين كو مال عطا كرنا:

حضرت حسن بصری ولائن سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق ولائن ہیت المال میں لوگوں کو مال تقسیم کررہے تھے کہ پچھ مال نج گیا۔حضرت سیدنا عباس ولائن نے آپ ولائن سے فرمایا اگر موی علیاتلا کے بچا زندہ ہوتے تو کیا تم لوگ ان کی عزت نہ کرتے؟ آپ ولائن اور دیگر حاضرین نے بیک زبان ہو کر کہا

الاست ممنت و اروق ك فيها

ہاں ہم ان کی عزت کرتے۔حضرت سیّدنا عباس طالفنے نے فرمایا تو کیا میں تمہارے نزدیک اس بیجے ہوئے مال کا زیادہ حق دار نہیں کیونکہ میں حضور نبی کریم میں خیاجہ کا چیا ہوں۔ آپ بڑائنیڈ نے لوگوں سے یو چھا تو لوگوں نے کہا کہ ہمیں کوئی اعتراض تہیں۔ آپ بنائیڈ نے وہ بیا ہوا مال حضرت سیّد نا عباس بنائیڈ کے حوالے کر دیا۔

لوگول كى اجازت سے شهد لينے كا فيصله:

حضرت عمر فاروق طلقيَّهٔ ايك دن منبر پرتشريف لائے۔اس وفت آپ ر الله المنطقة كى طبيعت ناساز تھى اور حكيم نے آپ را الله الله كوشېد تجويز كيا تھا۔ اس وقت بیت المال میں شہد کی ایک کبی موجودتھی۔ آپ طالفنے نے فرمایا کہ اگرتم لوگ مجھے اجازت دوتو میں اے لول ورنہ وہ میرے لئے حرام ہے۔لوگوں نے آپ ر النائظ کو اجازت دے دی جس کے بعد آپ طالعین نے بیت المال سے شہد کی وہ کی حاصل کی۔

حضرت سيّدنا عباس طالنيْ كو پينھ پرسوار كرنے كا فيصله:

حضرت سیّد نا عبیدالله بن عباس طلطهٔ افرماتے ہیں کہ میرے والد کے گھر ایک پرنالہ حضرت عمر فاروق طائنٹی کے راستے میں تھا۔ ایک مرتبہ آپ طالغیز جمعہ کے دن نے کیڑے پہنے وہال سے گزرے تو اس پرنالے پر والد بزرگوارنے دو مرغیال ذبح کیں اور ان کے خون پر یانی بہایا اور وہ خون ملا یانی آپ رٹائٹن کے كيروں پركرا۔ آپ طالفن نے اس پرتالے كو وہاں سے اكھاڑنے كا حكم ديا اور خود لباس تبدیل کر کے دوبارہ آئے اور لوگوں کی نماز میں امامت کی۔نماز کے بعد والد بزرگوارنے آپ طالفن سے فرمایا مید پرنالہ بہیں رہے گا اور اسے حضور نبی کریم منطق کیئے نے لگایا تھا۔ آپ مٹائنٹ نے فرمایا اور میں اس وقت تک آپ مٹائن نے کہوں گا www.iqbalkalmati.blogspot.com

227

جب تک آپ طالعنی میری پینے پرسوار ہوکر وہ پرنالہ نہ لگائیں گے اور پھر والد ہزرگوار نے آپ جانتی کی پینے پرسوار ہوکر پرنالہ لگایا۔ یہ سب بھائی بھائی ہیں:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طالغینے نے خیارسو دینار لے کر ایک تھیلی میں ڈالے اور اینے غلام ہے کہا بیہ حضرت ابوعبیدہ بن جراح طالفیڈ کے پاک لے جاؤ اور انہیں دینے کے بعد گھر میں تھوڑی دریے لئے کسی کام میں مشغول ہو جانا اور دیکھنا وہ ان دیناروں کا کیا کرتے ہیں چنانچہ وہ غلام اس تھیلی کوان کے یاس لے گیا اور عرض کیا امیرالمومنین فرماتے ہیں آپ طالتیٰ بید وینارخود پرخرج كرير _حضرت ابوعبيده بن الجراح طالغيَّهٔ نے فرمایا الله عزوجل ان پر رحم فرمائے اور پھر حضرت ابوعبیدہ بن الجراح طالفیٰ نے وہ دینارا پنی لونڈی کو دیئے اور کہا فلال ۔ کوسات دینار دے دواور فلاں کو یانچ دینار دے دواور فلاں کوانے دینار دے دو اور بوں حضرت ابوعبیدہ بن الجراح طالفنے نے وہ تمام دینارخرچ کر دیئے۔ آپ طلعنظ کے غلام نے واپس آ کرتمام بات آپ طالغظ کے گوش گزار کر دی۔ آپ طالغظ نے اسے جارسو دینار مزید تھیلی میں بند کر کے دیئے اور فرمایا بیر دینارتم معاذبن جبل ذلائنے: کے باس لے جاؤ اور دیکھووہ ان کو کیسے خرچ کرتے ہیں؟ وہ غلام حیار سو دینار لے کر حضرت معاذ بن جبل طالفنڈ کے پاس گیا اور عرض کیا امیر المومنین فرماتے ہیں انہیں اپنی ضرورت پرخرچ کر لیں۔حضرت معاذ بن جبل طالفیڈ نے فرمایا الله عزوجل ان کے حال بررحم فرمائے اور پھر انہوں نے اپنی لونڈی سے کہا فلاں گھراتنے ویار دے دو اور فلال گھراتنے دینار دے دو اور بول انہوں نے بھی تمام وینارخرچ کر دیئے۔حضرت معاذبن جبل طالفن کی بیوی نے ان سے کہا

المنتشر منتقول وق كيليل

ہم بھی مفلس ہیں ہمیں بھی کچھ عطا ہو۔ حضرت معاذ بن جبل منافظہ نے تھیلی میں ہاتھ ڈالاتو دو دینارنکل آئے اور وہ دینار انہوں نے اپی بیوی کو دے دیئے۔ آپ طلان النائز کے غلام نے والیں کرتمام ماجرا آپ طلان کو سایا۔ آپ طالفز نے فرمایا بیہ سب بھائی بھائی ہیں اور مال کے متعلق ان سب کی رائے ایک ہی ہے۔ حضرت زید بن ثابت طالعید کے فیصلے کوشلیم کرنا:

روایات میں آتا ہے کہ حضرت عمر فاروق طائنیڈ اور حضرت ابی بن کعب ر میان کے درمیان کچھ تنازع پیدا ہو گیا۔ آپ رٹائٹۂ نے حضرت ابی بن کعب رٹائٹۂۂ سے فرمایا کہتم اپنے اور میرے درمیان فیلے کے لئے کوئی منصف مقرر کرلو چنانچہ حضرت الی بن کعب طالفند نے اس وقت کے قاضی حضرت زید بن ثابت طالفید کو فیصلے کے لئے مقرر کیا۔ جب دونوں حضرات حضرت زید بن ثابت رہائٹنڈ کے گھر پہنچ تو حضرت زید بن ثابت رہائنہ نے آپ رہائنہ کو دیکھ کرایی جگہ چھوڑ دی اور ان سے بیٹھنے کی درخواست کی۔ آپ ٹالٹن نے حضرت زید بن ثابت بڑالٹن سے فرمایا میں یہاں اس وفت اپنے اور انی بن کعب (طالفیز) کے فیصلے کے لئے آیا ہوں اس کئے اس جگہ نہیں بیٹھ سکتا چنانچہ حضرت زید بن ثابت رہائی نے آپ دونوں کے مابين فيصله فرمايا جسي آب طالفيز كالتعليم كرلياب

حضرت بلال صبتی طالتین کو جهاد کی اجازت دینے کا فیصلہ:

حضرت بلال حبثی و الفیز نے حضرت ابو بکر صدیق والفیز کے وصال کے بعد حضرت عمر فاروق مٹائنڈ کے پاس جا کر کہا مجھے اجازت دیجئے کہ میں جہاد فی سبیل اللہ میں حصہ لوں۔ آپ رٹائٹۂ نے فرمایا تمہیں اذان دینے میں کیا چیز مانع ہے؟ حضرت بلال حبثی والنیز نے کہا میں نے حضور نبی کریم مضاعیکا کے ظاہری زمانہ

الاستار عمر المالي الما

کو پایا اور اذان دی اور پھر حضرت ابو بکر صدیق طلفنے کے کہنے پر میں مدینہ منورہ میں رکار ہااور اذان دی کیونکہ وہ میرے والی تھے اور پھر ان کا بھی وصال ہو گیا اور میں نے حضور نبی کریم میں ہے منا ہے جہاد فی سبیل اللہ سے بڑھ کرکوئی دوسری میں نے حضور نبی کریم میں بھاد کا شوق رکھتا ہوں۔ آپ طافنے نے حضرت بلال حبثی طافنے کو جہاد کی جاد کا شوق رکھتا ہوں۔ آپ طافنے نے حضرت بلال حبثی طافنے کو جہاد پر جانے کی اجازت دے دی۔

بیوں کو مال بیت المال میں جمع کروانے کا حکم فرینا:

جب حضرت ابومویٰ اشعری طالفنظ بھرہ کے گورنر تھے حضرت عمر فاروق طالفیٰ کے دوصاحبز اوے حضرت عبداللہ اور حضرت عبید اللہ رہی کنٹیم مسمم مے سلسلے رہا تھا میں عراق آئے۔ جب دونوں بصرہ پہنچے تو حضرت ابوموی اشعری طالفیٰ نے دونوں کا استقبال کیا اور ان کی خاطر تواضع کی بھر جب وہ مدینه منورہ روانہ ہونے لگے تو حضرت ابومویٰ اشعری طالفنظ نے انہیں صدقہ کا سیجھ مال دیا اور کہا ہیا میر المومنین کو دے دینا اور اگرتم چاہوتو اس ہے مال تجارت خریدلواور جو نفع تمہیں ہو وہ تم رکھ لو اوراصل مال امیر المومنین کو دے دینا۔ان دونوں صاحبزادگان نے کہا ہمیں خطرہ ہے کہ بیں والد بزرگوار ہم ہے ناراض نہ ہوں۔حضرت ابوموی اشعری طالفنڈ نے کہا میں اس کی اطلاع خود انہیں کر دوں گا اور پھر وہ تم پر ناراض نہ ہوں گے۔ پھر جب دونوں صاحبزادگان اس صدقہ کے مال سے مال تجارت خرید کر مدینه منورہ ُ <u>ہنچے</u> اور اس مال کوفر وخت کیا تو انہیں کثیر منافع ملا اور انہوں نے وہ منافع خود رکھ كراصل مال والد بزرگوارتك ببنيا ديا_آب طالفظ كواس كى خبر موئى تو آب طالفظ نے ان سے بوجھا کیا ابوموی (والفن) تمام لشکر کے ساتھ یبی معاملہ کرتا ہے؟ صاحبزادگان نے مرض کیا ایہا ہرا کی کے ساتھ نہیں ہے۔ آپ رٹی ٹھٹے نے فرمایا اس

کا مطلب بیہ ہوا انہوں نے میرے بیٹے بھے کرتمہا رے ساتھ بیرعایت برتی ہے۔ صاحبز ادگان نے عرض کیا یہی بات ہے۔ آپ بڑائٹۂ نے حکم دیا تم اصل رقم اور منافع دونوں ہی بیت المال میں جمع کروا دو۔

حضرت عمار بن ياسر طالعين كوتنبيه كرنا:

حضرت عبدالرحمٰن بن ابزي طِنْ لَيْنَا الله عند مروى ہے فرماتے ہیں ہم حضرت عمر فاروق رظائفۂ کے باس بیٹھے تھے اس دوران ایک شخص خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا امیرالمومنین! مجھی مجھی وضواور عسل کے لئے ہمیں مسلسل دو دو ماہ تک پانی میسر نہیں ہوتا۔ آپ رٹائٹن نے فرمایا جب تک بجھے پانی نہ ملے میں نماز نہیں پڑھوں گاختیٰ کہ پانی مل جائے۔حضرت عمار بن یاسر مٹائنڈ نے عرض کیا امیر المومنین! آپ طالنیز کو یاد ہوگا کہ ہم فلال مقام پر اونٹ چرا رہے تھے اور ہمیں نہانے کی حاجت ہوئی میں نے مٹی میں لوٹیس لگا ئیں پھر ہم حضور نبی کریم مضاعظاتی خدمت بابرکت میں حاضر ہوئے اور مسکلہ دریافت کیا۔حضور نبی کریم مضاعظاتہ نے تبہم فرمایا اور فرمایا تمہیں مٹی کافی تھی۔ آپ مطابع کا این دونوں ہتھیلیوں کو زمین پر مار کر پھونکا پھر منہ اور ہاتھوں کے پچھ جھے پرمسح فرمایا۔ آپ رٹائٹۂ نے فرمایا اے عمار بیان کرتے ہو۔حضرت عمار بن یاسر طالفن نے عرض کیا امیر المونین! اگر آپ ر خلی این این اس حدیث کو بیان نہیں کروں گا۔ آپ بٹائٹیز نے فرمایا جو پچھتم بیان کرتے ہواس کی ذمہ داری تم پر عائد ہوگی۔

<u>بیٹے پرشرعی حدخود نافذ کرنے کا فیصلہ:</u>

حضرت عبدالله بن عمر نظی خینا ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ میرے بھائی

www.iqbalkalmati.blogspot.com 231 منت عمر القالي المرابع المر

عبدالرحمٰن و النفؤ اوران کے ساتھ ابوسروعہ و النفؤ نے شراب پی اور بدست ہو گئے۔
اس وقت یہ دونوں مصر میں تھے۔ والد ہزرگوار حضرت عمر فاروق و النفؤ کی خلافت کا ذمانہ تھا۔ حضرت عمر و بن العاص و النفؤ جو کہ مصر کے گورز تھے ان کو جب اس واقعہ کی اطلاع ملی تو انہوں نے ان دونوں حضرات کو بلایا اور ان کے سر منڈوا و ہے۔ والد ہزرگوارکواس واقعہ کی اطلاع ہوئی تو انہوں نے حضرت عمر و بن العاص و النفؤ من العاص و اللہ ہزرگوارکواس واقعہ کی اطلاع ہوئی تو انہوں نے حضرت عمر و بن العاص و النفؤ کے سے کہلوا بھیجا کہ عبدالرحمٰن (و النفؤ کی کو اونٹ کے کہاوے پر بھا کر میرے پاس بھیجو چنانچہ جس وقت عبدالرحمٰن (و النفؤ کی کو اونٹ کے کہاوے پر بھا کر میرے پاس بھیجو کو تے بیات بھیجو کو تے بیات کی النفؤ نے انہیں ای کو شرے لگائے ہوگی تو آپ و النفؤ کی النفؤ کی تو فیق نے مور فیصلہ کرنے کی تو فیق نے فیصلہ کرنے کی تو فیق نے

حضرت سعید بن مسیّب و الفین سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک مسلمان اور ایک مسلمان اور ایک مسلمان یہودی حضرت عمر فاروق و الفین کے پاس اپنے جھڑ ہے کے لئے آ ہے۔ آپ والفین نے وونوں طرف کا مؤقف سننے کے بعد یہودی کے حق میں فیصلہ کر دیا۔ یہودی نے جب آپ والفین کا فیصلہ سنا تو کہنے لگا۔

''' خدا کی شم! آپ دالفنا نے حق بات کا فیصله کیا۔''

حضرت عمر فاروق برائنۂ نے اسے کوڑے سے ٹو کتے ہوئے فرمایا تخفیے کیسے بہتہ میں نے حق فیصلہ کیا ہے؟ بہودی نے کہا۔

"میں نے توریت میں لکھا دیکھا ہے جو قاضی حق کے ماتھ فیصلہ کرتا ہے اس کے دائیں اور بائیں جانب دوفر شتے ہوتے ہیں جو اس کو راہِ راست پر قائم رہنے کی تو فیق دیتے ہیں ہیں جو اس کو راہِ راست پر قائم رہنے کی تو فیق دیتے ہیں یہاں تک کہ وہ حق کے ساتھ فیصلہ کرتا ہے۔"



زوجه سے مال واپس لینے کا فیصلہ:

حضرت ما لک بن اوس طالعین سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ بادشاہ روم کا ا پلی حضرت عمر فاروق طالغنظ کی خدمت میں آیا تو آپ طالغظ کی زوجہ نے کسی ہے ایک دینارادهار لے کرعطرخریدااور اس کوشیشے کے برتنوں میں بند کر کے اس پلجی کے ہاتھ روم کی ملکہ کو بھیج دیا۔ جب قاصد واپس پہنچا تو اس نے ملکہ روم کو وہ تحفہ پیش کیا۔ ملکہ روم نے ان برتنوں کو خالی کروانے کے بعد ان برتنوں کو جواہرات سے بھرکراس ایکی کو دیئے کہ وہ اسے آپ مٹائنز کی زوجہ کے پاس لے جائے۔ جب ال الملی نے وہ جواہرات سے بھرے برتن آپ طالفید کی زوجہ کو دیئے تو انہوں نے وہ برتن بستریر الٹ دیئے۔آپ طالفیز گھر میں داخل ہوئے۔آپ طالفیز نے بیوی سے ان جواہرات کے متعلق دریافت کیا تو انہوں نے سارا ماجرا بیان کردیا۔ آب رظائف نے وہ جواہرات فروخت کر دیئے اور ایک دینار اپنی بیوی کو دیا اور باقی مال بیت المال میں جمع کروا دیا۔

بينے كورقم بيت المال ميں جمع كرانے كاتھم دينا:

حضرت عبدالله بن عمر خالفها سے مردی ہے فرماتے ہیں کہ میں نے ایک اونٹ خریدا اور اسے چراگاہ میں لے گیا۔ جب وہ اُونٹ موٹا ہو گیا تو میں اسے بازار میں فروخت کرنے کے لئے لے گیا۔ اس دوران والد بزرگوار حضرت عمر فاروق بخلفی بازار تشریف لے آئے۔ انہوں بنے جب موٹا تازہ اونٹ و یکھا تو دریافت کیا بیداونٹ کس کا ہے؟ آپ رخالفی کو بتایا گیا کہ بیداونٹ آپ رخالفی کے صاحبزادے بیداللہ بن عمر زخالفی کا ہے۔ آپ رخالفی نے میرانام س کو فرملیا۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com



حضرت عبداللہ بن عمر رہائی فرماتے ہیں اس دوران میں بھا گتا ہوا آپ

رہائی کے پاس پہنچا۔ آپ رہائی نے مجھ سے دریافت کیا کہ بداونٹ کیسا ہے؟ میں
نے عرض کیا میں نے اونٹ خریدااورا سے جراگاہ میں جھوڑ دیا جب وہ صحت مند ہو
گیا تو میں اسے فروخت کرنے کے لئے بازار میں لے آیا۔ آپ رہائی نے فرمایا۔
''تم نے اونٹ جراگاہ میں جھوڑ دیا اورلوگوں نے اس ڈرسے

اس کا خیال رکھا کہ یہ امیر المونین کے بیٹے کا اونٹ ہے اس

کا خیال رکھو۔ابتم اس اونٹ کوفروخت کرنے کے بعدایی

اصل رقم خود رکھواور باقی رقم بیت المال میں جمع کرواؤ۔''

عدلِ فاروقی طالتین کا واسطه:

حضرت عمر فاروق و فلاننو نے مدائن کسریٰ کی طرف ایک اسلامی لشکر روانہ
کیا۔ جب اسلامی لشکر دریائے دجلہ کے کنارے پر پہنچا تو دریا کوعبور کرنے کے
لئے کوئی جہازیا کشتی وغیرہ نہ تھی۔ اس لشکر کے جرنیل حضرت سعد بن ابی وقاص و فلائن شخصے۔ بیصور تحال دکھ کر حضرت خالد بن ولید و فلائن لشکر سے نکل کر دریا کے
کارے آگے کی طرف بر سے اور فر مایا اے دریا! اگر تو اللہ عز وجل کے حکم سے
بہتا ہے تو ہم مجھے خدمت حضور نبی کریم سے بیٹا اور عدل فاروتی و فلائن کا واسطہ دیے
بہتا ہے تو ہم میں راستہ وے وے تاکہ ہم دریا پار کرلیں۔ بیہ بات دریا سے کہنے کے
بہت دونوں دلیر اور بہادر سبہ سالاروں نے اپنے گھوڑے دریا میں ڈال دیے اس
بعد دونوں دلیر اور بہادر سبہ سالاروں نے اپنے گھوڑے دریا میں ڈال دیے اس
کے ساتھ ہی جب اسلامی لشکر نے اپنے سبہ سالاروں کو یوں دریا میں گھوڑے
فالے ہوئے دیکھ تھانہوں نے بھی ہی کی پیرونی کرنے ہوئے اپنے گھوڑے

www.iqbalkalmati.bloqspot.com

المنت ممرية في اروق كي يسل

دریامیں ڈال دیئے اور پھر دریانے انہیں راستہ دے دیا اور اسلامی کشکر سے سلامت دریا کے بارچلا گیا۔

قط کے دوران آپ طالعہ کا فیصلہ:

حضرت اسلم برنائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رماط کے سال لوگ قبط سالی کی وجہ سے ہلاک ہو گئے۔حضرت عمر فاروق برنائیڈ نے بچھ لوگوں کو مقرر کیا جو ان کی ضروریات کا خیال رکھیں اور ان میں کھانا اور دیگر اشیاء تقسیم کریں۔اس کام کے لئے عبداللہ بن عتبہ بن مسعود،عبدالرحمٰن بن عبدالقاری،مسور بن مخز مہاور یزید بن اخت زخی گئے مقرر کئے گئے۔ جب شام ہوتی تو یہ لوگ آپ برنائیڈ کے پاس جمع ہوتے اور آپ برنائیڈ کو ہر بات سے آگاہ کرتے۔ان حضرات میں سے ہرایک کو مدینہ مقرر کیا گیا اور مدینہ منورہ کے چاروں جانب سے لوگ اس مقرر کیا گیا اور مدینہ منورہ کے چاروں جانب سے لوگ اس مقرر کیا گیا اور مدینہ منورہ کے چاروں جانب سے لوگ اس مقرر کیا گیا اور مدینہ منورہ کے چاروں جانب سے لوگ اس مقرر کیا گیا اور مدینہ منورہ کے چاروں جانب سے لوگ اس

حضرت اسلم مرات ہیں میں نے ایک رات حضرت عمر فاروق مرات ہیں میں نے ایک رات حضرت عمر فاروق مرات ہوئے مناجب کہلوگ ان کے پاس عشاء کا کھانا کھارہے تھے کہ جن لوگوں نے ہمارے پاس کھانا کھایا ان کا شار کرو چنانچہ اگلی رات ان کا شار کیا گیا تھا ہی گیا تو یہ سات ہزار نفر تھے اور آپ جائٹون نے فرمایا وہ خاندان والے لوگ جو ہمارے پاس نہیں آئے اور مریض اور بچے ان کو بھی شار کرو چنانچہ ان کا شار کیا گیا تو ان کی تعداد میں مزید اضافہ تو ان کی تعداد میں مزید اضافہ ہوتا جلا گیا۔ آپ بڑائٹون نے آنے والوں کے لئے تھم دیا کہ ان کی دیکھ بھال بھی ہوتا چلا گیا۔ آپ بڑائٹون نے آنے والوں کے لئے تھم دیا کہ ان کی دیکھ بھال بھی ای طریق ہورہی ہے۔ پھر اللہ عزوجل میں مرید اللہ عزوجل کے فضل سے بارش ہوئی اور آپ بڑائٹون نے لوگوں کو واپس جانے کا تھم دیا اور وہ کے فضل سے بارش ہوئی اور آپ بڑائٹون نے لوگوں کو واپس جانے کا تھم دیا اور وہ

www.iqbalkalmati.blogspot.com 235 منتر عمر التعريب المواقع المرابع المعربي المواقع المرابع المعربي ال

لوگ اینے اپنے علاقوں کو روانہ ہو گئے۔ آپ طلائنڈ نے ان کو واپسی کے لئے زادِ راہ اور دیگر سامان دیا۔

حضرت اسلم دائین فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق دائین نے جن لوگوں کو خدمت کے لئے مقرر کیا تھا وہ لوگ صبح فجر کے بعد ہانڈیاں چڑھا دیے جس میں دلیہ پکتا جو مریضوں کو کھلایا جاتا اور حریرہ پکایا جاتا اور آپ رہائیڈ روغن زیتون کے متعلق تھم دیتے جو بڑی ہانڈیوں میں آگ پررکھ کر جوش دیتے اور جب اس کی گرمی اور حرارت ختم ہو جاتی تو پھرروٹی چوری جاتی پھراس تیل سے اس میں سالن ملایا جاتا۔ آپ دائیڈ نے قبط کے دوران خور بھی ایک لقمہ نہ چکھا اور اپنے گھر والوں کو بھی نہ چکھا اور اپنے گھر والوں کو بھی نہ چکھے دیا اور بس اس تیل ملے سالن پر گزارہ کیا۔

ميں عوام كا خادم عمر (طالعيد؛) ہوں:

ایک مرتبہ حضرت عمر فاروق وٹائٹؤ معمول کے مطابق مدینہ منورہ کی گلیوں میں گشت فرما رہے تھے کہ آپ وٹائٹؤ دوران گشت شہر سے باہر نکل گئے۔ شہر سے باہر آپ وٹائٹؤ نے ایک فیمہ لگا دیکھا جس کے درواز سے پرایک اجبی شخص نہایت پریٹانی کے عالم میں بیٹھا ہوا تھا۔ آپ وٹائٹؤ نے اس شخص کے پاس جا کراس شخص کی پریٹانی دریافت کی نو اس نے آپ وٹائٹؤ سے بے رخی بر سے ہوئے کہا کہ میاں! جاؤتم اپنا کام کروتم کون ہوتے ہو مجھ سے پوچھنے والے؟ اس دوران آپ وٹائٹؤ نے کسی عورت کے کراہنے کی آ واز سی۔ آپ وٹائٹؤ نے اس شخص نے کہا کہ میری بیوی مجھے بتاؤ تو سہی کہ تمہار سے ساتھ کیا معاملہ ہے؟ اس شخص نے کہا کہ میری بیوی حاملہ ہے اور اس وقت اس کے پاس کوئی عورت موجود ونہیں اور نہ ہی میرے پاس حاملہ ہے اور اس وقت اس کے پاس کوئی عورت موجود ونہیں اور نہ ہی میرے پاس حاملہ ہے اور اس وقت اس کے پاس کوئی عورت موجود ونہیں اور نہ ہی میرے پاس کے کھے اور

236 <u>236</u> <u>236</u> <u>236</u>

ا پی زوجہ حضرت ام کلثوم طافعنا بنت علی طافعن کو ہمراہ لیا اور ساتھ ہی کھانے پینے کا سامان اور دوسرا پچھ سامان لیا اور اس شخص کے پاس پہنچ ۔ آپ رڈائٹنڈ کی زوجہ خیمے کے اندر چلی گئیں اور آپ رڈائٹنڈ باہر اس شخص کے پاس موجود رہے۔ جب بچ کی ولادت ہوگئی تو آپ رڈائٹنڈ نے اس شخص سے فرمایا کہ تم پریشان مت ہوتا صبح میرے پاس آ نا ہیں تمہاری مالی مدد بھی کروں گا اور تمہارے بچ کا وظیفہ بھی مقرر کروں گا۔ اس شخص نے پوچھا آپ رڈائٹنڈ کون ہیں؟ آپ رڈائٹنڈ کا نام سنا تو اسے معلوم ہوا کا خادم عمر (رڈائٹنڈ کا ہوں۔ اس شخص نے جب آپ رڈائٹنڈ کا نام سنا تو اسے معلوم ہوا کہ آپ رڈائٹنڈ تو امیر المونین ہیں وہ پریشان ہوا اور معذرت کرنے لگا تو آپ رڈائٹنڈ نے فرمایا تو آپ رڈائٹنڈ کا نام سنا تو اسے معلوم ہوا کہ آپ رڈائٹنڈ تو امیر المونین ہیں وہ پریشان ہوا اور معذرت کرنے لگا تو آپ رڈائٹنڈ نو امیر المونین ہیں وہ پریشان ہوا اور معذرت کرنے لگا تو آپ رڈائٹنڈ نو امیر المونین ہیں وہ پریشان ہوا اور معذرت کرنے لگا تو آپ رڈائٹنڈ نو امیر المونین ہیں وہ پریشان ہوا اور معذرت کرنے لگا تو آپ رڈائٹنڈ نو امیر المونین ہیں وہ پریشان ہوا اور معذرت کرنے لگا تو آپ رڈائٹنڈ نو امیر المونین نو محض عوام کا خادم ہوں۔

معامله خلافت كاخوف:

 www.iqbalkalmati.bloqspot.com

المنت عملية في أوق كيسل

پائ نہیں تھا جب حفرت محمد مضابھ اللہ عزوجال کے بیاس ہی تھا جب حضور نبی کریم مضابہ کے بیاس ہی تھا جب حضور نبی کریم مضابہ کی بیاس ہی تھا جب حضور نبی کریم مضابہ کی بیاس ہی تھا جب حضور نبی کریم مضابہ کی بیاس ہی تھا جب حضور نبی کریم مضابہ کی نہا تھا ہے ہیں۔ آپ حاصل ہوتا تو حضور نبی کریم مضابہ کی کر رہے ہیں۔ آپ ماصل ہوتا تو حضور نبی کریم مضابہ کیا کرتے؟ میں نے عرض کیا حضور نبی کریم مضابہ کیا کرتے؟ میں نے عرض کیا حضور نبی کریم مضابہ کیا کرتے؟ میں نے عرض کیا حضور نبی کریم مضابہ کیا کہ اس درد مضابہ کی کہ میں مامد خلافت سے سراسر چھوٹ جاؤں نے دو تر و تے ہوئے فرمایا مجھے پہند ہے کہ میں معاملہ خلافت سے سراسر چھوٹ جاؤں اور نہ مجھے کہ نفع ہونہ خیارہ۔

<u>پوندلگالباس:</u>

حضرت حسن بھری را النین فرماتے ہیں میں بھرہ کی جامع متجد میں ایک محفل میں موجود تھا۔ میں نے دیکھا کچھ لوگ حضور نبی کریم بینے بین کے صحابہ حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق وی النین کے زہد کا تذکرہ کر رہے تھے اور وہ ان چیزوں کا تذکرہ کر رہے تھے اور وہ ان چیزوں کا تذکرہ کر رہے تھے جو اللہ عزوجل نے ان دونوں کے سینے کو اسلام کے لئے کھولا اور ان دونوں حضرات کی حسن سیرت کا بیان کر رہے تھے چنانچہ میں ان لوگوں کی محفل میں جھڑت احمف بن قیس حیمی والنین ہی والنین کی محفل میں بیٹھ گیا۔ اس محفل میں حضرت احمف بن قیس حیمی والنین نے بھی اس سے حضرت احمف بن قیس حیمی والنین نے اور مایا ہم لوگوں کو حضرت عمر فاروق وی والنین نے اور مایا ہم لوگوں کو حضرت عمر فاروق وی والنین نے اور فارس کے متعدد شہر فتح کروائے۔ ہم نے وہاں سے چاندی پائی اور اس سے اور فارس کے متعدد شہر فتح کروائے۔ ہم نے وہاں سے چاندی پائی اور اس سے اور فارس کے متعدد شہر فتح کروائے۔ ہم نے وہاں سے چاندی پائی اور اس سے اپنے لباس بنوائے۔ جب ہم آپ وی فیکھنے کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ وی النین فیل اور اس سے اپنے لباس بنوائے۔ جب ہم آپ وی فیکھنے کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ وی النین فیل اور اس سے اپنے لباس بنوائے۔ جب ہم آپ وی فیکھنے کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ وی النین فیل اور اس سے اپنے لباس بنوائے۔ جب ہم آپ وی فیکھنے کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ وی النین فیکھنے کے ایکھوں کو آپ وی النین کی ایکھوں کو آپ وی النین کی کے کہ کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ وی کے کھور کو کے کو کو کو کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ وی کھور

الانتست عملي وق كرنسل المعلق ا

نے ہمیں ویکھ کراپنا منہ پھیرلیا۔ ہمیں بہ بات گراں گزیری تو ہم حضرت عبداللہ بن عمر جلی بنا میں خدمت میں حاضر ہوئے اور ان سے آب بنائیڈ کی اس ناراضگی کا سبب دریافت کیا۔حضرت عبداللہ بن عمر طالع نے فرمایا کیاتم نے انہیں ایسالیاس استعال كرتے ديكھا جوحضور نبي كريم يضيئينية اور حضرت ابو بكرصديق بنالليمة نه استعال کرتے ہوں چنانچہ ہم گھر واپس گئے اور وہ لباس تبدیل کر کے آئے اور جس لباس میں آپ طالعہ ہمیں ویکھا کرتے تھے اسی لباس میں ہم ان کے باس گئے۔آپ طلان النائذ نے ہمیں ویکھا تو کھڑے ہو گئے اور ہم میں سے ہرایک سے سلام کیا۔ ہم نے آب رٹائٹنڈ کے سامنے مال غنیمت پیش کیا جوآپ رٹائٹنڈ نے ہم لوگوں میں برابر تقتیم کر دیا۔ اس دوران مال غنیمت میں سے چھو ہارے اور گھی کا حلوہ بھی نکلا۔ آپ ر النفر نے ان کی خوشبوسو تھی تو آب طالفر نے ہمیں مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔ ''الله كی قشم! اے مہاجرین اور انصار کی جماحت! تم میں ہے بیٹاباب سے اور بھائی بھائی سے اس کھانے پرلڑے گا۔" پھر حضرت عمر فاروق طالٹینے نے اس کھانے کو ان لوگوں کی اولا دوں کے یاس پہنیا دیا جوحضور نبی کریم مطابقات کی حیات مبارکہ میں شہید ہو چکے تھے۔ اس کے بعد آپ رظافن واپس ہو لئے۔ صحابہ کرام مِن اُنٹیم کی ایک جماعت نے ان کے

"اس شخص کے زہد کو اور اس کے حلیہ کو دیکھو اس شخص نے ہمارے ہمارے نفوس کو بھی حقیر کر دیا ہے۔ اللہ عزوجل نے ہمارے ہاتھوں قبصر و کسری کے شہر فتح کروائے، مشرق ومغرب میں اپنھوں قبصر و کسری کے شہر فتح کروائے، مشرق ومغرب میں اپنے دین کی سربلندی کے لئے ہمیں چنا اور جب ہم آپ دائین

کو دیکھتے ہیں تو آپ طالعی کے لباس پر جا بجا پیوند لگے ہوئے ہوتے ہیں۔''

آخرت کوتر جیح دینے کا فیصلہ:

حضرت قادہ بڑائیڈ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق بڑائیڈ فرمایا کرتے تھے کہ اگر میں چاہوں تو میں تم ہے اچھا کھانا کھاؤں اور تم ہے نرم کپڑے بہنوں لیکن میں اپنے طیبات کو باقی رکھنا چاہتا ہوں اور آخرت میں طیبات کا خواہاں ہوں۔
راوی کہتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق بڑائیڈ ملک شام تشریف لائے تو آپ بڑائیڈ کے سامنے ایسا کھانا پیش کیا گیا جو انہوں نے پہلے بھی نہیں و یکھا تھا۔ آپ بڑائیڈ نے دریافت فرمایا یہ میرے لئے ہاور جو فقراء و مساکین و صال پاچکے ہیں بڑائیڈ نے دریافت فرمایا یہ میرے لئے ہاور جو فقراء و مساکین و صال پاچکے ہیں انہوں نے بھی جو کی روٹی سے بھی اپنا پیٹ نہ جمرا، ان کے لئے جنت ہے۔
راوی کہتے ہیں یہ فرما کر حضرت عمر فاروق بڑائیڈ زاروقطار رونے لگے اور فرمانے گئے۔

''اگر ہمارا حصہ اس متاع دنیا ہے ہے اور وہ لوگ جنت میں ہیں ہیں تو ان کے اور ہمارا حصہ اس متاع دنیا ہے ہے۔'' ہیں تو ان کے اور ہمارے درمیان فاصلہ زیادہ ہو گیا ہے۔'' مال خرج کرنے کا طریقہ:

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنفذ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق والنفذ نے مجھے بلوایا اور جب میں آپ والنفذ کے دروازے پر پہنچا تو میں نے اندر سے آپ والنفذ کے دروازے پر پہنچا تو میں نے اندر سے آپ والنفذ کے دو نے کی آوازسی میں پریشان ہو گیا کہ شاید پچھ سانحہ پیش آ گیا ہے۔ جب میں گھر کے اندر داخل ہوا تو میں نے آپ والنفذ سے رونے کی وجہ دریافت کی تو آپ والنفذ مجھے لے کرایک کو تھڑی میں داخل ہو گئے جس کے اندر بڑے بڑے

بورے رکھے ہوئے تھے۔ آپ رخالفہ نے مجھے مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔
"آج آلِ خطاب الله عزوجل کے نزدیک ذلیل ہوگئ، اگر
اللہ عزوجل چاہتا تو یہ مال مجھ سے پہلے دونوں حضرات (حضرت
محمد منظ المجھ اللہ عظم محمد منظ الحق اللہ علیہ اللہ علیہ مال کے خرج کا کوئی طریقہ مقرر کرتے۔"
میرے لئے اس کے خرج کا کوئی طریقہ مقرر کرتے۔"

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف رظائفیٰ فرماتے ہیں میں نے حضرت عمر فا ۔ون رظائفیٰ سے کہا آپ رظائفیٰ ہمارے پاس بیٹھیں ہم سوچتے ہیں۔ پھر ہم لوگوں نے باہم مشورہ سے طے کیا امہات المومنین کے لئے چار چار ہزار درہم، مہاجرین کے لئے ہمی چار ہزار درہم، الصار کے لئے تین تین ہزار درہم اور باقی سب کے لئے دو دو ہزار درہم تجویز کئے گئے۔اس طرح ہم نے وہ سارا مال تقسیم کر دیا۔

اتباع رسول الله ينطيعين كا فيصله:

حضرت عبداللہ بن عمر بران خین فرماتے ہیں والد بزرگوار حضرت عمر فاروق برائی اسے باس آئے اور میں اس وقت وسترخوان پر بیٹھا ہوا تھا۔ میں نے آپ برانٹی کو صدر مجلس میں جگہ دی۔ آپ برانٹی نے کھانے کی طرف ہاتھ بڑھاتے ہوئے ہو اللہ برحی اور لقمہ اٹھایا۔ پھر مجھے فرمایا مجھے چکنائی والے کھانے کا مزہ محسوس ہوتا ہے لیکن وہ چکنائی گوشت کی نہیں۔ میں نے عرض کیا میں بازار موٹے گوشت کی تلاش میں گیا تھا تا کہ فرید لاؤں۔ میں نے موٹا گوشت گراں دیکھا تو گوشت کی تلاش میں گیا تو اور ایک درہم کا تھی۔ آپ بڑائٹی نے فرمایا کہ حضور ایک درہم کا تھی۔ آپ بڑائٹی نے فرمایا کہ حضور نی کریم میں نے فرمایا کہ حضور نی کریم میں تو وہ ایک کو کھایا کرتے اور وسری کو صدقہ کر دیے۔ میں نے عرض کیا کہ آپ بڑائٹی آئی کھا لیکے آئندہ میں دوسری کو صدقہ کردیے۔ میں نے عرض کیا کہ آپ بڑائٹی آئی کھا لیکے آئندہ میں

مجمع دوچیزی جمع نبیں کروں گا۔ آپ بٹائٹۂ نے فرمایا میں بیبیں کھا سکتا۔ دودھ جیتے بچوں کا وظیفہ مقرر کرنے کا فیصلہ:

حضرت عبداللد بن عمر طلحها ہے مروی ہے فرماتے ہیں مدینه منورہ میں ا یک تجارتی قافله آیا اور اس قافلے نے عیدگاہ میں قیام کیا۔ والد بزرگوار حضرت عمر فاروق طلیفنے کواس قافلے کی آمد کی خبر ہوئی تو آپ طلیفئے رات کے وقت نکلے اور حضرت عبدالرحمٰن بن عوف طَاللَهُ كُو بھی اینے ساتھ لے لیا اور کہا ہم دونوں اس قافلے کی حفاظت کرتے ہیں تا کہ کوئی انہیں نقصان نہ پہنچائے۔ پھر دونوں حضرات رات بھراس قافلے کی حفاظت کرتے رہے اور باری باری نماز بھی پڑھتے رہے۔ بھر والد بزرگوارنے ایک بیچ کے رونے کی آواز سی تو اس خیمے کی جانب بڑھے جہاں سے آواز آ رہی تھی اور اس بیچے کی مال سے کہاتم خدا کا کیجھ خوف کرو اور اینے بچے کا خیال رکھو۔ آپ ڈاٹٹیڈ بیفر ماکر آپنے پہرے والی جگہ پر واپس لوٹ آئے اور پھر بچھ دہر بعد آپ طالفیز کواس نیچے کے رونے کی آواز سنائی دی۔ آپ بنالنیز ایک مرتبہ پھراس خیمے کے پاس گئے اور اس بیچے کی مال سے کہاتم اپنے بیچے کے حق میں کتنی بری ہو کہ تمہارا بچہرور ہاہے۔ وہ عورت بولی اے اللہ کے بندے! تو کون ہے اور تو مجھے کیوں بار بار تنگ کرتا ہے میں اسپنے بیچے کا دودھ چھڑانے کے کئے اسے بہلا پھسلارہی ہوں اور تو آجاتا ہے؟ آپ طالفنے نے بوجھا تو اس کا دورھ كيول حيمرانا جابتي ہے؟ وہ بولى ميں نے سنا ہے امير المونين اس بيح كا وظيفه مقرر کر دیتے ہیں جو بچہ دودھ یتنے والے نہ ہو۔ آپ طافعۂ نے یو چھا اس بیجے کی عمر کیا ہے؟ وہ بولی بیات ماہ کا ہو چکا ہے۔ آب طابعہ نے فرمایا اللہ عزوجل تیرا بھلا کرے تو اس کا دورہ اتن جلدی نہ جھڑا۔ بھرآ پ بڑاٹنیڈ وہاں سے لوٹے اور نماز

فجر کا وقت ہو چکا تھا۔ آپ بڑائیڈ نے نماز فجر اداکی ورکافی دیر تک روتے رہے۔
لوگوں نے آپ بڑائیڈ سے رونے کی وجہ پوچھی تو آپ بڑائیڈ نے فرمایا عمر (زائیڈ)
ہلاک ہوگیا اور اس نے نجانے کتنے بچے یوں ہلاک کر دیئے جن کا دودھ ان کی
ماؤں نے اس وجہ سے چھڑا دیا کہ ان کے بچے وظیفہ کے حقد اربن جا کیں۔ پھر
آپ بڑائیڈ نے حکم دیا کہ تمام دودھ پیتے بچوں کا بھی وظیفہ مقرر کیا جائے اور ان کی
مال آئندہ ان کا دودھ اس وقت تک نہ چھڑا کیں جب تک کہ دہ اس قابل نہ ہو جا کیں
کہ جانور کا دودھ نی سکیں۔

حلوه نه کھانے کا فیصلہ:

حفرت عتبہ بن فرقد رظائیہ فرماتے ہیں میں حفرت عمر فاروق رظائیہ کیا پاس حلوے کے کئی ٹوکڑے لے کر آیا۔ آپ رظائیہ نے دریافت کیا کہ اس میں کیا ہے؟ میں نے کہا کھانا ہے جو میں آپ رظائیہ کے لئے لایا ہوں کہ آپ رظائیہ صبح ہوتے ہی لوگوں کے کاموں میں لگ جاتے ہیں میں نے بہتر جانا کہ جب آپ رظائیہ لوگوں سے فارغ ہوں تو اس میں سے تھوڑا سا کھالیا کریں تا کہ آپ رظائیہ کو تقویت بہنچ اور آپ رظائیہ کی صحت برقرار رہے۔ آپ رظائیہ نے میری بات سی تو فرمایا۔

''اے عتبہ(رٹائٹنے')! میں کھے تتم دیتا ہوں کیا تو نے ہرمسلمان کوابیا ٹوکرا دیا ہے؟''

حضرت عتبہ بن فرقد مطابقۂ فرماتے ہیں میں نے عرض کیا امیر المومنین! اگر میں قیس کے تمام مال کو بھی خرچ کر دوں تو تب بھی مجھ میں اتی گنجائش نہیں کہ میں تمام مسلمانوں کو ایبا ٹو کرا بھجوا سکوں۔ آپ مظافیۂ نے فرمایا پھر مجھے بھی اس کی کوئی حاجت نہیں۔ اس کے بعد آپ رظائفۂ نے ایک پیالہ ترید منگوایا جس میں موئی روٹیاں اور سخت گوشت تھا۔ آپ رظائفۂ اس کو کھانے گئے اور مجھے بھی کھانے کی دوشیاں اور سخت گوشت تھا۔ آپ رظائفۂ اس کو کھانے گئے اور مجھے بھی کھانے کی دوس دی۔ میں سفید بوٹی کی طرف مائل ہوا اور گمان کیا سے چر بی ہوگی مگر وہ پٹھا تھا اور بوٹیوں کا بیحال تھا کہ میں انہیں چبا تا مگر نگل نہ سکتا تھا۔ آپ رڈائٹؤ کی نظر مجھ سے چوکتی تو میں اس بوٹی کو بیالہ کے بیچ میں سرکا ویتا۔ کھانے کے بعد آپ رٹائٹؤ نے نہوے نہائٹؤ نے بعد آپ رٹائٹؤ نے بھے سے فر مایا نے نبیذ کا بیالہ منگوایا جو سرکہ ہوتے ہوئے نیچ گیا تھا۔ آپ رٹائٹؤ نے بھے سے فر مایا اسے پی لو۔ میں نے اس بیالے کومنہ سے لگایا مگر بی نہ سکا۔ آپ رٹائٹؤ اس بیالے کو بی گیا تھا۔ آپ رٹائٹؤ اس بیالے کو بی گئے اور پھر مجھ سے فر مایا۔

اینا کرته بهننے کا فیصله:

حضرت قمارہ والنفیٰ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق وظائفیٰ اپنے دور خلافت میں اون کا جبہ پہنتے تھے اور اس جبہ پر جا بجا چر سے پیوند ہوتے تھے۔ آپ وٹائفیٰ اسی حالت میں بازاروں میں بھی گھو متے اور آپ وٹائفیٰ کے کندھے پر درہ ہوتا جس سے آپ وٹائفیٰ لوگوں کو اوب دیتے۔

حضرت عروه والنفيذ فرمات بين جب حضرت عمر فاروق والنفيذ ابله تشريف

www.iqbalkalmati.blogspot.com والمعلق المعلق المعل

الاے اور آپ رہائیڈ کے ساتھ مہاجرین و انصار کی ایک جماعت تھی۔ آپ رہائیڈ نے اسقف کو اپنا کرتہ دیا جس میں جابجا کھدر کے پیوند لگے ہوئے تھے اور جو پیچے سے اس وجہ سے پھٹ چکا تھا کہ آپ رہائیڈ سواری پر ایک لمبے سفر میں بیٹے رہے تھے اور آپ رہائیڈ نے اسقف سے فر مایا اس میں پیوند لگا دو۔ اسقف نے آپ رہائیڈ کا کرتہ لیا اور اس جسیا ایک کرتہ ہی کر آپ رہائیڈ کی خدمت میں حاضر ہوگیا۔ آپ رہائیڈ نے لیو چھا کہ یہ کیا ہے؟ اسقف نے کہا یہ آپ رہائیڈ کا کرتہ ہے جس میں نے بیوندلگا دیا اور یہ کرتہ میرے باس سے آپ رہائیڈ کے لئے ہے۔ میں نے بیوندلگا دیا اور یہ کرتہ میرے باس سے آپ رہائیڈ کے دونوں کرتوں کو ویکھا اور پھر اپنے ہی کرتے کو دوبارہ پہنچ ہوئے آپ رہائیڈ نے دونوں کرتوں کو ویکھا اور پھر اپنے ہی کرتے کو دوبارہ پہنچ ہوئے فرمایا اس کا کیڑ اپسینہ جذب کرنے کے لئے اچھا ہے۔

حضرت جابر بن عبدالله طالله كونفيحت:

حضرت جابر بن عبدالله وظائمة فرماتے بین میری حضرت عمر فاروق وظائمة فرماتے بین میری حضرت عمر فاروق وظائمة سے ملاقات ہوئی اور اس وقت میرے ہاتھ میں ایک درہم کا گوشت تھا۔ آپ وظائمة فرمات میں نے محص سے دریافت کیا ہے کیا ہے؟ میں نے عرض کیا گھر والوں کی فرمائش پر ایک درہم کا گوشت خریدا ہے۔ آپ وظائمة نے فرمایا۔

''تم میں سے کوئی ایک اس بات کا ارادہ کیوں نہیں کرتا کہ اپنے پیٹے پیٹ کو اپنے پڑوی اور اپنے پچیرے بھائیوں کے لئے بھوکار کھے۔ کیا تم نے اللہ عز وجل کا بیفر مان نہیں سنا کہتم اپنی لذت کی چیز یں دنیوی زندگی میں حاصل کرچکو ہواور ان کوخوب برت ہے ہو۔''

حضرت جابر بن عبدالله مطالفية فرمات بين كه حضرت عمر فاروق مظافقة كي

www.iqbalkalmati.blogspot.com 245 كالمنت عمر التنافي الموقع كي فيصليك المسلك المسلك

بات من کرمیرے دل میں خیال پیدا ہوا کہ کاش بیدا یک درہم مجھے سے گر گیا ہوتا یا پھرمیری ملا قات حضرت عمر فاروق طالفنڈ سے نہ ہوئی ہوتی۔

برده بوشی کی تنبیه:

منقول ہے ایک شخص حضرت عمر فاروق طالفیٰ کی خدمت میں حاضر ہوا اورعرض کیا میری ایک بیٹی تھی جسے میں نے زمانہ جاہلیت میں زندہ درگور کر دیا تھا مرمرنے سے پہلے اسے قبر سے نکال لایا اور اس نے ہمارے ساتھ زمانہ اسلامی پا لیا اور اب اسلام لے آئی۔ جب وہ اسلام کے آئی تو اس نے ایک ایسے گناہ کا ارتکاب کیا جس کی وجہ ہے اس پر حدود اللہ عائد ہوتی تھی۔ اس لڑ کی نے حجری اٹھائی تا کہ خود کو ذیح کر دے ہم نے اس کو پکڑلیا اور وہ اپنی گردن کی بعض رکیس سنٹ چکی تھی۔ ہم لوگوں نے اس کا علاج کیا یہاں تک کہ وہ اچھی ہوگئی اس کے بعد پھر وہ تو بہ کی طرف متوجہ ہوئی اور بڑی عمدہ تو بہ کی۔ جب قوم میں سے اس کا رشتہ آیا تو میں نے ان کو اس کی وہ حالت جس پروہ (پہلے) تھی بتا دی۔ بیان کر آپ ٹاٹنٹڑ نے فرمایا جس چیز کی اللہ عز وجل نے پردہ بوشی کی تو اس کے ظاہر کرنے کا قصد کرتا ہے؟ خدا کی شم! اگر تو نے کسی شخص ہے بھی اس حالت کا اظہار کیا تو میں تخصے وہ سزا دوں گا جوتمام شہر والوں کے لئے باعث عبرت ہو جائے۔ جاؤ اس كا نكاح كرجس طرح ايك بإكدامن مسلمان عورت كا نكاح كياجاتا ہے۔

تم نے کوئی بہتر کام نہیں کیا:

حضرت عمر فاروق و النفؤ کے پاس ایک عورت آئی اس نے عرض کیا امیر المومنین! میں نے ایک بچہ پایا اس برایک مصری سفید کپڑا تھا جس میں سودینار تھے۔ المومنین! میں نے ایک بچہ پایا اس برایک مصری سفید کپڑا تھا جس میں سودینار تھے۔ میں نے اس بچہ کولیا اور اس کے لئے ایک دودھ بلانے والی اجرت پرلی- اب

المنت منت منت منت المول كي يسل المول كي يسل المول المو

چارعورتیں میرے پاس آئی ہیں اور اس کو پیار کرتی ہیں کہ بیان کا بچہ ہے۔ ہیں بیہ نہیں میرے پاس آئی ہیں اور اس کو پیار کرتی ہیں کہ بیان کا بچہ ہے۔ ہیں بیان بار بی کہ اس بچے کی مال کون ہے؟ آپ بڑائیڈ نے اس عورت سے کہا جب وہ آئیس تو تم مجھے بلا لینا چنا نچہ اس عورت نے آپ بڑائیڈ کو بلایا۔ آپ بڑائیڈ نے ان عورتوں میں سے ایک عورت سے پوچھا کہ تم میں سے اس بچے کی مال کون ہے؟ اس عورت نے کہا۔

"الله كى تسم! اے عمر (طالفنے)! تم نے كوئى بہتر كام نہيں كيا جس عورت كى الله عزوجل نے پردہ پوشی فرمائی ہے آپ طالفنے اس كا پردہ ظاہر كررہے ہیں۔"

حضرت عمر فاروق طالنیز نے اس عورت جس کے پاس بچہ تھا اس سے

ر مایا به

'' جب بیمورتیں تیرے آپاس آپا کریں تو تم ان سے پوچھ پچھ نہ کیا کرو بلکہ ان کو بچے کے ساتھ احسان کرنے دویہاں تک کہ بیدواپس چلی جا کیں۔''

حضرت سلمان فارى طالفيُّه كى تكريم:

حضرت الس بن ما لک رظافیہ ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت سلمان فاری رظافیہ ، حضرت عمر فاروق رظافیہ کے پاس تشریف لائے۔ آپ رظافیہ اس وقت تکمیہ کے ساتھ ملک لگائے ہیں ہے۔ آپ رظافیہ کے ساتھ ملک لگائے ہیں ہے۔ آپ رظافیہ نے حضرت سلمان فاری رظافیہ کو دیا۔ حضرت سلمان فاری رظافیہ کا یہ فعل دیکھ کرفر مایا۔

" بے شک اللہ اور اس کے رسول مشاری اللہ نے سے کہا ہے۔"

المناسبة عملي الموق كرفيها

حضرت عمر فاروق برات نے حضرت سلمان فاری برات میں حضور نبی کریم ہے ہے۔ دریافت کیا تو حضرت سلمان فاری برات نبی کریم ہے ہے۔ حضور خدمت میں حاضر ہوا تو حضور نبی کریم ہے ہے۔ اور ای کی مسلمان ایسانہیں جس کے باس اس کا مسلمان جمائی ہے اور اس کی عزت افزائی کرے یہاں اس کا مسلمان بھائی ہے اور اس کی عزت افزائی کرے یہاں کے کہاں کہ کہاں کے کہاں کی مغفرت کروے۔''

ایک برها کوراضی کرنے کا فیصلہ

ایک مرتبہ حضرت عمر فاروق والنیخ کی دوران گشت ایک بوڑھی اور نادار عورت سے ملاقات ہوئی۔ آپ والنیخ نے اس سے خیریت دریافت کی تو اس نے امیر المونین کوکوسنا شروع کر دیا۔ وہ بوڑھی عورت یہ نہ جانتی تھی کہ آپ رٹائیخ ہی امیر المونین ہیں۔ آپ والنیخ نے اس عورت سے امیر المونین کو کوسنے کی وجہ امیر المونین ہیں۔ آپ والنیخ نے اس عورت سے امیر المونین کو کوسنے کی وجہ دریافت کی تو اس نے کہا جب سے وہ امیر المونین سے جیں انہوں نے میری کوئی مدنہیں کی۔ آپ والنیخ نے اس بوڑھی عورت سے معذرت کی ادراس کی بھر بور مالی المداد کی۔ جب اس بوڑھی عورت کو پہتہ چلا وہ امیر المونین حضرت عمر فاروق بوالنی نے اس بوڑھی عورت سے معذرت کی ادراس کی بھر بور مالی المداد کی۔ جب اس بوڑھی عورت کو پہتہ چلا وہ امیر المونین حضرت عمر فاروق بوالنی نے اس بوڑھی عورت سے فرمایا۔

''اس میں تمہاری کوئی غلطی نہیں غلطی میری تھی جو میں نے تم میر توجہ نہ کی۔'' www.iqbalkalmati.blogspot.com منتسب عمر شناول کے فیصلے کاروق کے فیصلے کاروق کے فیصلے کاروق کے کیسلے کاروق کے کیسلے کاروق کے کاروق کے کیسلے کیسلے کاروق کے کیسلے کاروق کے کیسلے کیسلے کاروق کے کیسلے کے کیسلے کے کیسلے کے کیسلے کے کئی کے کئے

ال کے بعد حضرت عمر فاروق طائعۂ نے اس عورت سے ایک تحریر لکھوائی کہ امیر المومنین حضرت عمر فاروق طائعۂ نے میرے حقوق کی ادائیگی میں جو کوتا ہی کی آخر میں نے اس بر انہیں معاف کیا۔ آپ طائعۂ نے میتر کریرا پنے بیٹے کو دی اور اس سے فرمایا۔

''جب میری موت ہو جائے تو بیتحریر میں ساتھ قبر میں رکھ ''''

<u>قائلے کی حفاظت کا فیصلہ:</u>

حضرت الی یزید رظافیٰ فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق رظافیٰ اس عورت سے ملے جس کا نام خولہ (رظافیٰ) ہے۔ بیالوگوں کے ساتھ چلی جا رہی تھیں انہوں

المنت عمر المنتقون أوق كي فيدل

نے آپ طافئ کے قافلے کو تھرایا۔ آپ طافئ نے ان کی بات میں اور ان کی جو حاجت تھی اے پورا کیا۔ اس دوران آپ طافئ کے قافلے میں سے ایک شخص نے کہا امیر الموسین! آپ طافئ ایک بوڑھی عورت کے روکنے پررک گئے؟ آپ طافئ کیا امیر الموسین! آپ طافئ ایک بوڑھی عورت کے روکنے پررک گئے؟ آپ طافئ نے فرمایا مجھے جھے پر افسوس ہے، کیا تو جانتا ہے کہ یہ عورت کون تھی؟ اس آ دمی نے کہا کہ میں نہیں جانتا۔ آپ طافئ نے فرمایا۔

'' بیخولہ بنت نغلبہ ظافی تھیں، اللہ نے ان کی شکایت ساتویں آسان سے بھی اوپر سنی تھی۔ اللہ کی شم! اگر بیر میرے پاس تمام رات بھی کھڑی رہتیں میں ان کی بات سنتا۔'' تم پہلے ان کے باب جیسا باب لے کرآؤ:

حضرت عمر فاروق را النفیز ایک مرتبه مال تقسیم کرنے گے اور آپ را النفیز نے مال کی تقسیم کا آغاز حضرت سیّدنا امام حسن اور حضرت سیّدنا امام حسین رقی النفیز سے کیا تو آپ را النفیز کے صاحبزاوے حضرت عبدالله را الله و الله علم کریں میں اس کا زیادہ حق رکھتا ہوں اور میں امیر المومنین کا بیٹا ہوں۔ آپ را الله فیز نے بیٹے میں اس کا زیادہ حق رکھتا ہوں اور میں امیر المومنین کا بیٹا ہوں۔ آپ را الله فیز نے بیٹے کی بات سی تو فرمایا تو پہلے ان کے باپ جسیا باپ لے کرآؤ اور ان کے جدامجد جیسا اینا جدامجد لے کرآؤ اور ان کے جدامجد جسیا اینا جدامجد لے کرآؤ اور ان کے جدامجد جسیا اینا جدامجد لے کرآؤ اور کی بات میں امیر المومنین کا بیٹا ہوں۔

راوی کہتے ہیں حضرت سیّدنا امام حسن اور حضرت سیّدنا امام حسین رہی اُندُم نے گھر لوٹ کرتمام واقعہ حضرت علی المرتضٰی بڑائٹوئز کے گوش گزار کیا۔ حضرت علی المرتضٰی دائٹوئڈ نے فرمایا تم جاؤ اور امیر المونیین کو بیہ خوشخبری سناؤ میں نے حضور نبی کریم مضروفی ہے سنا ہے اور حضور نبی کریم مضروبی کواس کی خبر جبرائیل علیانلا نے دی تھی کہ عمر جنتیوں کے سورج ہیں۔ راوی کہتے ہیں حسنین کریمین شی انتیاز کے حضرت عمر فاروق بڑائنٹیز کو جب حضرت علی الرتضی بڑائنٹیز کو جب حضرت علی الرتضی بڑائنٹیز کا فرمان سنایا تو آب بڑائنٹیز نے کہاتم اپنے والد بزرگوار سے کہو کہ وہ میتح برلکھ دیں۔

ایک روایت کے مطابق حفرت عمر فاروق بڑائیڈ نے جب حسنین کریمین بڑائیڈ سے یہ بات نی تو بچھ صحابہ کرام بڑائیڈ کے ہمراہ حفرت علی الرتضی بڑائیڈ کے ہمراہ حفرت علی الرتضی بڑائیڈ کے ہمراہ حفرت بی کریم بیٹے ہے ایسا گھر پہنچ اور فرمایا اے علی (بڑائیڈ)! کیا آپ بڑائیڈ نے حضور نبی کریم بیٹے ہے ایسا ہے؟ حضرت علی المرتضی بڑائیڈ نے کہا ہاں! ہم نے حضور نبی کریم بیٹے ہے ایسا سا ہے کہ عمر جنتیوں کے سورج ہیں۔ حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے کہا آپ بڑائیڈ بھے ساتے کہ عمر جنتیوں کے سورج ہیں۔ حضرت عمر فالیڈ نے یہ تریم کی کھودی۔

میٹے کریدوے دیں چنا نجہ حضرت علی المرتضی بڑائیڈ نے یہ تریم کی جانب سے عمر بڑائیڈ بن میٹے کی جانب سے عمر بڑائیڈ بن ابی طالب کی جانب سے عمر بڑائیڈ بن خطاب کے لئے کہ حضور نبی کریم بھے کیا ہے کہ جراکیل علیائیم خطاب کے لئے کہ حضور نبی کریم بھے کیا کہ عمر جنتیوں کے سے اور انہوں نے اللہ عز وجل کا پیغام پہنچایا کہ عمر جنتیوں کے سورج ہیں۔'

حضرت عمر فاروق رفائعی نے بیتریراپنے پاس محفوظ کر لی اور جب آپ رفائعی کو خوش کی کہتم فلال تحریر لاؤ اور رفائعی کو خوش کی کہتم فلال تحریر لاؤ اور جب وہ بھی جب وہ تحریر کے آپ وہ بھی خوس کی کہتم فلال تحریر کے فن میں جب وہ تحریر کے آپ وہ بھی نے فر مایا کہ اسے میر کے ساتھ میر کے فن میں رکھ دینا چنا نچہ آپ وہ بھی نے فر مان کے مطابق بوقت تد فین ایسا ہی کیا گیا۔ ام المومنین حضرت سودہ وہ بھی نے کا اکرام:

حضرت عمر فاروق رئائف نے اپنے دورِ خلافت میں ام المومنین حضرت مودہ بڑتی کی خدمت میں درہموں سے بھری ہوئی ایک زنبیل بھیجی۔ آپ بڑانفیانے

www.iqbalkalmati.blogspot.com 251 منتر عمر التعلق روق كرفيه يل

سمجھا شایداس میں مجوری ہوں۔آپ طالقیانے خادم سے اس بارے میں دریافت
کیا تو اس نے بتایا اس میں درہم ہیں۔آپ طالقیانے اسے حکم دیا یہ تمام درہم فوراً
خیرات کردو میں مجھی کہ مجوری ہوں گی درہم لے کرہم کیا کریں گے؟
امہات المونین فائنی کا اکرام:

ایک روایت کے مطابق حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کے دورِ خلافت میں تمام امہات المومین بڑائیڈ کو بارہ ہزار درہم سالانہ دیئے جاتے ہے۔ آپ بڑائیڈ کے یہ پاس نو پیالے تھے جب آپ بڑائیڈ کے پاس کوئی شے آتی تو آپ بڑائیڈ ان بیالوں میں اس شے کو ڈال کر امہات المومین بڑائی کے پاس بھیج دیا کرتے تھے۔ جب کوئی جانور ذرج ہوتا تو سب سے پہلے از واج مطہرات بڑائی کی خدمت میں گوشت بھیجا جاتا تھا۔

حضرت اسلم ولا تنفظ ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق ولا تنفظ کی خدمت میں جزید کے بچھاونٹ آئے جس میں ایک اندھی اونٹنی بھی تھی۔ آپ ولا تنفظ نے اس اندھی اونٹنی کو ذرخ کرنے کا تھم دیا۔ جب اونٹنی ذرخ ہوگئی تو آپ بڑا تنفظ نے اس کا گوشت امہات المونیین و کھیجا۔ اس کے بعد جو گوشت نے گیا آپ ولا تھی نے اس کو بچوا کراس گوشت سے مہاجرین اور انصار کی دعوت کی۔ میں مسلمانوں کا مال ہے:

حضرت من بھری بڑگائی ہے مروی ہے قرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ حضرت عمر فاروق بڑگائی ہے مروی ہے قرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ حضرت عمر فاروق بڑگائی کے پاس بے شار مال غنیمت آیا۔ ام المومنین حضرت حفصہ بڑگائی اور کہا آپ بڑگائی کی بٹی بھی تھیں ان کو اطلاع ملی تو آپ بڑگائی حاضر خدمت ہو تیں اور کہا اس مال میں آپ بڑگائی کے اقرباء کا بھی حق ہے اور اللہ عزوجل نے رشتہ داروں

حضت عمش وی کے فیصلے کے مسلوک کا تھم دیا ہے۔ آپ بڑائٹوڈ نے فر مایا۔ سے حسن سلوک کا تھم دیا ہے۔ آپ بڑائٹوڈ نے فر مایا۔ "میری بیاری بیٹی! اقر باء کا حق میرے مال میں ہے جبکہ بیہ

مسلمانوں کا مال ہے۔'' دونسالن ہرگز نہ چکھوں گا:

حضرت ابوحازم بنائنی سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رفائنی این بیٹی ام المومنین حضرت حفومت حفومت و رفائنی این بیٹی ام المومنین حضرت حفصہ رفائنی اسے گھر تشریف لے گئے۔ آپ رفائنی نے والد بزرگوار کے آگے دو باس سالن اور روٹی پیش کیں۔ حضرت عمر فاروق رفائنی نے فرمایا۔

"دوسالن اورایک برتن میں؟ میں انہیں ہرگز نہ چکھوں گا یہاں تک کہ اللہ عز وجل سے مل جاؤں۔'' ام المومنین حضرت زینب ظالفۂ اینت جمش کا اکرام:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق را اللہ کے بات وظیفہ بھیجا تو آپ را اللہ فیا نے اللہ کو اللہ کا اللہ کو اللہ کا دوروہ اسے میری نسبت تقسیم کرنے فر ایا اللہ کا دوروہ اسے میری نسبت تقسیم کرنے پر زیادہ قدرت رکھتے تھے۔ آپ را اللہ کا کہ بیاآ پر را اور کھر قاصد سے کہا کہ تم آپ را کھن نے اپ اللہ کہ اللہ کا اللہ کہ کہا کہ تم اللہ کا دوروں کھر آپ را اللہ کہ کہا کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہا کہ کہا کہ کہ کہا ہے کہا کہ کہا ہے کہا کہ کہا کہ کہا کہ کہا کہ کہا کہ کہا کہ کہا ہے کہا ہے

الانتستة عمين أوق كي فيعل المحالي المحالية المحا

پچای درہم موجود ہتھ۔ پھر آپ خلیجٹا نے اپنے ہاتھ بارگاہِ خداوندی میں بلند کئے اور بوں دعا مانگی۔

"اے اللہ! مجھے آئندہ برس عمر (طلقہ) کے وظیفہ سے محروم رکھنا۔"

روایات میں آتا ہے اس برس ام المومنین حضرت زینب طابعی بنت جش کا وصال ہو گیا اور آپ طابعی کے وصال کے بعد غرباء و مساکین کہتے تھے کہ ہماری مدد کرنے والی اس دنیا سے رخصت ہو گئیں۔ آپ طابعی کی نماز جنازہ حضرت عمر فاروق طابعی نے برد صالی ۔

ام المونين حضرت صفيه طلطها كي حق كوئي:

روایات میں آتا ہے ام المومنین حضرت صفیہ طالع اللہ کنیز نے حضرت عمل ایک کنیز نے حضرت عمل فاردق طالع ایک کنیز نے حضرت عمر فاروق طالع النے اللہ عندی کی کہ آپ طالع اللہ کو ہفتہ کا دن بہت عزیز ہے اور آپ طالع اللہ کی کہ آپ طالع اللہ کی کہ آپ طالع کی کہ اور آپ طالع کی کہ اور آپ طالع کی کہ اور آپ طالع کی کہ کہ کے دل میں زم جذبات رکھتی ہیں۔

حضرت عمر فاروق والنفظ نے ام المونین حضرت صفیہ والنفظ ہے اس معاملہ میں دریافت کیا۔ آپ والنفظ نے فرمایا اللہ عزوجل نے ہمیں جمعہ کا مبارک دن عطا فرمایا ہے اور پھر میرے لئے ہفتہ کو محبوب رکھنے کی کوئی وجہ باتی نہیں رہتی اور جہاں تک یہود یوں کے لئے نرم جذبات کا تعلق ہے تو وہ میرے رشتہ دار بھی ہیں اور جہاں تک یہود یوں کے لئے نرم جذبات کا تعلق ہے تو وہ میرے رشتہ دار بھی ہیں اور میں ان کے ساتھ اس نا طے سے صلہ رحمی کرتی ہوں۔

حضرت عمر فاروق والنفئ نے ام المونین حضرت صفیہ والنفی کی حق گوئی سن تو متاثر ہوتے ہوئے وہاں سے چلے گئے۔

والمستريخ الموق كرفيها

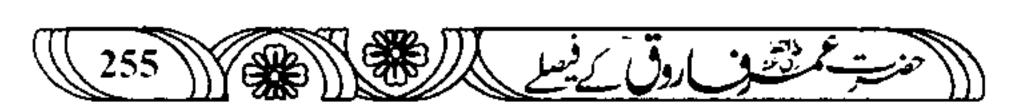
ز وجه کوعنراورمثک نه دینے کا فیصله:

حضرت اساعیل بن محمد بن سعد بن ابی وقاص براتی بنا ہے مروی ہے فرماتے ہیں بحرین سے حفرت عمر فاروق براتی کی خدمت میں عبر اور مشک آیا۔
آپ براتی کو بن سے حضرت عمر فاروق براتی کی میں کوئی الی عورت پاتا جو اچھا تولتی اور میرے لئے اس خوشبو کو تولتی یہاں تک کہ میں اسے مسلمانوں کے درمیان تقسیم فرما دیتا۔ آپ براتی کی زوجہ حضرت عاسکہ بنت زید براتی کہا میں اچھا تولتی ہوں آپ براتی کی زوجہ حضرت عاسکہ بنت زید براتی کہا میں اچھا تولتی ہوں آپ براتی کی دوجہ حضرت کا سے تول دوں۔ آپ براتی کی نامی نامی ایس کھے دیجئے میں اسے تول دوں۔ آپ براتی نظیاں نہیں! مجھے ڈر ہے تو اسے لے اور اس طرح کرے۔ پھر آپ براتی کی ایک ایک ایک ایک ایک کانوں کے بالوں کے پاس لگا نیں اور اس کے ذریعہ اپنی گردن پر ہاتھ پھیرے اپنی کانوں کے بالوں کے پاس لگا نیں اور اس کے ذریعہ اپنی گردن پر ہاتھ پھیرے اپنی کانوں کے بالوں سے بچھ زیادہ مل جائے۔

تو این اولا دیرخودخرج کر:

حضرت حسن بھری رہائیؤ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق رہائیؤ نے ایک بی کو دیکھا جو بہت ہی نازک تھی اور نہایت دبلی بیلی تھی۔ آپ رہائیؤ نے دریافت فرمایا یہ بی کس کی ہے؟ حضرت عبداللہ بن عمر رہائیؤن نے عرض کیا یہ بھی آپ رہائیؤن کی ہی بیٹی ہے۔ آپ رہائیؤن نے پوچھا یہ میری کون می بیٹی ہے؟ حضرت عبداللہ بن عمر رہائیؤن نے دریافت حضرت عبداللہ بن عمر رہائیؤن نے دریافت کیا یہ میری بیٹی ہے۔ آپ رہائیؤن نے دریافت کیا اس کی یہ حالت کیسی ہے؟ حضرت عبداللہ بن عمر رہائیؤن نے عرض کیا آپ رہائیؤن نے مال اس پرخرج نہیں کرتے؟ آپ رہائیؤن نے فرمایا۔

" ہاں! خدا کی شم بہی بات ہے کھے تیرا بچہ س قدر پیارا ہے تو اپنی اولاد برخود وسعت کر۔"



رونے کی وجہ:

حضرت ابوسنان بڑائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں میں حضرت عمر فاروق والنیڈ کے پاس آیا اور آپ بٹائیڈ کے پاس مہاجرین اولین کی ایک جماعت تشریف فرماتھی۔ آپ بٹائیڈ نے ایک شخص کو بھیج کر ایک سفط طلب کیا جو کہ ایک برتن تھا اور عواتی قلعہ سے لایا گیا تھا، اس میں ایک انگوشی تھی۔ آپ بٹائیڈ کے پاس موجود ایک بیجے نے اس انگوشی کو منہ میں ڈال لیا۔ آپ بٹائیڈ نے اس بیچ کے منہ سے وہ انگوشی نکالی اور اس کے بعد رونا شروع کر دیا۔ مہاجرین نے آپ بٹائیڈ سے اس انگوشی نکالی اور اس کے بعد رونا شروع کر دیا۔ مہاجرین نے آپ بٹائیڈ سے اس اور آپ بڑائیڈ نے اس کے بعد رونا شروع کر دیا۔ مہاجرین نے آپ بٹائیڈ نے فرمایا۔ اور آپ بڑائیڈ کو دشمنوں پر غالب کیا اور آپ بڑائیڈ کے ذریعے دین اسلام کوتقویت بخش ۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا۔ اور آپ بڑائیڈ کے ذریعے دین اسلام کوتقویت بخش ۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا۔ دنیا فتح کی جاتی ہے تو اللہ عز وجل قیامت تک ان میں عداوت ونیا فتح کی جاتی ہے تو اللہ عز وجل قیامت تک ان میں عداوت اور میں آسی ڈرسے روتا ہوں۔ "

ایک بوڑھے ذمی کواس کاحق دینے کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کا گرر ایک ضعیف ہخض کے پاس سے ہوا جو بھیک ما نگ رہا تھا۔ آپ بڑائیڈ نے اس سے بھیک ما نگنے کی وجہ دریافت کی تو اس نے کہا کہ مجھ پر جزید لگایا گیا حالانکہ میں مفلس ہوں۔ آپ بڑائیڈ اے اپ گھر لے کہا کہ مجھ پر جزید لگایا گیا حالانکہ میں مفلس ہوں۔ آپ بڑائیڈ اے اپ گھر لے گئے اور پچھ نفذی عطاکی اور بیت المال کے نگران کو ایک رقعہ لکھا کہ اس ذی کے لئے بھی پچھ وظیفہ مقرر کیا جائے یہ انصاف نہیں ہے کہ ہم جوانی سے نفع اٹھا کی اور بڑھانے میں ان کا خیال نہ رکھیں۔

256 256 Line 256

ہلےتم سوار ہو گے:

حفرت حسن بھری رہائی ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق بہائی ایک دن سخت گرمی میں چا در اوڑھے باہر نکلے اور آپ رہائی ہے اپن سے ایک نوجوان گدھے پر سوار گزرا۔ آپ رہائی نے اس سے کہا مجھے اپ ساتھ بٹھا لو۔ اس نوجوان نے گدھے سے بنچ اتر کر کہا امیر المومنین! آپ رہائی سوار ہو جا کیں۔ آپ رہائی نے ساتھ بٹی جا کیں۔ آپ رہائی نے فرمایا نہیں پہلے تم سوار ہو گے اور میں تمہارے بیچھے بنی پر پر جا کیں۔ آپ رہائی نے نے فرمایا نہیں پہلے تم سوار ہو گے اور میں تمہارے بیچھے بنی پر پر میں جا کیں۔ آپ رہائی نے نے موار ہو جا کیا ہوئے اور میں تمہارے بیچھے بنی پر بیٹھوں۔ پھر آپ رہائی نے اصرار پر وہ بیٹھ جاوک کا اور تم چا ہو میں نرم جگہ پر بیٹھوں۔ پھر آپ رہائی نے اصرار ہوئے نوجوان پہلے گدھے پر سوار ہوا اور آپ رہائی نے اس کے بیچھے گدھے پر سوار ہوئے اور اس حال میں مدینہ منورہ میں داخل ہوئے کہ لوگ آپ رہائی نے کو دیکھتے تھے۔ ممبل کا لہاس:

حضرت عیاض و النفیز کے بارے میں حضرت عمر فاروق و النفیز کو معلوم ہوا وہ باریک لباس استعال کرتے ہیں حالانکہ آپ و النفیز نے تخق ہے منع کر رکھا تھا کہ کوئی شخص باریک لباس استعال نہ کرے۔ آپ و النفیز نے حضرت محمد بن مسلمہ و النفیز کو حضرت محمد بن مسلمہ و النفیز کو حضرت محمد بن مسلمہ و النفیز کو تحقیقات کے لئے مصر بھیجا اور جب سے بات ثابت ہوگئی کہ حضرت عیاض و النفیز باریک لباس استعال کرتے ہیں تو آپ و النفیز نے انہیں کمبل کا لباس بہنا دیا۔

مجھے ملامت نہ کرو:

حضرت علی المرتضی طالفیٰ طالفیٰ سے مروی ہے فرمائتے ہیں میں نے ایک صبح حضرت عمر فاروق طالفیٰ المرتضیٰ طالفیٰ کو دیکھا ایک اونٹ پر سوار چلے جارہے ہیں۔ میں نے بچھا امیر المومنین! کہاں جارہے ہیں؟ آپ طالفیٰ نے فرمایا۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com 257) المنتاب المول كيبيل المول كيبيل

"صدق کے اونٹول میں سے ایک اونٹ کم ہوگیا ہے اسے تلاش کررہا ہوں۔"

حضرت علی المرتضی بڑائیڈ فرماتے ہیں ہیں نے کہا آپ بڑائیڈ نے بعد میں آنے والے خلفاء کومشکل میں ڈال دیا ہے۔ حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے جوابا کہا۔

''اے ابوالحن (بڑائیڈ)! مجھے ملامت نہ کرورب ذوالحلال کی قتم! جس نے محمد بھے بیٹھ کو نبی برحق بنا کر بھیجا اگر دریائے فرات کے کنارے ایک سالہ بھیڑکا بچہ بھی مرجائے تو قیامت فرات کے کنارے ایک سالہ بھیڑکا بچہ بھی مرجائے تو قیامت کے دن اس کے بارے میں مجھ سے مواخذہ ہوگا کیونکہ اس امیر کی کوئی عزت نہیں جس نے مسلمانوں کو ہلاک کردیا اور نہ ہی اس بد بخت کا کوئی مقام ہے جس نے مسلمانوں کو خوفزدہ نہیں جس نے مسلمانوں کوخوفزدہ کی اس بد بخت کا کوئی مقام ہے جس نے مسلمانوں کوخوفزدہ

أيك مقدمه كافيصله:

حضرت عمر فاروق والنينؤ کی خدمت میں ایک شخص کو پیش کیا گیا جو چور تھا۔ آپ والنینؤ نے تحقیقات کے بعد اس شخص کے ہاتھ کا نیخ کا تھم جاری کر ویا۔ اس شخص نے عرض کیا میں نے پہلی مرتبہ چوری کی ہے آپ والنینؤ جھے معاف کر دیں آئندہ میں چوری نہیں کروں گا۔ آپ والنینؤ نے فرمایا تم غلط کہتے ہوتم نے اس حسے پہلے بھی کئی بار چوری کی ہے۔ اس شخص نے انکار کر دیا۔ آپ والنینؤ نے دوبارہ اپنی بات و ہرائی تو اس محض نے اقرار کرلیا کہ وہ اس سے بل بھی کئی مرتبہ چوری کر چاہت ہوتہ کے وری کر بات و ہرائی تو اس خص نے اقرار کرلیا کہ وہ اس سے بل بھی کئی مرتبہ چوری کر چکا ہے۔ بھر اس نے آپ والنینؤ سے دریافت کیا کہ میر سے سوا ان چوریوں کوکوئی نہیں جانی آپ والنینؤ کو اس کا علم کیسے ہوا؟ آپ والنینؤ نے فرمایا۔

المنتر بمنتون روق كي يسل

''الله عزوجل اس وفت تک کسی شخص کو ذلیل نہیں کرتا جب تک اس کی برائی صدیت نہ گزرجائے۔''

ا ندھی اونٹنی :

حضرت اسلم بنانتیز سے مروی ہے قرماتے ہیں میں نے حضرت عمر فاروق بنائفۂ سے عرض کیا کہ سواری اور مال برداری کے اونٹوں میں ایک اندھی اونٹی ہے۔ آپ نٹی نٹیڈ نے فرمایا وہ اونمنی کسی کو دے دو، وہ اس سے نفع اٹھائے۔ میں نے عرض کیا وہ اونٹنی اندھی ہے۔ آپ رٹائٹئز نے فرمایا وہ اسے اونٹوں کی قطار میں باندھ لیں کے وہ ان کے ساتھ پھرتی رہے گی میں نے کہا وہ زمین ہے گھاس وغیرہ کیسے کھائے گی؟ آپ بٹائٹڑ نے یو چھاوہ جزیہ کے جانوروں میں سے ہے یا صدقہ کے؟ یہ اس وجہ سے یو چھا کہ جزید کا جانور مالدار اور فقیر دونوں کھا سکتے ہیں اور صدقہ کا جانور صرف فقیر ہی کھا سکتا ہے میں نے کہانہیں وہ جزیہ کے جانوروں میں ہے ہے۔ آپ طالغن نے فرمایا اللہ کی قتم اہم لوگوں نے تو اسے کھانے کا ارادہ کررکھا ہے۔ میں نے کہا میں ویسے نہیں کہدر ہا ہوں بلکہ اس پر جزیبہ کے جانوروں کی نشانی لکی ہوئی ہے۔اس پرآپ رٹائنڈ نے اسے ذبح کرنے کا تھم دیا چنانچہ اسے ذبح کیا کیا۔ آپ طِلْنَفُوز کے باس نو چوڑے بیالے تصاور حضور نبی کریم میشے پیٹا کی از واج مطہرات بن اللہ اللہ اللہ اللہ وجہ سے ان کی تعداد کے مطابق پیالے آپ طالفہ نے بنار کھے تھے۔ آپ رٹائٹیز نے اس اونٹی کا گوشت ان بیالوں میں ڈالا اور پھر حضور نبی کریم مطابقا کی از واج مطهرات بیان کے پاس بھیج دیا اور جو گوشت نج کیا اسے پکانے کا حکم دیا۔ جب وہ یک گیا تو پھرآ پ رٹائٹنڈ نے مہاجرین وانصار کو بلا کرانہیں کھلا یا۔



غرور کا علاج:

حضرت عکرمہ بن خالد بڑائفن ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق بڑائفن کے اور عمدہ لباس پہنے آپ بڑائفن کے بالوں میں کنگھا کئے اور عمدہ لباس پہنے آپ بڑائفن کے پاس آپ نوائفن کے اس پرام پاس آپ نوائفن نے انہیں در ہے مارے جس پروہ رونے گئے۔ اس پرام المونین حضرت حفصہ بڑائفن نے بھائی کا قصور دریافت کیا تو آپ بڑائفن نے فرمایا میں نے اسے مغرور دیکھا چنانچہ اس کے غرور کا یہی علاج تھا میں اسے یوں در ہے میں ا

تم نے مجھےاس عظیم ذات کی یاد دلا دی:

Www.iqbalkalmati.blogspot.com (260) التعلق ا

نبیں دیں گے خواہ وہ باطنی طور پر کتنا ہی نیک اور پر ہیز گار کیوں نہ ہو_۔

حضرت ابو بكر طالفة كى رائے مجھے ہے بہتر ہے:

روایات میں آتا ہے کہ حضرت عمر فاروق را الله علی الله اور الله علی حمد کے دن نظے اور الله عزوجل کی حمد و ثناء اور حضور نبی کریم میں ہے ہے۔ آگر کر (جائینی کی مرجائے تو ہم فلاں کوان کی جگہ قائم کر جانب سے بات بہنی ہے کہ اگر عمر (جائینی) مرجائے تو ہم فلاں کوان کی جگہ قائم کر کے اس سے بیعت کریں گے اللہ کی قشم! حضرت ابو بکر صدیق بڑائینی کی خلافت اچا تک واقع ہوئی اور ہم حضرت ابو بکر صدیق بڑائینی کی مثال کیے ہو سکتے ہیں؟ اچا تک واقع ہوئی اور ہم حضرت ابو بکر صدیق بڑائینی کی مثال کیے ہو سکتے ہیں؟ بلاشبہ حضرت ابو بکر صدیق بڑائینی نے رائے قائم کی کہ مال برابر تقسیم کیا جائے اور بری رائے یہ ہوئی کہ میں تقسیم مال میں فضیلت کا لحاظ رکھوں اگر میں اس سال میری رائے یہ ہوئی کہ میں تقسیم مال میں فضیلت کا لحاظ رکھوں اگر میں اس سال زندہ رہ گیا تو میں حضرت ابو بکر صدیق بڑائینی کی رائے کی طرف رجوع کروں گا اس لئے کہ ان کی رائے میری رائے سے بہتر ہے۔

بربثاشت کے سوا کچھ بھی نہیں:

حضرت مسروق وظائفۂ فرماتے ہیں کہ ایک روز حضرت عمر فاروق طائفۂ ہمارے پاس اس حال میں تشریف لائے کہ آپ وظائفۂ نے روئی کا لباس پہن رکھا تھا۔ ہم نے آپ وظائفۂ کی اس حالت پر تعجب کا اظہار کیا تو آپ وظائفۂ نے فرمایا جو تھا۔ ہم نے آپ وظائفۂ کی اس حالت پر تعجب کا اظہار کیا تو آپ وظائفۂ نے فرمایا جو کہے تم دیکھ تر کھورہے ہویہ بثاثت کے سوا کھے بھی نہیں اور اللہ عزوجل کے سواسب کچھ فنا ہونے والا ہے۔

صدقے كادودھ:

حضرت زیدبن اسلم مٹائٹؤ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق

المنت المنتقون أوق كيفيل

طِی النَّهُ نَهِ مِن وودھ پیا تو وہ آپ طِی النَّهُ کو پیند آیا۔ آپ طِی نَفْتُهُ نے دودھ پلانے والے ہے بوچھا اس کے پاس میہ دودھ کہاں سے آیا؟ اس شخص نے عرض کیا میرا گزر ایک جگہ ہے ہوا جہاں مانی کے کنارے لوگ صدقہ کے جانوروں کو مانی بلا رہے تھے انہوں نے مجھے ان جانوروں کا دودھ دیا جس سے میں نے اپنے مشکیزے کو بھرلیا۔ آپ بٹائٹیز نے اس کی بات سنی تو حلق میں انگلی مار کر سارا دودھ نے کر کے فورأ بإہر نکال دیا۔

ضرورت کے وقت بیت المال سے ادھار لیتے:

حضرت عمران طالنينة سے منقول ہے حضرت عمر فاروق طالنین کو جب بھی کوئی ضرورت در پیش ہوتی تو آپ طالغین بیت المال کے خزانجی کے باس جاتے اوراس سے ادھار لے لیتے کی مرتبہ آپ طالفیز کو ادھار واپس کرنے میں دشواری بیش آتی۔ بیت المال کا خزانجی آتا اور وہ آپ طالتین سے ادھار کی والیسی کا تقاضا كرتا_اس دوران اگركہيں ہے كوئى عطيه آتا تو آپ طالفن اس سے ادھار چكا دیتے۔

نصف ویت پر فیصله جاری کر ویا:

امام مالک میشد فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق طالفیز کے زمانہ میں قبیلہ سعد کا گھڑ سوار اپنا گھوڑ ا دوڑ اتا ہوا جا رہا تھا کہ اس دوران قبیلہ جہینہ کے ایک شخص کے یاؤں کی انگلیوں سے گھوڑے کا یاؤں گزر گیا اور اس کی یاؤں کی انگلیاں ایسے بچک تنیں کہ اس کے جسم کا تمام خون اسی زخم کے راستے نکل گیا اور اس کی موت واقع ہوگئی۔آپ مِنْ اللّٰهُ نُهُ کے ماس جب بیمقدمہ لا یا گیا تو آپ ہِنائِنَهُ نے قبیلہ سعد کے پیچاس بڑے سرداروں سے کہا کہ وہ قتم کھائیں مرنے والے کی موت کی وجہ بیہ

المنت عمل وق كرفيها

ورثاء سے فرمایا کہتم قسم کھاؤ کہ مرنے والے ایسے ہی مراجیسے تم کہتے ہو گر انہوں نے بھی قسم کھانے سے انکار کر دیا چنانچہ جب دونوں جانب سے کوئی بھی قسم کھانے پر رضا مند نہ ہوا تو آپ رٹائٹیڈ نے مقتول کی نصف دیت پر فیصلہ جاری کر دیا۔

قاتل كومقتول كے تركہ سے بچھ بيس ملے گا:

امام مالک مینی فرماتے ہیں ایک شخص نے اپنے بیٹے پر غصہ میں تلوار کھیں جو اس فدرخون نکلا کہ اس کی موت واقع ہوگئی۔ حضرت سراقہ رہائیڈ نے حضرت عمر فاردق رہائیڈ کے سامنے یہ مقدمہ پیش کیا۔ آپ رہائیڈ نے فرمایا قاتل سے کہووہ مقام فدیہ پرایک سوہیں اونٹ لے کرمیراانظار کرے۔ پھر آپ رہائیڈ مقام فدیہ پرتشریف لائے اور فرمایا مقتول کا بھائی حاضر ہوتو ان اونٹوں میں سے ایک سواونٹ اس کے حوالے کردیے اور فرمایا مقتول کا بھائی حاضر ہوتو ان اونٹوں میں سے ایک سواونٹ اس کے حوالے کردیے اور فرمایا مقتول کا باپ جو اپنے بیٹے کا قاتل ہے اسے بیٹے کے ترکہ میں سے پھے بھی فرمایا مقتول کا باپ جو اپنے بیٹے کا قاتل ہے اسے بیٹے کے ترکہ میں سے کہے بھی نہیں ملے گا کیونکہ حضور نبی کریم میں ہوتوں نے فرمایا ہے قاتل کو مقتول کے ترکہ میں سے بھی نہیں ملے گا کیونکہ حضور نبی کریم مین ویونٹ نے فرمایا ہے قاتل کو مقتول کے ترکہ میں سے بھی نہیں ملے گا کیونکہ حضور نبی کریم مین ویونٹ اس کے حوالے کے ترکہ میں سے بھی نہیں ملے گا کیونکہ حضور نبی کریم مین ویونٹ اسے بھی نہیں بھی تو تو تو اسے بھی نہیں ہوتوں نبی کریم مین ویونٹ اسے بھی نہیں ہوتوں کے ترکہ میں سے بھی نہیں بھی تو تو توں نہیں کی کریم مین ویونٹ اسے بھی نہیں ہوتوں کے ترکہ میں سے بھی نہیں ہوتوں کی تو توں نہیں ہوتوں کی تو توں نہیں ہوتوں کی تو توں کی توں کی تو توں کی تو توں کی توں کی توں کی تو توں کی توں

قل کےمقدمہ کا فیصلہ:

امام مالک میسید فرماتے ہیں اہل صنعاء کے پانچ افراد نے ایک شخص کو غفلت میں قبل کر دیا اور یہ مقدمہ حضرت عمر فاروق جائین کی عدالت میں پیش ہوا۔ آپ جائین نے ان پانچوں افراد کے قبل کا تھم جاری کرتے ہوئے فرمایا۔ آپ جائین نے ان پانچوں افراد کے قبل کا تھم جاری کرتے ہوئے فرمایا۔ ''اگر اہل صنعاء کے تمام افراد اس قبل میں شریک ہوتے تو میں سب کوقل کرنے کا تھم جاری کردیتا۔''

المنت بمنت و المال المال

اسے آل نہ کیا جائے:

امام شافعی میسید فرماتے ہیں بی بحر کے ایک شخص نے اہل حمرہ کے ایک شخص کوتل کر دیا اور یہ مقدمہ حضرت عمر فاروق والنظریٰ کی عدالت میں پیش ہوا۔ آپ والنظریٰ نے قاتل کو اہل حمرہ کے سپر دکر دیا اور فر مایا تم جیسا چاہواس کے ساتھ سلوک کرو۔ اہل حمرہ نے تین دن بعد اس شخص کوتل کر دیا اس دوران اہل حمرہ کو آپ والنظریٰ کا مکتوب ملا کہ اگر قاتل زندہ ہے تو اسے قبل نہ کیا جائے۔ اہل حمرہ آپ والنظریٰ کا مکتوب ملا کہ اگر قاتل زندہ ہے تو اسے قبل نہ کیا جائے۔ اہل حمرہ آپ والنظریٰ کے اس مکتوب سے سمجھ گئے کہ آپ والنظریٰ کے کہنے کا مطلب یہ تھا کہ اگر اسے قبل نہیں کیا تو دیت لے کراسے رہا کر دو۔

ية قاتل كے لئے صدقہ ہے:

بیمی کی روایت ہے کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کے ساتھ کسی غیرمرد کو ہم بستر دیکھ کر اپنی بیوی کو قبل کر دیا۔ پھر اس قبل کا مقدمہ حضرت عمر فاروق بڑائنؤ کی عدالت میں پیش ہوا۔ اس عورت کے بھائی نے غیرت کے معاملہ پرفتم کھاتے ہوئے کہا میں نہ ہی قصاص لوں گا اور نہ ہی دیت کی رقم لوں گا اور میری جانب سے یہ قاتل کے لئے صدقہ ہے۔ آپ رٹائنؤ نے اس عورت کے بھائی کی جانب سے انکار پردیت کی رقم دیگر ورثا ، کو دلوا دی اور قاتل کو رہا کرنے کا تھم دے دیا۔

قاتل سے بری ہو گیا:

بیہ بی کی ایک اور روایت میں ہے ایک شخص نے اپنی بیوی کے بھائی کوتل کر دیا اور متنول کی وارث اکلوتی وہی عورت تھی۔ جب بیہ مقدمہ حضرت عمر فاروق جلائیز کی عدالت میں پیش ہوا تو اس عورت نے کہا میں نے اپنے بھائی کا

منت مم المقال المحال ال

خون اسے معاف کیا۔ آپ طالعنظ نے فرمایا قاتل قل سے بری ہو گیا۔

تم جومرضی کہومیرا فیصلہ یہی ہے:

امام شافعی مجیست فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رفائی کے زمانہ خلافت میں ایک شخص کی لاش خیران اور وواعہ کے درمیان پائی گئی۔ آپ برفائی کے پاس جب بیہ مقدمہ آیا تو آپ رفائی نے تھم دیا کہ دونوں مقامات کا اس لاش سے فاصلہ ماپا جائے اور جو جگہ اس لاش کے زدیکہ ہو وہاں کے بچاس معززین کومیرے پاس ماپا جائے اور جو جگہ اس لاش کے زدیکہ ہو وہاں کے بچاس معززین کومیرے پاس لایا جائے چنا نچ ایسا ہی کیا گیا اور آپ رفائی اس وقت فانہ کعبہ میں موجود تھے آپ رفائی نے خطیم کعبہ کے پاس کھڑ ہے ہو کر کہا تم لوگ قسم کھاؤ کہ تم میں ہے کی نے دفائی نے خطیم کعبہ کے پاس کھڑ ہے ہو کر کہا تم لوگ قسم کھاؤ کہ تم میں ہے کی نے اسے قبل نہیں کیا تھا اور انہوں نے قسم کھائی مگر آپ رفائی نے نے بھر بھی ان پر دیت کا فیصلہ کیا۔ انہوں نے عرض کیا کیا ہماری قسم کھا اعتبار نہیں تھا جو ہمارے اموال کو محفوظ نے درکھا گیا؟ آپ رفائی نے فرمایا تم جو مرضی کہو میرا فیصلہ کیا۔ انہوں نے عرض کیا گیا تم جو مرضی کہو میرا فیصلہ کیا ہے۔ پھر آپ رفائی نے نے فرمایا تم جو مرضی کہو میرا فیصلہ کیا ہے۔ پھر آپ رفائی نے نے فرمایا تم جو مرضی کہو میرا فیصلہ کیا ہے۔ پھر آپ رفائی نے نے فرمایا تم جو مرضی کہو میرا فیصلہ کیا ہے۔ پھر آپ رفائی نے نے فرمایا تم جو مرضی کہو میرا فیصلہ کی ہے۔ پھر آپ رفائی نے نے فرمایا تم ہو مرضی کہو میرا فیصلہ کیا ہے۔ پھر آپ رفائی نے تہ ہیں قصاص سے بچالیا ہے۔

اسىيىتوبەكى ترغىب دىيى<u>ة</u> :

روایات بیں آتا ہے حضرت ابوموی اشعری برائیز جو بھرہ کے گورز سے
ان کا ایک قاصد حضرت عمر فاروق برائیز کے باس مدینہ منورہ آیا۔ آپ برائیز نے
اس سے بوچھاتم مجھے بھرہ کا کوئی عجیب واقعہ سناؤ۔ وہ بولا بھرہ میں ایک شخص مرتد
ہوگیا اور ہم نے اس کی گردن اڑا دی۔ آپ بڑائیز نے فرمایا تم اسے قید کرتے اور
اسے بچھ کھانے کو دیتے اور اسے تو بہ کی ترغیب دیتے شاید وہ پھر سے اسلام قبول
کر لیتا۔ پھر آپ بڑائیز نے بارگاہِ خداوندی میں ہاتھ اٹھا کر کہا۔



ہی میں نے اس قل کا تھم دیا تھا اور نہ ہی مجھے بیخبرس کر پچھ خوشی محسوں ہوئی ہے۔'' وسعت دنیا برآنسو بہانا:

حضرت مسور جائفیٰ فرماتے ہیں قادسیہ کے مالِ نظیمت میں سے حضرت عمر فاروق بڑائفیٰ کے پاس کچھ مال آیا آپ جائفیٰ ان کو بلیٹ رہے تھے اور د کھے رہے تھے اور ساتھ ساتھ روتے جارہے تھے۔ آپ بڑائفیٰ کے پاس حضرت عبدالرحمٰن بن عوف جُرائفیٰ بھی تھے۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف جُرائفیٰ نے کہا امیر المومنین! آج تو خوشی کا دن ہے اور آپ جُرائفیٰ رورہے ہیں؟ آپ جُرائفیٰ نے فرمایا۔

''اے عبدالرحمٰن (جُرائفیٰ)! ہے شک آج خوشی کا دن ہے کیکن میں اس بات پررورہا ہوں کے اللہ عز وجل نے جس قوم کو بھی مال و دولت سے نوازا وہ عدادت اور بغض کا شکار ہوگئی۔''

كسرى كے خزانے و كيم كرآنسو بہانا:

حضرت ابراہیم بن عبدالرحمٰن بن عوف را الحیٰنا ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق را الحیٰنیٰ کی خدمت میں کسری کے فرانے لائے گئے تو حضرت عبداللہ بن ارقم والحیٰنیٰ نے آپ والیونی ہے اپوچھا کیا یہ مال بیت المال میں رکھ ویا جائے؟ آپ والیونی نے فرمایا اسے بیت المال میں نہ رکھو میں اسے تقسیم کروں گا۔ بھر یہ فرما کرآپ والیونی رو پڑے۔ والد بزرگوار حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والیونی اس وقت آپ والیونی کی باس موجود تھے۔ انہوں نے کہا امیر الموسنین! آج تو خوشی کا ون دن ہے اور آپ والیونی کا دن جاور آپ والیونی رو رہے ہیں؟ آپ والیونی نے فرمایا ہے شک آج خوشی کا دن

www.iqbalkalmati.blogspot.com 266 منظر المعلق المع

عداوت اور بغض کو ڈال دیا ہے۔

حضرت سیّدنا عباس طالنمهٔ کے وسیلہ سے بارش کی دعا مانگنا:

حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کے زمانہ خلافت میں مدینہ منورہ میں شدید قحط پڑ گیا اور انہیں مدینہ گیا اور انہیں مدینہ منورہ سے باہر ایک میدان میں لے گئے۔ اس موقع پر حضور نبی کریم منظری مندیا صحابہ کرام بڑائیڈ نے حضر ت سیدنا محملہ میں دعا کے لئے جمع تھے۔ آپ بڑائیڈ نے حضر ت سیدنا عباس بڑائیڈ کا ہاتھ تھام کراو پر اٹھایا اور ان کو اپنے آگے کھڑا کر کے بارگاہ خداوندی میں دعا ماگی۔

"النی! ہم جب پہلے قط میں مبتلا ہوتے تھے تو تیرے محبوب سے ایک اور تو ہم پر اپنی سے اور تو ہم پر اپنی مصفی ہے۔ کو وسیلہ بنا کر بارش کی دعا ما نگتے تھے اور تو ہم پر اپنی رحمت کی بارش برساتا تھا اور آج ہم تیرے محبوب سے ایک پیش کرتے ہیں تو ہمیں ان پچیا کو تیری بارگاہ میں وسیلہ بنا کر پیش کرتے ہیں تو ہمیں ان کے توسل سے بارش عطا فرما دے۔"

راوی کہتے ہیں پھر حضرت سیدنا عباس بڑائیؤ نے بھی بارش کے لئے وعا مانگی تو اس وفت اس قدر بارش ہوئی کہ لوگ گھٹنوں گھٹنوں تک پانی میں چلتے ہو ے اپنی قدر بارش ہوئی کہ لوگ گھٹنوں گھٹنوں تک پانی میں چلتے ہو ے اپنی لوٹے اور لوگ جوش مسرت اور جذبہ عقیدت سے حضرت سیدنا عباس بڑائیؤ کے سیدنا عباس بڑائیؤ کے اور کچھ لوگ حضرت سیدنا عباس بڑائیؤ کے جسم مبارک پر اپنا ہاتھ پھیرتے تھے۔

زانیه عورت کورجم کرنے کا فیصلہ:

امام ما لک جمیلیہ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق بیانین کے پاس ایک

المنت المنتون المقال كيسل المنتون المول كيسل

شامی مردشکایت لے کرآیا کہ اس کہ بیوی زانی ہے اور اس نے خود اپنی بیوی کو ایک غیر مرد کے ساتھ زنا کرتے ویکھا ہے۔ آپ بڑائٹوڈ نے اس شامی کی شکایت پر حصرت ابوواقد ڈٹائٹوڈ کی زوجہ کو تحقیق کے لئے بھیجا اور انہوں نے وہاں جا کر دیکھا کہ اس عورت کے پاس کئی عورتیں جمع ہیں۔ حضرت ابوواقد بڑائٹوڈ کی زوجہ نے اس عورت کو آپ بڑائٹوڈ کا پیغام پہنچایا اور کہا صرف تیرے شوہر کے بیان پر جھ پر صد جاری نہ ہوگی۔ اس عورت نے اعتراف جرم کر لیا اور جب آپ بڑائٹوڈ کو اس کی اطلاع دی گئی تو آپ بڑائٹوڈ نے اسے رجم کروا دیا۔

جبراً زنا برآب شائنة كا فيصله:

امام مالک مینید فرماتے ہیں بیت المال کا ایک غلام جو دوسرے غلاموں پر نگران تھا اس نے ایک لونڈی کے ساتھ زنا کیا اور اس جرم پر حضرت عمر فاروق خالفیٰ نے ایک لونڈی کو پچھ سزا خلافیٰ نے ایسے کوڑے مارنے کا تھم دیا اور پھر شہر بدر کر دیا مگر اس لونڈی کو پچھ سزا نہ دی کیونکہ اس غلام نے جرأ بیفل کیا تھا۔

والدين كى تعريف نامناسب الفاظ ميں كرنے كى سزا

امام مالک بیتانیہ فرماتے ہیں ایک مرتبہ دولوگوں کے مابین جھڑا ہوا اور دونوں دونوں کے مابین گالی گلوچ تک نوبت بینج گئی۔ایک نے کہا میرے والدین دونوں کا دامن زتا ہے پاک ہے۔ جب ان دونوں کا معاملہ حضرت عمر فاروق برائیڈ کے پاس آیا تو آپ بڑائیڈ نے مشیروں ہے مشورہ کیا۔ ایک مشیر نے کہا اس میں کچھ حرج نہیں اس نے اپنے والدین کی تعریف کی ہے۔ دوسرے مشیر نے کہا اگر اسے حرج نہیں اس نے اپنے والدین کی تعریف کی ہے۔ دوسرے مشیر نے کہا اگر اسے اپنے والدین کی تعریف کی ہے۔ دوسرے مشیر نے کہا اگر اسے اپنے والدین کی تعریف کرناتھی تو بیہا چھے الفاظ کے ساتھ بھی کرسکتا تھا چنا نچہ آپ دیائیڈ نے اسے اس کوڑے مارنے کا تھی دیا۔

المنت عمر المنتاب الموق كي فيسل

سزامعاف كرنے كافيصله:

روایات میں آتا ہے ایک شخص اپنی بیوی کی مملوکہ لونڈی کو اینے ساتھ سفر میں لے گیا اور اس نے اس لونڈی کے ساتھ ہم بستری کی۔ جب اس شخص کی بیوی کواس کی خبر ہوئی تو اس نے حضرت عمر فاروق طالغیر سے اس کی شکایت کی۔ آپ ینی نی استخص کوطلب کیا اور اس پر حدلگانے کا فیصلہ کیا۔ اس مخص نے عرض کیا امير المومنين! بيانوندى ميرى بيوى نے مجھے بهدكر دى تھى۔ آپ طالفئز نے اس كى بیوی سے پوچھا تو اس نے کہا کہ ایبا ہی ہے چنانچہ آپ رٹائٹؤزنے اس شخص کی سزا

شرابی کی سزااس کوڑے کرنے کا فیصلہ:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طالفنے نے اپنے مشیروں سے مشورہ كيا كدا كركوني شخص شراب سيئے تو اس كى كيا سزا ہونى چاہئے؟ حضرت على المرتضى ر النفظ نے فرمایا اس کی سزااس کوڑے ہونی جاہئے۔ آپ مٹائنظ نے حضرت علی المرتضلی ر النفیز کے فیصلے کو سراہتے ہوئے تھم جاری کیا کہ شرابی کی سز اسی کوڑے ہوگی۔

طلال كوحرام قرار نه دينے كا فيصله:

حضرت عمر فاروق بنالفيَّذ جب ملك شام كيَّ تو ابل بثام نے آپ بنالفيَّذ سے وہاں چھوٹنے والے وبائی امراض کی شکایت کی اور کہا کہ ہم ان امراض سے نجات ای صورت پاسکتے ہیں جب ہم یہاں ملنے والی ایک خاص شراب استعال كري-آپ طالفيز نے فرمايا نہيں تم اس كے متباول شہد استعال كرويه انہوں نے عرض کیا ہمیں شہدموافق نہیں ہے۔ اس دوران ایک شخص نے آگے بوھ کرعرض کیا

امیرالموسین! جس شراب کی بات ہم کرتے ہیں وہ یہ ہے اور اس میں سکر نہیں ہے۔

آپ بڑائیڈ نے فرمایا اے آگ پر پکاؤ تا کہ اندازہ ہو جائے چنا نچہ اے آگ پر پکاؤ تا کہ اندازہ ہو جائے چنا نچہ اے آگ پر پکاؤ تا کہ اندازہ ہو جائے چنا نچہ اے آگ پر پکاؤ گایا گیا اور جب خوب پکنے کے بعد اس کا ایک تہائی حصہ باقی رہ گیا تو آپ بڑائیڈ نے اس کا قوام اٹھایا اور وہ تار تار ہو گیا۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا بیتو اونٹ کی مالش کی دواکی مائند ہے اور اسے پینے میں بچھ مضا نقہ نہیں ہے۔ حضرت عبادہ بن صامت بڑائیڈ جو وہاں موجود تھے انہوں نے کہا آپ بڑائیڈ نے ان کے لئے شراب کو حلال قرار دے دیا؟ آپ بڑائیڈ نے فرمایا اللہ گواہ ہے میں اس چیز کو حلال نہیں قرار دے سکتا جسے اللہ اور اس کے رسول ہے بیٹی خرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال چیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال چیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال چیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال چیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال جیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال جیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال جیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال جیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال جیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال جیز کو ان برحرام قرار دیا ہواور نہ بی کسی حلال بیز کو ان برحرام قرار دیا ہوار دور دیا ہوار دیا ہور دیا ہور دیا ہور دی

حضرت مسور بن مخرمہ رہائنۂ کے فیصلے کی تائید کرنا:

امام شافعی میسانی فرماتے ہیں کہ جج کے موقع پر ایک عجمی شخص لوگوں کی امامت کے لئے آگے بڑھا تو حضرت مسور بن مخر مہ رالیٹیڈ نے اس عجمی شخص کو پیچھے ہٹا دیا۔ حضرت عمر فاروق والیٹیڈ نے حضرت مسور بن مخر مہ رالیٹیڈ سے پوچھا تم نے اس عجمی شخص کو پیچھے کیوں بٹا دیا؟ حضرت مسور بن مخر مہ رالیٹیڈ نے عرض کیا بیشخص اس عجمی تھا اور مجھے کیوں بٹا دیا؟ حضرت مسور بن مخر مہ رالیٹیڈ نے عرض کیا بیشخص عجمی تھا اور مجھے بی خدشہ لاحق ہوا کہیں حجاج اس کی قر اُت سنیں تو اسے اختیار کرلیں۔ آپ والیٹیڈ نے فرمایا تم نے اچھا کیا۔

نمازِ تراوی کی جماعت کروانے کا فیصلہ:

ابن شہاب مین لیے جی کہ حضور نبی کریم مین کے وصال ہو گیا اور لوگوں کا حال ہو گیا اور لوگوں کا حال بیتھا کہ وہ اسکیے اور جماعت سے جیسے ان کا دل جا ہتا نماز تر اور کے ادا کر سے تھے۔ حضرت ابو بمر صدیق ہلائی کے زمانہ خلافت میں بھی لوگوں کا بہی

الاست مُنْ مُنْ مُنْ وَلِي رَفِي مِنْ فِي اللهِ ال

معمول رہا اور پھر حضرت عمر فاروق جائنے؛ جب خلیفہ منتخب ہوئے۔ عبدالرحمٰن بن عبدقاری بڑائیڈ فرماتے ہیں میں حضرت عمر فاروق جائنڈ کے ساتھ مسجد میں گیا اور و یکھا لوگ علیحدہ نماز پڑھ رہے ہیں اور کہیں پانچ پانچ اور کہیں دی دی لوگ نماز پڑھ رہے ہیں اور کہیں بانچ پانچ اور کہیں دی دی لوگ نماز پڑھ رہے ہیں۔ آپ جائنڈ نے فرمایا اگر میں آئیس ایک امام کے پیچھے جمع کروں تو کیا ہی عمدہ ہوگا؟ پھر آپ جائنڈ نے اس کا ارادہ کیا اور ابی بن کعب بڑائنڈ کو امام کے پیچھے کی اور کیا اور ابی بن کعب بڑائنڈ کو امام کے پیچھے نماز تر اور کی پڑھ رہے ہوں ہوگا؟ پڑھ رہے تھے۔ آپ بڑائنڈ نے فرمایا کیسا عمدہ طریقہ ہے اور رات کا وہ نماز تر اور کی پڑھ رہے جس میں تم نماز مرات کے اس حصہ سے افضل ہے جس میں تم نماز بڑھتے ہواور لوگ رات کے شروع میں بی نماز تر اور کی پڑھ لیتے تھے۔

میرافتوی بھی یہی ہے:



عهد فاروقی طالنیز کامختصر جائزه

حضرت عمر فاروق طالق کے دور خلافت میں ملکی ، فوجی اور ندہی انظامات کے علاوہ بھی بے شار ایسے امور ہیں جواگر چہ کسی عنوان کی تحت تو نہیں آتے تاہم ان کا ذکر کیا جانا ہے حد ضروری ہے۔ آپ طالقیٰ کے زمانہ خلافت سے قبل کوئی مستقل من نہ تھا آپ طالقہٰ نے حضور نبی کریم طفایقیٰ کی جمرت سے ایک مستقل من کا بنیا درکھا جو آج من ججری کے نام سے جاری ہے۔

حضرت عمر فاروق وظائفی نے ملکی حالات سے باخبر رہنے کے لئے ہر علاقہ میں پرچہ نولیں اور واقعہ نگار مفرر فر مائے جن کے ذریعے مملکت اسلامی کے تمام حالات و واقعات سے آپ دلین نہ صرف آگاہ رہنے بلکہ ضرورت پڑنے پر بہترین مشوروں سے بھی نوازتے تھے۔

حضرت عمر فاروق رہائی نے اپنے دورِ خلافت میں ذمیوں کوان کے نہ ہی معاملات میں آزادی اوران کی رسومات پر انہیں عمل کرنے میں کسی قتم کی رکاوٹ نہ آنے دی اور ذمیوں کے جوحقوق دین اسلام میں متعین ہیں انہیں نافذ العمل کیا۔ حضرت عمر فاروق رہائی نئے نے اپنے دورِ خلافت میں غلامی کا رواج ختم کردیا اور غلاموں اور ان کے آتاؤں کے درمیان ایک معاہدہ طے کروایا جس میں غلام ایک مقررہ مدت کے اندرانے آتا کور قم اداکر کے آزاد ہوجائے گا۔ لاوراث

بچوں کو آسانی سے غلام بنایا جاتا تھا آپ ٹرائٹئٹر نے اس ضمن میں قانون بنایا کہ لاوارث بیجے آزاد ہیں اور اہل عرب کسی کے غلام نہیں ہو سکتے۔

حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کے دور میں امن وابان کی صورتحال پر بھی بھر پور
توجہ دی گئی۔ آپ بڑائیڈ کی حکومت انہائے مصر سے لے کرخراسان وسیستان تک
پیملی ہوئی تھی جس میں عربی، فاری، شامی، عراقی، قبطی، حبثی الغرض ہرقوم کے
لوگ شامل تھے۔ آپ بڑائیڈ کے دور خلافت میں امن وابان کی صورتحال کا انداز و
حضرت عدی بڑائیڈ بن حاتم کے اس قول سے لگایا جا سکتا ہے میں نے ایک پردے
والی عورت کود یکھا جو تنہا جیرہ سے چلی اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا اور اس نے بیت اللہ عزوجل کے سواکسی کا خوف نہ تھا۔

حضرت عمر فاروق رظافیٰ کے دورِ خلافت کا ایک اہم کام بے جا امتیازات کا خاتمہ اور انصاف کی فراہمی ہے۔ آپ رٹائٹیڈ نے خواص اور عام رعایا کے درمیان ممام فرق مٹاد ہے اور اس کاعملی نمونہ آپ رٹائٹیڈ کی خود کی ذات تھی۔

حضرت عمر فاروق ر النائية ك زمانه ميں پوليس كا محكمہ قائم كيا گيا تاكہ ملك كا اندرونی معاملات اور لوگوں كی جان و مال كی حفاظت كويقینی بنایا جا سے محكمہ پولیس كے قیام سے ملك میں جرائم كوكنٹرول كرنے ميں بے حد مدد فلی اور جرائم نہ ہونے كے برابر رہ گئے۔ اس كے علاوہ آپ رائين نے قیدیوں كے لئے با قاعدہ عمارات تعمیر كروائيں اور ان قید خانوں میں قیدیوں كو بنیادی انسانی ضروریات بھی فراہم كی جاتی تھیں اور ان كی اخلاقی تربیت كا بھی انتظام تھا تاكہ جب وہ اپنی سزا بورى كر كے رہا ہوں تو ایک اختاھ شہری بن سكيں۔

حضرت عمر فاروق والنفيز نے اپنے زمانہ میں محکمہ آبیاشی کو فروغ ویتے

المنت المنتوال وق كيسل

ہوئے ہزاروں مربع میل پر نہروں کا جال بچھایا اور آپ رٹائٹن کے اس فیلے کے اثرات بے صدخوشگوار مرتب ہوئے اور وہ زمینیں جوا کیٹ عرصہ سے بنجر تھیں وہ آباد ہو کی اور یوں لوگوں میں خوشحالی کے ایک نئے دور کا آغاز ہوا۔

حضرت عمر فاروق وظائفۂ کا زمانہ مسلمانوں کی ترقی کا زمانہ ہے اور اس دور میں مسلمانوں کی علمی اور اخلاقی تربیت کا خصوصی انتظام کیا گیا اور اس کے علاوہ لوگوں کی خوشحالی اور ترقی کے لئے نئے شہر بھی آباد کئے گئے اور لوگوں کو تمام بنیادی سہولیات فراہم کرنے کی ہرممکن کوشش کی گئی۔

تاریخ کے اوراق حفرت عمر فاروق والی کے کارناموں سے بھرے ہوئے ہیں اور یہ وہ کارناموں سے بھرے ہوئے ہیں اور یہ وہ کارنامے ہیں جن پر بلاشبہ دین اسلام کوفخر ہے۔ آپ والی فؤ کے دورِ خلافت میں دین اسلام جزیرہ نما عرب سے نکل کر دنیا کے بے شارمما لک تک بھیل گیا اور مملکت اسلامی حد نگاہ تک وسیع ہوئی۔ آپ والینؤ نے امورِ مملکت جلانے کے بے شار محکمے قائم کے جن کا ذکر گذشتہ سطور میں کیا جا چکا ہے۔ آپ والینؤ نے اپنی تمام زندگی حضور نبی کریم سے تعلیم کی اتباع اور دین اسلام کے فروغ والینؤ نے اپنی تمام زندگی حضور نبی کریم سے تعلیم کی اتباع اور دین اسلام کے فروغ میں بسر کی اور اس پر اپنے نظام خلافت کی بنیادر کھی۔ آپ والینڈ کے نظام خلافت کو بنیادر کھی۔ آپ والینڈ کے نظام خلافت کو آپ والینڈ کے نظام خلافت کی بنیادر کھیے ہیں اور موجودہ زمانہ میں ائل مغرب آپ والینڈ کے بنائے ہوئے قوانین کوا پنے ممالک میں لاگو کر رہے ہیں۔ اور ان پر عملدا مدکو بینی بنارہے ہیں۔ اور ان پر عملدا مدکو بینی بنارہے ہیں۔

www.iqbalkalmati.blogspot.com 274 منتسب عمر المنتسال المنتسال المنتسل المنتسال المنتسل المنتسال المنت

اہم مواقع پرلوگوں سے خطاب کا فیصلہ

حضرت عمر فاروق رئائین کوحضور نبی کریم مضیقی کی ذات بابرکات سے بیشار فیوض و برکات حاصل ہوئے۔ آپ رئائین ایک بلند پایہ خطیب اور عالم وین عصد الله عز وجل نے آپ رئائین کوفن خطابت سے نوازا تھا۔ آپ رٹائین کی طرز ادا نہایت بلیغ تھی۔ آپ رٹائین نے اہم اور نازک مواقع پر جوخطبات ویے ان ادا نہایت بلیغ تھی۔ آپ رٹائین نے اہم اور نازک مواقع پر جوخطبات ویے ان سے بے شار الجھے ہوئے مسائل حل ہوئے۔ آپ رٹائین نے کئی اہم مواقع پر خطبات دیے ان میں سے چندایک حسب ذیل ہیں۔

خلیفہ بننے کے بعد خطبہ ارشاد فرمانا:

حضرت عمر فاروق رخالینئ منصب خلافت پر فائز ہونے کے بعد منبر پر تشریف لائے اور ذیل کا خطبہ دیا۔

> ''اے لوگو! میں بھی تمہاری طرح انسان ہوں اگر مجھے حضرت ابو بکر صدیق طالبیٰ کی نافر مانی کا خیال نہ ہوتا تو میں بھی تمہارا حاکم بنتا بیند نہ کرتا۔

اے لوگو! اللہ عزوجل نے مجھے تمہارے لئے آزمائش بنایا ہے اور تمہیں میرے لئے آزمائش بنایا ہے۔ جو نیک کام کرے گا میں بھی اس کے ساتھ نیکی کروں گا اور جو برائی کا مرتکب ہوگا

المناسخ على وق كفيل المعلى المعلى

میں اس کوعبرتنا ک سزا دوں گا۔''

حضرت سعید بن مسیتب بنالینیٔ فرماتے ہیں جب حضرت عمر فاروق بنالینیٔ فرماتے ہیں جب حضرت عمر فاروق بنالینیٔ فظر مانی خلیفه مقرر ہوئے تو آپ بنالینی نے منبر پر کھڑے ہوکر فرمایا

''لوگو! میں جانتا ہوں کہتم لوگ مجھ میں سختی دیکھتے ہواور اس کی وجہ نید ہے کہ میں حضور نبی کریم منتظ بینے کے ہمراہ رہا۔ میں حضور نبی کریم منتظام کا غلام تھا اور حضور نبی کریم منتظ کیا نہایت مہربان اور رحم دل تھے جبکہ میں آپ ﷺ کے سامنے تلوار کی ما نند تھا جسے آپ مین کیا ہے۔ میان میں رکھا اور مجھے جس کام سے منع فرمایا میں اس کام سے باز رہا یہاں تک کہ میں آب مِنْ الله الله الله المراس المن الله المراس الله المراس الله المراس المناسخة المراس المناسخة المراسلة المناسخة منت المنظمة المال كے وقت مجھ ہے راضى ہوئے۔اس كے بعد ميں حضرت ابو بمرصدیق بنالنیز کے ہمراہ رہا جوحضور نبی کریم میشانیڈ کے خلیفہ ہتھے اور حمہیں معلوم ہے کہ وہ بھی تس قدر نرم دل اور رحم كرنے والے تھے۔ میں ان كانجمى غلام تھا اورا بني تختی كوان · کی نرمی کے ساتھ ملا دیتا تھا۔ اگر وہ مجھے سی بات ہے رکنے کا تحكم دينے تو ميں رک جاتا تھا يہاں تک كه ان كا وصال ہوا اور بوفتت وصال مجھے ہے راضی تھے۔اب جبکہ خلافت میرے ناتواں کندھوں پر آگئی ہے تو تم مجھے خوب جانتے ہو اور میرا تجربه کر چکے ہواورتم لوگوں نے حضور نبی کریم ﷺ کی سنت کوخوب جائے ہو۔ میں کمزور کا حق قوی سے لینے والا ہوں

ومنظر المول كيد المول ال

پس اللہ کے بندواللہ سے ڈرواور اپنے نفوس کے خلاف میری اعانت کرواور اپنے نفوس کو میری سزاسے روکواور میرے نفس کوامر بالمعروف اور نبی عن المنکر کر کے میری اعانت کرواور تمہارے امر سے مجھے جس چیز کا اللہ پاک نے والی بنایا ہے اس کے بارے میں مجھے نفیحت کرنے سے نہ ڈرنا۔''

ابل عرب سركش اونث كي ما نندين:

ایک موقع پر حضرت عمر فاروق رفائغہ نے منبر پر کھڑے ہو کر فر مایا۔
''اے اللہ! میں سخت ہوں مجھے نرم کر دے، میں کمزور ہوں
مجھے قوت عطا فر ما۔ اہل عرب سرکش اونٹ کی مانند ہیں جن کی
مہار میرے ہاتھ میں دی گئی ہے مجھے ہمت عطا فر ما میں انہیں
راستہ پر جِلا کر ہی چھوڑوں گا۔''

اران پراشکرکشی کے موقع پرخطاب کرنا:

حفرت عمر فاروق و النفوز نے جب لوگوں کو جہادِ ایران پر ابھارا تو ابتداء میں لوگ جباد پر مائل نہ ہوئے مگر پھر حضرت منی وائٹون نے جب لوگوں کو جہادِ ایران پر قائل کرنے کے لئے ایک پراٹر خطبہ دیا تو آپ وائٹون حضرت منی وائٹون کے خطاب کے بعد کھڑے ہوئے ذیل کا خطبہ دیا۔

کے بعد کھڑے ہوئے اور حاضرین کو مخاطب کرتے ہوئے ذیل کا خطبہ دیا۔

"جاز ایک ایسی جگہ ہے جو تہارے لئے گزارے کے لائق ہے اور اس سے زیادہ پھر نہیں اور کہاں گئے وہ اللہ عزوجل کے وعدہ پر اپنا کھر چھوڑنے والے اور وہ آگے برجیں اور اس

المنت عمل المنتون الوق كي فيعل

زمین پر پیل جائیں جس کے متعلق اللہ عزوجل نے اپی کتاب
میں وعدہ کیا ہے کہ وہ تہہیں اس کا وارث بنائے گا اور اس کا
فرمان ہے کہ وہ دین حق کوتمام ادبیان پر غالب کر دے گا، ر
اللہ عزوجل اپنے دین کوغلب عطا فرمانے والا ہے اور اس کے
معاون کوعزت دینے والا ہے اور اس کے پیروکارول کو توموں
کی میراث عطا کرنے والا ہے اور اللہ عزوجل ہو وہ نیک
بندے کہاں ہیں؟''

اب راوحق سے مجھے کوئی ہٹا سکتا نہیں اس سے بہتر راستہ کوئی دکھا سکتا نہیں آ گیا حق اور دیکھو کفر باطل ہو گیا مرد میدانِ خدا ان سب پہ غالب ہو گیا

O___O

www.iqbalkalmati.blogspot.com 278 منتشر منتشون اروق کے فیصلے کا العقام العقام

انهم مواقع برمكنوبات لكصنے كافيصله

حضرت عمر فاروق رہائٹئ نے اہم مواقع پر جومکتوبات لکھے ان میں سے چند ایک بطورِ نمونہ ذیل میں بیش کئے جا رہے ہیں تا کہ قارئین کے لئے ذوق کا چند ایک بطورِ نمونہ ذیل میں پیش کئے جا رہے ہیں تا کہ قارئین کے لئے ذوق کا باعث بنیں۔

حضرت ابوعبيده بن الجراح طالعيد كام مكتوب:

حضرت ابوعبیدہ بن الجراح ڈالٹیز جب دمشق کی فتح کے بعد حمص کی جانب بڑھے تو انہیں حضرت عمر فاروق ڈالٹیز کا ذیل کا مکتوب موصول ہوا۔

> لا الدالا الله محمد رسول الله بهم الله الرحمٰن الرحيم

ب التدار من الريم عبدالله المومنين كى جانب سے البين الامة كوسلام!
ميں اس الله كا بندہ ہوں جس كے سواكوئى عبادت كے لائق نہيں اور اس كے نبی ہيے ہے ہے پر درودوسلام بھيجتا ہوں۔
الله عزوجل كے تكم اور اس كى مرضى كوكوئى نہيں بدل سكتا اور جو كي تجھ لوب محفوظ ميں لكھ ديا گيا ہے وہ بدل نہيں سكتا لوج محفوظ ميں لكھ ديا گيا ہے وہ بدل نہيں سكتا لوج محفوظ ميں لكھ ديا گيا وہ ہرگز ايمان نہيں لائے گا۔تم كوعلم ميں جسے كافرلكھ ديا گيا وہ ہرگز ايمان نہيں لائے گا۔تم كوعلم مونا جا ہے جبار غسانی اسے جيا زاد بھائيوں اور خاندان كے ہونا جا جہار غسانی اسے جيا زاد بھائيوں اور خاندان كے

الانتساخ المنظون الوق كرفيه لي

دیگرا کابرین کے ساتھ مدینہ منورہ آیا میں نے اس کی آ وُ بھگت کی اور انہوں نے میرے ہاتھ پر اسلام قبول کر لیا۔ ان کے اسلام لانے کی مجھے بھی خوشی ہوئی کیونکہ ان کے ذریعہ اللہ عزوجل نے اسلام اورمسلمانوں کوقوت عطافر مائی۔ جو کچھ بردہ غیب میں چھیا ہے اس کاعلم مجھے نبیں ہے۔ ہم جج بیت اللہ کے لئے مکہ مکرمہ گئے، جبلہ نے بیت اللہ شریف کے سات طواف کئے۔ دوران طواف اس کا تہبند ایک فزاری عرب کے ز برقدم آگیا اور کھل کر کندھے ہے گریڑا۔ جبلہ نے تیکھی نظر ہے فزاری کو دیکھا اور کہا تیرا برا ہوتو نے اللّٰہ عز وجل کے گھر میں مجھے برہند کیا۔فزاری نے کہا کداللہ کی قتم امیں نے جان بوجھ کر ابیا ہر گزنہیں کیا۔اس کے باوجود جبلہ نے اسے گھونسا مار دیا اور اس کی ناک اور اس کے حار دانت توڑ دیئے۔فزاری نے مجھ ہے شکایت کی اور جب میں نے جبلہ کو بلایا اور کہاتم نے اپنے فزاری بھائی کو مارا ہے اور اس کی ناک اور اس کے دانت توڑ دیئے ہیں تو وہ کہنے لگا کہ اس نے میرا تہبند کھول دیا تهاالله عزوجل كي نتم! اگر مجھے بيت الله شريف كى حرمت كالحاظ نه ہوتا تو میں اے مار ڈالتا۔ ہیں نے کہاتم نے اپنا جرم مان لیا اب یا تو وہ مہیں معاف کرے گایا میں تم سے اس کا بدلہ لوں گا۔ جبلہ بولا مجھے ہے بدلہ لیا جائے گا حالا نکہ میں بادشاہ ہوں اور ایک معمولی عرب نہیں ہوں۔ میں نے کہاتم دونو ک مسلمان

www.iqbalkalmati.blogspot.com والمعلقة المعلقة المعلق

ہواورتم اپنے عمدہ اخلاق کی بدولت ہی اس پر حاوی ہو کتے ،
ہواورتم اپنے محمدہ اخلاق کی بدولت ہی اس پر حاوی ہو سکتے ،
ہو۔ جبلہ نے مجھ سے ایک دن کی مہلت منگی اور میں نے فزاری سے بوچھ کر اسے مہلت وے دی۔ جب رات ہوئی تو جبلہ اپنے بھا ئیوں اور دیگر ساتھیوں کے ہمراہ شام کی جانب نکل محمل گا۔ مجھے امید ہے اللہ عز وجل نے چاہا تو تم اسے پکڑلو گے اورتم حمص کی فتح کے بعد رک جانا اور مزید پیش قدی نہ کرنا۔
اگر حمص کے لوگ جزید کے عوض صلح کر لیس تو ٹھیک ہے ورنہ اگر حمص کے لوگ جزید ہاسوی انطا کیہ کی جانب بھی روانہ کرواور ان سے لڑنا اور اپنے جاسوی انطا کیہ کی جانب بھی روانہ کرواور شام کے عیسائیوں سے بھی چوکنا رہو۔
شام کے عیسائیوں سے بھی چوکنا رہو۔
والسلام علیک وعلیٰ جمیع المسلمین

حضرت سعد بن ابی وقاص طالتین کے نام مکتوب

قادس کی فتح کے بعد حفرت سعد بن ابی وقاص رفائی نے حفرت عمر فالرق اور قال من فارق کی معاملہ فاروق رفائی کی محافظ کیا کہ عمراتی زمینداروں کے ساتھ کیا معاملہ کیا جائے جو حضرت خالد بن ولید اور حفرت شی بن حارثہ رفائی نے سے کئے ہوئے معاہدوں پر قائم ہیں اور اس کے علاوہ دیگر امور کے متعلق دریافت کیا۔ جن میں ذمیوں کا دعوی کہ حکومت فارس نے انہیں وعدہ خلافی پر مجبور کیا اور وہ لوگ جنگ میں مسلمانوں سے لڑے اور جونہیں لڑے ان کے متعلق دریافت کیا ان کے ساتھ کی سلملانوں سے لڑے اور جونہیں لڑے ان کے متعلق دریافت کیا ان کے ساتھ کیا سلوک کیا جائے۔ آپ رفائی نے انہیں ذیل کا مکتوب لکھا۔

کیا سلوک کیا جائے۔ آپ رفائی نے انہیں ذیل کا مکتوب لکھا۔

متام حمد اللہ عزوجل کے لئے ہے اور حضور نبی کریم شفائی کی ذات گرامی پر بے شار درودوسلام!

المنابية عملي العالم المعلق ال

واضح ہو کہ اللہ عزوجل نے ہر معاملہ میں بعض اوقات تزک و اخذ كا اختيار ديا ہے ليكن انصاف اوريادِ خداوندى كا معاملہ اس سے جدا ہے اور انسان کو کسی بھی حال میں یادِ خداوندی ہے غافل نہیں ہونا جائے کیونکہ اللہ عزوجل جاہتا ہے اسے زیادہ ہے زیادہ یاد کیا جائے۔ انصاف کے معاملہ میں بھی ضروری ہے کہ ہرحال میں انصاف سے کام لیا جائے۔ انصاف اگرچہ نرم نظر آتا ہے لیکن اس میں بڑی طافت ہے اور بیظلم کومٹانے کی صلاحیت رکھتا ہے اورظلم جو کہ بظاہر بڑا طاقتورنظر آتا ہے اس میں مقابلے کی طافت نہیں ہے۔عراق کے جو ذمی اینے معامدوں برقائم رہے ہیں اور انہوں نے وشمن کی مدونہیں کی ان کے معاہدے بحال رکھواور ان سے جزید وصول کرتے رہو۔ ابرانیوں نے جنہیں عہد شکنی پرمجبور کیا اورلڑنے پر آماوہ کیا اگر وہتم ہے تہیں لڑے اور نہ ہی اپنے گھر بار چھوڑ کر بھاگے ان کا دعوى تم حاموتو مان لواور اگرتم حاموتو رد كر دو اور انہيں جلاوطن

حضرت ابوموی اشعری طالعید اور حفاظ قرآن کے نام مکتوب:

حضرت ابومویٰ اشعری طالغیٰ نے حضرت عمر فاروق طالغٰن کی خدمت میں بھرہ کے تغین سو سے زیادہ حفاظ کی فہرست بھیجی تو آپ طالغٰن نے انہیں ذیل کا مکتوب کھا۔ مکتوب کھا۔

بسم اللدالرحمٰن الرحيم

عبدالله عمر (طلاعمهٔ) کی جانب سے عبدالله قبس (طلاعهٔ) اور حفاظ قرآن کے نام!

السلام علیم! واضح ہو یہ قرآن تمہارے لئے باعث اجر وشرف ہے لہذا اس کی تعلیمات پر عمل کر و اور اسے اپنے مقاصد کے حصول کا ذریعہ نہ ناؤ۔ جوقرآن کو اپنا قائد اور اتباع کا ذریعہ بنائے گا اسے یہی قرآن جنت کے باغوں کی سیر کر وائے گا۔ قرآن کو اللہ عز وجل کے حضور تمہارا سفارشی ہونا چا ہئے نہ کہ وہ تمہارے خلاف شکایت کے حضور تمہارا سفارشی ہونا چا ہئے نہ کہ وہ تمہارے خلاف شکایت کر جائے۔قرآن جس کا سفارشی ہوگا وہ جنت میں جائے گا اور جس کی شکایت کر ہے گا اس کا شھکا نہ دوز خے ہے۔

یادر کھو کہ قرآن ہدایت کا سرچشمہ ہے، علم کا بھول اور رحمٰن کی کتاب ہے۔ اس کے ذریعہ اللہ عزوجل اندھی آئیجیں، بہرے کان اور بند دل کھول دیتا ہے۔

یادر کھو کہ جب اللہ کا بندہ رات کو اٹھ کر مسواک کرتا ہے اور وضوکرتا ہے پھر تکبیر کہہ کر نماز پڑھتا ہے اور قرآن کی تلاوت کرتا ہے تو فرشتے اس کا منہ چو۔ متے ہیں اور کہتے ہیں کہ پڑھو کہتم پاک وصاف ہو گئے۔قرآن پڑھ کرتمہیں لطف آئے گا اور اگر رات میں اٹھنے والا بغیر مسواک کے وضو کرتا ہے تو فرشتہ اس کی تگرانی تو کرتا ہے لیکن اس کے منہ کونبیں چومتا۔ فرشتہ اس کی تگرانی تو کرتا ہے لیکن اس کے منہ کونبیں چومتا۔ یادر کھو کہ نماز میں قرآن کی تلاوت آیے ہی ہے جیسے کوئی چھیا

منت عمن وق ك فيهل الملكان المل

ہوا خزانہ مل جائے۔اس لئے جتنا ہو سکے کہ قرآن پڑھا کرو اور نمازتو نور ہے۔ زکوۃ برہان ہے اور صبر روشی ہے۔ روزہ ڈھال ہے اور قرآن تمہارے خلاف ایک دلیل ہے لیس قرآن کا احترام کرواوراس ہے ہے اعتنائی نہ برتو کیونکہ اللہ عزوجل اس کی عزت کرتا ہے جو قرآن کی عزت کرتا ہے اور جواس کی ہے حرمتی کرتا ہے اللہ عزوجل اسے بے آبرو کر دیتا ہے۔ یاد رکھو کہ جو مخص قرآن کو بڑھے اور اسے یا دکرے اور پھراس یم کم کرے ایسے شخص کی دعا قبول ہوتی ہے۔ اگر دعا ما تکنے والا جاہے تو اللہ عزوجل دنیا میں اس کی دعا بوری کر دیتا ہے ورنداس کے لئے آخرت میں بہترین اجر ہے۔ یا در کھو کہ اللہ عز وجل کا انعام بہترین اور ہمیشہ رہنے والا ہے اور بیہان لوگوں کونصیب ہو گا جو ایمان والے ہوں گے اور ہر حال میں اللّٰہ عز وجل پر کامل بھروسہ کرنے والے ہوں گے۔'' حضرت عمرو بن العاص طالعن کے نام مکتوب:

"تم نے کیے گوارا کرلیا کہ تمہاری فوج الگ تھلگ رہے اور نہ بی تمہاری فوج یہ بات تمہاری فوج یہ بات تمہاری فوج کے مناسب نہیں ہے اور نہ بی تمہاری فوج کے کے مناسب ہے مناسب ہے مناسب ہے مناسب ہے تمہارے درمیان دریا ہو اور تمہیں معلوم بی نہ ہو سکے کہ تم پراچا تک کیا مصیبت آن پڑی ہے۔ فوج کو فسطاط بلاؤ اور ان کی آبادی کے چاروں سمت میں ایک قلعہ نتمیر کرواؤ۔"

دریائے تیل کے نام رقعہ:

حضرت عمر و بن العاص و النفط نے مصر کی فتح کے بعد حضرت عمر فاروق بن العاص و النفط نے مصر کی فتح کے بعد حضرت عمر فاروق بنائی کو مجترین بن کو کہ اللہ مصر دریائے نیل میں ہرسال ایک کنواری لڑکی کو بہترین لباک اور بہترین زیورات ببنا کر بہا دیتے ہیں اور ان کا عقیدہ ہے کہ اس طرح دریائے نیل کا پانی بلند ہوکر ان کی فصلوں کو سیراب کرتا ہے۔ آپ و النفط نے جوابا مصرت عمر و بن العاص و النفط کو کھا۔

''تم انہیں روکو بے شک ماضی کی غلط رسومات کا خاتمہ تمہاری اولین ترجیح ہونی جائے۔ میں ایک رقعہ بھیج رہا ہوں تم میرے اس رقعہ کو دریائے نیل میں ڈال دینا۔''

حضرت عمر فاروق وٹائٹنے نے دریائے نیل کے نام ذیل کا مکتوب لکھا۔ بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

عبداللدامير المومنين كى جانب سے دريائے نيل مصركے تام! اگر تو مخلوق ہے تو تيرے بس ميں نہيں كہ تو فائدہ پہنچائے يا نقصان پہنچائے اور اگر تو اپنے اختيار سے بہتا ہے تو پھر رك

الانتراع المنافق المنا

جا ہمیں تیری کچھ ضرورت نہیں ہے اور اگر تو اللہ عزوجل کے فضل سے بہتا ہے تو پھر پہلے کی طرح رواں ہوجا۔ شام وعراق کے گور فرول کے نام مکتوب:

ابن سعد میں منقول ہے نجران کے عیسائیوں کو جلاوطن کرنے کے نین
اسباب تھے۔اوّل یہ کہ حضور نبی کریم مضافیۃ نے مرض وصال میں فرمایا تھا کہ جزیرہ
عرب میں اسلام کے علاوہ کوئی اور فدہب ندر ہے، دوم یہ کہ حضور نبی کریم مضافیۃ
نے ان سے عہدلیا تھا کہ وہ سورنہیں کھا کیں گے گرانہوں نے سود کھانا شروع کر
دیا اور سوم یہ کہ اہل نجران نے اپنی افرادی اور حربی قوت میں بے بناہ اضافہ کرلیا
تھا اور یمن کے مسلمانوں کو ان سے خطرہ تھا کہ کہیں یہ ان پرحملہ آور نہ ہوں چنانچہ
حضرت عمر فاروق والی فی اپنے دورِ خلافت میں شام وعراق کے گورنروں کو ان
کے معالمہ میں تنبیہ کرتے ہوئے ذیل کا مکتوب لکھا۔

بسم اللهالرحن الرحيم

سے مکتوب اہل نجران کے لئے لکھا گیا ہے کہ ان میں سے جو لوگ اپنا کھر بارچھوڑ کر چلے جا کیں سے وہ اللہ عز وجل کی امان میں رہیں کے وہ اللہ عز وجل کی امان میں رہیں کے اور کوئی مسلمان انہیں کچھ نقصان نہ پہنچا ہے گا اس عہد کی وجہ سے جو حضور نبی کریم مضابح اور حضرت ابو بکر صدیق واللہ نے ان کے ساتھ کیا تھا۔

یاورہ امرائے عراق وشام میں ہے جس کسی کے پاس نجران کے عیدائی جا کمی سے۔ وہ انہیں کاشت کے لئے زمین دیں مے اورجتنی زمین وہ کاشت کریں مے نجران میں چھوڑی ہوئی

اراضی کے عوض وہ اس کے مالک ہوجا کیں گے اور اسے کاشت کرنے اور اپنی ملکیت میں رکھنے سے انہیں کوئی نہیں رو کے گا اور ان پر کوئی مالی مواخذہ بھی نہ ہوگا۔ اگر کوئی ان پرظلم کرے گا تو جومسلمان موجود ہوں گے ان پر لازم ہوگا کہ وہ ان کی مدد کریں کیونکہ وہ ہماری پناہ میں آ چکے ہیں اور نئی جگہ پر آباد ہونے کے چوہیں ماہ تک ان سے جزیہ نہیں لیا جائے گا اور ہونے کے چوہیں ماہ تک ان سے جزیہ نہیں لیا جائے گا اور ان پرصرف زمین کا نیکس وصول کیا جائے گا جس پر کا شتکاری میں آگے۔

قاضی شرح کے نام مکتوب:

۱۸ھ میں قاضی شریح کوفہ کے قاضی مقرر ہوئے اور وہ ساٹھ برس تک اس منصب پر فائز رہے۔حضرت عمر فاروق رہائیۂ نے انہیں کوفہ کا قاضی مقرر کرنے کے بعد ذیل کا مکتوب لکھا۔

"اگرتمہارے پاس کوئی ایسا مسکد آئے جس کاحل قرآن مجید میں موجود ہوتو پھر قرآن مجید کے مطابق فیصلہ کرواور کسی مجتبد کی جانب متوجہ نہ ہواور اگر کوئی ایسا مسئلہ پیش ہوجس کاحل قرآن مجید میں نہ پاؤ تو سنت رسول اللہ مطابق استفادہ کرواور اس پرعمل کرواور اگر کسی مسئلہ کاحل قرآن مجید اور سنت رسول اللہ میں نہ پاؤ تو پھر ممتاز مجتبدین کی رائے سنت رسول اللہ میں نہ پاؤ تو پھر ممتاز مجتبدین کی رائے سے استفادہ کرواور اگر پھر بھی کوئی قابل قبول حل نہ ملے تو پھر اپنی رائے کوتر جے دواور آگر پھر بھی سے بھی رابطہ کر سکتے ہواور بہتر

المنت المسلط الم

یمی ہے کہتم مجھ سے رابطہ کرلو۔''

حضرت نعمان بن مقرن طالتُمُّة کے نام مکتوب

حضرت نعمان بن مضرن رئالنئ جوابرانیوں کے خلاف جہاد پر مامور تھے انہیں حضرت عمر فاروق رئالنئ نے ذیل کا مکتوب لکھا۔ بہم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

> الله کے بندے عمر امیر المونین طالعین کا جانب سے نعمان بن مقرن طالعین کے نام!

السلام علیم! میں اس معبود کی عبادت کرنے والا ہوں جس کے سواکوئی عبادت کے لائق نہیں ہے۔ مجھے پتہ چلا ہے ایرانیوں کا ایک بڑالشکر جنگ کے لئے نہاوند میں جمع ہوا ہے اور تہہیں جیسے ہی میرا مکتوب ملے تم اپنے پاس موجود مجاہدین کے ہمراہ ان کی سرکوبی کے لئے نکل پڑنا اور پھر ملے اور دشوار گرار راستوں کو اختیار نہ کرنا اور اپنے لشکر کو کسی جا کر جن سے محروم نہ رکھنا ورنہ وہ دین اسلام سے مخرف ہوجا کیں گے اور انہیں جنگلوں ورنہ وہ دین اسلام سے مخرف ہوجا کیں متلا ہوں اور مجھے ایک سے بھی نہ گزار نا جہاں وہ بیاریوں میں مبتلا ہوں اور مجھے ایک مسلمان کی جان ایک لاکھ دینار سے بھی زیادہ عزیز ہے۔

مسلمان مجاہدین کے نام مکتوب:

مسلمان مجاہدین جب خانقین میں مقیم تھے تو انہیں حضرت عمر فاروق رہائیڈ کا یہ مکتوب ملا اور خانقین کا علاقہ جلولا ہے ہیں یا پچپیں میل شال مشرق کی جانب واقع ہے اور مسلمان مجاہدین نے جب جلولا میں ایرانی لشکر کو پسپا ہونے پر مجبور کیا

الاستنتاب اوق كيليا

تو ایرانی لٹکرنے خانقین میں بناہ لی مگر اسلامی لٹکرنے انہیں خانقین سے بھی فرار ہونے پر مجبور کر دیا اور خانقین پر قبضہ کر لیا۔ آپ طلائے نئے سے مجامدین کو ذیل کا مکتوب لکھا۔

"جبتم کی قلعہ کا محاصرہ کرواور اہل قلعہ اس شرط پر ہتھیار والنے پر رضامند ہوں کہ ان کے ساتھ اللہ عزوجل کی منشاء کے مطابق فیصلہ کیا جائے تو ان کی بات نہ مانو اور تم ان کے متعلق اللہ عزوجل کی منشاء سے آگاہ نہیں ہواور اگروہ اس شرط متعلق اللہ عزوجل کی منشاء سے آگاہ نہیں ہواور اگروہ اس شرط پر ہتھیار ڈالیس کہ تمہاری منشاء کے مطابق فیصلہ ہوتو پھر ان کے ساتھ معاملات طے کرنا اور جو مناسب مجھو ویبا سلوک روا رکھنا۔"

O___O



صحابه كرام ضئالتم كوفيحن

حضرت عمر فاروق برائی نے اپنے زمانہ خلافت میں صحابہ کرام بنی اُنٹی کو کئی نفیحتیں کیں جن میں ان کو نیک اعمال کی ترغیب دلائی اور لوگوں کی معاونت اور ان کے ساتھ حسن سلوک کی نفیحت کی۔ آپ بڑائی نی کی سیحتیں کتب تواریخ کا حصہ ہیں۔ ذیل میں آپ بڑائی کی چند اہم مواقع پر کی گئی صحابہ کرام بڑائی کو نفیحتیں اختصار کے ساتھ بیان کی جا رہی ہیں تا کہ قار کمین کے لئے ذوق کا باعث بنیں اور قار کمین بھی ان فیمحتوں پر عمل پیرا ہوکرا پی عاقبت سنواریں۔

اینے بعد آنے والے خلیفہ کونصیحت:

امام بیمنی مینیا فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رٹائٹیؤ نے اپنے بعد آنے والے خلیفہ کونصیحت کرتے ہوئے فرمایا۔

> ''الله عزوجل کی حمد و ثناء اور حضور نبی کریم منطق کی آبر بے شار درود وسلام۔

> اما بعد! میں اپنے بعد منتخب ہونے والے کو خلیفہ مہاجرین اولین
> کے بارے میں وصیت کرتا ہوں کہ ان کے حقوق کو پہچانے
> اور ان کی عزت اور بڑائی کا خیال رکھے اور انصار کے بارے
> میں وصیت کرتا ہوں یہ وہ لوگ ہیں جنہوں نے حضور نبی کریم

تر عمر المعالم المعالم

منظر اور مهاجرین سے قبل اینے گھروں میں ٹھکانا دیا۔ میں اس بات کی وصیت کرتا ہوں کہ ان کے بھلوں کی یا تیں مانیں اور ان میں لغزش کرنے والوں ہے درگز رکریں اور میں اس کو یہ بھی وصیت کرتا ہوں کہ اہل شہر کے ساتھ حسن اخلاق ہے پیش آئے اور بیالوگ اسلام کے لئے حفاظتی دستہ اور مال کا ذخیرہ کرنے والے اور دشمنوں کے لئے باعث غیظ وغضب ہیں اور بیہ کدان سے پچھ نہ لیا جائے گر جوان کے یاس زائد ہواور وہ بھی ان کی رضامندی ہے اور میں اعراب کے بارے میں بھلائی کرنے کی بھی وصیت کرتا ہوں اس لئے کہ یہی لوگ عرب کی جڑ اور اسلام کا سرچشمہ ہیں۔ ان کے مال سے ان کے جانوروں کی زکوۃ لے کرانہیں کے فقراء پر تقتیم کر دے۔ الله عزوجل اور اس كے رسول مطابقات كى طرف سے ان يرجو ذمه داریاں عائد ہوتی ہیں۔ میں منتخب ہونے والے خلیفہ کو وصیت کرتا ہوں لوگوں کے لئے جیسا کہ ان سے معاہدہ ہے اس کو بورا کرے اور جو رحمن ان کے پیچھے ہیں ان کو بھیج کر ان سے جہاد کرے اور کسی کو اس کی طافت سے زیادہ تکلیف نہ

حفرت قاسم بن محمد رہ النئوز روایت کرتے ہیں حضرت عمر فاروق رہ النئوز نے اسپے بعد آنے والے فلے فلے میں خدر رہ ایا۔ اسپے بعد آنے والے فلیفہ کو نصیحت کرتے ہوئے فر مایا۔ ''اس آدمی کو جو اس خلافت کا والی ہو گا اسے معلوم ہونا جائے

اس سے خلافت کو قریب اور جلد سب واپس لینے کا ارادہ کریں گے۔ میں لوگوں سے اپنے لئے خلافت باتی رکھنے میں لڑتا رہوں گا اور اگر میں جان لیتا کہ لوگوں میں سے کوئی اس کام کے لئے زیادہ قوی ہے تو میں اس کو آگے بڑھاتا تا کہ وہ میری گردن مار دیتا' یہ بات مجھے زیادہ پہند بہ نسبت اس کے میری گردن مار دیتا' یہ بات مجھے زیادہ پہند بہ نسبت اس کے کہ میں اس کا والی ہوتا۔''

حضرت ابوعبيده بن الجراح طالفيٌّ كونصبحت:

حضرت صالح بن کیسان رٹائٹؤڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رٹائٹوڈ نے حضرت ابوعبیدہ بن الجراح رٹائٹوڈ کو حضرت خالد بن ولید رٹائٹوڈ کی حگہ کشکر کا امیر بنایا تو ان کونصیحت کرتے ہوئے فرمایا۔

"میں تہمیں اللہ عزوجل سے ڈرنے کی نفیحت کرتا ہوں جو ہمیشہ
باقی رہنے والا ہے اور اس کے سوا ہر چیز فنا ہونے والی ہے
جس نے ہمیں گراہی سے نکال کر، تاریکیوں سے نکال کر، نور
کے راستوں پرلگایا۔ میں نے تم کو حضرت خالد بن ولید را اللہ کی جگہ لشکر کا امیر مقرر کیا ہے۔ تم لشکر کی ان باتوں کا خیال
رکھوجن کا حق تم پر ہے۔ مال غنیمت کی امید پرمسلمانوں کو
ہلاکت میں مبتلا نہ کرنا اور لشکر کو کسی ایسے مقام پرمت ہے جانا
جس جگہ کے بارے تم نہ جانتے ہو۔ بے شک اللہ نے مجھے
تمہارے ساتھ اور تمہیں میرے ساتھ آزمایا ہے اور اپنی آنکھوں
کو دنیا سے بند کر لو اور اسینے دل کو دنیا کی توجہ سے عافل کر دو

ورنہ بید دنیا تہہیں تاہ کر دے گی جس طرح کہ اس نے تم ہے پہلوں کو غافل کیا اور وہ تاہ و برباد ہو گئے اور تم ان کی جگہوں کو د کھے چکے ہو۔''

حضرت ابوموسیٰ اشعری طالعین کونصیحت:

اخرج الدینوری میں منقول ہے کہ حضرت عمر فاروق بڑائٹنڈ نے حضرت ابومویٰ اشعری بڑائٹنڈ کونصیحت کرتے ہوئے فرمایا۔

> ''اما بعد! بےشک لوگوں کو اینے بادشاہ سے نفرت ہوتی ہے میں اللہ کی پناہ حابتا ہوں کہ مجھے اور تمہیں اس سے واسطہ نہ یڑے۔اس کے لئے تم حدود قائم کرواگر چہدن میں تھوڑی ہی دیرے لئے ہواور جب تمہارے سامنے دو کام آئیں۔ ایک ان میں سے اللّٰہ عزوجل کے لئے ہواور دوسرا دنیا کے لئے توایخ حصہ کے لئے اس کام کوتر جے وینا جو اللہ عزوجل کے لئے ہو اس کے کہ دنیا فنا ہو جائے گی اور آخرت باقی رہے گی۔فساق میں ڈربٹھا دو اور ان کو ایک ایک ہاتھ اور ایک ایک پاؤں کا كردويعني رہزنوں كا داہنا ہاتھ اور باياں پير كاٹ دو_مسلمانوں کے مریضوں کی عیادت کرتے رہنا۔ ان کے جنازوں میں شامل ہونا۔اینے درواز وں کو کھلا رکھنا اورمسلمانوں کے کاموں کوخود انجام دینا کہتم بھی ان کی طرح کے انسان ہو۔ اللہ عزوجل نے مهمیں عام مسلمانوں سے زیادہ بوجھ دیا ہے اور مجھے اطلاع ملی ہے کہتم نے اپنے لئے اور اپنے کھر والوں

الانتسان وق كرفيها

کے لئے لباس میں ایک خاص ہیئت ایجاد کی ہے اور تمہارا کھانا اور تمہاری سواری عام مسلمانوں کی طرح نہیں۔ اللہ عزوجل کے بندے تم خود کو ان لغویات سے بچاؤ کیونکہ حاکموں میں سب سے زیادہ بدنصیب وہ حاکم ہے جس کی رعایا اس کی وجہ سے برنمیبی میں مبتلا ہو۔''

ضحاک کی روایت ہے حضرت عمر فاروق جلائیڈ نے حضرت ابوموی اشعری جانبیڈ کونصیحت کرتے ہوئے لکھا۔

حضرت سعد بن الى وقاص بنالتنظ كوتصبحت:

حضرت عمر فاروق مینانیم نیا حضرت سعد بن ابی و قاص بن تی کومعرکه عراق میں کشکراسلامی کا امیرمقررفر ماتے ہوئے تصیحت فر مائی۔ ''اے سعد (شائنۂ)! تمہیں یہ بات دھوکے میں مبتلا نہ کر دے کہتم حضور نی کریم مشاریق کے ماموں اور صحابی رسول مشاریق کے ہو۔ بے شک اللہ عزوجل برائی کو برائی کے ذریعے نہیں مثاتا بلکہ نیکیوں کے ذریعے برائیوں کو مٹاتا ہے۔ بے شک اللہ عزوجل اور کسی دوسرے کے درمیان سبی تعلق نہیں ہے۔ اگر تعلق ہے تو اس کی اطاعت کا۔لوگوں کا شریف اور غیر شریف الله عزوجل کے نزویک برابر ہے۔ اللہ عزوجل سب کا رب ہے اور ہم سب اس کے بندے ہیں۔ ہمیں ایک دوسرے سے فضیلت صرف ای سبب سے ہوسکتی ہے کہ ہم اللہ عزوجل کی اطاعت و فرما نبرداری میں پہل کریں اور اس امریر قائم ر ہیں جس پر حضور نبی کریم مطابقاتا قائم رہے جب سے آپ مِنْ اللَّهُ اللَّهِ عَلَى اور يهال تك كه آب مِنْ اللَّهُ بمين جِهُورْ كريطٍ کئے اور تم ان لوگوں میں ہے نہ ہو جاؤ جو خسارے میں مبتلا

جب حضرت سعد بن الى وقاص وظائفة معركة عراق كے لئے روانہ بونے لگے تو حضرت عمر فاروق بنائفة نے آپ دفائفة كونفيحت كرتے ہوئے فرمایا۔
" میں نے تمہیں عراق كی لڑائی میں لشكر اسلام كا امير مقرر كيا ہے تمہیں تمہارے فق كے سواكوئی چیز نجات دینے والی نہیں۔
ہے تمہیں تمہارے فق كے سواكوئی چیز نجات دینے والی نہیں۔
" ہے آپ كواور جو تمہارے ساتھ ہیں نیکی كا عادی بنا لواور ای

الاستراعم في المعلق الم

ہر عادت کے لئے ایک تیاری ہے۔ بھلائی کی تیاری صبر ہے للندائم صبر كا دامن باتھ ہے نہ جھوڑ نا اوران مصائب برصبر كرنا جوتمهميں پیش آئمیں۔تمہیں اللہ عزوجل کا خوف ہونا جا ہے اور تهہیں معلوم ہے کہ اللہ عز وجل کا خوف دو باتوں میں پوشیدہ ہے جن میں سے ایک اللہ عزوجل کی اطاعت اور دوسری اس ہے معاصی ہے بیخا ہے۔ اللہ عزوجل کی اطاعت وہی کرسکتا ہے جو دنیا سے بغض رکھتا ہے اور آخرت کومحبوب رکھتا ہے۔ الله عزوجل كى نافرمانى وہى كرتا ہے جو دنيا كومحبوب ركھتا ہے اور دلوں کے لئے مجھ حقائق ہیں جن کو اللّٰہ عز وجل پیدا فرما تا ہے۔ان میں ہے بعض حفائق جھیے ہوئے ہیں اور بعض حفائق ظاہر ہیں۔ اس کی تعریف کرنے والے اور اس کی ندمت کرنے والاحق میں اس کے نزویک برابر ہیں اور چھیا ہوا اس طرح پہچانا جاتا ہے کہ ایسے خص کے دل وزبان سے حکمتوں کا ظہور ہوتا ہے اور لوگ اس مخص سے محبت کرنے لگتے ہیں۔اس محبت سے تم لا پروائی نہ برتنا اس کئے کہ انبیاء کرام بیل نے الوكول كى محبت كاسوال كيا ہے اور بے شك الله عزوجل جب سنسى بندے ہے محبت كرتا ہے تو اس كومحبوب بناليتا ہے اور جب سيخص سے بغض ركھتا ہے تو اس كومبغوض بناليتا ہے۔تم اینے مرتبے کا خیال رکھنا کہ تمہارا مرتبہ لوگوں کے نزدیک کیا

حضرت عتبه بن غزوان طالبَيْنَ كونصيحت:

حضرت عبدالملک بن عمیر رئی تنفظ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق رئی تنفظ نے حضرت عتبہ بن غزوان رئی تنفظ کو بھرہ کا گورِنرمقرر کیا اور نصیحت کرتے ہوئے فرمایا۔

> ''اے عتبہ (بنائنٹۂ)! میںتم کوسرز مین ہندیر جو بڑا حصہ دشمنوں کے بڑے حصول میں سے ہے امیر مقرد کر رہا ہوں۔ مجھے امید ہے کہ اللہ عزوجل اس کے ماحول سے تمہاری کفایت فرمائے گا اور تمہاری مدد ان اطراف کے مقابلہ میں فرمائے گا' میں نے علاء بٹالننے بن خصری کی طرف لکھ دیا ہے کہ تمہارے لئے مدو میں عرفجہ بن ہر ثمہ طالفہ کو بھیج دیں۔ بیعرفجہ طالفہ وشمنوں ہے بہت جہاد کرنے والے اور ان کے ساتھ تدبیر جنگ میں ماہر ہیں۔ جب بیتمہارے یاس آجا کیں تو ان ہے مشورہ کرنا اوران کوایئے سے نز دیک کرنا۔ اہل ہند کوالٹدعز وجل کی طرف وعوت وینا جس نے تمہاری میہ بات مان کی اس سے اسلام قبول کر لینا اور جس نے انکار کر دیا اس پر جزیہ لگانا جس کو وہ ذلیل ہوکرادا کریں اور اگر ان دونوں باتوں کومنظور نہ کریں تو تکوار پکڑنا اور ان ہے زمی نہ برتنا اور جس چیز کے تم امیر مقرر ہوئے اس میں اللہ عزوجل سے ڈرتے رہنا اور اپینے آپ کو ان چیزوں سے بچانا جوتمہارے اندر کبریپدا کر دیں کیونکہ بہ کبرتمباری آخریت کو برباد کرد ۔۔ گا۔تم حضور نبی کریم مصریب

منت عمن وق كرفيه لل

کے ساتھ رہے اور تہہیں حضور نبی کریم ﷺ کی وجہ سے عزت ملی اور حضور نبی کریم ﷺ کی وجہ سے بی کمزوری کے بعد بی قوت، ملی۔ تم لوگوں کو جائز امور کا تمام کروتا کہ تمہاری اطاعت کریں۔ نعمت سے اس طرح بچنا جس طرح معصیت سے زیادہ سے بچا جاتا ہے البتہ نعمت تمہارے لئے معصیت سے زیادہ خطرناک ہے اس لئے کہ بیہ آہتہ آہتہ تم کوا نبی جانب متوجہ کرے گی اور اگر تم اس کی جانب متوجہ ہوئے تو تم جہنم میں جاؤ گے۔ پس تم اللہ عز وجل کا ارادہ کرنا اور دنیا کا ارادہ نہ کرنا ور اینے آپ کو ظالم لوگوں کے بچھاڑے جانے کی جگہ سے اور اینے آپ کو ظالم لوگوں کے بچھاڑے جانے کی جگہ سے اور اینے آپ کو ظالم لوگوں کے بچھاڑے جانے کی جگہ سے اور اینے آپ کو ظالم لوگوں کے بچھاڑے جانے کی جگہ سے اور اینے آپ کو ظالم لوگوں کے بچھاڑے جانے کی جگہ سے اینا۔''

حضرت علاء بن خضر مي رنالغير كونصيحت:

الاست عمر المول كي المعلى المول ال

نہیں۔ دوسرے مسلمانوں کی نسبت تم پر ان کے حقوق زیادہ بیں اس کئے ان کے حقوق سے چشم یوشی نہ کرنا پس تمام مخلوق اور حکومت اللہ عزوجل ہی کے لئے ہے اور تمہیں معلوم ہوتا ، عاہیے کہ اللہ عزوجل کا تھم محفوظ ہے جس نے اس امر کو اتارا ہے اور اینے امر کی حفاظت کر رہا ہے۔تم تو اس کام کو دیکھو جس کے لئے تمہیں پیدا کیا گیا ہے ای کے لئے مشقت اٹھاؤ اور اس کے ماسوا کو جھوڑ دو۔ اللّٰہ عز وجل کی رضامندی کے طالب رہواور اس کی تاراضگی ہے بچو۔ بے شک اللہ عزوجل جے جا ہتا ہے عزت دیتا ہے۔ ہم اللہ عزوجل سے اپنے لئے اور تمہارے کے اس کی فرمانبرداری بجالانے پر اور اس کے عذاب سے نجات پانے کے لئے مدد کے طالب ہیں۔''

O___O



يانچوال باب:

عمر فاروق طالغيُّ كے فضائل ومنا قب

فضائل ومنا قب، سیرت مبارکہ کے درخشاں پہلو،
اہل بیت اطہار دی گئی ہے حسن سلوک،
اہل بیت اطہار دی گئی ہے۔
کشف وکرا مات کا بیان

O___O

المنت منت و ارق كيسك



فضائل ومناقب

حضرت عمر فاروق طِلِينَيُّ کے زہد وتقوی اور بلند مراتب کے بارے میں بے شارقر آنی آیات واحاد بیث موجود ہیں۔ آپ طِلْتُوَدُّ کی ذات با برکات حضور نبی کریم میں ہے۔ آپ طِلْتُودُ کی ذات با برکات حضور نبی کریم میں ہے۔ آپ طِلْتُودُ نے اپنی تمام زندگی حضور نبی کریم میں ہے۔ اسوا حسنہ کا بہترین نمونہ تھی اور آپ طِلْتُودُ نے اپنی تمام زندگی حضور نبی کریم میں ہے۔

حضرت عمر فاروق بڑائی کے فرزند حضرت عبداللہ بن عمر بڑائی فرماتے ہیں ۔
اگر کسی معاملہ میں والد بزرگوار کی رائے لوگوں کی رائے سے مختلف ہوتی تو اللہ عزوجل آپ بڑائی کی رائے کے موافق قرآن مجید کی آیات نازل فرما دیتا۔
عزوجل آپ بڑائی کی رائے کے موافق قرآن مجید کی آیات نازل فرما دیتا۔
غزوہ بدر میں جب مشرکین قیدی بنائے گئے تو ان قید یوں کے بارے میں حضرت عمر فاروق بڑائین کی رائے کی تائیداللہ عزوجل نے اپ اس فرمان کے میں حضرت عمر فاروق بڑائین کی رائے کی تائیداللہ عزوجل نے اپ اس فرمان کے فرمان کے دو کی کی دائی کی دائی کی دائی کی تائیداللہ عزوجل نے اپ اس فرمان کے فرمان کے دو کی کی دائی کی دائی کی تائیداللہ عزوجال نے اپ اس فرمان کے فرمان کے دو کی دائی کی دائیں کی دائی کی دائی کی دائی کی دائی کی دائیں کے دو کی دائیں کی دو دائیں کی دائیں کی دائیں کی دائیں کی دائیں کی دائیں کی دو دائیں کی دا

لَوْ لَا كِتُلْ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ

ای طرح جب حضرت عمر فاروق طِلْنَامُوْ نَنْ حَضُور نِی کریم مِنْ اِللَّهُ نَا اِللَّهُ اِللَّهُ اِللَّهُ اِللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللْمُوالِمُ اللَّهُ

المنت منت وارق كيا حضرت عمر فاروق رفال فلنفؤ نے بارگاہِ رسالت مآب مطابط میں عرض کیا یارسول الله مضایقی آپ مضایقی کی از واج مطهرات بن کین کے پاس نیک و بدلوگ آتے ہیں اور اگر آپ سطینی انہیں پردہ کا حکم دیں تو کیا ہی عمدہ ہو چنانچہ اللہ عزوجل نے آپ بنائیڈ کی رائے کی موافقت میں حضور نبی کریم میشانیڈ کو کھم دیا وہ ایی بیویوں، صاحبز ادیوں اورمسلمان عورتوں کو پر دہ کا تکم دیں۔ جب عبداللد بن ابی منافق کی وفات ہوئی تو حضور نبی کریم مطابق اس کی نمازِ جنازہ پڑھانے کے لئے تشریف لے جانے لگے۔حضرت عمر فاروق طالعیٰ نے حضور نى كريم مطفور المستفيرة كرعن كيا يارسول الله مطفورة البيارة منافق کی نمازِ جنازہ پڑھاتے ہیں جبکہ اس نے فلاں وفت میں فلاں بات اسلام اورمسلمانوں کے خلاف کی تھی۔حضور نبی کریم مضیکی اے مسکرا کر فرمایا کہ اے عمر (وللنينة)! مير ك سامنے سے بث جاؤ اور مجھے اس كى نماز جنازہ پڑھانے اور نہ پڑھانے دونوں کا اختیار دیا گیا ہے۔ میں نے اس کی نمازِ جنازہ پڑھانے کو پہند کیا اور مجھے کہا گیا کہ جاہوں تو اس کی مغفرت کی دعا کروں اور جاہوں تو نہ کروں۔ اگر میں ستر مرتبہ اس کے لئے مغفرت کی دعا کروں تو وہ قبول نہ ہوگی جبکہ اس ہے زیادہ کروں گاتو وہ قبول ہو گی اور میں اس کے لئے ستر سے زیادہ مرتبہ مغفرت کی دعا کرتا ہوں۔حضور نبی کریم منطق کی اس کی نمازِ جنازہ پڑھائی اور پھراس کی قبر يركاني ديريك كفر مدر ب- پھراللدعزوجل نے آپ بنائن كى تائيد ميں فرمايا۔ ''اور ان میں سے جو بھی مرجائے اس کی نماز نہ پڑھتے اور نہ اس کی قبر یر کھڑے ہوں انہوں نے اللہ اور اس کے رسول کے ساتھ گفر کیا اور بیاس حالت میں مرے کہ بیر کا فر اور فاسق

الانت المنتون اوق كينيل

شقے_''

حضور نبی کریم مضرین نے بارگاہ خداوندی میں دعا کی۔ ''البی! عمر (طالعیٰ یُن) بن خطاب یا عمر بن ہشام ابوجہل دونوں میں ہے ایک یا دونوں میں ہے ایک یا دونوں کے ذریعے دین اسلام کو تقویت عطافرما۔''

الله عزوجل نے حضور نبی کریم سطانی کی دعا کو قبول فرمایا اور حضرت عمر فاروق طائع اور حضرت عمر فاروق طائع و اسلام میں داخل ہوئے۔ آپ بنائعیٔ کے مسلمان ہونے کے بعد دین اسلام کی اعلانہ ببلیغ ہونے گی اور مسلمان اعلانہ عبادت کرنے گئے۔

حفرت عبداللہ بن عباس رہائے ہا سے مروی ہے فرماتے ہیں جب حضرت عمر فاروق رہائے ہیں جب حضرت عمر فاروق رہائے اس وقت حضور نبی عمر فاروق رہائے اسلام قبول کیا تو حضرت جبرائیل علیائی اس وقت حضور نبی کریم مضائے ہے ہارگاہ میں حاضر ہوئے اور عرض کیا۔

''یارسول الله منطق الله منطق این این مر (طالع این کے اسلام لانے کی خوشیاں آسان پر بھی منائی جارہی ہیں۔'' خوشیاں آسان پر بھی منائی جارہی ہیں۔' حضور نبی کریم منطق ایک موقع پر فرمایا۔

''اس ذات کی شم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے۔ ابلیس مجھی اس راہ پرنہیں چلتا جس راہ پرعمر (شائنڈ) چلتا ہے۔ عمر (خالفیڈ) تم جس راستہ پر چلتے ہوابلیس اس راستہ سے ہٹ جاتا ہے۔''

حضرت مجاہد طالبیٰ ہے مروی ہے فرماتے ہیں ہم اکثر حضرت عمر فاروق طالبیٰ کے دور خلافت میں میہ کہا کرتے تھے کہ حضرت عمر فاروق طالبیٰ کے ڈر کی وجہ www.iqbalkalmati.blogspot.com المنتسب مشتر وق كرفيسل الموق كرفيسل الموق كرفيسل الموق المستوادي الموق المستوادي الم

ت شیطان قید ہے اور جب آپ بیٹائیڈ کا وصال ہوا شیطان آزاد ہوگیا۔
حضور نبی کریم ہے ہے ہے ایک موقع پر یوں ارشاد فرمایا۔
"اللہ عز وجل نے حق عمر (بیٹائیڈ) کے قلب و زبان پر اتارا ہے
اور اگر میر ہے بعد کوئی نبی ہوتا تو وہ یقینا عمر (بیٹائیڈ) ہوتا۔"
حضور نبی کریم ہے پہنے ایک موقع پر فرمایا۔
"اللہ عز وجل نے عمر (بیٹائیڈ) کے ذریعے حق وباطل میں تفریق پیدا کی ہے۔"
پیدا کی ہے۔"

حضرت عبداللہ بن عباس ہلی اسے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم سٹنے پیچینے ارشاد فرمایا۔

حفرت ابو ہریرہ رہائی ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم سے ہے۔
نے فرمایا پہلے آسان پر ای ہزار فرشتے اس شخص کے لئے بخشش کی دعا کرتے ہیں جو حضرت ابو بکر صدیق اور دوسرے جو حضرت ابو بکر صدیق اور دوسرے آسان پر ای ہزار فرشتے اس شخص پر لعنت جھیجے ہیں جو حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق بنی آئیز سے بخض رکھتا ہے۔

حضرت علی الرتضی بٹائٹڑ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ میں حضور نبی کریم شکائٹی کے پاس بیٹھا تھا حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق بوی کنٹیز دونوں

الانت تعملات والمحالة المعلق ا

ا کھے نشریف لائے۔حضور نبی کریم میں کی استی کی اور دونوں کو دیکھا تو فرمایا۔
"درید دونوں اہل جنت کے بوڑھوں اور جوانوں کے سردار ہیں ماسوائے انبیاء بینلائے۔"

حضرت عبداللہ بن عمر طلی اسے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم شنائی ا

''ہر چیز کے لئے شفاء ہے اور دلوں کی شفاء اللّٰہ عز وجل کے ذکر میں شفاء حضرت ابو بکر ذکر میں شفاء حضرت ابو بکر صدیق اور اللّٰہ عز وجل کے ذکر میں شفاء حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق جی اللّٰه کی محبت میں ہے۔' حضرت جیش بن خالد ولی شخان ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم شخانی بینہ نے فرمایا۔

''ابو بکر، عمر، عثمان اور عائشہ (می کفیم) اللہ عزوجل کی آل ہیں اور بروزِ المعلی، فاطمہ، حسن اور حسین (می کفیم) میری آل ہیں اور بروزِ حشر اللہ عزوجل اپنی اور میری آل کو جنت کے باغوں میں جمع فرمائے گا۔''

حضرت ابوذر غفاری برانین فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ میں حضرت عمر فاروق برانین کے ہمراہ جارہ تھا کہ راستے میں ایک نو جوان آپ برانین کے پاس سے گزرا۔ اس نو جوان نے آپ برانین کوسلام کیا تو آپ برانین نے فرمایا برا نیک شخص ہے۔ حضرت ابوذر غفاری برانین فرماتے ہیں کہ میں اس نو جوان کے پیچھے گیا اور اس سے کہا وہ میر ہے حق میں دعائے فیمر کرے۔ اس نو جوان نے کہا آپ برانین حضور نبی کریم سے بیا آپ برانین کو حضور نبی کریم سے بیا کی صحبت حضور نبی کریم سے بیا کی صحبت حضور نبی کریم سے بیا کی صحبت حضور نبی کریم سے بیانی کی صحبت

المنت بمن وارق كيديل

حاصل رہی ہے میں آپ رہائی کے لئے کیے دعا کرسکتا ہوں؟ حضرت ابوذ رغفاری رہائی ہے ہیں میں سے اس نوجوان سے کہا تمہارے بارے میں حضرت عمر فاروق رہائی نفی نے ایک نوجوان سے کہا تمہارے بارے میں حضرت عمر فاروق رہائی نفی نہا ہے بیخص بڑا نیک ہے اور حضور نبی کریم سے بیٹی نے حضرت عمر فاروق وی نفی نفی کہا ہے بیٹی فرمایا ہے کہ عمر (رہائی نفی) کی زبان اور ول پرحق جاری کردیا گیا ہے۔

حضرت ابوسعید خدری طالعین سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم منتا کیا ہے ارشاد فرمایا۔

> ''جس نے عمر (بنگائیڈ) سے بغض رکھا اس نے مجھ سے بغض رکھا اور جس نے عمر (بنگائیڈ) سے محبت کی اس نے مجھ سے محبت کی۔''

حضرت انس بن ما لک رہائی سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم سے کی احد پہاڑ پر تشریف لے گئے۔ اس وقت آپ سے کی ہمراہ حضرت ابو بکر صدیق، حضرت عمر فاروق اور حضرت عثمان غنی رہی گئی ہے۔ احد پہاڑ نے کا بنیا شروع کر دیا۔ آپ سے کی کی احد پہاڑ کو مھوکر لگائی اور فرمایا۔

> ''اے احدیماڑ! تھمر جا! اس وفت بچھ پر ایک نبی ، ایک صدیق اور دوشہید موجود ہیں۔''

حضرت ابوسعید خدری برانٹوئز سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم سنتے پہلے نے فرمایا۔

''ہر نبی کے دو وزیر ہوئے ہیں اور میرے چار وزیر ہیں۔ دو وزیر آسان پر ہیں جرائیل اور میکائیل مین ہم اور زمین پر بھی

الاستراع المنظري المالي المنظري المنظري المنظري المنظري المنظرين ا

میرے دووز ریم ہیں ابو بکر اور عمر ضی کنتی ہیں۔''

حضور نبی کریم بین نی مریم بین نی کریم بین نی کریم بین نی کریم بین کی جماعت میں اپنے خواب کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا کہ میں خواب کی حالت میں جنت کا مشاہدہ کررہا تھا میں نے دیکھا کہ ایک عورت ایک محل کے باہر وضو کررہی ہے میں نے پوچھا میکل کس کا ہے؟ مجھے بتایا گیا میمل عمر بڑائٹوں کا ہے۔ پھر حضور نبی کریم بین پی کے حضرت عمر فاروق بڑائٹوں کو مخاطب کرتے ہوئے فرمایا مجھے تنہاری غیرت یاد آگئی اس لئے میں وہیں نے لوٹ آیا۔ حضرت عمر فاروق بڑائٹوں نے حضور نبی کریم سے بین کی بات می تو رو بڑے اور عرض کیا یارسول اللہ بین بین آپ سے بین آپ سے بین آپ سے غیرت کروں گا؟

امام بخاری مینید کی روایت ہے حضور نبی کریم مینید نے فرمایا مجھ سے پہلے جتنی کریم مینید نے فرمایا مجھ سے پہلے جتنی بھی امتیں گزر چکی ہیں ان میں محدث ہوتے تھے اور میری امت کا محدث بلاشبہ عمر (دانا میز) ہے۔

بلا شبہ عمر (دانا میز) ہے۔

''ہم تنیوں بروزِ قیامت اس طرح اٹھیں گے۔''

حضرت ابوبكر صديق وللنفيز نے جب بوقت وصال حضرت عمر فاروق

www.iqbalkalmati.blogspot.com 308 منتسب عمر شائل الموق كرفيديك الموق الموقع ا

خالفہ کو خلیفہ مقرر کیا تو حضرت طلحہ ڈالفہ نے آپ جالفہ سے کہا ویکھے آپ جالفہ اللہ کو خلیفہ مقرر کیا تو حضرت طلحہ ڈالفہ نے آپ جالفہ اللہ کو کیا جواب ویں گے؟ اللہ کے پاس جانے والے ہیں آپ جالفہ اس معاملہ میں اللہ کو کیا جواب ویں گے؟ آپ جالفہ نے فرمایا۔

"میں اللہ سے کہوں گا کہ میں تیرے بندوں میں سے سب
سے التھے بندے کو امیر مقرر کر کے آیا ہوں۔ "
حضرت ابو بکر صدیق طالفیٰ کا قول ہے۔
"روئے زمین پر مجھے عمر (طالفۂ) سے بڑھ کر کوئی پیارانہیں
ہے۔"

حضرت عبداللہ بن مسعود رہائی سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم کے علم کے دس حصے ہیں جن میں سے نو حصے حضرت عمر فاروق رہائی کو عطا کئے گئے اور ایک حصہ باقی امت کو عطا کیا گیا۔ اگر دنیا کے علم کو تراز و کے ایک پلڑے میں رکھا جائے اور حضرت عمر فاروق رہائی کے علم کو دوسرے پلڑے میں رکھا جائے تو آپ رہائی کا پلڑا بھاری ہوگا۔

ام المونین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ دلی خیّا فرماتی ہیں جس نے عمر (رائی نین)
کو دیکھ لیا اللہ عز وجل نے اسے اسلام کے علاوہ دیگر تمام چیزوں اور سہاروں سے
مستغنی کر دیا اور عمر (رائی نین) اپنے کمالات میں منفرد ہتھ۔
حضرت علی المرتضٰی دلائین کا قول ہے کہ جب بھی تم صالحین کا ذکر کروتو عمر (رائی نین) کوضرور یاور کھا کرو۔

حضرت ابوعبیدہ بن الجراح طالقۂ فرماتے تھے جب عمر (طالفۂ) وصال فرما جائیں گےتو دین اسلام کمزور پڑجائے گا اور میں نہیں جاہتا کہ عمر (دلائٹۂ) کے بعد

الاستان المستراع المس

میں زندہ رہوں۔

حضرت عبداللہ بن مسعود بڑھیا کا قول ہے تم قرآن ای طرح بڑھا کرہ جس طرح عمر (بڑھیئے) پڑھا کرتے تھے وہ اسلام کا ایک مضبوط قلعہ تھے کہ لوگ اس میں داخل ہونے کے بعد محفوظ ہو جاتے تھے اب ان کی شبادت کے بعد وہ قلعہ فوٹ گیا ہے اس کئے مجھے ڈر ہے کہیں لوگ دائرہ اسلام سے باہر نہ نکل جا کیں۔ حضرت نافع بڑھئے کا قول ہے ہر میک کام میں حضرت عمر فاروق بڑھئے کی کوشش انتہاء کو پہنچی ہوئی تھی اور آپ بڑھئے ہر کام نہایت عمدگی اور بہتری سے انجام دیتے تھے یہاں تک کہ آپ بڑھئے نے مرتبہ شہادت یایا۔

حضرت امیر معاویه خلفتی کا قول ہے کہ حضرت ابو بکر صدیق خلفتی کو دنیا کی سیجھ خواہش نہ تھی اور نہ ہی دنیا نے بھی ان کی خواہش ظاہر کی۔ حضرت عمر فاہوتی خلات کی سیجھ خواہش نہ تھی دنیا کو طلب نہیں کیا مگر دنیا کو ان کی خواہش تھی۔ فاہوتی خلاقی ۔

> ''حضور نبی کریم منظر ہے بعد سب سے افضل حضرت ابو بکر صدیق طالعُدُ میں۔'' صدیق طالعُدُ میں۔''

حضرت ابوموی اشعری طالفیّهٔ فرماتے ہیں پھرحضرت علی المرتضلی طالفیٰ نے

فرمایا_

'' حضرت ابو بمرصد بق خالفنی کے بعد حضرت عمر فاروق طالفنی

www.iqbalkalmati.blogspot.com 310 کونست کرنگری کے بیسلے کے ایسال کے بیسلے کا ایسال کے بیسلے کا ایسال کا ایسال

سب ہے افضل ہیں۔"

حضرت ام موی فرانی اسے مروی ہے فرماتی ہیں حضرت علی الرتضی فرانی ہیں حضرت علی الرتضی فرانی ہیں کو معلوم ہوا کہ ابن سبا ان کو حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق بنی النظر ہے فوقیت دیتا ہے تو آپ بڑائی نے اس کے قل کا ارادہ کیا۔ جب آپ بڑائی ہے دریافت کیا گیا آپ بڑائی اس کوقل کیوں کرنا چاہتے ہیں تو آپ بڑائی نے فرمایا۔
دریافت کیا گیا آپ بڑائی اس کوقل کیوں کرنا چاہتے ہیں تو آپ بڑائی نے فرمایا۔
دریافت کیا گیا آپ بڑائی اس کوقل کیوں کرنا چاہتے ہیں تو آپ بڑائی ہے دریافت کیا اس کوقل کرنا ضروری ہے کیونکہ وہ ایک ایس بات کہتا ہے جس سے امت میں فساد کا خطرہ ہے اور حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عرفاروق بڑی گئی ہے ہیں ہے۔''

حضرت موید و فائین سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ میرا گزر ایک ایسی قوم بر ہوا جو حضرت ابو بکر صدیق و فائین اور حضرت عمر قاروق و فائین کی شقیص کر رہی مقی ۔ میں حضرت علی المرتضی و فائین کی خدمت میں حاضر ہوا اور تمام ماجرا ان کے گوش گزار کیا۔ حضرت علی المرتضی و فائین نے میری بات من کر فرمایا۔ گوش گزار کیا۔ حضرت علی المرتضی و فائین نے میری بات من کر فرمایا۔ ''اللہ عزوجل کی ان پر لعنت ہو۔ ابو بکر صدیق اور عمر فاروق و فائین ، حضور نبی کریم میں ہوئین کے بھائی اور آپ میں ہوئین کے وزیر

حضرت ابوموی اشعری بڑائی سے مردی ہے فرماتے ہیں میں ایک مرتبہ حضور نبی کریم سے بھی ایک ہمرتبہ حضور نبی کریم سے بھی ہے ہمراہ مدینہ منورہ کے ایک باغ میں موجود تھا ادر اس باغ کا دروازہ بردستک ہوئی تو حضور نبی کریم سے بھی نے جھے سے دروازہ بند تھا۔ اچا تک دروازہ پر دستک ہوئی تو حضور نبی کریم سے بھی نے دروازہ فرمایا کہ اٹھوا ور دروازہ کھولوا ور آنے والے کو جنت کی خوشخری دو۔ میں نے دروازہ کھولا تو حضرت ابو بکر صدیق بڑائی ہے۔ میں نے حضرت ابو بکر صدیق بڑائی کو

المنت عملت واروق كرفيه لي جنت کی خوشخبری سنائی تو انہوں نے اللہ عز وجل کا شکر ادا کیا اور حضور نبی کریم منظم این ا کے یاس آ کر بیٹھ گئے۔ کچھ دہر بعد دروازے پر دوبارہ دستک ہوئی تو خضور نبی کریم ﷺ نے مجھے سے قرمایا کہ درواز ہ کھولواور آنے والے کو جنت کی خوشخبری دو۔ میں . نے دروازہ کھولا تو حضرت عمر فاروق طالغیر شخصے میں نے انہیں جنت کی خوشخبری دی اور انہوں نے اللہ عزوجل کا شکر ادا کیا پھر حضور نبی کریم ﷺ کے یاس آ کر بیٹے گئے۔ کچھ دیر بعد دروازے پر ایک مرتبہ پھر دستک ہوئی۔حضور نبی کریم سے کیائے نے مجھ ہے فرمایا جاؤ دروازہ کھولواور آنے والے کو جنت کی خوشخبری دواور کہوعنقریب تم ایک آزمائش سے گزرنے والے ہو۔ میں نے اٹھ کر دروازہ کھولا تو حضرت عثان عَنى طِلْعَنْهُ منصے میں نے انہیں حضور نبی کریم ﷺ کا فرمان سنایا تو انہوں نے اللہ عزوجل کا شکر ادا کیا اور کہا کہ اللہ عزوجل ہی بہترین مدد کرنے والا ہے۔ پھر حضرت عثمان غنی طالفنی اندر آئے اور حضور نبی کریم منطق پیلاکے یاس بیٹھ گئے۔ حضرت انس بن ما لک رہنائیڈ ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ حضور نبی کریم منتظ بین نے زمین سے سات کنگریاں اٹھا کیں وہ کنگریاں آپ منتظ پینا کے ہاتھ میں شہیج پڑھنے لگیں۔ آپ مٹے بیٹے انے وہ کنگریاں حضرت ابو بمرصدیق ر النفط کو دے دیں وہ کنگریاں شہیج پڑھتی رہیں۔ پھر آپ می<u>شن کی</u> نے وہ کنگریاں حضرت عمر فاروق طِاللَّهُ أَو دي تو وه كنكريال شبيح يرْهتى ربي جيسے حضرت ابو بكر صدیق بنائٹیڈ کے ہاتھ میں راھی تھیں۔ پھرآ یہ بیٹے بیٹا نے وہ کنکریاں حضرت عثمان غنی طالغیٰ کو دیں اور وہ کنگریاں شبیع بڑھتی رہیں جیسے کہ حضرت ابو بمرصدیق اور حضرت عمر فاروق میں اپنے کے ہاتھ میں پڑھتی رہی تھیں۔

حضرت ابوہرریہ بالنفظ ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم شفاعیا

نے ایک مرتبہ فر مایا کہ ایک چرواہا پنی بکریاں چرارہا تھا اچا تک ایک بھیڑیا آیا اور اس نے چرواہے کی ایک بکھڑیا گیا ہوں لی جھین اس نے چرواہے کی ایک بکری واپس چھین لی ۔ بھیڑیا بولا تمہارا اس دن کے متعلق کیا گمان ہے جب صرف درندے باقی ہوں گی ۔ بھیڑیا بابولا تمہارا اس دن کے متعلق کیا گمان ہے جب صرف درندے باقی ہوں گے اور میرے علاوہ کوئی چرواہا نہ ہوگا۔ پھر حضور نبی کریم منظور تن فرماتے ہیں جس ابو بکر اور عمر بنی گئی اس بات کو صحح مانے ہیں۔ حضرت ابوسلمہ بنائی فرماتے ہیں جس وقت حضور نبی کریم منظور تن اور حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق بنی گئی دونوں موجود نہ تھے۔

ایک دن حفرت جرائیل علیاته ایک طباق کے کر آئے جو جنت کے سیبوں سے لبریز تھا۔ انہوں نے وہ طباق حضور نبی کریم مضافیقی کے سامنے رکھ کر عرض کیا یارسول اللہ مضافیقی آ پ مضافیقی آ اس مضافیقی کو عنایت کیجئے جو آپ مضافیقی کو بیارا ہو۔ وہ طباق ایک نورانی خوان پوش سے ڈھکا ہوا تھا حضور نبی کریم مضافیقی نے اپنا دست انوراس میں داخل کرے ایک سیب نکالا دیکھتے کیا ہیں کہ اس کی ایک جانب تو لکھا ہوا تھا۔

ھنیہ ھیریہ میں اللہ لاکبی سکر بالصّدیق یعنی یہ خدا کا تخفہ ہے ابو بکر صدیق طابعی ہے اور اس کی دوسری جانب بیعبارت لکھی ہوئی تھی۔

من أبغض الصِّدِيقِ فَهُو زندِيقَ يعنى صديق بلاتن سي بغض ركھنے والا بے دين ہے۔ پھر حضور نبي كريم

ﷺ في دوسراسيب الخاياس كايك طرف توبيلها تقار هانية هيرية مين الوهاب لِعمر بن النحطاك

الاستان أول كيسل

لیعنی بیہ خدائے وہاب کا تتحفہ ہے عمر بن خطاب طالبہ نظائی کے لیے اور دوسری جانب بیلکھا تھا۔

مَنْ أَبْغُضَ عُمَرَ فَهُوفِي سُقِر

لعنی عمر طالعی کے وشمن کا عصکانا جہنم میں ہے۔ بعدزاں حضور نبی کریم

ﷺ نے ایک اور سیب اٹھایا جس کے ایک جانب بیلکھاتھا۔

هٰذِه هَدِيَةٌ مِنَ اللهِ الْحَنَّانِ الْمَنَّانِ لِعُثْمَانَ بُنِ عُنَّانِ لِعُثُمَانَ بُنِ عَنَّانِ لِعُثُمَانَ بُنِ عَنَّانِ لِعُثُمَانَ بُنِ عَنْهَانَ مُنَانِ لِعُثْمَانَ بُنِ عَنْهَانَ بُنِ عَنْهَانَ مُنَانَ لِعُنْهَانَ مُن اللَّهِ الْحُنَّانِ الْمُنْانِ لِعُثْمَانَ مُن اللَّهِ الْحُنَّانِ الْمُنْانِ لِعُنْهُمَانَ اللَّهِ الْحُنْهُ عَلَى اللَّهُ اللَّالَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ا

لیعنی بیہ خدائے منان وحنان کا تخفہ ہے عثان بن عفان بڑٹیٹیڈ کے لئے اور اس کی دوسری طرف بیاکھا تھا۔

مَنْ أَبغُضَ عُتُمانَ فَخَصَمَهُ الرَّحَمٰنُ

لعنی عثمان بٹالٹیڈ کا وشمن رحمٰن کا وشمن ہے۔ پھر حضور نبی کریم منظ بیٹ نے

طباق میں ہے ایک اور سیب اٹھایا جس کے ایک جانب تو پہلھاتھا۔

هٰذِه هَدِيَّةٌ مِّنَ اللهِ الْعَالِبِ لعَلِيّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ

لیعنی بیہ خدائے غالب کا تحفہ ہے علی ابن ابی طالب طالب طالب المائذ کے لیے

اورد وسری جانب بیلکھا تھا۔

مَنْ أَبْغُضُ عَلِيًّا لَّهُ يَكُنْ لِلَّهِ وَلِيّاً

کیعنی علی طالعیٰ کا وشمن خدا کا دوست نہیں۔حضور نبی کریم میں ہیں ہے۔ سر سر سر میں میں ہوری کا دوست نہیں۔

عبارات کو پڑھ کر اللّٰہ عزوجل کی بے صدحمہ و ثناء بیان کی۔

حضرت اسود بن سرلیع برالنفظ ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ میں حضور نبی کریم میں حضور نبی کریم میں حضور نبی کریم میں خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا یارسول اللہ میں ہیں نے اللہ

الناسية المستقال المالية المستقال الم

عزوجل کی حمد اور آپ سے آپ کی نعت بیان کی ہے۔ آپ سے آپ نے فرمایا تم نے جو حمد بیان کی وہ جھے بھی سناؤ۔ میں نے حمد سنانی شروع کی تو اس دوران ایک دراز قد شخص آیا اور اس نے آپ سے آپ سے آپ سے اجازت طلب کی۔ پھر آپ سے آپ اس سے شخص آیا اور اس نے آپ سے آپ اور آپ سے آپ اس سے کو گفتگو ہوئے۔ پھر جب وہ چلے گیا تو میں نے دوبارہ حمد شروع کی۔ اس دوران وہ شخص دوبارہ آیا اور آپ سے آپ اس سے کو گفتگو ہوئے۔ پھر وہ جب چلا گیا تو میں نے عرض کیا یارسول اللہ سے آپ ایک ہوئے۔ بھر وہ بیا گیا تو میں کے لئے آپ جب چلا گیا تو میں نے عرض کیا یارسول اللہ سے آپ نے فرمایا یہ عمر (بڑائیڈ) بن خطاب ہے اور یہ باطل کو پہند نہیں کرتا۔

حضرت جابر بن عبداللد والعنينا سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق والغین نے حضرت ابو برصدیق والعنین سے فرمایا کہ آپ والغین ،حضور نبی کریم سے بہتر ہیں۔حضرت ابو بکر صدیق والعنین نے بعد سب سے بہتر ہیں۔حضرت ابو بکر صدیق والعنین نے فرمایا ہیں نے حضور نبی کریم میں ہے ہیں ہورج حضور نبی کریم میں ہوا۔

O.....O.....O



خلافت کی تائیداحادیث سے

> "اے انس (طالعین)! دروازہ کھول دو اور آنے والے کو جنت کی خوشخبری دو کہ خلافت اس کے لئے ہے۔"

حضرت انس والنفؤ فرماتے ہیں میں ندوازہ کھولا اور حضرت ابو بکر صدیق والنفؤ دروازہ پرموجود تھے۔ میں نے انہیں جنت کی بشارت دی اور بتایا حضور نبی کریم میض کی شائے فرمایا ہے کہ وہ خلیفہ ہیں۔

حضرت انس وللغنظ فرمات مبي بهريجه دبر بعد دروازه كظاهنا يأكيا أوحضور

المستريخ من المال كالمسلط المسلط المس

نی کریم سے ایک انسانے ہے سے فرمایا۔

''اے انس (بنائنی)! دروازہ کھول دو اور آنے والے کو جنت کی خوشخبری دو کہ ابو بکر (بنائنی کے بعد خلافت اس کے لئے م

حضرت انس بنائنیٔ فرماتے ہیں میں نے دروازہ کھولا اور حضرت عمر فاروق بنائنی دروازہ پرموجود تھے میں نے انہیں جنت کی بشارت دی اور بتایا وہ حضرت ابو بکرصد اِق بنائنی کے بعد خلیفہ ہیں۔

حضرت انس خانفۂ فرماتے ہیں پھر پچھ دیر بعد دروازہ کھٹکھٹایا گیا تو خضور نی کریم ﷺنے فرمایا۔

''اے الی (طِلْنَوْنَ)! دروازہ کھول دواور آنے والے کو جنت
کی خوشنجری دو کہ عمر (طِلْنَوْنَ) کے بعد وہ خلیفہ ہیں۔'
حضرت انس طِلْنَوْنَ فر ماتے ہیں میں نے دروازہ کھولا تو حضرت عثمان غنی طِلْنَوْنَ منے میں نے دروازہ کھولا تو حضرت عثمان غنی طِلْنَوْنَ منے میں بنارت دی اور بتایا وہ حصرت عمر فاروق طِلْنَوْنَ کے بعد خلیفہ ہوں گے۔

حضور نی کریم سے بیٹی نے ایک شخص کو مجوروں کے لدے ہوئے اون دسے استہ خص کو مجوروں کے لدے ہوئے اون دسے استہ حص نے عرض کیا یارسول اللہ سے بیٹی آپ سے بیٹی کے بعد ہمارے ساتھ الی بخش و عطا کون کرے گا؟ حضور نی کریم سے بیٹی نے فرمایا ابو بکر (بڑھی ڈی)۔ اس شخص نے حصرت علی المرتضی بڑھی ہے اس بات کا ذکر کیا۔ حضرت علی المرتضی بڑھی ہے اس بات کا ذکر کیا۔ حضرت علی المرتضی بڑھی ہے نے فرمایا تم حضور نی کریم سے بیٹی ہے ہے بوچھو حضرت ابو بکر صد بی بڑھی کے بعد الی بخشش و عطا کا معاملہ کون کرے گا؟ اس شخص نے حضور نی کریم سے بیٹی کی خدمت بخشش و عطا کا معاملہ کون کرے گا؟ اس شخص نے حضور نی کریم سے بیٹی کی خدمت

الاست المستون الوق كرفيه لي

میں عاضر ہوکر دریافت کیا تو حضور نبی کریم سے بیٹے نے فرمایا عمر (بالنوئی)۔ اس شخص نے حضرت علی الرتضی بالنوئی کو حضور نبی کریم سے بیٹی کے جواب کے متعلق بنایا۔ حضرت علی الرتضی بوالنوئی نے فرمایا تم حضور نبی کریم سے بیٹی سے پوچھوان کے بعد بخشش و عطا کا معاملہ کس کے بیر د ہوگا؟ اس شخص نے حضور نبی کریم سے بیٹی کی خدمت میں حاضر ہوکر دریافت کیا۔ حضور نبی کریم سے بیٹی نے فرمایا ان کے بعد یہ معاملہ عثان (بیٹی کی کریم کی الرتضی برائی کو یہ بات عثان (بیٹی کی کریم کی الرتضی برائی کو یہ بات بنائی تو آب برائی کے بیر د ہوگا۔ اس شخص نے جب حضرت علی الرتضی برائی کو یہ بات بنائی تو آب برائی کے اسے دوبارہ کچھ نہ کہا۔

روایات میں آتا ہے ایک اعرابی مدینه منورہ آیا اور اس کے یاس اس وفت چند تلوارین تھیں جنہیں وہ مدینہ منورہ میں فروخت کرنے کا ارادہ رکھتا تھا۔ اس کی ملاقات حضور نبی کریم مین کیا ہے۔ ہوئی اور حضور نبی کریم مین کی ہے کو وہ تلواریں پند آسٹئیں اور حضور نبی کریم مضایقاتی نے وہ تلواریں اس سے لے لیں اور رقم کی ادائیگی کے لئے چند دنوں کی مہلت طلب کی ۔ وہ اعرابی واپس لوٹا تو اس کی ملا قات حصرت على المرتضى بنائنیڈ ہے ہوئی۔ اس اعرابی نے حصرت علی المرتضلی بنائنیڈ سے اس بات كا ذكر كيا-حصرت على المرتضلي ذلاننيُّ ني اس اعرابي سے كہاتم نے حضور نبي كريم الطفي المنتاب بيات نبيل يوجهي كداكران كرساته يجهمعامله بيش آجائة <u>پھر تمہیں ان تلواروں کی قیمت کون ادا کرے گا؟ اس اعرابی نے نفی میں سر بلا دیا</u> اور پھر کہا میں ابھی حضور نبی کریم میں پھنے ہے اس کے متعلق دریافت کرتا ہوں۔ پھر وہ اعرابی،حضور نبی کریم مشایقہ کی خدمت میں حاضر ہوا اور یو جھا کہ اگر آپ مشایقہ کے ساتھ کچھ معاملہ پیش آ جائے تو مجھے رقم کی ادائیگی کون کرے گا؟ حضور نبی کریم ين يَن فرمايا اكرمير الساته يحدمعامله بيش آيا توحميس قم ابوكر (إلى الدن او الم

کریں گے اور وہ میرا وعدہ بورا کریں گے۔اس اعرابی نے جا کرحضرت علی المرتضلی فيالتينة سے اس كا ذكر كيا۔ حضرت على المرتضى ديائنية نے فرماياتم نے بينيس يو حيما كه اگر ابو بکرصدیق میناننیٔ کے ساتھ کچھ معاملہ پیش آ جائے تو پھر رقم کون ادا کرے گا؟ اس اعرابی نے تفی میں سر ہلا دیا اور پھر حضور نبی کریم ﷺ کی خدمت میں جا کر یو چھا اگر حضرت ابو بکرصدیق ٹائٹیڈ کے ساتھ کچھ معاملہ پیش آ جائے تو پھر مجھے رقم کون ادا کرے گا؟ حضور نبی کریم مشار ہے فرمایا تمہیں رقم عمر (میانیز) ادا کریں کے اور وہ میرا وعدہ بورا کریں گے۔ اس اعرابی نے حضرت علی المرتضی بنائنڈ کے یاس جا کرحضور نبی کریم منظری ایک جواب سے آگاہ کیا۔حضرت علی المرتضى طالفہٰ نے فرمایا کیاتم نے بیہ یو چھا کہ حضرت عمر فاروق بٹائنٹؤ کے ساتھ اگر کچھ معاملہ پیش آ گیا تو پھر تہبیں میہ رقم کون ادا کرے گا؟ اس اعرابی نے نفی میں سر ہلا دیا اور پھر دوباره حضور نبی کریم مضائیته کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا اگر حضرت عمر فاروق طالعن کے ساتھ بھی کچھ معاملہ پیش آ گیا تو میری رقم کا ضامن کون ہوگا؟ حضور نی كريم ﷺ في الله وفت تك تحقيم بھی موت آ چکی ہو گی۔

حضرت ابوسعید خدری بڑائی ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم کے سے بھی نے فرمایے میں کہ حضور نبی کریم کے سے بھی نے فرمایا میں نے ابوبکر اور عمر (بی اُنڈینی) کو مقدم نبیں کیا بلکہ اللہ عز وجل نے انبیں مقدم فرمایا ہے بس ان کے ساتھ ٹابت قدم رہنا ہدایت یاؤ گے اور جس نے ان دونوں کی شان میں گتا خی کی اس کوئل کر وو اس لئے کہ اس نے میری شان میں گتا خی کی اس کوئل کر وو اس لئے کہ اس نے میری شان میں گتا خی کی اور دین اسلام کی تو ہین کی۔

تر خدی میں حضرت انس بن مالک رہائے ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضور

المنت عمل المناسبة ال

نی کریم ﷺ نے فرمایا میرے بعد میرے اصحاب میں سے ابوبکر اور عمر (شِی اُنٹیم) کی اقتداء کرنا۔

حضرت سمرہ بن جندب بڑائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک شخص حضور نبی کریم ہے ہے۔ کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا یارسول اللہ ہے ہے۔ اس خواب دیکھا کہ ایک ول آسان سے لٹکا یا گیا اور حضرت ابو بکر صدیق بڑائیڈ نے اس فول کو کناروں سے پکڑ کر بمشکل بیا اور پھر حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے اس فول کو کناروں سے پکڑ کر بمشکل بیا اور پھر حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے اس فول کو کناروں سے پکڑ اور انہوں نے خوب سیر ہوکر بیا اور پھر حضرت عمان غنی بڑائیڈ نے بھی اس فول کو کناروں سے پکڑ کر بیا پھر جب حضرت علی المرتضی بڑائیڈ کے باری آئی تو انہوں نے بھی اس فول کو کناروں سے پکڑ کر بیا پھر جب حضرت علی المرتضی وہ پی بڑا اور ابھی وہ پی رہے تھے کہ وہ فول بل گیا اور ابھی وہ پی رہے تھے کہ وہ فول بل گیا اور بھی یائی حضرت علی المرتضی بڑائیڈ برگر گیا۔

حضرت ابو ہریرہ ڈائنٹڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم سے کے فرمایا میں نے خواب میں دیکھا کہ ایک کنواں ہے اور اس کنو کمیں کی منڈیر پر ایک ڈول ہے پھر میں نے اس کنو کمیں سے پانی نکالا جتنا اللہ عز وجل نے چاہا۔ پھر اس ڈول کو ابو بحر وڈائنٹوڈ نے لے لیا اور انہوں نے اس میں سے ایک یا دو ڈول نکا لے اور وہ ناتواں ہیں اللہ عز وجل ان کی ناتوانی سے عفو فرمائے اور پھر وہ ڈول مکا لے اور وہ ناتواں ہیں اللہ عز وجل ان کی ناتوانی سے عفو فرمائے اور پھر وہ ڈول عمر وہ ٹوئنٹوڈ نے لے لیا اور میں نے ان جیسا زور آور نہیں دیکھا جو ان کی مانند اس کنو کمیں سے بانی نکالا کہ لوگوں نے کنو کیس سے بانی نکالا کہ لوگوں نے اس بانی حساسے اونوں کو بھی سیراب کیا۔

حضرت عمرو بن العاص بنائنی ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم سطان نظام نے مجھے ذات السلاسل کے نشکر کے ساتھ روانہ کیا۔ میں نے حضور نبی کریم

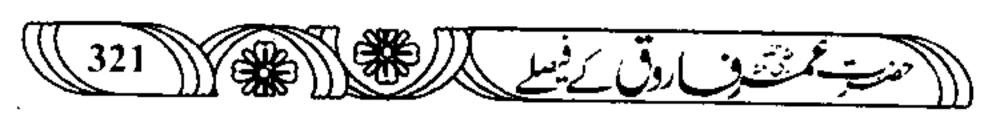
المنت عمر المنتقاف الروق كي فيصل المنتقاف المنتق

سے بیٹی کی خدمت میں حاضر ہوکر دریافت کیا یارسول اللہ سے بیٹی آپ کس سے محبت رکھتے ہیں؟ آپ سے بیٹی نے فرمایا عائشہ بیٹی سے میں نے پوچھا مردوں میں؟ آپ سے بیٹی نے فرمایا ان کے باپ ابو بکر بیٹی ہے۔ میں نے پوچھا ان کے بعد؟ آپ سے بیٹی نے فرمایا ان کے باپ ابو بکر بیٹی نے نے کئی نام لئے۔ بعد؟ آپ سے بیٹی نے فرمایا محر بیٹی فرماتے ہیں جب حضور نبی کریم سے بیٹی نے اپ دست اقدی سے مبحد کی بنیاد رکھی تو حضرت ابو بکر صدیق بیٹی نے فرمایا تم اپنا پیٹر ابو بکر مدیق بیٹی نے مباد کی بہلو میں رکھو۔ پھر حضرت عمر فاروق بیٹی نے فرمایا تم اپنا پیٹر ابو بکر صدیق بیٹی نے فرمایا تم اپنا پیٹر ابو بکر صدیق بیٹی نے فرمایا تم اپنا پیٹر ابو بکر صدیق بیٹی نے فرمایا تم اپنا پیٹر ابو بکر صدیق بیٹی نے نے فرمایا تم اپنا پیٹر ابو بکر صدیق بیٹی نے نے فرمایا تم اپنا پیٹر ابو بکر صدیق بیٹی نے نے نہاؤ میں رکھو اور پھر فرمایا۔

"میرے بعد بید دونوں خلیفہ ہوں ہے۔"

حضرت ابوذر غفاری رظائفی سے مروی ہے فرماتے ہیں میں غزوہ حنین کے موقع پر جب حق و باطل میں گھسان کی لڑائی جاری تھی اس وفت حضور نبی کریم مطاق خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا یارسول اللہ مطابقی ہمیں بتاہے کہ ہم آپ سطابی ہمیں بتاہے کہ ہم آپ سطابی ہمیں بتاہے کہ ہم آپ سطابی ہمیں بتاہے کہ ہم ماہ سطابی ہمیں کریم مطابق نے فرمایا۔

آپ سطابی ہمیں کے بعد کے خلیفہ منتخب کریں؟ حضور نبی کریم مطابع ہوں گے اور این کے بعد عثمان رخالفی ہوں گے اور علی رخالفی ہوں گے۔ "



سیرت مبارکہ کے درخشاں پہلو

حضرت عمر فاروق خالفية كوراضي كرنے كا فيصله:

حضرت ابوالدرداء بنائنی ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ میں حضور نبی کریم سے بھی خدمت میں حاضرتھا حضرت ابو بکر صدیق طابق نہایت بشیانی کی حالت میں آئے۔حضور نبی کریم سے بھی نے آپ بلائی سے بریشانی کی وجہ دریافت کی تو آپ بنائی نے آپ بنائی ہے۔ بریشانی کی وجہ دریافت کی تو آپ بنائی نے اب بنائی نے عرض کیا۔

"میرے اور حضرت عمر فاروق بنائیڈ کے درمیان جھکڑا ہوگیا اور میں نے ان کو برا بھلا کہد دیا۔ بعد میں جب ان سے معافی مانگی تو انہوں نے معاف کرنے سے انکار کر دیا۔"

حضرت ابوالدرداء طلینی فرمات بین که حضور نبی کریم مطفی بین خضرت ابو بمرصد این طلینی کی بات من کرفر مایا ..

''الٰبی!ابو کمر(﴿ اللّٰهُونُهُ ﴾ کی مغفرت فرما۔''

حضرت ابوالدردا، طلق فرماتے ہیں حضور نبی کریم میں کہ بین کے بیک میں کالمہ نین مرتبہ ادا کیا۔ پھر کچھ دہر بعد حضرت عمر فاروق طلق کھی حضور نبی کریم میں کوئی کی میں کالمہ نین کی میں حضور نبی کریم میں کالی کی خدمت میں حاضر ہوئے تو حضور نبی کریم میں کی کہا ہے۔ فدمت میں حاضر ہوئے تو حضور نبی کریم میں کی کی میں کا دوق طالع کی کہا ہے۔ فرمایا۔

"الله عزوجل نے مجھے تمہارے پاس بھیجا اور تم لوگوں نے مجھے جھوٹا کہا یہ ابو بکر (جانبیز) ہی تھے جنہوں نے میری تصدیق کی اور اپنی جان و مال سے میری عمخواری کی کیا ابتم میرے کے میرے ساتھی کو نہ چھوڑ و گے؟"

حضرت ابوالدرداء برنائی فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق بڑائی نے جب حضور نبی کریم فاروق بڑائی نے جب حضور نبی کریم کے بیارک سے بید کلام سنا تو رو دیئے اور حضرت ابو بکر صدیق بڑائی کوفوراً معاف فرما دیا۔

حضور نبي كريم ينفي يَعِيمُ كاليغ ربنا:

ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رہائیجٹا سے مروی ہے فرماتی ہیں کہ ایک مرتبہ حضور نبی کریم سے ایک استر مبارک پر لیٹے ہوئے تھے اور آپ سے ایک نے میری جا در اوڑھ رکھی تھی۔ اس دوران میرے والد بزرگوار حضرت ابو بکرصد بق بنائنز آئے دے دی اور خود ای طرح لیٹے رہے۔ والد بزرگوار آئے اور انہوں نے آپ سے ایکی سے پچھ دیر بات کی اور والیس جلے گئے۔ والد بزرگوار کے جانے کے بعد حضرت عمر فاروق طلنعظ حاضر ہوئے اور انہوں نے بھی اندر آنے کی اجازت طلب کی۔ آب منظائیتا البیل بھی اجازت دے دی اور اس طرح کیٹے رہے اور حضرت عمر فاروق مِنْ النِّينَةُ بھی بات کرنے کے بعد واپس چلے گئے۔حضرت عمرَ فاروق بنائیز کے جانے کے پچھ در بعد حضرت عثان عن اللغة عاضر ہوئے اور انہوں نے آپ سنة اللغة ے اندر آنے کی اجازت طلب کی۔ آپ مشاکھیا فورا اٹھ کر بیٹھ گئے اور مجھ ہے کہا ا پی چا در سنجالو۔ پھر حضرت عثان عن طالعن طالعن طالعن عند ما صر ہوئے اور پھھ دیر تک آپ مشاری کا

الاستاخ المقال المعال ا

سے بات کرنے کے بعد واپس چلے گئے۔ میں نے آپ سے پیٹے سے اور جب والد ہزرگوار اور حضرت عمر فاروق والتی آئے تو آپ سے پیٹے لیٹے رہے اور جب حضرت عمان عنی والتی آئے تو آپ سے پیٹے اٹھ کر بیٹھ گئے اور میری چادر بھی مجھے واپس لوٹا وی۔ آپ سے پیٹے آئے فرمایا عثان (والتی شرم و حیاء والے ہیں اور مجھ ڈر مقاکہ اگر میں ای حالت میں رہا تو وہ مجھ سے بات نہ کرسکیں کے اور میں ان سے شرم کیوں نہ کروں جس سے ملائکہ بھی شرم کرتے ہیں۔

بکڑے کا وزن:

حضرت عبداللہ بن عمر خلفینا ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک دن طلوع آفاب کے بعد حضور نبی کریم مضیقی ہماری جانب تشریف لائے اور فرمایا میں نے فجر سے قبل خواب میں دیکھا کہ مجھے جا بیاں اور تراز وعطا کئے گئے۔ پھر مجھے ایک پلڑے میں رکھا گیا اور میری امت کو دوسرے پلڑے میں رکھا گیا اور پھر وزن کیا گیا اور میرا پلڑا بھاری تھا۔ پھر ابو کمر (خلفین) کو لایا گیا اور ان کو تراز و کے ایک پلڑے میں رکھا گیا اور دوسرے پلڑے میں میری امت کو رکھا گیا ابو کمر (خلفین) کا وزن زیادہ تھا۔ پھر عمر (خلفین) کو لایا گیا اور ان کو تراز و کے ایک پلڑے میں رکھا گیا اور دوسرے پلڑے میں میری امت کو رکھا گیا ابو کمر (خلفین) کا وزن زیادہ تھا۔ پھر عمر (خلفین) کو لایا گیا اور ان کو تراز و کے ایک پلڑے میں رکھا گیا اور دوسرے پلڑے میں میری امت کو رکھا گیا عمر (خلفین) کا وزن زیادہ تھا۔ پھر عثان (خلفین) کو لایا گیا اور ان کو تراز و کے ایک پلڑے میں رکھا گیا اور دوسرے پلڑے میں میری امت کو رکھا گیا پس عثان (خلفین) کا وزن زیادہ تھا اور پھر اس پلڑے میں میری امت کو رکھا گیا پس عثان (خلفین) کا وزن زیادہ تھا اور پھر اس پلڑے کو اٹھا لیا گیا۔

حضرت عبدالله بن عباس والنفي است مروى ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم منظم اور حضرت علی الرتضلی والفن کھرے تھے اس دوران حضرت ابو بمرصد لیں والفنو

تشریف لائے اور حضور نبی کریم منطق آپ رٹی تی اور معانقہ کیا اور آپ رٹی تی نی تی اور معانقہ کیا اور آپ رٹی تی بیٹانی کا بوسہ لیا اور پھر حضرت علی المرتضی رٹی تینی سے فرمایا۔
''میرے ہاں ابو بکر رٹی تینی کا وہی مقام و مرتبہ ہے جو میرا مقام و مرتبہ اللہ عزوجل کے ہاں ہے۔''
تہمارا مطالبہ جائز نہیں ہے:

حضرت جابر بن عبدالله طالفن سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ خصرت ابو بکر صدیق میلانید ، حضور نبی کریم مضفی پیزیک گھر تشریف لائے اور خدمت میں حاضری کی اجازت طلب کی مگر انہیں اجازت نہ ملی۔ پھر حضرت عمر فاروق طلطن تشریف لائے اور انہوں نے بھی حاضری کی اجازت مانگی مگر انہیں بھی اجازت نه ملی ۔ کچھ دیر گزری تو حضور نبی کریم منظیمیتی نے دونوں صحابہ کرام بن انتخ کو ملاقات کی اجازت دے دی۔ جب دونوں صحابہ کرام طی کنٹنج اندر داخل ہوئے تو حضور نبی كريم سِنْ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الله وقت إردگردموجود تھیں اور آپ مطابع آلیا وقت خاموش بیٹھے تھے۔حضرت عمر فاروق رَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهُ اللَّهِ اللللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّا اللَّهِ الللَّهُ اللَّهِ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّ عمر فاروق رنائیمذ کی زوجہ حیس) کو دیکھتے تو وہ مجھ سے نان ونفقہ کا مطالبہ کر رہی تھی اور میں نے اسے پکڑا اور اس کا گلا دبایا۔ آپ منظ کی اے حضرت عمر فاروق منابعیٰ کی بات سن کرتمبهم فرمایا یهال تک که آپ مظاری کا دار هیس دکھائی دیے لگیں۔

پھرآپ منظ میں ان میری از واج جومیرے گردجمع میں یہ بھی مجھ سے نان و

نفقه کا مطالبہ کر رہی ہیں۔حضرت ابو بکرصدیق مڑائٹنڈ نے سنا تو فورا کھڑے ہوئے

اورایی بین حضرت عائشه میدیقه منافقهٔ کی جانب بروسه تا کهانبیں ماریں اور حضرت

عمر فاروق والنفيظ بھی کھڑے ہوئے اور اپنی بھی حضرت حفصہ النفیظ کی جانب بڑھے تاکہ انہیں ماریں اور بید دونوں حضرات فرما رہے تھے کہتم حضور نبی کریم ہے ہے۔

اس چیز کا مطالبہ کرتی ہو جو ان کے باس نہیں ہے۔ آپ مطابق کی دیگر از وائی مطہرات وائی نے جب بیصور تحال دیکھی تو کہنے لگیں کہ ہم آئندہ حضور نبی کریم مطہرات وائی نے جب بیصور تحال دیکھی تو کہنے لگیں کہ ہم آئندہ حضور نبی کریم مطہرات وائی اس موجود نہ ہو۔

حضرت ام سلمی والنفیظ کے لئے زکاح کا بیغام بھیجنانے

جب حفرت ابوسللی و و الت التحقیق التحق

حضرت عبداللہ بن متبہ بن مسعود طالع سے مروی ہے حضرت عمر فاروق والفی نے فرمایا کہ زمانہ نبوی ہے ہیں اوگ وحی پرعمل کرتے تھے اور وحی کا سلسلہ اب منقطع ہو چکا ہے اس لئے اب ہماری ذمہ داری ہے کہ ہم لوگوں سے ان کے فلا بری اعمال کا حساب لیس جبکہ باطنی اعمال اللہ عز وجل کے ذمہ ہیں اور وہ ان کا حساب لیس جبکہ باطنی اعمال اللہ عز وجل کے ذمہ ہیں اور وہ ان کا حساب لیس جبکہ باطنی اعمال اللہ عز وجل کے ذمہ ہیں اور وہ ان کا حساب لیس جبکہ باطنی اعمال اللہ عز وجل کے ذمہ ہیں اور وہ ان کا حساب لین و بس نے بظاہر کوئی بھی شرارت کی ہم اس کو امن نہیں دیں

www.iqbalkalmati.blogspot.com عنوا المعلق ا

کے خواہ وہ باطنی طور پر کتنا ہی نیک اور پر ہیز گار کیوں نہ ہو۔

اہل رائے سے مشورہ:

حضرت سعد بن ابی وقاص رہائنۂ فرماتے ہیں میں نے کسی شخص کوحضرت عبداللہ بن عباس رہائنۂ فرماتے ہیں میں نے کسی شخص کوحضرت عبداللہ بن عباس رہائنہ اسے زیادہ حاضر د ماغ اور دانانہیں و یکھا حضرت عمر فاروق رہائنۂ مشکل اوقات میں انہی سے مشورہ لیا کرتے تھے۔

محبوب چيز کوراهِ خدا ميں خرچ کرنا:

حفرت ابوموی اشعری و النفظ نے ایک جاریہ حضرت عمر فاروق و النفظ کی خدمت میں بھیجی۔ آپ و النفظ نے اس کو آزاد کرتے ہوئے فرمایا اللہ عز وجل کا فرمان ہے کہتم ہرگز بھلائی نہیں کر سکتے جب تک تم اپنی محبوب چیز کو راہ خدا میں فرمان ہے کہتم ہرگز بھلائی نہیں کر سکتے جب تک تم اپنی محبوب چیز کو راہ خدا میں فرمان میں کر جنہیں کر دیتے۔

مال کورد کرنا:

حضرت عطار بن بیار برالنیز فرماتے ہیں حضور نی کریم مضایق آنے حضرت عمر فاروق برائیز کے باس کے عطیہ بھیجا جسے آپ برائیز نے واپس کر دیا۔حضور نی کریم مضائق کے باس کچھ عطیہ بھیجا جسے آپ برائیز نے واپس کروں کیا؟ آپ کریم مضائق آپ برائیز سے دریافت کیا کہتم نے مال کو واپس کیوں کیا؟ آپ برائیز نے نے مال کو واپس کیوں کیا؟ آپ برائیز نے نے مرض کیا کہ یارسول اللہ مضائق کا آپ مشائق ایک ہم میں سے ہر برائیز نے نے مرض کیا کہ یارسول اللہ مضائق ایک سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق ایک سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق ایک میں ہے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق ایک ایک مطابق ایک ایک میں ہے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق ایک ایک میں سے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق ایک ایک مطابق ایک ایک میں سے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق ایک ایک مطابق ایک ایک میں سے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق ایک ایک میں سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق کا کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق ایک ایک میں سے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق کی میں سے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق کی کسی سے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق کی کسی سے کہ کسی سے کہ کسی سے کہ کسی سے کوئی چیز نہ لیں؟ حضور نی کریم مطابق کی کسی سے کہ کسی سے کہ کسی سے کسی سے کہ کسی سے کسی سے کہ کسی سے کس

المناسخ عمل المعلق المع

نے فرمایا یہ بات میں نے سوال کرنے کو کہی تھی لیکن جو پچھ بلاسوال کے ملے وہ رزق ہے فرمایا یہ بات میں نے سوال کرنے کو کہی تھی لیکن جو پچھ بلاسوال کے ملے وہ رزق ہے جو اللہ عز وجل نے تمہیں دیا ہے۔ آپ جائے تئے عرض کیا تتم ہے اس ذات کی جس کے قبضہ میری جان ہے میں بھی کسی سے کسی چیز کا سوال نہ کروں گا اور جب بس کمھی کوئی چیز میرے باس بغیر مانگے آئے گی میں اسے ضرور لے لوں گا۔

امت كى نجات كا ذربعيه:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طالغیّا ، حضرت ابو بمرصدیق طالغیّا ، حضرت ابو بمرصدیق طالغیّا ، حضرت ابو بمرصدیق طالغیّا ۔ سے پاس تشریف لائے اور عرض کیا۔

''اے خلیفہ رسول ﷺ کیا یہ جیرانگی کی بات نہیں میرا گزر عثان (خلافیز) کے باس سے ہوا اور میں نے انہیں سلام کیا۔ انہوں نے میر ہے سلام کا جواب نہیں دیا۔''

حضرت ابو بکر صدیق و الفین نے حضرت عمر فاروق و الفین کا ہاتھ پکڑا اور حضرت عثمان غنی حضرت عثمان غنی حضرت عثمان غنی حضرت عثمان غنی حضرت عثمان عنی و الفین نے حضرت عثمان عنی و الفین نے دوریافت کیا۔

''تہارے پاس تمہارے بھائی عمر (طلقہ) آئے اور تم نے انہیں ان کے سلام کا جواب نہیں دیا تمہیں ایسا کرنے پرکس چیز نے آمادہ کیا ہے؟''

حضرت عثان غنی طالغنے نے عرض کیا۔

حضرت عمر فاروق پٹی نیڈ نے فر مایا۔

ووقتم ہے اس خدا کی جس کے قبضہ قدرت میں میری جان

www.iqbalkalmati.blogspot.com منتسب مستقب ارول کے قبط کے العلق کا العلی کا العلق کا العلی کا العلق کا العلق کا العلق کا العلق کا العلق کا

ہے تم نے ایسا بی کیا ہے اور تم نے میرے سلام کا جواب نہیں دیا۔''

حفرت عثمان عنی طالعین نے حضرت عمر فاروق طالعین کی بات من کر فر مایا۔
'' مجھے آپ طالعین کے گزرنے کی ہر گز خبر نہ ہوئی اور نہ ہی مجھے
معلوم ہوا کہ آپ طالعین نے مجھے سلام کیا ہے۔''
حضرت ابو بکر صدیق طالعین نے فر مایا۔

''تم سے کہتے ہواللہ عزوجل کی قتم! تمہارے متعلق میرایہ خیال تھا کہتم کی سوچ میں گم نتھے جس کی وجہ سے تم نے عمر (طالبیٰ:) تھا کہتم کسی سوچ میں گم نتھے جس کی وجہ سے تم نے عمر (طالبیٰ:) کے سلام کا جواب نہیں دیا۔''

حضرت عثمان غنی را لفین نے حضرت ابو برصدیق را لفین کی بات می تو کہا۔
''امیر المومنین! آپ رفائی درست کہتے ہیں میں حضور نبی کریم
' منظوری کے وصال کی وجہ سے پریشان ہوں اور اس سوچ میں گم
تھا اس امت کی نجات کے بارے میں میں حضور نبی کریم
سنتے کو بات نہ کر سکا اور ای سوچ میں گم تھا جس کی وجہ
سے جھے عمر فاروق رفائی کے گزرنے اور آن کے سلام کرنے
سے جھے عمر فاروق رفائی کے گزرنے اور آن کے سلام کرنے

حضرت ابو بكرصديق طالفيَّ نے فرمايا۔

''حضور نبی کریم میشانی آنے فرمایا ہے جس نے مجھ سے وہ کلمہ قبول کرلیا جو کلمہ میں نے اپنے چیا کو پیش کیا تو اور انہوں نے اسے رد کر دیا ہیں وہی کلمہ میری امت کی نجات کا ذریعہ ہے۔' Www.iqbalkalmati.blogspot.com 329 كالمنتر المنتوارول كيليل

حضرت عثمان غنی طالغین نے دریافت کیا وہ کلمہ کون سا ہے؟ حضرت ابو بکر صدیق طالغیز نے فرمایا۔

''گوائی وینا اللہ کے سواکوئی عبادت کے لائق نہیں اور حضور نبی کریم مضری اللہ عزوجل کے رسول اور بندے ہیں۔''
البو بکر (خالفیڈ) سے سبقت لے جاناممکن نہیں:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طالفیڈ کو اس بوڑھی نابینا عورت کے متعلق پتہ چلا تو آپ طالٹن نے سوچا میں اس بوڑھی عورت کے گھر کی صفائی ستقرائی کردوں اور اس کے کھانے کا سچھا نظام کر دوں چنانچہ آپ بٹائٹۂ اس مقصد کے لئے اس بوڑھی عورت کے گھر پہنچے مگر جب وہاں پہنچے تو گھر صاف ستھرا تھا اور ہر چیز انتہائی سلیقہ سے اپنی جگہ پر رکھی ہوئی تھی۔ آپ مٹائٹیؤ نے یانی کا گھڑا دیکھا تو وہ بھی بانی سے بھرا ہوا تھا۔ آپ طالبنٹ نے اس بوڑھی عورت سے یو جھا تمہارے گھرکے کام کون کرتا ہے؟ وہ بولی مجھے اس کاعلم نہیں البتہ کوئی شخص صبح سور ہے آتا ہے اور میرے گھر کی صفائی کرتا ہے، گھڑے میں پانی بھرتا ہے اور مجھے کھانا کھایا کر والیس چلا جاتا ہے۔ آپ بنائفۂ نے اس بوڑھی عورت کی بات سی تو ارادہ کیا میں ایں بارے میں آگا ہی حاصل کروں کہ وہ صخص کون ہے جو صبح سوریہ آ کر اس 'بوڑھی عورت کے گھر کے کام کرتا ہے چنانچہ اس مقصد کے لئے آپ بات_{ان} الگلے ون نمازِ فجر کے بعداس عورت کے گھرینچے تا کہ دیکھیں کہ وہ کون ہے جواس بوڑھی عورت کے گھر کے کام کرتا ہے گرآپ بڑائٹیڈ نے حسب معمول گھر میں ہفائی دیکھی اور گھڑا بھی یانی سے بھرا ہوا تھا۔ آپ زائنٹن نے خود سے کہا میں کل نماز فجر ہے تبل آ وُل گا اور دیکھوں گا کہ وہ کون شخص ہے؟ پھر آپ بنائیڈ؛ اگلے دن نماز فجر یہ قبل

ہی اس بوڑھی عورت کے گھر تشریف لائے اور ایک کونے میں جھپ کر بعی گئے۔
پھر آپ بڑتی نے ویکھا حضرت ابو بکر صدیق جائی انتہائی خاموثی کے ساتھ آئے
اور انبوں نے گھر کی صفائی کی۔ پھر گھڑا بانی سے بھر کر لائے اور اس بوڑھی عورت
کوخود اپنے باتھوں سے کھانا کھلائے اور خاموثی سے وہاں سے واپس چلے گئے۔
آپ بڑتی نے جب بیہ منظر دیکھا تو فرمایا۔

"الله كى تتم! ابو بكر (يَالِينَوُنُهُ) ہے سبقت لے جاناممكن نہيں۔" آج بيلوگ ہم سے زيادہ فضيلت لے گئے:

حضرت عمر فاروق رظائفۂ سے مروی ہے فرماتے ہیں میں حضرت ابوبکر صدیق بٹائفۂ کے ہمراہ اومئی پر سوار تھا۔ آپ طائفۂ جہاں سے گزرتے لوگوں کو السلام علیم کرتے۔ اس دوران لوگ آپ طائفۂ کو جواب میں السلام علیم ورحمتہ اللہ وبرکاتہ کہتے۔ آپ طائفۂ نے مجھے مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

''عمر (مِنْ لِنَوْدُ)! آج بيلوگ ہم سے زيادہ فضيلت لے گئے۔''

مب سے بڑھ کرمنصف:

منے تعمر فاروق بڑائیڈ کے دور خلافت میں کچھلوگوں نے کہا کہ ہم نے است نہ فاروق بڑائیڈ سے زیادہ بڑھ کر منصف کسی کونبیں دیکھا اس لئے حضور نبی میں سے بعد آپ بڑائیڈ سب سے زیادہ افضل ہیں۔ حضرت عوف بن مالک بڑائیڈ نے بات کن کر فرمایا تم جھوٹ ہولتے ہو۔ حضرت عمر فاروق بڑائیڈ نے حضرت عوف بن مالک بڑائیڈ کی بات کی تائید کرتے ہوئے فرمایا۔ حضرت عوف (بڑائیڈ کی بات کی تائید کرتے ہوئے فرمایا۔ معون (بڑائیڈ) درست کہتا ہے۔ اللہ کی قتم اُ ابو بکر (بڑائیڈ)

الانتسان المسلك المسلك

والوں کے لئے اونٹ سے زیادہ ہے راہ ہوں۔'' ''میرا دنی مصرف کی ایم الدول سے میں د

تم مسلمانوں میں فسادیھیلانا جائے ہو:

حضرت حسن برائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق برائیڈ نے اپنے دورِ خلافت میں کچھ لوگ خفیہ طور پر مقرر کرر کھے تھے جولوگوں میں گھو متے اور آپ برائیڈ کو اطلاع پہنچاتے۔ ایک مرتبہ ان لوگوں نے آپ برائیڈ کو بتایا کچھ لوگ یہ کہتے ہیں کہ آپ برائیڈ ، حضرت ابو بکر صدیق برائیڈ سے افضل ہیں۔ آپ برائیڈ ان کی بات من کر جلال میں آ گئے اور ان لوگوں کو بلا بھیجا۔ جب وہ لوگ حاضر ہو گئے تو آپ برائیڈ نے تقریر کرتے ہوئے فرمایا۔

"اے شریر لوگو! تم مسلمانوں میں فساد پھیلانا چاہتے ہواور میرے اور حفرت ابو بکر صدیق بیانیز کے درمیان تفریق پیدا کرتے ہو۔ جان لواس ذات پاک کی قتم جس کے قبضہ میں عمر (دلائٹیز) کی جان ہے! میں اس بات کو دوست رکھتا ہوں کہ میرے لئے جنت میں وہ مقام ہوتا جہاں سے میں حضرت ابو بکر صدیق بیانیز کو دکھتا کیونکہ حضور نبی کریم میں بیانیز کا فرمان ابو بکر صدیق بیانیز کو دکھتا کیونکہ حضور نبی کریم میں بیانیز کا فرمان سے میری امت میں سب سے بہتر شخص ابو بکر (دلائیز) ہے۔"

لونڈی کا گانا:

روایات میں آتا ہے ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ بڑالفیا کے پاس ایک لونڈی تھی جوگاری تھی۔ اس دوران حضرت عمر فاروق بڑالفیا تشریف لائے اور انہوں نے حضور نی کریم میں ہے جرہ کے اندر آنے کی اجازت طاب کی۔ اس لونڈی نے جسور نی کریم میں تھی ہے جرہ کے اندر آنے کی اجازت طاب کی۔ اس لونڈی نے جب حضرت عمر فاروق بڑالفی کی آوازشی تو خاموش ہوگئی اور و بال سے

www.iqbalkalmati.blogspot.com 332 منت منت اوق کے نیسلے

بھاگ گئی۔ حضرت عمر فاروق وٹائٹی جب جمرہ میں داخل ہوئے تو حضور نبی کریم سے بھاگ گئی۔ حضرت عمر فاروق وٹائٹی نے آپ سے بھاگ جھے ہوں تبسم فرمانے کی وجہ دریافت کی تو حضور نبی کریم سے بھائٹی نے فرمایا ہماری لونڈی کچھ گارہی تھی مگر جب اس نے تمہاری آ واز بی تو وہ خاموش ہوگئی اور یبال سے بھاگ گئی۔ حضرت ممر فاروق وٹائٹی نے عرض کیا یارسول اللہ سے بھائٹ میں اس لونڈی کی آ واز نہ سنوں گا یبال سے ہرگز نہ جاؤں گا۔ حضور نبی کریم میں بھائٹی نے اس لونڈی کو بلایا اسساونڈی نے دوبارہ گانا گانا۔

مجھے قرض کی ادائیگی کے متعلق کہتے:

حضرت زید بنالفیز بن سعند اسلام قبول کرنے سے پہلے اینے قرض کی والیسی کے لئے حضور نبی کریم مطابق کے یاس آئے اور انتہائی بدتمیزی سے کہا اے عبدالمطلب كی اولا د! تم بڑے نا دہندہ ہو۔حضرت عمر فاروق بٹائٹنڈ وہاں موجود تھے انہوں نے جب حضرت زید طالفی بن سعنه کی بات سی تو انہیں جھڑک دیا اور حضور نی کریم مطاع اس دوران تبسم فرماتے رہے۔ پھرآپ میٹی بیٹی نے حضرت عمر فاروق طالفَیْز سے فرمایا اے عمر (طالفیز)! بیداور میں تو کسی اُور بات کے ضرورت مند تھے اور تم مجھے اچھی طرح قرض کی ادائیگی کے متعلق کہتے اور اس سے کہتے وہ حسن اخلاق ے اینے قرض کی واپسی کا تقاضا کرے۔ پھر آپ میٹے پیٹیزنے فرمایا اے زید (بنائٹیز)! ابھی میرے وعدہ میں تین دن باقی ہیں۔ پھرآپ مینے پیچرے خطرت عمر فاروق طالفیا کو تھم دیا کہتم اس کا قرض ادا کر دو اور اے بیس صاع زیادہ وے دینا کیونکہ تم نے ا ہے جھڑ کا ہے۔ آپ منظ کی کا حسن سلوک و کمھے کر حضرت زید بنائعیٰ بن سعنہ نے ای وقت کلمه حق پرُ هه لیا اور دائره اسلام میں داخل ہو گئے۔ حضرت زید جالینڈ بن سعند اکثر اس واقعہ کو یا ذکر کے فرماتے تھے کہ میں نے حضور نبی کریم ہے ہے۔ کی تمام نشانیاں دیکھی تھیں مگر امور دیکھنا باقی تھے کہ نبی کے علم پر جبالت غلبہ بیس پاسکتی اور نبی کے ساتھ کتنا بھی جاہلوں والاسلوک کیا جائے اس کے حسن سلوک میں اضافہ ہوتا ہے نہ کہ کی ۔ یبی وجہ ہے کہ جب میں نے حضور نبی کریم ہے ہے۔ کو نازیبا الفاظ کے ساتھ آزمایا تو آپ ہے ہے۔ کہ جب میں نے حضور نبی کریم ہے ہے۔ کو نازیبا الفاظ کے ساتھ آزمایا تو آپ ہے ہے۔ کہ جب میں بے حصور نبی کریم ہے ہے۔

مجھے اسی کا تھم دیا گیا ہے:

حضور نبی کریم بیش کے خدمت میں ایک مرتبہ نوے بزار درہم پیش کئے اور آپ سے بیٹا نے ایک چٹائی بچھوا کر انہیں اس پر رکھوا دیا اور انہیں لوگوں میں تقسیم فرمانے گئے۔ جو بھی سائل آپ ہے بھٹا کی خدمت میں حاضر ہوتا وہ مایوس نہ لوثا تھا۔ آپ سے بھٹا ہم درہم تقسیم فرما چکے تو ایک سائل اور آگیا۔ آپ سے بھٹا ہے فرمایا تم میرے نام پر اپنی ضرورت کی اشیاء خرید فرماؤ اور جب مجھے کی جانب نے فرمایا تم میرے نام پر اپنی ضرورت کی اشیاء خرید فرماؤ اور جب مجھے کی جانب سے مال آئے گاتو میں وہ قرض اداکر دوں گا۔ حضرت عمر فاروق رائی نئی نے عرض کیا یارسول اللہ سے گاتو میں وہ قرض اداکر دوں گا۔ حضرت عمر فاروق رائی کو کرنے کا عارسول اللہ سے گاتا ہم کی استطاعت نہ ہواللہ عزوجل نے اس کام کو کرنے کا عمر میں دیا۔

اسی میں تیری نجات ہے:

ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ جانجنا سے مروی ہے فرماتی ہیں ایک دن حضور نبی کریم ہے ہے۔ مسجد نبوی میں تشریف فرما تھے اور صحابہ کرام بنی انتظام کی ایک بڑی تعداد جس میں مہاجرین اور انصار تھے موجود تھے۔ اس دوران بی سلیم کا ایک اعرابی آیا جس کا نام سعید یا معاذ تھا اس نے ایک سوسار (گوہ) انھار کھی تھی جو اس نے اپی آسین میں چھپائی ہوئی تھی۔ وہ اعرابی آتے ہی کہنے لگا مجھے اللہ کی فتم! نعوذ باللہ) آج تک کسی مال نے آپ سے بھی ہے زیادہ جھوٹا پیدا نہ کیا ہوگا اور لعوذ باللہ) آج تک کسی مال نے آپ سے بھی کو نبیس پایا۔ اگر میرا زور چلتا تو میں میں نے آپ سے بھی والا کسی کونہیں پایا۔ اگر میرا زور چلتا تو میں میں نے آپ سے بھی کا (معاذ اللہ) مرقام کردیتا۔

ای اعرابی کی اتی سخت گفتگوی کر حضرت عمر فاروق جائی ہے برداشت نہ ہوا اور وہ استھے اور ارادہ کیا کہ اس اعرابی کو پکڑی اور ابھی ختم کردیں مگر حضور نبی کریم میں ہے ان سے فر مایا کہ نرمی سے کام لو، صبر کرویہ انبیاء پہلے کی علامات یں۔ پھر آپ میں ہی اس اعرابی کی جانب متوجہ ہوئے اور فر مایا اللہ عز وجل کی قتم ایس اس آسان کے نیچے امین ہوں اور آسان کے فرشتے بھی میری تعریف کرتے ہیں، میں زمین پر امین ہوں اور ابل زمین بھی میری تعریف کرتے ہیں۔ اے اعرابی ایس میں نمین زمین پر امین ہوں اور ابل زمین بھی میری تعریف کرتے ہیں۔ اے اعرابی ایس میری تعریف کرتے ہیں۔ اے اعرابی ایس میری کفل میں اچھی بات کرو اور میرے متعلق اچھے کلمات کہو۔ اس اعرابی نے کہا میری کو بات کی بات کی سے بہتے ہیں جبکہ میں نے بچی بات کی سے بی سے بھی اس وقت تک ایمان نہ لاؤں گا جب تک بیا سوسار آپ میں ہی کی درمالت کی گوا بی نہ دے۔

حضور نبي كريم يشايية اس سوسار كي جانب متوجه موية اور فرمايا بتاكه ميس

الانتسار في كيسل المحالات المح

کون ہوں اور تیرارب کون ہے؟ وہ سوسار بولی میرارب زمین وآسان کو بیدا کرنے والا ہے، تری اور خشکی بر اس کی بادشاہت ہے اور آپ محمد ﷺ بن مبداللہ ہیں، انبیاءکرام پیلیم کے رہنما اور پیشوا جبکہ متقبول کے امام اور امت کے قائد ہیں، جو آپ مِنْ اِیمان لائے گاوہ یقیناً فلاح یائے گااور آپ میں بیروی کرنے والا بارگاہِ النی میں مقبول ہو گا اور جس نے آپ ہے بیٹے کی نافرمانی کی وہ خسارہ اٹھانے والا ہے اور اس کا ٹھکانہ دوزخ میں ہو گا۔ سوسار کی بات سن کر وہ اعرابی بہت خوش ہوا اور خوشی خوشی واپس لوٹے لگا۔ آپ منے بیٹی نے فرمایا کیاتم اللہ ع^{ور} وجل کے ساتھ مذاق کرتے ہو؟ وہ اعرابی کہنے لگا یارسول اللہ ﷺ؛ میں مذاق نہیں کرتا بلكه حقیقت سے ہے كہ جہب میں آپ ہے ہے كے پاس آیا تو آپ ہے ہے زیادہ کسی کوروئے زمین پر اپنا دشمن نہ مجھتا تھا مگر اب میں روئے زمین پر آپ میں ہیں ہیں سے زیادہ کسی کومحبت کرنے والانہیں یا تا۔ آپ مین پیرے فرمایا تو اسلام قبول کر کے اس میں تیری نجات ہے۔ اس اعرابی نے فوراً کہا میں گواہی ویتا ہوں کہ اللہ کے سواکوئی عبادت کے لائق نبین اور محمد مضابیت اللہ کے بندے اور رسول ہیں۔ آپ منظر المرابي كاسلام لانے يرب حدفوش ہوئے اور آب سے ساتھ تبسم فرماتے ہوئے اپنی نشست سے اٹھے اور تمین مرتبہ اپنا دست مبارک اس اعرابی کے ہاتھ پر

> ''تم آئے تو کافرینے مگراس حالت میں دالیں لوٹنے ہو کہتم مسلمان ہو۔''

> > ہم اللہ کے رب ہونے برراضی ہیں:

حضرت عبدالله بن ثابت طلنظ ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت عمر

فاروق مِنْ لَنَوْ ایک دن حضور نبی کریم منظر بینی کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا میں بنی قریظہ کے ایک محلہ سے گزرا وہاں میرا ایک دوست رہتا تھا اس نے مجھے تورات کا ایک نسخہ دیا ہے اگر آپ منظر تی اجازت ہوتو میں اسے ساؤں؟ آپ منظر تنظرت عمر فاروق میں ابت می تو آپ منظر کی بات می تو آپ منظر کی عبرہ مبارک منظر کے جب حضرت عمر فاروق میں ابت می تو آپ منظر کی کا چرہ مبارک منظر کے جانہ مارک کے عصد کے آٹارنمایاں ہوئے۔

حضرت عبداللہ بن ثابت بنائی کہتے ہیں میں نے حضرت عمر فاروق بنائی کہتے ہیں میں نے حضرت عمر فاروق بنائی سے کہا اے عمر بنائی اکیا تم حضور نبی کریم سے بیٹ کے چرہ اقدی کونبیں و کھتے ؟ پھر جب حضرت عمر فاروق بنائی نے حضور نبی کریم سے بیٹ کے چرے پر مضمہ کے آثار و کھے تو عرض کیا یارسول اللہ سے بیٹا ہم اللہ کے رب ہونے پر راضی ہیں اور دین اسلام پر راضی ہیں اور محمد سے بیٹ کے نبی آخری الزمال ہونے پر راضی ہیں۔ آپ اسلام پر راضی ہیں اور محمد سے بیٹ کے نبی آخری الزمال ہونے پر راضی ہیں۔ آپ سے بیٹ نے جب حضرت عمر فاروق بڑائی کی بات می تو آپ سے بیٹ کا غصہ جاتا رہا اور آپ سے بیٹ نے جب حضرت عمر فاروق بڑائی کی بات می تو آپ سے بیٹ کے قضہ قدرت مولی عبد الزمال اس ذات کی قسم جس کے قضہ قدرت مولی عبد الزمال میں میری پیروی کے میں میری پیروی کے میں میری پیروی کے بغیر گزارہ نہ تھا۔

عبدالله بن ابی کے جھوٹ کا بول کھل گیا:

غزوہ بی مصطلق کے موقع پر ایک مہاجر اور ایک انصاری کے درمیان کسی بات پر جھگڑا ہو گیا اور دونوں نے اپنی اپنی قوم کو پکارا اور خدشہ تھا کہ کہیں مہاجرین اور انصار کے درمیان لڑائی نہ شروع ہو جائے بعض اکا برصحابہ کرام می گئی نے آگے برح کران میں صلح کروا دی۔ رئیس المنافقین عبداللہ بن اُبلی کو اس کی خبر ہوئی تو اُس نے حضور نبی کریم سے بیچھ کی شان میں گتاخی کی اور اینے ساتھیوں سے کہنے لگا کہ

الاستراعم المنتاب المالي المنتاب المنت

یہ سب تمہارا کیا دھرا ہےتم لوگوں نے ان کواینے شہر میں پناہ دی اور اپنا آ دھا مال انہیں دے دیا اور اگرتم ان کی مدد نہ کرتے تو وہ اس شہر سے بیلے جاتے اور بخدا! جب ہم مدینہ پہنچیں گے تو ہم انہیں وہان سے رسوا کر کے باہر نکال دیں گے۔ حضرت زيد بن ارقم ظائفها جو اس وقت مسن عقص اور وبال موجود سق انہوں نے عبداللہ بن أبی سے كہا الله عزوجل كى قتم! تو ذليل ہے، تيرى اين قوم میں بھی کچھ عزت نہیں اور تیری حمایت کرنے والا کوئی نہیں جبکہ عزت و ہزرگی والے حضرت محمد ﷺ بیں، اللّٰہ عز وجل نے انہیں عزت عطا فر مائی اور اللّٰہ عز وجل کے ہاں بھی اُن کی عزت ہے اور اُن کی اپنی قوم میں بھی اُن کی عزت ہے۔ حضرت زیدبن ارقم دانفظها کی بات س کرعبدالله بن أبی غصه سے بولا کہتم خاموش رہو میں تو یونہی مداق کر رہا تھا۔حضرت زید بن ارقم طالعہما نے وہ باتیں جا كرحضور نبي كريم مِشْنِيَ اللهِ اللهِ اللهِ الكيل _

حضرت عمر فاروق و النفوان ان باتوں کوس کرطیش میں آ گئے اور حضور نبی کریم پینے کوئی ہے اجازت طلب کی کہ میں اس منافق کی گردن اڑا دوں۔ حضور نبی مریم پینے کا انہیں اجازت دینے سے انکار کر دیا۔

عبداللہ بن اُبی کو جب پنہ چلا تو اس نے حضور نبی کریم مضافیۃ کی خدمت میں حاضر ہو کرجھوٹی قتمیں کھانا شروع کر دیں اور کہنے لگا کہ میں نے ایبا کچھ منہیں کہا جبکہ زید بن ارقم والنے نئے ہے سے جھوٹ منسوب کیا ہے۔ انصار کے کچھ لوگوں نے بھی اس کی سفارش کی اور کہا یارسول اللہ مضافیۃ ہے اپنی قوم کا سردار ہے اور ایک نئے کے مقابلہ میں اس کی بات زیادہ اہمیت رکھتی ہے، ہوسکتا ہے کہ زید اور ایک نئے کے مقابلہ میں اس کی بات زیادہ اہمیت رکھتی ہے، ہوسکتا ہے کہ زید بن ارقم والنہ کے سننے میں غلط ہمی ہوئی ہو۔

حضور نبي كريم مُنْ الله الله عند الله بن أني كاعذر قبول كرليا اور حضرت زيد بن ارقم طلخهمًا کو جب خبر ہوئی کہ اس منافق نے جھوٹی قشمیں کھا کرخود کو ہیا بنا لیا ہے اور اُن کو جھوٹا قرار دیا ہے تو انہوں نے شرم کے مارے گھرے بابر نکلنا ترک کر دیا اور حضور نبی کریم سے بھتے کی محفل میں بھی جانے سے اجتناب برتنے لگے۔ الله عزوجل نے عبداللہ بن ألى كے جھوٹ كا بول كھول ديا اور سور و المنافقون نازل ہوئی جس کے ذریعے حضرت زید بن ارقم طالعظما کی سیائی سب پر عیاں ہوئی اور عبدالله بن أبی کے جھوٹ کا راز فاش ہو گیا جس کے بعد حضرت زید بن ارقم طابقیا کی عزت وتو قیرسب کی نگاہوں میں بڑھ گئی۔حضور نبی کریم ﷺ نے حضرت زید بن ارقم طلی بنان کو بلایا اور تبسم فرماتے ہوئے ان کا کان مسلا اور فرمایا۔ " تمہارا کان سچا ہے اور اللہ عزوجل نے تمہاری تصدیق کے لئے سور کا منافقون نازل فرما دی ہے۔''

تو خود کورسوا کرتا ہے:

حضور نبی کریم سے تھا نے اپ مرض وصال میں صحابہ کرام رفی آئی کے اجتماع سے خطاب کرتے ہوئے فر مایا عنقریب میں تم سے جدا ہونے والا ہوں اور اگرکسی کا مجھ پرکوئی حق ہے تو وہ اپناحق لے لیا در جان و مال یا سامان جس سے جا ہو گئی حق ہے تو وہ اپناحق کے فر مانے پر ایک شخص کھڑا ہوا اور اُس نے عرض چاہے تصاص لے۔ آپ سے تھا ہے فر مانے پر ایک شخص کھڑا ہوا اور اُس نے عرض کیا یارسول اللہ سے تھا آپ سے تھا نے میرے تین در ہم وینے ہیں۔ آپ سے تھا ہوں کیا یارسول اللہ سے تھا ہوں کی بات تی تو فر مایا میں کسی کا انکار نہیں کرتا اور نہ ہی کسی کو تم ویتا ہوں مگریہ تین در ہم میں نے کہ تم سے لئے؟ اس شخص نے عرض کیا ایک دن ایک فقیر مگریہ تین در ہم میں نے کہ تم سے لئے؟ اس شخص نے عرض کیا ایک دن ایک فقیر آپ سے تھا تھا ہوں آپ سے تھا تھا ہے۔ فر مایا کہ اسے تین در ہم در ہم در

المنت عمر المقال المعلى و اور میں نے اسے تین درہم وے دیئے۔ آپ سٹنے پیٹنے نے فرمایا اے فضل خلافاؤ (حضرت سیّدنا عباس طِالعَدُهٔ کے سیٹے فضل بن عباس طِالعُفَمَا)! ایسے تین درہم دیے

دو۔ پھرآپ میں پینے نے فرمایا اے لوگو! جس کسی پرحق ہوا سے حیا ہے کہ وہ آج اپنی

گردن اتار دے اور بیرخیال نہ کرے کہ میں رسوائی ہے خوفز دہ ہوں گا، یا در کھو کہ

ونیا کی رسوائی آخرت کی رسوائی ہے بہتر ہے۔

حضور نبی کریم ﷺ کے فرمانے پر ایک شخص کھڑا ہوا اور اس نے عرض کیا میں نے مال ننیمت میں تین درہم خیانت کی تھی جومیری گردن پر ہے۔ آپ ﷺ بنے فرمایا تو نے مال غنیمت میں خیانت کیوں کی؟ اس نے عرض کیا یارسول الله ﷺ بحص أس وقت ضرورت تھی۔ آپ ﷺ نے حضرت فضل مِنْ لَمُنَّهُ ہے

فرمایا اے فضل (بنائینے)! اس کی جانب ہے وہ تمین درہم ادا کر دو۔

حضور نبی کریم ﷺ نے ایک مرتبہ پھر فرمایا اے لوگو! کسی میں کوئی صفت الیی ہو جسے وہ جانتا ہواہے جائے کہ وہ کھڑا ہوتا کہ میں اس کے حق میں دعا کروں۔ایک شخص کھڑا ہوا اور اس نے عرض کیا یارسول اللہ ﷺ میں کذاب ہوں مخش گو ہوں اور میں بہت دہریک سوتا رہتا ہوں۔ آب مین این کے تن میں دعا فرمائی اے اللہ! اسے سیائی نصیب فرما اور اس کی نیند کو اس سے دور کر دے جبکہ بیہ بیداری کی خواہش رکھتا ہو۔ پھر ایک اور شخص کھڑا ہوا اور اُس نے عرض کیا يارسول الله يضَّ عَيْدًا مِن خِصونا اور منافق مول اور كوئى برائى اليي نهيس جو مجھ ميس نه یائی جاتی ہو۔حضرت عمر فاروق ڈالٹنٹز نے اس شخص کی بات س کر کہا اے شخص! تو خود کورسوا کرتا ہے۔ آپ سے ایکے اللے انے فرمایا دنیا کی رسوائی آخرت کی رسوائی ہے بہتر ہے۔ پھرآپ منظام بھائے اس محض کے لئے راست گوئی اور کامل ایمان اور دل کے

ر منت عمر شائل کے بیسلے کا موالی کے بیسلے کا موالی کے بیسلے کی دعا فر مائی۔ کینہ کو دور کرنے کی دعا فر مائی۔

پھر حضرت عمر فاروق بٹائٹڈ نے پچھالیی بات کئی جسے ن کر حضور نبی کریم سٹے کیٹیانے تبسم فر مایا اور فر مایا۔

''عمر (طِلْعُنُهُ) میرے ساتھ ہے اور میں عمر (طِلْعُنُهُ) کے ساتھ ہوں اور حق عمر (طِلْعُنُهُ) ہوں ہوں اور حق عمر (طِلْعُنُهُ) کے ساتھ ہے خواہ عمر (طِلْعُنُهُ) جس جانب مرضی ہوں۔''

ان سے کہو کہ بیر چوری نہیں کریں گی:

فتح کمہ کے دن اہل کمہ کے بے شار مرد وعور تیں ، حضور نی کریم مضافیۃ کی اور خدمت میں حاضر ہو کیں اور انہوں نے آپ مضافیۃ کے دست حق پر بیعت کی اور دائرہ اسلام میں داخل ہوئے۔ آپ مضافیۃ کم نے ساتھ حسن سلوک کرتے ہوئے ان کے پیچھے تمام افعالی بد پر انہیں معاف فرما دیا۔ فتح کمہ کے موقع پر جب خواتین ، آپ مضافیۃ کے دست حق پر بیعت کے لئے آئی کیں تو ان میں ہندہ وہا ہی خواتین ، آپ مضافیۃ کے دست حق پر بیعت کے لئے آئی کیں تو ان میں ہندہ وہا ہی اور پھر محمد میں جو بھیس بدل کر آئی تھیں تا کہ آپ مضافیۃ انہیں شاخت نہ کریں اور پھر شاخت کے بعدا ہے ہردلعزیز بچا کی شہادت کا بدلہ لیتے ہوئے اسے قل کرنے کا شاخت کے بعدا ہے ہردلعزیز بچا کی شہادت کا بدلہ لیتے ہوئے اسے قل کرنے کا شاخت کے بعدا ہے ہردلعزیز بچا کی شہادت کا بدلہ لیتے ہوئے اسے قل کرنے کا شاخت کے بعدا ہے ہردلعزیز بچا کی شہادت کا بدلہ لیتے ہوئے اسے قل کرنے کا شاخت کے بعدا ہے ہردلعزیز بچا کی شہادت کا بدلہ لیتے ہوئے اسے قل کرنے کا شاخت کے بعدا ہے ہردلعزیز بچا کی شہادت کا بدلہ لیتے ہوئے اسے قل کرنے کا شاخت کے بعدا ہے ہردلعزیز بچا کی شہادت کا بدلہ لیتے ہوئے اسے قبل کردیں۔ ہندہ وہا تھا نے دوسری عورتوں سے کہا کہ میں گفتگو میں حصہ نہ لوں گی مبادا کہیں میری آ واز بہچان نہ لی جائے۔

حضور نبی کریم منظور تنا کہ وہ عورتوں مالی کہ وہ عورتوں کو خاطب ہوں اور کہیں کہ حضور نبی کریم منظور تنا کریم منظورتا تا ہو کہ ہم اللہ عزوجل کے ساتھ کسی کو شریک نہ تھ ہراؤگی۔ ان عورتوں نے یک زبان ہو کر کہا جب مردوں کو شرک کی ممانعت کیوں نہ ہو جب مردوں کو شرک کی ممانعت کیوں نہ ہو

المنت عملات والمالية المالية ا

گ؟ آپ مضائی ان ہے کہو کہ یہ چوری نہیں کریں گی؟ اس پر حضرت ہندہ طرایا اسے عمر رہائی ان ہے کہو کہ یہ چوری نہیں کریں گی؟ اس پر حضرت ہندہ طرائی بول پر یں میں ابوسفیان رہائی کی معمولی چیزیں کبھی کبھار چرالیتی تھی کیا ہے بھی چوری میں شار ہوتی ہیں؟ اس مجلس میں حضرت ابوسفیان رہائی بھی موجود تھے انہوں نے کہا تو نے میرے گھر میں جو بھی چرایا اور وہ خرج ہوگیا یا باتی ہے میں وہ تیرے لئے حلال کرتا ہوں۔

تههارا مال انہیں عطا کرنا کوئی بڑی بات نہیں:

ایک مرتبه حضرت عمر فاروق طائفنهٔ مدینه منوره کے نواح میں واقع ایک گاؤں میں پہنچے اور اس گاؤں میں یہودیوں کی تعداد زیادہ تھی۔ آپ رٹائٹنڈ نے یو جھا كيا يهال سم مسلمان كالبحى كريم إلى آب طلفظ كو بتايا كيا يهال ايك بدومسلمان ر ہتا ہے جو بہت غریب ہے۔ آپ ڈالٹنڈ اس بدو کے پاس گئے اور اس بدو نے اپی بیوی ہے کہا کہ ایک مہمان آیا ہے اس کے کھانے کا انتظام کرو۔ بیوی نے کہا گھر میں تھوڑے سے جو کے سوا سیجھ جمی نہیں ہے۔ وہ بدو بولا کہتم گندم کا آٹائسی ہے۔ ادھار لے آؤ۔ بدو کی بیوی نے ہمسابوں سے پیتہ کیا مگر کہیں سے گندم کا آٹا نہ ملا۔ اس نے مجبورا جو کی روٹیاں بنائیں اور وہ آپ رٹائنیز کے سامنے رکھ دی گئیں۔ آپ ڈلٹنٹ کو خیال آیا بیہ بدو اور اس کی بیوی کے علاوہ ان کے تین بیچے بھی ہیں چنانچہ رائیٹنٹہ کو خیال آیا بیہ بدو اور اس کی بیوی کے علاوہ ان کے تین بیچے بھی ہیں چنانچہ آپ طالفیز نے روٹیوں کا چھٹا حصہ بعنی آدھی روٹی کھائی اور باقی بدو اور اس کے ِ گھروالوں کے لئے چھوڑ دیں۔ پھرآ ب طالفنڈ وہاں سے رخصت ہوئے تو اس بدو سے فرمایا کہتم جب بھی مدینه منورہ آؤتم عمر (خلائیڈ) کے متعلق بوچھے لینا۔ پچھ عرصہ بعدوہ بدواوراس کی بیوی مدینه منورہ آئے اور آپ رہائنڈ کے متعلق دریافت کیا۔

جب وہ آپ بڑائنڈ سے ملے تو ان دنوں آپ بڑائنڈ کا تجارتی مال مدینہ منورہ پہنچا تھا آپ بڑائنڈ نے وہ تمام مال اس بدو کوعطا کر دیا۔ پھر جب آپ بڑائنڈ ، حضور نبی کریم مضافیۃ کی خدمت میں حاضر ہوئے تو حضور نبی کریم مضافیۃ کو تمام واقعہ سایا اور دریافت کیا یارسول اللہ مضافیۃ کیا میں نے ان کی میزبانی کاحق ادا کر دیا؟ حضور نبی کریم مضافیۃ نے ان کی میزبانی کاحق ادا کر دیا؟ حضور نبی کریم مضافیۃ نے ان کی میزبانی کاحق ادا نبیں کیا اور وہ غریب تنے مگر پھر بھی انہوں نے تمہاری مہمان نوازی کی اور ادھار لینے سے بھی دریغ نہ کیا اور ای قوت سے بڑھ کر تمہاری خدمت کی جبکہ تمہارے پاس مال موجود تھا چنا نبی اور ایک کی بیس مال موجود تھا چنا نبیس عطا کرنا کوئی بڑی بات نہیں۔

نیکیوں میں کمی کا خوف:

حضرت حمید بن ہلال رفائنو فرماتے ہیں حضرت حفص بن الی العاص رفائنو بہب حضرت عمر فاروق رفائنو کے کھانے کے اوقات میں حاضر ہوتے تو آپ رفائنو کے ساتھ کھانا نہ کھاتے۔ ایک مرتبہ آپ رفائنو نے دریافت کیا تمہیں کس چیز نے میرے ساتھ کھانا کھانے سے روکا ہے۔ حضرت حفص بن ابی العاص رفائنو نے کہا آپ رفائنو کا کھانا مونا جموٹا ہوتا ہے اور میں ایسے کھانے کی طرف والی لوٹوں گا جو نرم ہوگا اور میرے لئے پکایا گیا ہوگا۔ آپ رفائنو نے فرمایا کیا تمہارا میرے متعلق بید خیال ہے کہ بید میرے بس کی بات نہیں، میں ایک بری کے لئے حکم دوں متعلق بید خیال ہے کہ بید میرے بس کی بات نہیں، میں ایک بری کے لئے حکم دوں اس سے بال صاف کئے جا کیں اور آئے کے لئے حکم دوں کہ وہ ایک کیڑے میں جھانا جائے اور اس میں میدہ کے لئے حکم دوں کہ اس سے جپاتیاں پکائی جا کیں، ایس میدہ کے لئے حکم دوں کہ اس سے جپاتیاں پکائی جا کیں، میں ایک صاع منے کے لئے حکم دوں کہ وہ جائے اور کھر اس کے او پر میں ایک صاع منے کے لئے حکم دوں کہ وہ جائے۔ آگر جھے بروز قیامت نیکیوں پہنی ڈالا جائے کہ وہ ہرن کے خون کی طرح ہوجائے۔ آگر جھے بروز قیامت نیکیوں

الناسبة عملي المحالي المحالية المحالية

میں کمی کا خوف نہ ہوتا تو میں تم لوگوں سے بھی زیادہ اچھے طریقے سے کھا تا اور اس معالمے میں تمہاراشریک ہوتا۔

، پیوند لگے کیڑے:

حضرت عبداللہ بن عمر بڑا تھئیا ہے مردی ہے فرماتے ہیں والد بزرگوار حضرت عرفاروق بڑا تھئی نے گھر والوں کے لئے روزینہ مقرر کررکھا تھا۔ آپ بڑا تھئی گرمیوں میں نیا کپڑا بدلتے اور بسا اوقات تہبند بھٹ جاتا تو اس پر پیوندلگا لیتے اور جب تک اس کے تبدیل کرنے کا وقت نہ آ جاتا اسے پہنتے رہے۔ آپ بڑا تھئی کے دور خلافت میں کوئی سال ایبا نہ تھا جب فقوعات زیاوہ نہ ہوئی ہوں گر آپ بڑا تھیا۔

آ دمی کے اسراف کی بات:

حضرت حسن بصری و النیز؛ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق و النیز؛ النیخ النی حضرت عبداللہ بن عمر و النیخ النی حضرت عبداللہ بن عمر و النیخ اللہ بن عمر اللہ بن عمر اللہ بن اللہ و اللہ بنائے و ریافت کیا کہ بید کیسا گوشت ہے؟ انہوں نے عرض کیا مجھے گوشت کی خواہش ہوئی اس لئے میں اسے خرید لایا۔ آپ و النیخ نے فرمایا کہ اس کا مطلب یہ ہے کہ تہمیں جس چیز کی خواہش ہوئی ہے تم وہ النیک ہو۔ آ دمی کے اسراف کے لئے یہ بات ہی کافی ہے وہ جس چیز کی خواہش کرے اے حاصل بھی کرے۔

یمی تمہاری دنیا ہے:

حضرت حسن بصری طلعنی فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق طلعیٰ کا صحابہ

المنت عمر المنتقاف الموق كر فيهل

کرام ضائع کی ایک جماعت کے ہمرا ایک کوڑی پر گزر ہوا۔ آپ طائع اس کوڑی کے پاس میں ایک کوڑی کے پاس کوڑی کے پاس کرک سے گھن آنے لگی۔ کے پاس رک گئے تو صحابہ کرام شائع کو اس کوڑی کی گندگی سے گھن آنے لگی۔ آپ طائع نے نے فرمایا یہی تمہاری دنیا ہے جس برتم اعتاد کرتے ہو۔

کیاتمہیں اہل فارس و روم سے عبرت حاصل نہیں ہوئی ؟:

آخرت کی تیاری:

حفرت سفیان بن عینیہ و النفو سے مروی ہے فرماتے ہیں حفرت سعد بن ابی وقاص و النفو جب کوفہ کے گورز مقرر ہوئے تو آپ و النفو نے حضرت عمر فاروق و النفو کی خدمت میں خط بھیجا جس میں گھر بنانے کی اجازت طلب کی گئی۔ حضرت عمر فاروق و النفو نے انہیں جوابا مکتوب بھیجا جس میں تحریر تھا۔ حضرت عمر فاروق و النفو نے انہیں جوابا مکتوب بھیجا جس میں تحریر تھا۔ "تم اتنا بڑا مکان بناؤ جو تمہیں دھوپ اور بارش سے بچائے اس لئے کہ دنیا ایسا گھر ہے جہاں رہ کرتم نے آخرت کے لئے تیاری کرنی ہے۔"



لوگوں ہے محبت وشفقت کی انتہاء:

حضرت اسمعی جائینی فرماتے ہیں کہ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف برائینی سے
لوگوں نے عرض کیا آپ بڑائینی ، حضرت عمر فاروق بڑائینی سے بات کریں کہ وہ لوگوں
کے ساتھ تحتی ہے بیش نہ آئیں۔ اب تو ان کی تحق کی وجہ سے گھروں میں بیٹی کنواری لڑکیاں بھی اپنے پردے کے اندر خائف ہیں۔ آپ بڑائینی نے حضرت عمر فاروق بڑائینی نے حضرت عمر فاروق بڑائینی نے فرمایا۔
فاروق بڑائینی سے اس بات کا تذکرہ کیا تو حضرت عمر فاروق بڑائینی نے فرمایا۔
"اے عبدالرحمٰن (بڑائینی)! اللہ کی شم! اگر لوگوں کو پہۃ چل جائے
میرے ول میں ان کے لئے کتنی محبت اور شفقت ہے تو یہ
لوگ میرے کپڑے کومیرے کندھے سے تھنج لیں۔"

تریرہ الیسے گھوٹا کرو:

حضرت ہشام طالبنی فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت عمر فاروق طالبنی کو دیکھا کہ وہ ایک ایسی عورت سے گزرے جوحریرہ گھوٹ رہی تھی۔ آپ طالبنی نے فرمایا کہ اس طرح حریرہ نہیں گھوٹا جاتا۔ پھرآپ طالبنی نے اسے حریرہ گھوٹ دیا اور فرمایا کہ اس طرح محریرہ گھوٹ دیا اور فرمایا حریرہ اس طرح گھوٹا کرو۔

اللُّدعز وجل كافضل:

حضرت عکرمہ دلائنڈ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق دلائنڈ کا گزرا پہے خص پرہوا جواندھا، گونگا، مبرا اور کوڑھی تھا۔ آپ زلائنڈ نے اپنے ہمراہ لوگوں سے فرمایا تم اس مخص پراللہ عزوجل کا کچھانعام دیکھتے ہو؟ ان لوگوں نے کہا ہم اس پراللہ کا سیجھ فضل نہیں پاتے۔ آپ دلائنڈ نے فرمایا اس پراللہ عزوجل کا انعام ہے کہ کیا تم

المنت مم المنتوب الوق كرفيه المحالي المحالي المحالية المح

نہیں دیکھتے یہ پیشاب خود کرتا ہے اور اسے بیشاب کے لئے خود کو بھینچنانہیں پڑتا۔

حضرت ابوموی اشعری طالعین کونفیحت:

حضرت حسن بھری رظائفہ فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رظائفہ نے حضرت ابوموی اشعری رظائفہ کو لکھا دنیا ہے اپنے رزق پر قناعت کرواس لئے اللہ عزوجل نے اپنے بعض بندوں کو بعض پر رزق میں فضیلت دی ہے۔ یہ ایک آزمائش ہے جس سے ہمر بندے کو آزمایا جاتا ہے۔ جس کواس نے وسعت دی اس کی آزمائش یہ یہ ہے کہ وہ اللہ عزوجل کا شکر کس طرح اوا کرتا ہے۔ اللہ عزوجل کا شکر اوا کرتا اس کے حق کی اوا کیگی ہے جو اللہ عزوجل کے شرق کے معاملہ میں اسے عطا کیا ہے۔ اللہ عزوجل کا فرمان ہے کہ اگرتم میراشکر کرو گے تو میں تمہیں اور زیادہ نعمت سے اللہ عزوجل کا فرمان ہے کہ اگرتم میراشکر کرو گے تو میں تمہیں اور زیادہ نعمت سے نوازوں گا۔

<u>تیرا فیصله میری تلوار نے کر دیا:</u>



مسلمانون كاغلام:

حضرت عمر فاروق برائین کی عاجزی و انکساری کا یہ عالم تھا کہ ایک دن صدقہ کے اونٹول کے جسم پرتیل مل رہے بنھے کسی نے دیکھا تو عرض کیا امیر المونین! آپ برائین خلام سے کہہ دیتے وہ اونٹول کو تیل مل دیتا۔ آپ برائین نے فرمایا مجھ سے بڑھ کر غلام کون ہوگا جو محص مسلمانوں کا والی ہے اس کوان کا غلام بھی ہونا حائے۔

اقرباء کاحق میرے مال میں ہے:

حضرت حسن بھری والنفظ سے مروی ہے فرماتے ہیں ایک مرتبہ حضرت عمر فاروق والنفظ کے پاس بے شار مالی غنیمت آیا۔ ام المونین حضرت حفصہ والنفظ کو خبر ہوئی تو وہ آپ واللہ بزرگواراس مال ہوئی تو وہ آپ واللہ بزرگواراس مال میں آپ والنفظ کے اقرباء کا بھی حق ہو اللہ عز وجل نے رشتہ داروں سے حسن ملوک کا تھم دیا ہے۔ آپ والنفظ نے فرمایا میری پیاری بیٹی! اقرباء کا حق میر سے مال میں ہے جبکہ بیمسلمانوں کا مال ہے۔

علمی مقام ومرتبه:

دین اسلام سے قبل عربوں میں پڑھنے لکھنے کا زیادہ رواج نہ تھا چنانچہ جب حضور نبی کریم میں ہے نبوت کا اعلان کیا اس وقت قریش میں سترہ افرادا یہ تھے جو پڑھنا لکھنا جائے تھے اور حضرت عمر فاروق جائنے بھی ان میں سے ایک تھے۔ آپ جائنٹے نہایت ذبین وفطین تھے فصاحت و بلاغت میں اپی مثل آپ تھے۔ آپ جائنٹے سپر کری اور بہادری کے جو ہروں سے آراستہ تھے۔ آپ جائنٹے کی کے جو ہروں سے آراستہ تھے۔ آپ جائنٹے کے جو ہروں سے کی جو ہروں سے کے جو ہروں سے کے جو ہروں سے کے جو ہروں سے کی کے کی جو ہروں سے کی جو ہروں سے کی جو ہروں سے کی کے کی کے کی جو ہروں سے کی کے کی ک

www.iqbalkalmati.blogspot.com المنتسبة عملين الوق كيابيل

فرامین،خطوط اورخطبات جو کتب سیر کا حصہ ہیں ان سے آپ رٹائٹنڈ کی علمی قابلیت کا اظہار ہوتا ہے۔ آپ رٹائٹنڈ اپنے عہد کے بخن سنج تھے اور عربوں کے تمام برے بڑے شعراء کا کلام آپ رٹائٹنڈ کو یا دتھا۔

حضرت عمر فاروق رخالفہ جب مدینہ منورہ تشریف لائے تو آپ رخالفہ نے عبرانی زبان ہے بھی جلد واقفیت حاصل کرلی۔ آپ رخالفہ کی ذبانت کا سب سے بھی جلد واقفیت حاصل کرلی۔ آپ رخالفہ کی ذبانت کا سب برا شوت یہ ہے کہ آپ رخالفہ کے بے شار مشورے وین اسلام کے احکامات بن گئے۔ اذان کا طریقہ آپ رخالفہ نے بتایا۔ شراب کی حرمت اور ازواج مطہرات کی کے۔ اذان کا طریقہ آپ رخالفہ کی بتایا۔ شراب کی حرمت اور ازواج مطہرات رخالفہ کے پردہ اور مقام ابراہیم علیائل کا مصلی بنانے میں مشورہ کی تائید اللہ عن وجل نے قرآن مجید میں گی۔

حفرت عمر فاروق را النفیز قرآن مجید کے احکام و مسائل سے بھی بخوبی آگاہ تھے اور جس مسلم میں آپ را النفیز کوکوئی پریشانی پیش آتی آپ را النفیز وہ مسئلہ حضور نبی کریم میں آپ را افت کرتے۔ آپ را النفیز نے ستر کے قریب روایات بیان کی ہیں۔ آپ را النفیز کا فقہ میں مقام نہایت بلند ہے۔ حضرت عبداللہ بن عمر، حضرت عبداللہ بن عباس اور حضرت عبداللہ بن مسعود جو النفیز نے اپنی فقہی بصیرت جاتے ہیں وہ سب آپ النفیز کے تربیت یا فقہ ہیں۔ آپ را النفیز نے اپنی فقہی بصیرت سے بشار دین مسائل حل کئے۔

حضرت عمر فاروق و النفاذ علم الانساب میں بھی مہارت رکھتے تھے اور اس علم کے ماہرین میں آپ و النفاذ کا شار ہوتا تھا۔ روایات میں آتا ہے کہ جس وقت حضور نبی کریم مطابق نبوت کا دعویٰ کیا اس وقت قریش میں صرف سترہ افراد ایسے تھے جولکھنا پڑھنا جانتے تھے جن میں آپ والفاذ بھی تھے۔حضور نبی کریم مطابق کا ایسے تھے جولکھنا پڑھنا جانتے تھے جن میں آپ والفاذ بھی تھے۔حضور نبی کریم مطابق کا

الانت ترجم الناق كرفيل المعلق المعلق

کے صحابہ کرام می انتخ میں حضرت ابو بحرصدیق طالغی کے بعد آب طالغی سب سے زیادہ علم الانساب کی تعلیم اینے والد سے زیادہ علم الانساب کی تعلیم اینے والد سے حاصل کی تھی۔

حضرت عمر فاروق طلعنی کو اخطب العرب کا لقب دیا گیا تھا اور آپ طالعنی بیٹ کے خطبے تاریخ کا حصہ ہیں اور اپی مثال آپ میں ۔ آپ طلعنی کے خطبے تاریخ کا حصہ ہیں اور اپی مثال آپ ہیں۔ آپ طالعی نے ایک مرتبہ خطبہ دیتے ہوئے فرمایا۔

"اے اللہ! میں بخت ہوں مجھے زم کر دے، میں کمزور ہوں مجھے قوت عطا فرما۔ اہل عرب سرکش اونٹ کی مانند ہیں جن کی مہار میرے ہاتھ میں دی گئی ہے مجھے ہمت عطا فرما میں انہیں راستہ پر چلا کر ہی جھوڑوں گا۔"

میں نے حضور نبی کریم مشاعلی کوالیے ہی دیکھا ہے:

حضرت عبداللہ بن عمر والحفیٰ سے مروی ہے فرماتے ہیں ایک مرتبہ والد بزرگوار حضرت عمر فاروق والد فی فی فی فی نے بہت ن فرمائی اور مجھے چھری لانے کا حکم دیا اور جب میں چھری لایا تو فرمایا آستیوں کو کھینچواور میری انگلیوں کے بوروں کے بنچ سے کاٹ دو اور جب میں نے آستیوں کا بڑھا ہوا حصہ کاٹ دیا تو وہ چھوٹی بڑی ہوگئیں۔ میں نے عرض کیا اگر حکم دیں تو قینچی سے انہیں برابر کر دوں۔ تی والٹیز نے مجھے سے فرمایا۔

دونہیں رہنے دو میں نے حضور نبی کریم مضافیتا کو ایسے ہی مکیلہ میں ''

المنت عمل المنتوال المنتول المنتوال الم

دینی خدمات:

دین خدمات کا جائزہ لیا جائے تو کسی بھی اسلامی حکومت کا سب سے بڑا
کام اشاعت اسلام ہے۔ حضرت عمر فاروق بڑاتھ نے بھی اشاعت اسلام میں بڑھ
پڑھ کر حصہ لیا۔ آپ بڑاتھ جانے تھے کہ اسلام تلوار کے زور پرنہیں بلکہ اخلاقی
اقدار کی بدولت پروان پڑھا ہے۔ آپ بڑاتھ نے جب بھی کسی ملک میں اسلامی
فوج کو روانہ کیا آپ بڑاتھ نے انہیں نصیحت کی جنگ سے قبل لوگوں کو دین اسلام
کی دعوت دیں اور انہیں دین اسلام کے اوصاف سے آگاہ کریں۔ آپ بڑاتھ نے لشکر
اسلام کو ہدایت کرتے وہ اپنے اخلاق کی بدولت دوسروں کو قائم کریں۔ یہی وجہ ہے
جب نشکر اسلام کسی علاقے میں جاتے تو لوگ انہیں دیجھنے کے لئے آتے اور مسلمانوں
جب نشکر اسلام کسی علاقے میں جاتے تو لوگ انہیں دیجھنے کے لئے آتے اور مسلمانوں
حافلات سے متاثر ہوکر دائرہ اسلام میں جوق در جوق داخل ہوتے تھے۔

حضرت عمر فاروق برائی نے ان عربوں کو جوعراق اور شام میں آباد سے اور عیسائی سے ان کو دین اسلام کی جانب قائل کرنے کے لئے تبلیغ کا انداز اپنایا اور آپ برائی نے کی ان کوششوں سے بے شار قبائل دائرہ اسلام میں داخل ہو گئے۔ آپ بڑائی نے اپنے دور خلافت میں دین اسلام کی تبلیغ کے لئے دور دراز علاقوں میں وفود تبصیح۔مفتوحہ علاقوں میں لوگوں کو اسلامی تعلیمات سے آگاہ کرنے کے لئے معلمین کو در تبصیح۔مفتوحہ علاقوں میں لوگوں کو اسلامی تعلیمات اور تو حید کا درس دیتے۔ کا انتظام کیا جو ان علاقوں میں جا کرلوگوں کو اسلامی تعلیمات اور تو حید کا درس دیتے۔ آپ بڑائی کی دور اندیش کی بدولت لوگوں کے دلون میں اسلام کی حقانیت واضح ہوئی اور دین اسلام کی بہتر طریقے سے اشاعت ممکن ہوئی۔

حضرت عمر فاروق را النفئ نے نومسلموں کو قرآن مجید کے مفہوم اور دین اسلام کی تعلیمات سے آگاہ کرنے کا بھی خاطرخواہ انتظام کیا۔ آپ را النفظ نے تمام الانتساع المنتقاف الوق كيديل

مفتوحہ علاقوں میں قرآن مجید کی تعلیم کے لئے کمتب قائم کئے اور ان میں تنخواہ دار معلم مقرر فرمائے۔آپ بڑائیڈ ان علاقوں میں جلیل القدر صحابہ کرام بڑائیڈ کو بھی وقا فو قتا بھیجا کرتے تا کہ نومسلموں کے دل ان صحابہ کرام بڑائیڈ کی صحبت سے مائل ہوں۔آپ بڑائیڈ نے قرآن مجید کو سجے طریقہ سے پڑھنے اور اس میں موجود تا کیدی احکامات پر عمل کرنے کا بھی تھم جاری کیا۔ آپ بڑائیڈ کی ان تد ابیر کی بدولت قرآن مجید کے حافظوں کی تعداد میں خاطر خواہ اضافہ ہوا اور ان کی تعداد ہزاروں میں جا بیچی۔

حضرت عمر فاروق ولليني كاليك اوركارنامه حديث نبوى المنظمة كى اشاعت اورتبليغ ہے۔ آپ وللني اصحیح احادیث كى تلاش كرتے اور ان كى اشاعت كے بعد انہيں مختلف علاقوں میں روانه كرتے۔ آپ وللنی كے زمانه میں چونكه فتوحات كى كثرت تھى اور امور مملكت چلانے كے لئے روز نئے نئے حالات پیش آتے اس كثرت تھى اور امور مملكت چلانے كے لئے روز نئے نئے حالات پیش آتے اس لئے آپ ولائن اس معاملے میں اكابر صحابہ كرام ولائن من كريم مين يا كہ كہ فرمودات كے متعلق دريافت كرتے اور جس صحابی ہے كوئى حدیث ملتى اس كى تصدیق فرمودات كے متعلق دریافت كرتے اور جس صحابی ہے كوئى حدیث ملتى اس كى تصدیق كرتے تھے۔ آپ ولائن احادیث كونہایت جھان بین كے بعد قبول كرتے تاكه كسى فتم كاكوئى عذر باقی ندر ہے اور حضور نبى كريم مين بین كے بعد قبول كرتے تاكه كسى وقتم كاكوئى عذر باقی ندر ہے اور حضور نبى كريم مين بین ہے دوئى ایس بات منسوب نہ ہو۔ جوان كے شایان شان نہ ہو۔

حضرت عمر فاروق و النفاذ ك زمانه خلافت ميں علم فقد كى بھى ترقى اور اشاعت كا خاطرخواہ انتظام كيا گيا۔ آپ رائلان مختلف مواقع پر اپنے خطبات ميں لوگوں كوفقهى اور شرى مسائل سے آگاہ كرتے۔ صحابہ كرام مِن اَفْدَى كو درميان موجود اختلافى مسائل كوئل بينھ كرحل كرنے پرزور دیتے۔ آپ رائلانی عمال كى تقررى سے اختلافى مسائل كوئل بينھ كرحل كرنے پرزور دیتے۔ آپ رائلانی عمال كى تقررى سے

قبل اس بات کا بھی جائزہ لیتے کہ وہ عالم دین ہیں اور فقہی وشرعی مسائل سے بھی آئے گاہ ہیں۔

حضرت عمر فاروق رائینی کا ایک اہم کارنامہ مساجد کی تغییر اور ان میں بہترین اماموں کا تقرر ہے۔آپ رائینی نے دین اسلام کی اشاعت و تبلیغ کے لئے مفتوحہ علاقوں میں کثرت سے مساجد تغییر کروا کمیں اور ان میں تنخواہ دار امام اور مؤذن تغییات کئے۔ خانہ کعبہ اور مبحد نبوی مطابق کی توسیع کروائی تا کہ یہاں آنے والے لوگوں کو مہولت ہو۔ آپ رائین نے اپنے دورِ خلافت میں دینی ادکامات کو نافذ کیا اور ان برعمل درآ مدکو یقینی بنایا۔

حضرت عمر فاروق وظائفہ نماز ہنجگانہ، جمعہ کی نماز اور عیدین کی نماز کی امامت خود کیا کرتے ہے اور ان نمازوں کے وفت لوگوں کوفرائض اور سنن کی تعلیم دیتے ہے۔ آپ رظائفہ کے آخری ایام میں نمازیوں کی کثرت اس قدر ہوگئ تھی کہ کئی کمو وُن اذان دیتے ہے۔ آپ رظائفہ اکثر و بیشتر خطبات کے دوران لوگوں کو مذہبی وسیاسی مسائل ہے آگاہ کرتے اور اس سلسلہ میں قرآن مجید کی آیات کے حوالہ جات بھی بیان کرتے ہے۔

حضرت عمر فاروق و النفیز خود امیر الجی ہوتے اور لوگوں کو بھی جی کرنے کی ترغیب دیا کرتے تھے۔ آپ و النفیز کی خدمت میں کوفہ اور بھرہ کے وفود حاضر ہوئے اور عرض کیا کہ امیر المومنین! حضور نبی کریم میش کی نے اہل نجد کے لئے قرن احرام باند ھنے کے لئے جگہ مقرر کی ہے جو ہمارے راستے سے جدا ہے اگر ہم قرن جا کراحرام باندھیں تو ہمیں دشواری پیش آتی ہے۔ آپ و النفیز نے فرمایا کہ تم اپنے جا کراحرام باندھیں تو ہمیں دشواری پیش آتی ہے۔ آپ و النفیز نے فرمایا کہ تم اپنے راستے کا کوئی ایسا مقام بتاؤ جو اس کے مقابل ہو۔ پھر آپ و النفیز نے ان سے باہم

353 Jesus Je

مشورہ کے بعد ذات عرق احرام باند صنے کے لئے تبحویز فرمایا۔ عمر (حلافیہ) کے سواکون ہو سکتے ہیں؟:

حضرت عبدالله بن مسعود بالفينها ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم ہے ہے۔ کے ایک صحافی جانبوں کو ایک جن ملا اور انہوں نے اس کے ساتھ کشتی کی اور پھر ان صحابی میں ہے اس جن کو پچھاڑ دیا اور اس جن سے کہاتم کتنے کمزور ہواور تمہارے ہاتھ کتنے کمزور ہیں اور کیا گروہ جن ایسا ہی ہوتا ہے؟ وہ جن کہنے لگا میں موٹا تازہ جن ہوں اورتم میرے ساتھ دوبارہ کشتی کرد اور اگرتم نے مجھے پھر بچھاڑ دیا تو پھر میں تمہیں ایسی چیز بتاؤں گا جو تمہیں نفع دے گی چنانچہ انہوں نے پھراس جن ہے سنتی کی اور جن کو پھیاڑ دیا۔ جن نے کہا کیاتم اللہ اللہ الا هو الحی القیوم پڑھتے ہو؟ وہ بولے ہاں۔جن نے کہا جس گھر میں پیکلمہ پڑھا جائے گا شیطان گدھے کی مانند ڈر کر بھاگے گا اور وہ اس گھر میں اس وقت تک داخل نہیں ہو گا جب یک صبح نہ ہو جائے۔صحابہ کرام میں منتم نے حضرت عبداللہ بن مسعود والفخیا ہے . پوچھا وہ صحابی طالعُنیْ کون تھے؟ آپ طالعُنیْ نے تر د دفر مایا اور فر مایا وہ عمر (طالعُنیْز) کے سوا کون ہو سکتے ہیں؟

علی (طَالِنَهُ) کا ذکر بھلائی کے ساتھ کرو:

حضرت عروہ ڈلٹٹؤ سے مروی ہے فرماتے ہیں ایک شخص نے حضرت عمر فاروق ڈلٹٹؤ کے سامنے حضرت علی الرتضلی ڈلٹٹؤ کے بارے میں کچھ نازیبا الفاظ کے۔ آپ ڈلٹٹؤ اس کا ہاتھ پکڑ کرروضہ رسول اللہ ہے ہیں آپ کے اور فرمایا۔

''کیا تو اس قبر والے کو جانتا ہے؟ پس تو علی (ڈلٹٹؤ) کا ذکر ہوائی ہے کہ کا ذکر برائی کے سوانجھی نہ کراگر تو نے علی (ڈلٹٹو) کا ذکر برائی کے سوانجھی نہ کراگر تو نے علی (ڈلٹٹو) کا ذکر برائی کے

354 354 25 June 2 354

ساتھ کیا ہی تو نے انہیں تکلیف پہنچائی۔''

وینی مسائل میں مباحثه کرنا:

علامہ جلال الدین سیوطی خیستیات تاریخ الخلفاء میں بیان کیا ہے کہ حضرت عمر فاروق بڑائیڈ اور حضرت عثمان غنی بڑائیڈ کے ما بین دین مسائل میں یوں بحث ہوتی تھی کہ معلوم ہوتا تھا کہ دونوں میں بھی صلح نہ ہوگی اور پھر جب دونوں حضرات مباحثہ سے علیحدہ ہوتے تو یوں دکھائی دیتا تھا کہ دونوں میں بھی کوئی جھڑا ایا مباحثہ ہوا ہی نہیں ہے۔

حجراسود کو بوسه دینے کا واقعہ:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق بنائیڈ اپنے دور خلافت میں ایک مرتبہ حج بیت اللہ کے تشریف لئے گئے تو حجر اسود کو بوسہ دیتے ہوئے آپ بنائیڈ نے فرمایا۔

''میں کچھے اس وجہ سے بوسہ دیتا ہوں کہ تاجدارِ انبیاء حضور نبی کریم مطابع ان مجھے ہوسہ دیا ہے ورنہ تو صرف ایک پھر ہی ہے جو نہ کسی کونفع پہنچا سکتا ہے اور نہ ہی نقصان ۔''

ایک سارنگی نواز کے لئے باعث نجات بن گئے:

مولانا رومی میشد بیان کرتے ہیں حضرت عمر فاروق بنائیؤ نے ایک سارنگی نواز کو گریدزاری کرتے اور استغراق میں محود کیے کر فرمایا۔ سارنگی نواز کو گریدزاری کرتے اور استغراق میں محود کیے کر فرمایا۔ '' تیرایدرونا تیرے ہوش کی علامت ہے۔''

اس کے بعد حضرت عمر فاروق والنفیز نے اس کو اس حالت سے ہٹایا اور

الانت المشكرة في الموق كرفيد الموق كرفيد الموق ا

استغراق کی جانب لائے۔

مولانا روی بیسید فرماتے بیں گذشتہ واقعات کو یاد کرنا اور آئندہ کی فکر
کرنا درحقیقت الندع وجل ہے ججاب ہے۔ کب تک تو اس طرح گریہ زاری کرے
گا؟ جب تک بانسری میں گرہ ہے ہمراز نہیں بن سکتی۔ جب تک تو خودی کے چکر
کے ساتھ طواف کرے گا تو مرتد رہے گا۔خودی کے ساتھ تو طواف کعب شرک ہے۔
ماضی اور مستقبل کے واقعات پرنہیں ان کے پیدا کرنے والے پرنظر رکھ۔ تیری خبریں
خبر دینے والے سے غیر متعلق ہیں۔ تیری تو بہ بھی ایسی حالت میں گناہ ہے بدتر
ہے۔ فنا کا راستہ تو دوسرا راستہ ہے اس میں ہوشیاری بھی گناہ ہے۔خودی کی حالت
میں تو بہ کرنے سے تو بہ کرو۔ بھی تو نرم آ واز کو قبلہ بناتے ہو اور بھی پھوٹ پھوٹ
کررونے کا بوسہ لیتے ہو۔

مولانا روی عبینی فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رانی اس سارنگی نواز

کے لئے اسرار کا آئینہ بن گئے اور اس کی جان باطن سے بیدار ہوگئے۔ بوڑھاروح

کی طرح گریہ سے آزاد ہوگیا۔ ایک جان چلی گئی اور دوسری جان زندہ ہوگئی۔ اس

کے باطن میں ایک چیرائی بیدار ہوئی جس سے وہ زمین وآسان سے باہر ہوگیا اور

اس کی جبتو کسی کی نہ تھی بلکہ انجذ ابی تھی جس کی کیفیت بیان نہیں ہو عتی۔ وہ جلال

ذوالجلال میں مستغرق ہوگیا اور جو پچھ ذات باری تعالی کے متعلق کہا گیا ہے۔

نقاضائے نیبی کی بناء پر کہا گیا ہے ورنہ اس کی شرح بیان نہیں ہو سکتی۔ سارنگی نواز کا

حال بیباں تک پہنچا تو اس کی جان کل میں ڈوب گئے۔ اس نے گفتگو سے دامن حیاز ااور آدھی بات اس کے منہ میں رہ گئی۔ اس عیش وعشرت کو

حامل کرنے کے لئے لاکھوں جانیں قربان کرد نی چاہیں۔ انسان کے جسم میں جان

المنت المحقق المول كيدل المحال 356

اور روح جاری پانی کی مانند غیب سے پہنچی رہتی ہے اور دنیا ہے'' کی آواز آتی رہتی ہے۔ یہی حال انسان کی روح کا ہے بیغیب سے سنتی ہے کہ جسم کی دنیا سے باہر نکل اور جانئ دنیا میں آباد ہوجا۔

شاہِ روم کا ایکی:

مولانا رومی میسید فرماتے ہیں شاہِ روم کا ایکی امیر المومنین حضرت عمر فاروق بٹائٹئڑ کی خدمت میں مدینہ منورہ پہنچا۔ مدینہ منورہ پہنچنے کے بعد اس نے لوگول ہے دریافت کیا کہ خلیفہ وفت کامکل کس طرف ہے تا کہ میں اپنا گھوڑ ااور پیر سامان جو میں ساتھ لایا ہوں وہاں لے جاؤں؟ لوگوں نے کہا کہ خلیفہ کا کوئی محل نہیں ہے اس کامحل تو اس کی روثن جان ہے۔ اگر چہوہ ہمارے سردار ہیں لیکن وہ فقیروں کی مانند جھونپڑی میں رہتے ہیں۔ تو ان کامحل نہیں دیکھ سکتا کیونکہ تیری آئتھوں پر پردہ پڑا ہوا ہے۔ دل کی آئکھ کو کھول اور پھراس محل کو ڈیکھنے کی آرز وکر _ جس کی جان ہوں سے پاک ہو گی وہی اس محل کو دیکھے سکے گا۔ جب حضور نبی کریم سُطَةَ وَاللَّهُ اور دهو كيس سے پاك ہوئے تو جس جانب رخ كيا وہاں الله عزوجل کی ذات تھی۔ جو دسوسہ کا دوست ہوا وہ اللّٰہ عز وجل کی ذات کو کیسے دیکھ سکتا ہے؟ مولانا رومی مجینات فرماتے ہیں لوگوں کے درمیان اللہ عزوجل اس طرح روثن ہے جیسا کہ ستاروں کے درمیان چاند، اگر تونہیں دیکھا تو بید دنیا تو معدوم نہیں ہے۔اپنے نفس کی انگلی کو آنکھوں سے ہٹا اور پھرتو جو جا ہتا ہے اسے دیکھے۔حضرت توح عَلِيلِنَا فَي مِن وَ جب وعوت حق دى تو انہوں نے اپنے كانوں ميں انگلياں تھوٹس دیں اور اپنے اوپر کیڑے اوڑھ لئے۔حضرت نوح علیائلا نے قرمایا کہتم نے

الانت تيم مُؤَنِّن أروق كرفيه لي

خود د کیھنے اور سننے کے راستے بند کر دیئے ہیں۔ آ دمی بینائی کا نام ہے باقی کھال ہے۔ و بدتو دراصل محبوب کی دید ہے اور اگر دوست کا دیدارنصیب نہ ہوتو پھراندھا ہونا ہی بہتر ہے۔ جو دوست باقی رہنے والانہیں ہے اس کا دور رہنا ہی بہتر ہے۔لوگول ہے ایسی باتیں سن کر شاہِ روم کے ایکی کا اشتیاق مزید بڑھ گیا اور وہ سوچنے لگا کہ کیا کوئی اییا آ دمی بھی ہے جوجسم میں جان کی مانند دنیا سے پوشیدہ ہے۔ مولانا رومی میند فرماتے ہیں ایک بدوی عورت نے اس ایکی کو دیکھے کر کہا امیر المومنین حضرت عمر فاروق طالفنڈ اس تھجور کے درخت کے نیچے ہیں۔تو اس ورخت کے نیچے مخلوقِ خدا سے جدا خدا کے سامیہ کو سامیہ میں سوتا و کیھ سکتا ہے۔ وہ ا پیجی اس جگه پہنچا اور دور کھڑا ہو گیا۔ آپ ٹٹائٹٹٹ کو دیکھے کر اس پرکیکی طاری ہو گئ اور اس پر اللّه عز وجل نے الیمی کیفیت طاری کردی کہ اس نے محبت اور ہیبت جو کہ ایک دوسرے کی ضد ہیں اینے جگر میں جمع دیکھا۔اس ایلجی نے خود سے کہا میں نے بے شار بادشاہوں کے در بار دیکھے ہیں لیکن اس شخص کی ہیبت نے میرے حواس مم کر دیئے ہیں۔ میں بڑے بڑے شکاری جانوروں سے لڑا ہوں، شیر کی طرح جنگوں میں حصہ لیا ہے بہت سے زخم کھائے ہیں اور لگائے ہیں لیکن میرا دل ہمیشہ قوی ر ہا۔ بیخص کس طرح بغیر ہتھیار کے زمین پرسور ہا ہے اور میں اس سے خوف محسوں کررہا ہوں۔ میکسی عجیب بات ہے کہ ریسی مخلوق کی ہیبت نہیں بلکہ خدا کی ہیبت ہے۔ جو تھنص اللّٰہ عز وجل ہے خوف محسوں کرتا ہے اور جس نے تقویٰ اختیار کیا اس

مولانا رومی میند فرماتے ہیں قدرے انظار کے بعد حضرت سید اعمر فارق میں فاروق میلانی بعد حضرت سید اعمر فاروق میلانی بیدار ہوئے۔ اس ایکی نے آپ میلانی کوسلام کیا۔ آپ میلانی نے آپ میلانی نے آپ میلانی نے آپ میلانی کوسلام کیا۔ آپ میلانی نے آپ میلانی نے

ہے جن اور انسان دونوں ڈرتے ہیں۔

اسے بلایا اورمطمئن کیا۔اس ایکی کے دل سے خوف جاتا رہا اور اس گھبرائے ہوئے ا پلی کو آپ طالبین نے خوش کر دیا۔ آپ طالبین سے گفتگو کے بعد اس اپلی کے دل میں روشی بیدا ہوئی۔ اس نے اصل کو پالیا اور فروغ کو چھوڑ دیا۔ اس نے حکمت کی بات پوچھی کہ روح جیسی مصفی چیز کوجسموں میں قید کرنے میں اللہ عزوجل کی کیا حکمت ہے؟ آپ مٹائٹنڈ نے فرمایا انسان معنی اور آواز جیسی چیزوں کولفظوں میں قید كرديتا ہے تو اس ميں اس كى كوئى نه كوئى حكمت يوشيدہ ہوتى ہے تو جو ذات خود نفع کی خالق ہے اس کے افعال میں بھی کوئی نہ کوئی حکمت ضرور پوشیدہ ہے۔ روح کو قید کرنے کے بے شار فائدے ہیں اور ان میں سے ہرایک ہمارے لاکھ فائدوں ہے بہتر ہے۔اگرانسان کا کلام فائدے ہے خالی نہیں جو کہ جز ہے تو کل کے کن کہنے كاكلام فائدے سے خالی كيے ہوسكتا ہے؟ بولنے سے اگر فائدہ نبيں ہے تو بولنا جھوڑ دے اور اگر ہو سکے تو اعتراض چھوڑ دے اور شکر گزار بندہ بن جا۔ غیرمفید سوال کرنا درست نہیں ہوتا اور مفید سوال بھی اعتراض کی صورت میں نہیں بلکہ شکر کے طریقے پر ہونا جاہئے کیونکہ انسانوں کاشکرگزار ہی اللّٰہ عزوجل کا سیجے معنوں میں شکرگزار ہوتا ہے اور درحقیقت انسانوں کاشکرادا کرنا اللّٰہ عزوجل کاشکرادا کرنا ہے۔ مولانا رومی میند فرماتے ہیں شاہِ روم کے ایکی نے جب حضرت عمر قاروق طلطنون کی گفتگوسی تو وہ اللہ عز وجل کی قدرت پر فریفتہ ہو گیا اور اس کو اپنی سفارت یاد نه ربی ـ قطره فنا ہو کر سیلا ب بن گیا اور روٹی کا تعلق جب حضرت آ دم علیاتلا سے ہوا تو مردہ روٹی بھی زندہ اور باخر ہوگئی۔ وہ محض مبارک باد کے قابل ہے جوخودی سے نکل گیا اور کسی زندہ کے وجود سے وابستہ ہو گیا۔ صد افسوس ہے ال مخض پر جو زنده موکر کسی مرده کا ہم نشین موا۔ جب تم قرآن مجید کی پناہ میں

المنت عملين وق كيسل المعلق الم آ گئے تو گویا تمہارا ساتھ انبیاء کرام پہلے کی ارواح سے ہوگیا۔قرآن مجید میں انبیاء كرام بيلي كے حالات میں جو اللہ عزوجل كے پاك دريا كى محصلياں میں۔اگر تو صرف اسے پڑھتا ہے اور اس پر عمل نہیں کرتا تو اسے انبیاء کرام پیلم اور اولیاء اللہ بيدي كا ديدار سمجھ۔اگر تو اس برعمل كرے گا تو جب تو ان كے واقعات كا مطالعه كرے گا تو تیری جان کا پرندہ پنجرے میں تنگ آ جائے گا۔ وہ پرندہ نادان ہے کہ جو قید ہواور چھنکارانہ پایسکے۔جورومیں قید سے آزاد ہو گئیں وہ انبیاء کرام پیپلم اور کامل مرشد کی ارواح ہیں۔ باہر کی دنیا ہے ان کی آوازیں سنائی دے رہی ہیں کہ تیرے چھٹکارے کا ایک راستہ یمی ہے۔ اس قید سے رہائی جا ہتا ہے تو اپنے آپ کورنجور اور زار ونزار بنا لے تا کہ شہرت سے نکل آئے۔مخلوق کی شہرت ایک مضبوط بیزی کی مانند ہے اور راستے کو طے کرنے کے لئے بیلوہے کی سمی مضبوط بیڑی سے ہر تحزیم نہیں ہے۔

تم نے ہم سب کے لئے دعا کیوں نہ کی؟:

حضرت عبداللہ بن عباس والتہ اسے مروی ہے فرماتے ہیں کہ میں اور حضرت ابی بن کعب والتہ ایک قافلہ کے ساتھ جس میں حضرت عمر فاروق والتہ والتہ اللہ علی شامل منصے مکہ مکرمہ کی جانب جارہے منصے۔ میں اور حضرت ابی بن کعب والته والتہ تقافلہ کے ساتھ میں اور حضرت ابی بن کعب والته والتہ تقافلہ کے شامل منصے مکہ مکرمہ کی جانب جارہ ہو سے اور حضرت ابی قافلہ سے بیجھے رہ گئے اور پھر ایک بادل آیا اور بارش شروع ہوگئی۔ حضرت ابی بن کعب والتہ فیداوندی میں یوں دعا مائلی۔

''اے اللہ! ہمیں اس بارش کی تکلیف سے نجات عطا فرما اور اس کا رخ بدل دے۔''

حضرت عبدالله بن عباس مَلِي فَلِي أَلَيْ فَهُمَا قرماتِ بِي حضرت الى بن كعب بناللَّهُمْ كى

دعا قبول ہو گئی اور بادلوں کا رخ بدل گیا اور ہم دنوں پر بارش کی ایک بوند بھی نہ گری۔ پھر جب ہم قافلے سے دوبارہ ملے تو ہم نے دیکھا ان کے جانور، کجاوے اورسامان وغیرہ سب کھے بارش سے بھیگ چکا تھا۔

حضرت عبدالله بن عباس بتافظها فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق جالنیجۂ نے ہم سے دریافت کیا کہ کیاتم لوگوں پر ہارش نہیں ہوئی؟ میں نے کہا کہ حضرت الى بن كعب طِلْنَفِهُ نے دعا ما تكى تھى كەالىي! بميں اس بارش كى تكليف سے نجات دے تو اللہ عزوجل نے ہمیں بارش سے محفوظ رکھا اور بارش ہم پر بالکل نہ بری۔ آپ طالفیز نے فرمایاتم نے ہم سب کے لئے دعا کیوں نہ کی؟ میرے گورنروں میں کوئی منافق ہے؟:

حضور نبي كريم منط يَعَيَيْهُ حضرت خذيفه بن يمان طالعين كومنافقين كے متعلق بتایا کرتے تھے۔حضرت عمر فاروق طالفۂ نے ایک مرتبہ آپ طالفۂ سے یو جھا کیا میرے گورنروں میں کوئی منافق ہے؟ آپ طالفۂ نے فرمایا ہاں! ایک منافق ہے۔ حضرت عمر فاروق طِاللَّهُ فِي إِلَى عَلَيْ مِنْ عَلَقَ دِرِيا فت كيا تو آپ طِاللِّهُ في اس كا نام بتانے سے انکار کر دیا۔ پھرحضرت عمر فاروق طالفنے کو اس کے متعلق کسی نہ کسی طرح علم ہو گیا اور حضرت عمر فاروٰق بٹائٹیڈ نے اے معزول کر دیا۔

میرابھی یہی کہنا ہے:

حضرت عبدالله بن عباس طلخها سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق رنی نفین مجھے بھی اصحاب بدر رہی گئی کے ہمراہ اپنے پاس بٹھاتے تھے اور ان میں سے بعض حضرات نے ایک مرتبہ حضرت عمر فاروق بٹائنڈ سے کہا آپ بٹائنڈ ہمارے ساتھ اس لڑکے کو کیوں بٹھاتے ہیں جبکہ اس لڑکے کی عمر کے ہمارے اپنے

المنت المقال المالية ا

جیٹے ہیں؟ حضرت عمر فاروق م^{یالنی}ڈ نے فرمایا بلاشبہ اس کا تعلق ان سے ہے جنہیں تم جانتے ہو۔ پھر ایک دن حضرت عمر فاروق طالغنٹر نے اصحاب بدر طبی منٹم کو بلایا اور ساتھ ہی مجھے بھی بلالیا۔ میں نے سوچا شاید حضرت عمر فاروق نٹائنٹۂ انہیں میرے مرتبہ ہے آگاہ کرنا جا ہے ہیں۔حضرت عمر فاروق طائعیٔ نے سور ہُ نصر کی تلاوت کی اور فرمایاتم اس کی تفسیر میں کیا کہتے ہو؟ کسی نے کہا اس سورت میں اللہ عزوجل کا بیغام سے کہ جب میری مدد اور نصرت تمہارے لئے آجائے تو تم کثرت سے تو بہ اُور استغفار کرو۔ کسی نے کہا ہم اس کے متعلق نہیں جانتے۔ پھر حضرت عمر فاروق طلینی میری جانب متوجه ہوئے اور فرمایا کیا تمہاری رائے بھی وہی ہے جوان حاضرین کی رائے ہے؟ میں نے کہا اس سورت میں اللّٰہءز وجل نے حضور نبی کریم شَطْعُ اللَّهِ كُوان كے وصال كى خبر دى ہے اور اس سورت ميں فتح ہے مراد مكه مكرمه كى فتح ہے اور یہی حضور نبی کریم منطق بیٹے کے وصال کی بڑی علامت ہے۔ حضرت عمر فاروق بٹائٹیڈ نے میرا جواب سنا تو فرمایا میرا بھی یہی کہنا ہے جوتم نے کہا ہے۔

O.....O.....O



ابل ببت اطهار ضَى النَّهُمُ سيحسن سلوك

سی بھی مسلمان کے لئے اس کی زندگی کا سب سے بڑا سرمایہ حب
رسول اللہ علیہ ہے۔ برمسلمان کا فرضِ اوّلین ہے کہ وہ اپنے دل میں حضور نبی
کریم علیہ ہے گئی محبت کو اجا گر کرے اور شیح معنول میں اسوہ حسنہ پرعمل پیرا ہو۔
حضرت عمر فاروق بڑائی کو بھی حضور نبی کریم مطابق سے بے پناہ محبت تھی۔ آپ
رٹائی فرماتے ہیں ایک مرتبہ میں نے حضور نبی کریم مطابق سے عرض کیا۔
"یارسول اللہ مطابق ای آپ مطابق اپنی جان کے علاوہ سب
دیادہ عزیز ہیں۔"

حضور نبی کریم مشریقتان نے فرمایا۔

''عمر (طلائمۂ)! اس ذات کی قشم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے جب تک تم مجھے اپنی جان سے بھی زیادہ عزیز' نہیں رکھو گے بلند مرتبہ نہیں پاسکو گے۔''

حضرت عمر فاروق بنالغنا فرمات بین میں نے عرض کیا۔ "یارسول الله مضائلی الله کی قسم! آپ مضائلی مجھے اپن جان سے بھی زیادہ عزیز ہیں۔"

حضرت عمر فاروق طالفيز كى حب رسول الله يضفي كا اندازه اس يحيى

الاستراع الموق كي فيصل المحال المحال

ہوتا ہے کہ آپ رہائیۂ ہر وقت حضور نبی کریم منطق کیا کہ حفاظت پر کمر بستہ رہتے تھے اور اگر کوئی شخص حضور نبی کریم منطق کی شان میں گتاخی کا مرتکب ہوتا تو آپ رہائیڈ کی تلوار میان سے نکل آتی تھی۔

حضرت عمر فاروق طلانئے نے غزوہ بدر میں اپنے ماموں عاص بن ہشام کو اپنی تلوار سے اس وجہ سے قل کر دیا تھا کہ وہ حضور نبی کریم مشر کی اور دین اسلام کا مخالف تھا۔

حضرت عمر فاروق رئالنفظ نے ایک مرتبہ جب حضور نبی کریم ﷺ پی از دارج مطہرات بڑھی کے ناراض ہوئے تو حضور نبی کریم ﷺ کی بارگاہ میں حاضری کی اجازت طلب کی۔ آپ رٹائنٹ کو حاضری کی اجازت نہ ملی۔ آپ رٹائنٹ کو حاضری کی اجازت نہ ملی۔ آپ رٹائنٹ نے عرض کیا۔

حضرت عمر فاروق والنفذ ایک مرتبه کاشانه نبوت میں تشریف لے گئے تو حضور نبی کریم مطابق کا کی اوری جاریا کی پر لیٹے ہوئے دیکھا۔حضور نبی کریم مطابق کی مرمبارک کے بنچ چمڑے کا تکمیہ تھا جس میں تھجور کی جھال بھری ہوئی تھی۔ آپ دالنفذ نے جب حضور نبی کریم مطابق کی یہ حالت دیکھی تو رو پڑے۔ حضور نبی کریم مطابق کی یہ حالت دیکھی تو رو پڑے۔ حضور نبی کریم مطابق کی تو عرض کیا۔

" یارسول الله منظر الله منظر الله منظر و کسری دنیا کی نعمتوں ہے لطف اندوز ہوئے ہیں اور جن کے لئے بیا کا کتاب بنائی گئی ہے ان کا کیا

المنت عمر المنتاب المن

حال ہے؟''

حضور نبی کریم مضرین نے فر مایا۔

''اے عمر (طلائنے')! کیا تمہیں یہ پیندنہیں کہ ان کے لئے دنیا ہواور ہمارے لئے آخر ہے؟''

حضرت عمر فاروق طِلْمُغَةُ البِينِ دورِخلافت میں جج بیت اللہ کے لئے گئے تو حجراسودکو بوسہ دیتے ہوئے فرمایا۔

''میں تجھے اس وجہ ہے بوسہ دیتا ہوں کہ میرے آقاحضور نبی کریم سے بھرے آقاحضور نبی کریم سے بھر نے تجھے بوسہ دیا ہے وگرنہ تو صرف ایک پھر ہے جو نہ ہی نفع بہنچا سکتا ہے اور نہ ہی نقصان۔''

حفرت عمر فاروق و النائز کی حضور نبی کریم مضایقی است محبت کا اندازه اس بات سے بھی لگایا جاسکتا ہے قیصر و کسری کی حکومتیں مٹانے کے بعد، ایرانیوں اور رومیوں کے غرور کو تو ڑنے کے بعد جب آپ والنی کے دورِ خلافت میں سلطنت اسلامیہ انتہائی وسیع ہوگئ تو آپ والنی نے اپنے رہے سہنے کا انداز حضور نبی کریم سلطنت میں اسلامیہ انتہائی وسیع ہوگئ تو آپ والنی نے اپنے رہے سہنے کا انداز حضور نبی کریم سلطنی کی اتباع کرتے ہوئے والیا ہی رکھا جیسا حضور نبی کریم سلطنی کا تھا۔ آپ والنی نفی ایک کریم سلطنی نفی کریم سلطنی کی ایک تھا۔ آپ والنی نفی کریم سلطنی کی ایک تھا۔ آپ والنی نفی کریم سلطنی کی ایک تھا۔ آپ والنی نفی کریم سلطنی کی ایک تھا۔ آپ

''الله کی شم! میں اپنے آقا حضور نبی کریم منطق اللہ کے نقش قدم پر چلول گااور آخرت کی فراخی اورخوشحالی اختیار کروں گا۔'' حضور نبی کریم منطق اللہ خوش کے وصال کے بعد حضرت بلال حبشی بڑائی نئے نے افران دینا ترک کر دی۔ جب بیت المقدس فتح ہوا تو حضرت عمر فاروق بڑائی نئے نے حضرت بلال حبثی بڑائی ہے درخواست کی کہ وہ مسجد اقصلی میں اذان دیں۔حضرت حضرت بلال حبثی بڑائی نئے سے درخواست کی کہ وہ مسجد اقصلی میں اذان دیں۔حضرت

الانت تركيس وق كرفيس المحال ال

بلال صبتی بنائیڈ نے اذان دی تو آپ رہائیڈ اس وفت حضور نبی کریم منظر ہیں کو یاد کر کے اس قدرروئے کہ بھی بندھ گئی۔

حضور نبی کریم مضری الله الله محبت کے علاوہ حضرت عمر فاروق براہ بھی کو اہل ہیت بنی گئی اللہ خلافت میں کو اہل ہیت بنی گئی اسے بھی ہے پناہ محبت تھی۔ آپ براہ بھی اسے بھی ہے پناہ محبت تھی۔ آپ براہ بھی اسے نام خلافت میں جب قبط سالی کا موقع آیا تو حضور نبی کریم ہے بھی تھے بھی اسے دعا ما تھی تھی۔ کے وسیلہ سے دعا ما تھی تھی۔

حضرت عمر فاروق طلانن کے زمانہ میں جب فتوحات کا دروازہ کھلاتو آپ ٹٹائٹڈ نے اہل بدر کے لئے پانچ پانچ ہزار درہم کے وظائف مقرر کئے۔ پھرجنہوں نے اہل بدر سے پہلے اسلام لانے میں سبقت کی تھی ان کے لئے جار جار ہزار درہم کے وظا نف مقرر کئے۔حضور نبی کریم منتظ کی از واج مطہرات بڑائیں کے وظا نف بارہ بارہ ہزار مقرر کئے۔حضرت سیدنا عباس شائن کوحضور نبی کریم ﷺ کے چیا ہونے کی وجہ سے ان کا وظیفہ بھی بارہ ہزار مقرر کیا۔ حضرت سیدنا امام حسن اور حضرت سيدنا امام حسين مِنَ أَمَيْنَ كَا وظيفه بإنج بإنج بإرار درجم مقرر كيا-حضرت اسامه بن زید دلانهٔ نا جو که حضور نبی کریم مطاعیًا کے منہ بو لے بیٹے تنصان کا وظیفہ جار ہزار ورہم مقرر کیا۔ آپ بڑالفن نے اپنے بیٹے حضرت عبداللہ بن عمر بڑالفن کا وظیفہ تین ہزار درہم مقرر کیا۔حضرت عبداللہ بن عمر ذالخہٰنا نے عرض کیا حضرت اسامہ بن زید ر النفخها كا وظیفہ جار ہزار درہم ہے اور میرا وظیفہ تین ہزار درہم ہے؟ آپ طالعہ نے فرمایاان کا باپ تیرے باپ سے زیادہ حضور نبی کریم منتے ہے کومحبوب تھا۔

حضرت عبداللہ بن مسعود والنفی سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم منطق کی آنے حضرت عمر فاروق والنفی کو صدقات کی وصولی کے لئے بھیجا۔ آپ والنفیٰ

المنت منت اوق كيديل

صدقات کی وصولی کے لئے روانہ ہوئے تو پہلے محض حضرت سیّد نا عباس بٹائٹیڈ ملے۔ آب طِيْ مَنْ أَنْ أَنْ اللَّهِ اللَّهِ الْعُصْلِ (طَيَّعَةُ)! اللَّيْ زَكُوةَ لا يَحْدَ حَضرت سيّدنا عباس طِلْنَعْدُ نے کہا اگر میرا اورتمہارا معاملہ ہوتا تو میں تمہیں بتا دیتا۔ آپ طِلْغُوٰ نے کہا اللہ کی قشم! اگر اللہ اور اس کے رسول م<u>نت کی</u> کے مزد کیک آپ (بنائین) کا مرتبہ بلند نه ہوتا تو میں اس پرممل کرتا جس کا تھم مجھے دیا گیا ہے۔ پھرآ پ مٹائنڈ ،مضرت على المرتضى مِنْ النَفِظُ كے ياس كے اور سارا ماجرا انہيں بيان كيا۔حضرت على المرتضى مِنْ النُّفِظُ نے آپ بنائی کا ہاتھ بکڑا اور حضور نبی کریم مضائی کے نیاس لے گئے۔ آپ بنائیڈ نے عرض کیا یارسول اللہ مشاریقا آپ مشاریقان نے مجھے صدقات کی وصولی کے لئے بھیجا پس مجھے پہلے تحص جو ملے وہ آپ مٹے پیٹا کے چیا حضرت سیدنا عباس ٹائٹنز تھے انہوں نے مجھ سے ایس بات کہی۔حضور نبی کریم مضار انے فرمایا۔ "اے عمر (طِلْنَفِيْزِ)! تم جانتے نہيں كه آ دمى كا پچيا اور اس كا باپ ایک ہی درخت کی دو شاخیں ہیں اب تم ان سے پچھ نہ کہنا

انہوں نے اپنی دوسال کی زکو ۃ جمع کروار تھی ہے۔''

حضرت حسن بصری طالفیز ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق طلننی بیت المال میں لوگوں کو مال تقتیم کررہے تھے کہ بچھ مال نچے گیا۔حضرت سید تا عباس طِلْغَیْز نے آپ طِلْغَیْز ہے فرمایا اگر موسیٰ عَلیائِلا کے چیا زندہ ہوتے تو کیا تم لوگ ان کی عزت نہ کرتے؟ آپ طافتہ اور دیگر حاضرین نے بیک زبان ہو کر کہا ہاں ہم ان کی عزت کرتے۔حضرت سیّدنا عباس بنائفیز نے فرمایا تو کیا میں تمہارے نزو كيك اس بيج موسة مال كا زياده حق دارنبيس كيونكه ميس حضور نبي كريم منظر كين كا

الانت تركيس وق كيسل 367

نہیں۔ آپ جائٹی نے وہ بچا ہوا مال حضرت سیدنا عباس جائٹی کے حوالے کر دیا۔
حضرت سیدنا عبیداللہ بن عباس جائٹی فرماتے ہیں کہ میرے والدے گھر
ایک پرنالہ حضرت عمر فاروق جائٹی کے راستے میں تھا۔ ایک مرتبہ آپ جائٹی جعد
کے دن نے کپڑے پہنے وہاں ہے گزرے تو اس پرنالے پر والد بزرگوار نے دو
مرغیاں ذیح کیں اور ان کے خون پر پانی بہایا اور وہ خون ملا پانی آپ جائٹی کے
کپڑوں پر گرا۔ آپ جائٹی نے اس پرنالے کو وہاں سے اکھاڑنے کا حکم ویا اور خود
لباس تبدیل کر کے دوبارہ آئے اور لوگوں کی نماز میں امامت کی۔ نماز کے بعد والد
بزرگوار نے آپ جائٹی سے فرمایا ہے پرنالہ یہیں رہے گا اور اسے حضور نبی کریم ہے ہیں گئی ہوں کر میں اس وقت تک آپ جائٹی سے کہوں گا
جب تک آپ جائٹی میری بیٹھ پرسوار ہوکر وہ پرنالہ نہ لگا کیں گے اور پھر والد بزرگوار
خوار نے آپ جائٹی میری بیٹھ پرسوار ہوکر وہ پرنالہ نہ لگا کیں گے اور پھر والد بزرگوار

حضرت بعقوب بن یزید رہائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق رہائیڈ جب کسی مشکل میں در پیش ہوتے تو حضرت عبداللہ بن عباس رہائیڈما سے فرماتے اے غوطہ خور! غوطہ کھاؤ۔

حضرت سعد بن ابی وقاص والنفر فرماتے ہیں میں نے کسی شخص کو حضرت عبداللہ بن عباس والنفر استے زیادہ حاضر د ماغ اور دانانہیں دیکھا حضرت عمر فاروق خالفی مشکل اوقات میں انہی سے مشورہ لیا کرتے تھے۔

المنت منتون روق كيسك

خِلْنَهُمُّةُ البِينِ گھر میں داخل ہوجاتے <u>تھے۔</u>

حضرت عروہ بنائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک شخص نے حضرت عمر فاروق بنائیڈ کے سامنے حضرت علی المرتضلی بنائیڈ کے بارے میں پچھ کہا۔ آپ بنائیڈ اس کا ہاتھ پکڑ کرروضہ رسول اللہ منے بیٹیڈ پر لے گئے اور فرمایا۔

''کیا تو اس قبر والے کو جانتا ہے؟ پس تو علی (خانینۂ) کا ذکر کر کیا تھ کے بجز بھلائی کے جبھی نہ کر اگر تو نے علی (خانینئۂ) کا ذکر برائی کے ساتھ کیا تو نے انہیں تکلیف پہنچائی۔''

حضرت سیّدنا امام حسین بناتین فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق بناتین منبر پر تشریف فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق بناتین منبر پر تشریف فرما ہے۔ تشریف فرما ہے میں ان کے پاس منبر پر گیا اور کہا میرے باپ کے منبرے اتر ہے۔ آپ بناتین نے فرمایا کہ بیٹے ! تم نے سیح کہا یہ منبرتمہارے باپ کا ہے۔

حضرت عمر فاروق وٹائٹ ایک مرتبہ مال تقسیم کرنے گے اور آپ وٹائٹ نے نے مال کی تقسیم کا آغاز حضرت سیّدنا امام حسن ورکٹنٹ سے کیا تو آپ وٹائٹ کے صاحبزاد ہے حضرت عبداللہ وٹائٹ نے کہا پہلے مجھے مال عطا کریں میں اس کا زیادہ حق رکھتا ہوں اور میں امیر المونین کا بیٹا ہوں۔ آپ وٹائٹ نے بیٹے میں اس کا زیادہ حق رکھتا ہوں اور میں امیر المونین کا بیٹا ہوں۔ آپ وٹائٹ نے بیٹے کی بات سی تو فرمایا تو پہلے ان کے باپ جیسا باپ ہے کر آؤ اور ان کے جد امجد جیسا اپنا جدامجد ہے کرآؤ اور ان کے جد امجد جیسا اپنا جدامجد ہے کر آؤ اور پھر مجھ سے مال مائگو۔

راوی کہتے ہیں حضرت سیّدنا امام حسن اور حضرت سیّدنا امام حسین بی اُنظم میں اور حضرت سیّدنا امام حسین بی اُنظم نے گھر لوٹ کر تمام واقعہ حضرت علی المرتضی بنائیز کے گوش گزار کیا۔ حضرت علی المرتضی بنائیز نے قرمایا تم جاو اور امیر المونین کو یہ خوشخری سناو بیس نے حضور نبی کریم بیضائی بنائی سنا ہے اور حضور نبی کریم بیضائی بی کریم بیضائی بی خرب جرائیل علیانیا ہے

الانت المستقاف أوق كي فيعل

دی تھی کہ عمر جنتیوں کے سورج ہیں۔

راوی کہتے ہیں حسنین کریمین ٹی آئٹیم نے حضرت عمر فاروق ٹیائٹیئے کو جب حضرت علی الرتضلی ٹیائٹیئے کو جب حضرت علی الرتضلی ٹیائٹیئے کا فرمان سنایا تو آپ ٹیائٹیئے نے کہاتم اپنے والد بزرگوار ۔ سے کہو کہ وہ بہتح مرککھ دیں۔

ایک روایت کے مطابق حفرت عمر فاروق طِلْتَنَهُ نے جب حسنین کریمین برنائیم سے یہ بات نی تو بچھ صحابہ کرام جو النظم کے ہمراہ حضرت علی المرتضی برنائیم کے ہمراہ حضرت علی المرتضی برنائیم کے ہمراہ حضور نبی کریم سے بیٹے سے ایسا گھر بہنچ اور فرمایا اے علی (بڑائیم فرنائیم نے حضور نبی کریم سے بیٹے سے ایسا ہے؟ حضرت علی المرتضی بڑائیم نے کہا ہاں! ہم نے حضور نبی کریم سے بیٹے ہے ایسا سے کہ عمر جنتیوں کے سورج ہیں۔حضرت عمر فاروق بڑائیم نے یہ کریل کھ دی۔

یہ کرید دے دیں چنانچہ حضرت علی المرتضی بڑائیم نے یہ کریل کھ دی۔

من یہ کرید ہے کہ کہ خضور نبی کریم سے بھر بڑائیم بیٹے ایک عمر جنتیوں کے خطاب کے لئے کہ حضور نبی کریم سے بھر بڑائیم کے اللہ علیائیم کے اللہ کہ حضور نبی کریم سے بھر بیٹیا کے عمر جنتیوں کے سے اور انہوں نے اللہ عز وجل کا پینا م پہنچا یا کہ عمر جنتیوں کے سورج ہیں۔''

المنت عمر النفواروق كريسل

ے نکاح کا پیغام بھیجا۔ حضرت علی المرتضی رفیائیڈ نے فرمایا میں نے فیصلہ کیا تھا کہ میں اپنی دونوں بیٹیوں کی شادی حضرت جعفر بیلیٹڈ کے بیٹوں سے کروں گا۔ آپ بیلیٹڈ نے فرمایا اگرتم میری شادی ان سے کرو گے تو اللہ عز وجل کی تتم اکوئی انسان ایسا نہ ہوگا جو ان کا اگرام مجھ سے بڑھ کر کرنے والا ہوگا۔ حضرت علی المرتضی بیلیٹیڈ نے آپ بیلیٹڈ کی بات من کر اپنی صاحبر ادی حضرت سیدہ ام کیشوم بیلیٹیڈ کا نکاح آپ بیلیٹڈ کو اس شادی کی مبار کباد دی آپ بیلیٹڈ کو اس شادی کی مبار کباد دی اور اس شادی کی وجہ دریافت کی۔ آپ بیلیٹڈ نے فرمایا اگر چہ میری بیٹی کی شادی اور اس شادی کی وجہ دریافت کی۔ آپ بیلیٹڈ نے فرمایا اگر چہ میری بیٹی کی شادی حضور نبی کریم بیٹیٹیڈ سے استوار ہوا گر حضور نبی کریم بیٹیٹیڈ سے استوار ہوا گر میں نے چاہا میں حضور نبی کریم بیٹیٹیڈ کی نوائی سے شادی کر کے خاندان رسالت میں نے چاہا میں حضور نبی کریم بیٹیٹیڈ کی نوائی سے شادی کر کے خاندان رسالت میں نہ بیٹیٹ کی کوائی۔

O___O



كشف وكرامات كابيان

حضرت عمر فاروق بنائنی صاحب کشف وکرامت منصے اور آپ بنائنی سے سے شخصا ور آپ بنائنی سے سے شار کرامات نظم ور پذیر ہوئیں۔ ذیل میں آپ بنائن کی جا رہی ہیں تا کہ قار کین کے لئے ذوق کا باعث بنیں۔

میں تیری بکار پر حاضر ہوں:

حضرت عمر فاروق و التخذي كے دورِ خلافت ميں روى افواج كے خلاف الوائى كے لئے لئكر بھيجا لئكر كى روائى كے بھے دنوں كے بعد آپ و التخذ منبر پرتشريف فرما على كہا تھے كہ اچا تك آپ و التخذ نے با آواز بلند كہنا شروع كر ديا: اے خض ميں تيرى پكار برحاضر ہوں ۔ لوگ آپ و التخذ كى اس كيفيت پر جيران و پريشان تنے انہيں وہ خض دكھائى نہيں دے رہا تھا كہ جس كى فرياد كے پكار ميں آپ و التخذ جواب دے رہ تھے۔ بچھ دنوں كے بعد جب لئكر واپس آيا تو لئكر كہ سپہ سالار نے اپنی فتو حات كے واقعات آپ و التخذ كو سنانے شروع كر ديئے۔ آپ و التخذ نے اس خص سے دريافت كيا اس سپائى كاكيا حال ہے جو جھے پكار رہا تھا۔ سپہ سالار نے بتايا كہ اس نے اپنی فوج كو دريا كے پارا تارنا چاہا۔ ہيں نے دريا كی گہرائی د كھنے كے لئے اس نے اپنی فوج كو دريا ہے پارا تارنا چاہا۔ ہيں نے دريا كی گہرائی د كھنے كے لئے اس سپائی كو دريا ميں اتر وايا چونكہ موسم بہت سروتھا اورز وردار ہوا تيں چل رہی تھيں اس لئے اس كو سردى لگ گئی اور وہ آپ و التخذ كو با آواز بلند پكار نے لگا۔ پھر اس كی

الاصنات عملات المال كالمعلال المال ا

روح قفس عصری سے پرواز کرگئی۔ آپ طالفؤ نے سپہ سالار کو عصیلے لہجے میں فر مایا متمہیں اسے ایسا حکم نہیں دینا چاہئے تھا اب تمہاری وجہ سے وہ شہید ہوا ہے اس کے وارثوں کو خون بہاتم ادا کرو گے اور خبر دار آئندہ بھی الیی خلطی نہ کرنا۔ لوگ اس سالار کی زبان سے اس کے ایک سپاہی نے آپ طالفؤ کو پکارا تھا ساری بات بھھ گئے کہ آپ طالفر ہوں۔ بات بھی کہ میں تیری پکار پر حاضر ہوں۔ بہاڑی طرف پیٹے پھیرلو:

حضرت عمر فاروق و النيخ کے دور خلافت میں ایک الشکر نہاوند پر حملہ آور ہوا۔ اس الشکر کے سید سالار حضرت ساریہ و النیخ تھے۔ حضرت ساریہ و النیخ نہاوند میں دشمن فوج سے الزائی میں مصروف تھے کہ اس دوران آپ والنیخ کو حضرت عمر فاروق و النیخ کی آواز سائی دی جو آپ و النیخ سے فر مارے تھے کہ اے ساریہ (والنیخ کی آواز سن کی طرف پیٹھ پھیر لو۔ آپ و النیخ پہلے تو حضرت عمر فاروق و النیخ کی آواز س کر حیران ہوئے دہ تو مدینہ منورہ میں جی لیکن جب انہوں نے اپنی چیٹھ پہاڑ کی جانب پھیری تو وہاں سے دشمن فوج کے ایک لئیکر کو حملہ نے لئے تیار کھڑا دیکھا۔ آپ پھیری تو وہاں سے دشمن فوج کے ایک لئیکر کو حملہ نے لئے تیار کھڑا دیکھا۔ آپ پھیری تو وہاں جانب متوجہ کیا اور یوں دشمن افواج ایک گھسان کے رن کے بعد بسیا ہوگئیں۔

تیرے او پر عدل سے کام نہیں لیا جاتا:

الان ترافق في المعلى المحالي ا

حضرت عمر فاروق رنگانیٔ کا فرمانا تھا زمین ساکن ہوگئی اور زلزلہ ختم ہو گیا۔ میری جا در آگ کو د کھا ؤ :

ایک مرتبہ حضرت عمر فاروق و النفیز کے دورِ خلافت میں ایک بہاڑ کے غار ہے آگ نمودار ہوگئی جس نے ویکھتے ہی ویکھتے آس پاس کی متعدد چیزوں کوجلا کر را کھ کردیا۔ آپ والنفیز کو جب بہتہ چلاتو آپ والنفیز نے حضرت تمیم داری والنفیز کو اپن چائیز کو اپن چائیز کو دکھاؤ۔ حضرت تمیم داری والنفیز نے جاو اور اس آگ کو دکھاؤ۔ حضرت تمیم داری والنفیز نے وہ چا در لے جا کر اس آگ کو دکھائی تو وہ آگ بھیلنا بند ہوگئی اور کیے در کے بعد بجھ گئی۔

گھروالے جل كرمر كئے ہوں كے:

حضرت عمر فاروق رالی فات مدینه منوره کونواح میں ایک نوجوان سے ہوئی۔ آپ رالی فیز نے اس نوجوان سے پوچھا کہ تمہارا نام کیا ہے؟ اس نے نہایت گتا خانہ انداز میں کہا میرا نام جمره (چنگاری) ہے۔ آپ رالی فیز نے پوچھا تمہارے باپ کا نام کیا ہے؟ اس نے کہا میرے باپ کا نام شہاب (شعلہ) ہے۔ آپ رالی فیز نے پوچھا تمہاراتعلق کی قبیلہ سے ہے؟ اس نے کہا میراتعلق حرقہ آپ رالی نے کہا میراتعلق حرقہ (آگ) سے ہے۔ آپ رالی فیز نے پوچھا تم رہتے کہاں ہو؟ اس نے کہا میرا گھر آگ سے جہ آپ رالی فیز نے اس کے بودہ جوابات سننے کے بعد فرمایا تم اپنے گھر والوں کا پنہ کرو وہ یقینا جل کرم گے ہوں گے چنا نچہ جب وہ برکانی اس کے گھر والوں کا پنہ کرو وہ یقینا جل کرم گے ہوں گے چنا نچہ جب وہ برکانی میں ہے۔ آپ راکی گھر کو آگ لگ چکی تھی اور اس کے گھر والے سب بربخت اپنے گھر گیا تو اس کے گھر کو آگ لگ چکی تھی اور اس کے گھر والے سب بربخت اپنے گھر گیا تو اس کے گھر کو آگ لگ چکی تھی اور اس کے گھر والے سب بربخت اپنے گھر گیا تو اس کے گھر کو آگ لگ چکی تھی۔ جب کرم کے تھے۔

المنت عمل وق كيدي الموق كي المعلق الم

اہل قبر ہے گفتگو:

ایک مرتبہ حضرت عمر فاروق بڑائٹنڈ کا گزر ایک صالح نوجوان کی قبر سے ہوا۔ آپ بڑائٹنڈ نے قبر کونخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

''اے فلال! اللہ عزوجل نے جو وعدہ کیا تھا وہ پورا ہوا؟ کیونکہ
اللہ عزوجل کا فرمان ہے جو محض اپنے رب کے حضور کھڑے ۔

ہونے سے ڈرگیا اس کے لئے دوجنتیں ہیں۔'
اس نوجوان نے قبر میں سے جواب دیا۔

دیسے میں میں سے جواب دیا۔

''اے عمر (طلقۂ)! بے شک اللہ عزوجل نے اپنے وعدے کے مطابق مجھے دونوں جنتیں عطافر مادیں۔''

فَنْلَ كَا اراده كرنے والامسلمان ہوگيا:



چور کے ہاتھ کا شنے کا تھم:

حضرت عمر فاروق را النفوز کی خدمت میں ایک شخص کو چین کیا گیا جو چور شا۔ آپ را النفوز نے تحقیقات کے بعد اس شخص کے ہاتھ کا شخص جاری کر دیا۔
اس شخص نے عرض کیا میں نے پہلی مرتبہ چوری کی ہے آپ رفائفوز مجھے معاف کر دیں آئندہ میں چوری نہیں کروں گا۔ آپ رفائفوز نے فرمایا کہتم غلط کہتے ہوتم نے اس سے پہلے بھی کئی بار چوری کی ہے۔ اس شخص نے آپ رفائفوز کی بات کا افکار کر دیا۔ آپ رفائفوز نے دوبارہ اپنی بات دہرائی تو اس شخص نے اقرار کرلیا کہ وہ اس سے قبل بھی کئی مرتبہ چوری کر چکا ہے۔ پھراس نے آپ رفائفوز سے دریافت کیا کہ میرے سوا ان چوریوں کو کوئی نہیں جانتا آپ رفائفوز کو اس کا علم کیسے ہوا؟ آپ میرے سوا ان چوریوں کو کوئی نہیں جانتا آپ رفائفوز کو اس کا علم کیسے ہوا؟ آپ میرے سوا ان چوریوں کو کوئی نہیں جانتا آپ رفائفوز کو اس کا علم کیسے ہوا؟ آپ میرے فرمایا۔

"الله عزوجل اس وقت تك كسى شخص كو ذليل نهيس كرتا جب تك اس كى برائى حديد نه گزر جائے-" دريا نيل كا يانى جارى ہوگيا:

حضرت عمر فاروق وظافن کے دورِ خلافت میں ایک مرتبہ دریائے نیل کا پانی خشک ہوگیا۔ مصر کے گورز حضرت عمر و بن العاص وظافن نے آپ وٹائن کو پیغام بھیجا دریائے نیل کا پانی خشک ہوگیا جبکہ مصر کی زیادہ تر کاشت کا دارو مدار دریا کے نیل کا پانی خشک ہوگیا جبکہ مصر کی زیادہ تر کاشت کا دارو مدار دریا کے نیل کے پانی پر ہے۔ یہاں کے دستور کے مطابق اگر دریا میں زندہ لڑی وفن کی جائے تو دریا جاری ہو جاتا ہے۔ اب آپ وظافنے بھے بتا کیں مجھے کیا کرنا چاہے؟ آپ وٹائنے نے قاصد کے ہاتھا کی رقعہ دے کر بھیجا جس میں تحریر تھا اے دریائے

الاستان عمر المحال المح

نیل! اگر تو خود بخو د چلتا ہے تو ہمیں تیری ضرورت نہیں اور اگر تو اللہ عز وجل کے حکم سے چلتا ہے تو اللہ عز وجل کے حکم سے چھر سے جاری ہو جا۔ آپ بڑائی نے قاصد کو حکم دیا وہ حضرت عمرو بن العاص بڑائی ہے کہ وہ یہ خط دریائے نیل میں دفن کر دیا۔ خط کر یں۔ حضرت عمرو بن العاص بڑائی نے وہ خط دریائے نیل میں وفن کر دیا۔ خط دریائے نیل میں وفن کر دیا۔ خط وفن کر دیا۔ خط دفن کر یا۔ خط دفن کر یا۔ خط دفن کر یا۔ خط دفن کر یا۔ خط دفن کر یا ہے نیل میں موا۔ میں دریائے نیل جمعی خشک نہیں ہوا۔

حصوتی بات کو عان جائے:

حضرت عمر فاروق والنفؤ كسامنے اگركوئى جھوٹ بولنا تو آپ والنفؤ فوراً بہجان جاتے ہے كہ وہ شخص جھوٹ بول رہا ہے۔ ایک مرتبہ آپ والنفؤ نے بچھ لوگوں كو دیکھا كہ وہ جھوٹى ہا تیں كررہے ہیں آپ والنفؤ نے آئبیں ٹوك دیا اور فرمایا جھوٹ نہ بولو۔ جب ان لوگوں نے بچی ہا تیں شروع كیں تو آپ والنفؤ نے انہیں منا شروع كیں تو آپ والنفؤ نے انہیں منا شروع كردیا۔

حضرت امام حسن بھری ڈالٹنے فرماتے ہیں کہ اگر کوئی شخص جھوٹ بولٹا تو حضرت عمر فاروق ڈالٹنے کوعلم ہوجا تا کہ وہ شخص جھوٹ بول رہا ہے۔ آپ ڈالٹنے کے خوف سے کوئی بھی شخص آپ ڈالٹنے کے سامنے جھوٹ بولنے سے کترا تا تھا۔

شان میں گتاخی کرنے والا بندر بن گیا:

حضرت امام مستغفری میسند فرماتے ہیں کہ ہم تین لوگ یمن کی جانب روانہ ہوئے۔ ہمارے ایک ساتھی نے حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق میں گئی شان میں گستاخی کی۔ ہم نے اسے منع کیا مگر وہ باز نہ آیا۔ جب ہم لوگ میں گئی کی شان میں گستاخی کی۔ ہم نے اسے منع کیا مگر وہ باز نہ آیا۔ جب ہم لوگ

الانت عملية في أوق كرفيدل

یمن کے نزدیک پہنچ اور ہم نے نماز فجر کے لئے اسے بیدار کیا تو اس نے کہا کہ اس نے خواب میں حضور نبی کریم ہے ہے۔ کو دیکھا وہ فرما رہے تھے کہ اے فات! اللہ نے تجھے ذلیل وخوار کیا اور منزل پر پہنچنے سے پہلے ہی تیرا چبرہ سنح ہو جائے گا۔ پھراس کے بعداس کی شکل بدل گئی اور بالکل بندروں جیسی ہوگئی۔

شان میں گستاخی کرنے والا کتابن گیا:

امام متغری جینیہ فرماتے ہیں مجھے ایک بزرگ نے بتایا میں نے شام میں ایک ایسے امام کی امامت میں نماز پڑھی جس نے نماز کے بعد حفرت ابو بکر صدیق اور حفرت عمر فاروق جی گئی کو بددعا دی اور مجھے اس کی اس بات سے شدید دبنی کوفت کا سامنا کرنا پڑا۔ پھر پچھ عرصہ بعد میں دوبارہ اس معجد میں گیا تو جب امام کے پیچھے نماز پڑھی تو اس نے نماز پڑھنے کے بعد حفرت ابو بمرصدیق اور حفرت عمر فاروق جی گئی کے حق میں دعا کی۔ میں نے لوگوں سے بو چھا تمہارا پبلا امام کہاں ہے؟ لوگ میرا ہاتھ بگڑ کر مجھے ایک مکان پر لے گئے اور میں نے دیکھا اس مکان میں ایک کتا میٹی ہوا ہے اور اس کی آنکھوں سے آنسو جاری تھے۔ میں اس مکان میں ایک کتا میٹی ہوا ہوں جو حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق جی گئی ہوا میں وہی امام ہوں جو حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق جی گئی شان میں گتا فی کرتا تھا۔

خواب کی تعبیر:

ربید بن امید بن خلف نے حضرت عمر فاروق رٹائٹؤ کی خدمت میں عاشہ ہوکر اپنا خواب بیان کیا کہ میں نے خواب میں ہرا بھرا سیدان و یکھا ،ور میں اس میدان سے نکل کر ایک ایسے میدان میں پہنچ گیا جہاں دور دور تک گھاس کا نام و نشان نہ تھا اور پھر جب میں نیند سے بیدار ہوا تو واقعی ایک بنجر میدان میں کھڑا تھا۔
آپ بڑائٹی نے فرمایا تو ایمان لائے گا اور دائرہ اسلام میں داخل ہوگا پھر تو مرتہ ہو
جائے گا اور تیری موت حالت کفر میں ہوگی۔ ربیعہ بن امیہ بن خلف نے اپنے خواب کی تعبیر سی تو کہنے لگا میں نے ایبا کوئی خواب نہیں دیکھا میں نے تو جھوٹ بولا تھا۔ آپ بڑائٹی نے فرمایا کہ تو نے اگر چہکوئی خواب دیکھا یا نہیں دیکھا مگر وہی ہوگا جو میں نے کہا ہے۔

حضرت عمر فاروق را النام الها الها كدر بيد بن اميد بن خلف في بيلے اسلام قبول كيا اور پھرشراب في في حالانكددين اسلام ميں شراب نوشي حرام جو آپ را النام ميں شراب نوشي حرام جو آپ را النام ميں شراب نوشي حرام جو آپ را النام نوشي نور سے درم جلا گيا اور پھر درے مار نے كے بعد شهر بدر ہونے كے بعد خيبر چلا گيا اور پھر خيبر سے روم چلا گيا اور دوم جانے كے بعد وہ مرتد ہو گيا اور عيسائى مذہب اختيار كرليا۔ پھر دربيدى موت دوم جانے كے بعد وہ مرتد ہو گيا اور عيسائى مذہب اختيار كرليا۔ پھر دربيدى موت حالت كفر ميں ہوئى اور آپ را النام خواب كى جوتعبير بتائى تھى وہ پورى ہوئى۔ مال عراق كو بدوعا دينا:

ابو ہدیہ میں بیان کرتے ہیں کہ جب حضرت عمر فاروق والنی کے منہ پر کہ عراق کے ویہ خرملی کہ عراق کے العاص والنی کے منہ پر بخر مارے اور انہیں ذکیل ورسوا کر کے شہر بدر کردیا ہے تو آپ والنی انہائی عمکین ہوئے اور آپ والنی عنیض وغضب کے عالم میں مجد نبوی تشریف لائے اور نماز پر صنا شروع کردی پھر نماز پر صنے سے آپ والنی کا عصد قدرے کم ہو گیا۔ آپ وظائمتی اسبحی عمکین شے اور پھر آپ والنی نے اور کھی اس عرض کیا۔ والنی میں عرض کیا۔ اس کی النی اللہ تقیف کے لونڈے تھائے میں بارگاہ اللی میں عرض کیا۔ اس کا اللہ اللہ تقیف کے لونڈے جاتے میں بارگاہ اللی میں عرض کیا۔ اس کا اللہ اللہ تقیف کے لونڈے جاتے میں یوسف تقفی کوان

المنت مُنْ فَقُولُ وَلَى كَ فِي لِي اللَّهِ اللَّهُ اللَّ

لوگوں پرمسلط فرما دے جو زمانہ جاہلیت کا تھم چلا کر ان اہل عراق کے نیک و بدکسی کو بھی نہ بخشے۔''

چنانچ حضرت عمر فاروق رظائی دعا قبول ہوگی اور عبدالمالک بن مروان اموی کے دورِ حکومت میں جاج بن بوسف ثقفی عراق کا گورنر بنا اوراس نے عراق کے باشندوں برظلم وسم کا ایسا بہاڑتو ڑا کہ عراق کی زمین بلبلا اٹھی۔ جاج بن بوسف ثقفی اتنا بڑا ظالم تھا کہ اس نے جن لوگوں کوری میں باندھ کراپی تلوار سے قبل کیا۔ان مقولوں کی تعداد ایک لاکھ یا اس سے پچھزا کہ بی ہے اور جولوگ اس کے عکم سے قبل کیا۔ان مقولوں کی تعداد ایک لاکھ یا اس سے پچھزا کہ بی ہو اور جولوگ اس کے عکم سے قبل کیا۔ان مقولوں کی تعداد ایک لاکھ یا اس سے تعداد ایک ہو تا ہو گائی کا تو شار بی نہیں ہو سکا۔ حضرت عمر فاروق رڈائی کے کے ان کی گفتی کا تو شار بی نہیں ہو سکا۔ حضرت عمر فاروق رڈائی کے کے ان کی گفتی کا تو شار بی نہیں ہوسکا۔ حضرت عمر فاروق رڈائی کے کیا تا کی گفتی کا تو شار بی نہیں ہوسکا۔ حضرت عمر فاروق رڈائی کے حسم سے دعا ما تا گی تھی اس وقت جاج بن یوسف ثقفی پیدا بھی نہیں ہوا تھا۔

الله عزوجل اسے غارت کرے:

حضرت عبداللہ بن مسلمہ طالعیٰ فرماتے ہیں ہمارے قبیلے کا ایک وفد حضرت عمر فاروق ولینیٰ کی خدمت میں آیا تواس جماعت میں اشتر نام کا ایک مخص بھی موجود تھا آپ ولینیٰ اس کوسرے باؤں تک غصہ سے دیکھتے رہے بھر مجھ سے بوجھا کیا یہ تہمارے ہی قبیلہ کا ہے؟

حضرت عبدالله بن مسلمه ذلائنی فرماتے ہیں میں نے عرض کیا ہاں! حضرت عمر فاروق دلائنی نے فرمایا۔

> ''اللّه عزوجل اسے غارت کرے اور اس کے شروفساد سے امت کومحفوظ رکھے۔''

حضرت عبداللہ بن مسلمہ وہائٹۂ فرماتے ہیں کہ حضرت عمر فاروق وہائٹۂ کا اشتر کے متعلق فرمان ہیں برس بعد حقیقت بن گیا جب حضرت عثان عنی وہائٹۂ کو

الانتسار عمر المال كرفيها المالي المالي

شهید کیا گیا تو ان باغیوں کا لیڈریبی اشتر نامی شخص تھا۔

<u>بیرحضرت عمر فاروق شاننیز</u> کا یاوک ہے:

اموی خلیفہ ولید بن عبدالملک کے زمانہ میں روضہ رسول اللہ سے بہتے کی دیار گرگی اور ولید بن عبدالملک نے جدید تعمیر کا تھم دیا۔ جب تعمیر کے لئے بنیادیں کھودی گئیں تو ایک جگہ پاؤں دکھائی دیا جے دیکھ کرلوگ پہلے تو گھرا گئے مگر پھر ریہ خیال کیا شاید نیہ حضور نبی کریم ہے بھر یہ خیال کیا شاید نیہ حضور نبی کریم ہے بھر اس پاؤں مبارک ہے۔ حضرت عروہ بن زبیر بھائی جب وہاں پہنچ تو آپ رہائی نئے اس پاؤں کود کھی کر فرمایا۔

''اللہ کی قتم! بیہ حضور نبی کریم ہے بھی تھا کا پاؤں نہیں بلکہ حضرت مراد کی عرفاروق دیل تھا وہ آپ وہائی کا پاؤں ہم مبارک ہے اور آپ دیل تھا۔''

شير كاحفاظت كرنا:

حضرت عمر فاروق ر النائز نے جب مند خلافت پر فائز ہوئے تو آپ ر النائز کی خلافت کا جرجیا اور آپ ر النائز کی شان وشوکت کی دھوم مشرق تا مغرب پھیل گئے۔ جس وقت بادشاہ ہرقل نے آپ ر النائز کا ذکر سنا تو ہزا پر بیثان ہوا اور ایک نفرانی پہلوان کو انعام کا لالج دے کر آپ رالنائز کوشہید کرنے کے لئے آمادہ کیا اور اس سے کہا کہ تو مدینہ جا کر اگر حضرت عمر فاروق ر النائز کوقل کر آئے گا تو بختے اور اس سے کہا کہ تو مدینہ جا کر اگر حضرت عمر فاروق ر النائز کوقل کر آئے گا تو بختے بہت سال مال ودولت دیا جائے گا۔ ہرقل بادشاہ کی جانب سے انعام کے لالج میں وہ نفرانی پہلوان مدینہ منورہ کی طرف روانہ ہوا۔ جب مدینہ منورہ پہنچا تو اسے پیتہ چلا کہ حضرت عمر فاروق رائئی نہوہ اور بیتم بچوں کی زمین اور باغات وغیرہ کو پہنچا کے ہیں۔

الانت عمر المنتوال ال

بینفرانی پہلوان اس باغ میں پہنچا اور حفرت عمر فاروق بڑائیڈ کو دکھے کر ایک گنجان سے ورخت پر چڑھ گیا۔ پچھ دیر کے بعد حضرت عمر فاروق بڑائیڈ بھی اس ورخت کے بنچ تشریف لائے اور زمین پر بیٹھ کر ہاتھ کا تکیہ بنا کر لیٹے اور بغیر بچھونے، بغیر تکیہ سو گئے۔ آپ بڑائیڈ کو سوتا ہوا دیکھ کر وہ نصرانی بہلوان درخت سے بنچے اترا اور آپ بڑائیڈ کے قل کے ارادہ سے تلوار کومیان سے نکالا۔ اس وقت ایک شیر آپ بڑائیڈ کے قدموں کی جانب ظاہر ہوا اور اسے دیکھ کروہ نصرانی پہلوان بہلوان بہلوان کے ہوش ہوگیا۔ وہ شیر آپ بڑائیڈ کے قدموں کی جانب ظاہر ہوا اور اسے دیکھ کروہ نصرانی پہلوان بہلوان کے ہوش ہوگیا۔ وہ شیر آپ بڑائیڈ کے تلوے جائے نگا۔

حفرت عمر فاروق وللنفئ بیدار ہوئے تو اس نصرانی پہلوان کو دکھے کر جیران ہوئے اور پھر ہوش میں لا کر اس سے بوچھا کہ تو کون ہے؟ اس نے گھبراتے ہوئے کہا کہ اللہ عزوجل نے آپ ولائف کا مرتبہ بلند فر مایا ہے اور میں جاہل، آپ ولائف کو کہا کہ اللہ عزوجل نے آپ ولائف کا مرتبہ بلند فر مایا ہے اور میں جاہل، آپ ولائف کو کہا کہ اللہ عن کے ارادے سے بیہاں آگیا۔ پھراس نے بتایا کہ میں نے آپ ولائف و کھا کوسوتے ہوئے و کھے کرفل کرنا جاہا اور جب میں نے تلوار میان سے نکالی تو دیکھا کہ ایک شیر آپ ولائف کی حفاظت فر مار ہاہے۔

حضرت عمر فاروق والنفؤ نے اپنے اردگردنگاہ دوڑائی تو کوئی شیر نظرنہ آیا۔

ندائے غیبی آئی اے عمر والنفؤ اتو ہمارے دین کی حفاظت کرتا ہے ہم تیرے دشمنوں

سے تیری حفاظت کرتے ہیں۔ یہ غیبی آواز س کروہ نصرانی پہلوان اور بھی جیران

ہوا اور آپ والنفؤ کے ہاتھوں کو چو سنے لگا اور آپ والنفؤ سے عرض کی جنگل کے شیر

آپ والنفؤ کا پہرہ دیتے ہیں اور آسان کے فرشتے آپ والنفؤ کی تعریف کرتے

ہیں۔ پھرآپ والنفؤ کے ہاتھ پر کلمہ پڑھ کرمسلمان ہوگیا۔ (کرامات صحابہ وہائڈ)

مفی ۲۳)

الانتسار عمر المول كي فيدي المول كي المول المو

شاہِ روم کا آپلی حضرت عمر فاروق رٹی نیٹنے کی خدمت میں حاضری کیلئے مدینه منوره میں آیا اور آپ بنائین کے دولت کدہ کو تلاش کرنے لگا۔ اس کا خیال تھا کہ آب بنائیڈ کا گھر بھی کوئی شاہی محل قشم کا ہوگا۔لوگوں نے اس کو بتایا کہ امیرالمومنین کا کوئی محل نہیں ہے وہ تو اس وقت شہر سے پچھ دور تھجوروں کے باغ میں قیلولہ فرماتے ہوئے حمہیں ملیں گے۔وہ روی قاصد آپ کو تلاش کرتے کرتے آپ کے پاس پہنچ گیا اور نید دیکھا کہ آپ بٹائٹیز اپنا چمڑے کا درہ اپنے سرکے نیچے رکھ کرزمین پر گہری نیندسور ہے ہیں۔ وہ بیدد کمھے کر وہ حیران ہوگیا اور کہنے لگا کہ مشرق ومغرب کےلوگ اس انسان سے ڈرتے ہیں اور اس کی حالت ہیہے۔ پھر ول میں سوچا کہ بیتنہا ہیں مجھے ان کوتل کردینا جائے تا کہ لوگوں کو ان سے نجات مل جائے۔ بیسوچ کر اس نے اپنی تلوار نکالی اور آپ بٹائٹنز پرجملہ آور ہونے کے ارادے ہے آگے بڑھالیکن وہ جیسے ہی آگے بڑھا اس نے اجا تک دیکھا کہ دوشیر منہ بھاڑتے ہوئے اس پرحملہ کرنے والے ہیں۔ بیخوفناک منظرد مکھے کروہ خوف سے چیخ اٹھا اس کے ہاتھ سے تلوار زمین پر گر گئی۔اس کی چیخ کی آواز سن کر آپ ر النفظ بیدار ہو گئے اور دیکھا ایک رومی کا فرسامنے کھڑ اٹھرتھر کانپ رہاہے آپ مالٹنظ نے اس سے چیخے کا سبب یوچھا تواس نے سب ماجرا بیان کردیااور پھر بلند آواز سے کلمہ پڑھ کر دائرہ اسلام میں داخل ہوگیا۔ آپ بڑائنے یا سے ساتھ شفقت فرمائی اور اس کی غلطی ہے درگز رکرتے ہوئے اس کومعاف کردیا۔



<u>چھٹا باب:</u>

حضرت عمر فاروق طالتين كى شهادت

حضرت عمر فاروق رئی نیمی کوزخمی کیا جانا، خلافت کے لئے جیونا مزدگیاں، حضرت عمر فاروق رئی نیمی کا خاندان، حضرت عمر فاروق رئی نیمی شہادت

O____O



قریشی نسل فخر خاندان فاروق اعظم سے برئے بارعب باشوکت جوال فاروق اعظم سے وعا حضور نے کی جن کے اسلام لانے کی ظہور دیں کے وہ پہلے نشاں فاروق اعظم سے فطہور دیں کے وہ پہلے نشاں فاروق اعظم سے

المنت عملين وق كيسل 385

حضرت عمر فاروق طالتين كوزنمى كياجانا

حضرت انس بن ما لک طلقی سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم سے ایک پیٹی احد پہاڑ پر تشریف لے گئے۔اس وقت آپ سے ایک ہمراہ حضرت ابو بکر صدیق، حضرت عمراہ فرائے کا نبینا صدیق، حضرت عمر فاروق اور حضرت عثمان عنی دی آئے کا نبینا شروع کر دیا۔ آپ سے کھی ہے احد پہاڑ کو تھوکر لگائی اور فرمایا۔ شروع کر دیا۔ آپ سے کھی ہے احد پہاڑ کو تھوکر لگائی اور فرمایا۔ "اے احد پہاڑ الحمر جا!اس وقت تجھ پرایک نبی،ایک صدیق اور دوشہید موجود ہیں۔"

زہری کہتے ہیں حضرت عمر فاروق وظائفت نے تھم دیا کہ کوئی بھی مشرک جو
بالغ ہووہ مدینہ منورہ میں داخل نہیں ہوگا۔ آپ وظائفت کو حضرت مغیرہ بن شعبہ وٹائفت کا ایک مکتوب ملاجس میں انہوں نے لکھا کہ کوفہ میں فیروز نامی ایک شخص ہے جو
نقاثی اور آبن گری میں ماہر ہے اور اگر آپ وٹائٹیڈ اسے مدینہ منورہ آنے کی اجازت
دیں تو وہ ہمارے بڑے کام آئے گا۔ آپ وٹائٹیڈ نے حضرت مغیرہ بن شعبہ وٹائٹیڈ کو جوابی مکتوب لکھا کہتم فیروز کو مدینہ منورہ بھیج دو۔ فیروز جب مدینہ منورہ آیا تو
کو جوابی مکتوب لکھا کہتم فیروز کو مدینہ منورہ بھیج دو۔ فیروز جب مدینہ منورہ آیا تو
اس نے آپ وٹائٹیڈ کی خدمت میں حاضر ہوکر عرض کیا حضرت مغیرہ بن شعبہ وٹائٹیڈ اس نیں کچھ کی کر دیں۔ آپ وٹائٹیڈ نے بھی پر زیادہ ٹیکس لگا رکھا ہے اور آپ وٹائٹیڈ اس میں کچھ کی کر دیں۔ آپ وٹائٹیڈ نے اس سے پوچھا تم روز انہ کتنا ٹیکس دیتے ہو؟ وہ بولا دو در ہم۔ آپ وٹائٹیڈ نے

الاستات ممثلة وارق كيسل

پوچھا تمہارا ببیثہ کیا ہے؟ وہ بولا آئن گری اور نقاشی۔ آپ طالغیز نے تم جس پیشہ میں مہارت رکھتے ہواس ببیثہ پر بیٹیکس تو نہایت معمولی ہے۔

زہری کہتے ہیں فیروز نے جب حضرت عمر فاروق طالبیٰ کا جواب سنا تو وہ ول میں بغض رکھتا ہوا وہاں سے جلا گیا اور کہنے لگا امیر المومنین نے میرے علاوہ ہر دل میں بغض رکھتا ہوا وہاں سے جلا گیا اور کہنے لگا امیر المومنین نے میرے علاوہ ہر ایک ساتھ انصاف کیا ہے۔

زہری کہتے ہیں ایک دن حضرت عمر فاروق طالی نے فیروز کو بلایا اور اس
ہے پوچھا میں نے سا ہے تم چکی تیار کر سکتے ہو جو ہوا ہے چلے؟ فیروز جو ابھی تک
دل میں بغض کئے بیٹھا تھا کہنے لگا میں آپ طالی نے لئے ایسی چکی تیار کروں گا
جے لوگ عرصہ دراز تک یا در کھیں گے۔ جب فیروز رخصت ہو کر گیا تو آپ طالی نے
نے اپنے مصاحب سے فرمایا یہ مجھے تل کی دھمکی دے کر گیا ہے۔

زہری کہتے ہیں اگلے دن فیروز نے ایک تیز دھاری دار خبر اپی آسین میں چھپایا اور مسجد ہیں صبح کے وقت جا کرایک کونے میں چھپ کر بیٹھ گیا۔ مجد میں کچھ لوگ صفیں درست کر لیتے تو پھر حضرت عمر فاروق بڑائیڈ تشریف لاتے اور امامت فرماتے تھے چنانچہ اس دن بھی مصرت عمر فاروق بڑائیڈ تشریف لاتے اور امامت فرماتے تھے چنانچہ اس دن بھی ایسا ہی ہوا اور جب صفیں درست ہوئیں اور آپ بڑائیڈ نماز کے لئے تشریف لائے تو فیروز اپنی چھپی ہوئی جگہ سے نکلا اور اس نے آپ بڑائیڈ پر خبخر کے چھ وار کئے اور ان میں سے ایک وار ناف کے نیچ لگا۔ آپ بڑائیڈ نے اس حالت میں حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بڑائیڈ کو ہاتھ پکڑ کر امامت کے لئے آگے کیا اور زمین پر گر نامت کے لئے آگے کیا اور زمین پر گر زخی کردیا مگر چھر جب وہ پکڑا گیا تو اس نے کی اور لوگوں کو بھی بڑے کہ دورکش کی تو اس نے کی اور لوگوں کو بھی بڑی کردیا مگر چھر جب وہ پکڑا گیا تو اس نے ای خودکش کرئی۔

الاستراعم النافي الوق كرفيه لي المعلق المعلق

یہ بھی منقول ہے کہ مدینہ منورہ میں حضرت مغیرہ بن شعبہ رہائی گا ایک نفرانی غلام فیروز ابولولور ہتا تھا جو نہاوند کے معرکہ میں قید ہوکر مدینہ منورہ لایا گیا تھا وہ ایک دن وہ حضرت عمر فاروق رہائی گا کے خدمت میں حاضر ہوا اور کہنے لگا میرا آقا مجھ سے زیادہ محصول وصول کرتا ہے۔ آپ رہائی ڈے اس سے محصول کی رقم دریافت کی تو اس نے کہا کہ دو درہم روزانہ۔ آپ رہائی ڈ اس سے دریافت کیا تم کام کیا کرتے ہو؟ اس نے کہا میں نقاشی اور نجاری کا کام کرتا ہوں۔ آپ رہائی کے فرمایا ان ہنروں کے آگے بیرقم زیادہ نہیں۔ فیروز ابولولو نے جب آپ رہائی کے فرمایا ان ہنروں کے آگے بیرقم زیادہ نہیں۔ فیروز ابولولو نے جب آپ رہائی کی فرمان سنا تو وہ آپ رہائی کے بیرقم زیادہ نہیں۔ فیروز ابولولو نے جب آپ رہائی کی فرمان سنا تو وہ آپ رہائی کا میں بغض رکھنے لگا۔

ذی الحجہ ۲۳ ہو بوقت نماز فجر جب تمام مسلمان مسجد نبوی ہے ہیں نماز کے لئے جمع ہوئے تو فیروز ابولولو بھی ایک تیز دھار خجر لے کر مسجد نبوی ہے ہیں داخل ہوا اور ایک جگہ جھپ گیا۔ حضرت عمر فاروق رہائیڈ نماز کے وقت تشریف لائے اور نماز کے لئے سفیں درست کروانے لگے۔ جب آپ رہائیڈ صفیں درست کروانے لگے۔ جب آپ رہائیڈ صفیں درست کروانے کے بعد امامت کے لئے کھڑے ہوئے اور تبہیر کہہ کرنماز شروع کی تو اس دوران فیروز ابولولونمازیوں کی صفیں چیرتا ہوا تیزی سے آگے بڑھا اور آپ رہائیڈ پر وران فیروز ابولولونمازیوں کی صفیں چیرتا ہوا تیزی سے آگے بڑھا اور آپ رہائیڈ پر کہ کرنماز شروع کی تو اس سے آپ رہائیڈ نیزی سے آپ دوران فیروز ابولولو نے آپ رہائیڈ نے حصرت عبدالرحمٰن بن عوف رہائیڈ کا ہاتھ پکڑ کر رہائیڈ نیزی سے آپ رہائیڈ پر کر انہیں امامت کے لئے آگے کیا اور بے ہوش ہو گئے۔ فیروز ابولولو نے آپ رہائیڈ پر کہ انہیں امامت کے لئے آگے کیا اور جب لوگوں نے اسے پکڑ لیا تو اس نے حملہ کرنے کے بعد بھا گئے کی کوشش کی اور جب لوگوں نے اسے پکڑ لیا تو اس نے ایک می خبخر سے خود ش کر لی۔

نماز کی ادائیگی کے بعد حضرت عمر فاروق طالغیز کو گھر لایا گیا۔ آپ طالغیز

الاستار عمر الموق كرفيه الموق كرفيه الموق الموق

نے ہوش میں آتے ہی بوجھا میرا قاتل کون ہے؟ آپ رظائفۂ کو بتایا گیا کہ فیروز ابولواوراس نے خودکشی کرلی ہے۔ آپ رظائفۂ نے اللہ عزوجل کاشکر ادا کیا کہ میرا قاتل کوئی مسلمان نہیں ہے۔ اس دوران طبیب کو بلایا گیا جس نے آپ رٹائٹۂ کو دورہاور نبیذ بلایا جوزخم کے راستے باہرنکل آیا۔

حضرت مسور بن مخرمہ بطالقہ فرماتے ہیں جب حضرت عمر فاروق برالتہ کا ور خرجی کیا گیا تو ہیں اور حضرت عبداللہ بن عباس برالغہا، آپ برالغہ کے پاس آئے اور اس وقت آپ برالغہ کی گیا تھا۔ ہم نے کہا آپ برالغہ نماز کے نام پر جتنی جلد اٹھیں گے اتناکسی اور چیز سے نہ اٹھیں گے چنا نچہ ہم نے کہا نماز۔ آپ برالغہ اسلام میں کوئی حصہ نہیں اسٹھے اور فرمایا اللہ عزوجل کی قتم! جو نماز ترک کرے اس کا سلام میں کوئی حصہ نہیں اس آپ برالغہ نے اس حال میں نماز اوا فرمائی اور آپ برالغہ نے زخم سے خون بہہ رہا تھا۔

حضرت مسور بن مخرمہ وظائفۂ فرماتے ہیں کہ میں امیر المومنین حضرت عمر فاروق وظائفۂ کے باس اس رات حاضر ہوا جب آپ وظائفۂ کو دخمی کیا گیا تھا اور آپ وظائفۂ کو حض نماز کے لئے بیدار کیا گیا تو آپ وظائفۂ نے فرمایا جونماز ترک کرے اس کے لئے اسلام میں کوئی حصہ نہیں پس آپ وظائفۂ نے اس حال میں نماز اوا فرمائی اور آپ وظائفۂ کے دخم سے خون بہدر ہا تھا۔

O___O



خلافت کے لئے جیمانمرد گیاں

حضرت عبدالله بن عمر ظافخ اسے مروی ہے فرماتے ہیں جب فیروز ابولولو نے والد بزرگوار حضرت عمر فاروق طالفن پر تحنجر سے وار کئے اور آپ طالفن شدید زخمی ہو گئے تو آپ رہائنٹے کو گمان گزرا شاید میراقل کسی مسلمان نے کیا ہے جسے وہ نہیں ﴿ جانبے۔ آپ شِلْعُنُهٔ نے حصرت عبداللہ بن عباس شِلْعُهُمُا کو بلایا اور ان کو اینے قریب بٹھانے کے بعدان سے پوچھا میری خواہش ہے میں جان لوں کیا مجھے تل کرنے والامسلمان ہے؟ حضرت عبدالله بن عباس طلع فلا نے جب آب طالع فل بات سی تو باہر نکلے تا کہ جان سکیں کیا قاتل کا تعلق مسلمانوں کی جماعت ہے۔حضرت عبدالله بن عباس طلی نشخهانے باہرنکل کر دیکھا تو سب رورے تھے۔حضرت عبداللہ بن عباس ظلی نظامی واپس آ کر بتایا که آب طالفید کوتل کرنے والامسلمان نہیں ملکه مغیرہ بن شعبہ بڑالٹنے کا غلام فیروز ابولولو ہے۔ والد بزرگوار نے جب حضرت عبداللہ بن عباس طلی شاخیا کی بات سی تو الله عز وجل کا شکر ادا کیا ان کوتل کرنے والامسلمان تہیں ہے۔ پھرآپ طالغیز نے فرمایا۔

"میں نے لوگوں سے فرمایا تھاتم اپنے پاس مجمی کا فرغلاموں کو نہ لائوں کو نہ لائے ہوں کو نہ لائے ہوں کو نہ لاؤلیکن تم لوگوں نے میرا کہانہیں مانا۔"

حضرت عبداللہ بن عمر دیا فیا فرماتے ہیں اس کے بعد والد بزرگوار حضرت

عمر فاروق وللنفية نے حضرت عبدالله بن عباس وللفیما سے فرمایا۔ "" تم جاؤ اور مبرے بھائیوں کو بلالاؤ۔"

حضرت عبداللہ بن عمر طالقہٰ فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عباس طالقہٰ فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عباس طالقہٰ اللہ عبالی عبائی ؟ والد بزرگوار نے فرمایا۔

''عثمان غنى ،على المرتضى ،طلحه بن عبيدالله، زبير بن العوام ، سعد بن وقاص اورعبدالرحمٰن بن عوف شئ منتم کو۔''

حضرت عبداللہ بن عمر رہا تھے ہیں حضرت عبداللہ بن عباس رہا تھے۔
ان حضرات کو بلانے چلے گئے اور والد بزرگوار میری گود میں سررکھ کر لیٹ گئے۔
جب تمام حضرات اکٹھے ہو گئے تو آپ رہا تھے نے ان کو مخاطب کرتے ہوئے فر مایا۔
''میں آپ چھ حضرات کولوگوں کا سر دار اور ان کی قیادت کرنے
والا پاتا ہوں اور یہ خلافت تم حضرات میں چھوڑتا ہوں اور
جب تک تم میں استقامت رہے گی لوگوں کو بھی خلافت پر
استقامت حاصل رہے گی اور جب تم میں اختلاف ہوگا تو پھر
لوگوں میں بھی اختلاف پیدا ہو جائے گا۔'

حضرت عبدالله بن عمر رہی جنافر ماتے ہیں پھر والد برزرگوار نے فر مایا۔
''تم تین دن تک لوگول سے مشورہ کرنا اور خود میں سے ایک شخص کو خلیفہ چن لینا۔ اس دوران حضرت صہیب رومی رہا تھے۔''
لوگول کو نماز بڑھا کیں گے۔''

حضرت عبداللہ بن عمر رہائے ہیں پھرطبیب کو بلایا گیا جس نے والد بزرگوار کو دودھ بینے کے لئے دیا جو آپ مٹائٹ کے زخموں سے باہرنکل آیا۔

الاستراعم النافي المالي المالي

' آپ س^{الف}ئة نے فرمایا۔ '

"اگراس وقت میرے لئے ساری دنیا ہوتی تو آئندہ آنے والی وحشتوں سے بیخے کے لئے میں اسے صدقہ کر دیتا اور ایسا کہاں؟ اللہ عز وجل کا شکر ہے کہ میں نے سوائے بھلائی کے اور کیجھنہیں دیکھا۔"

> ''اللّٰدعزوجل آپ طالفئة كو جزائے خير دے،حضور نبي كريم ينظ كين اسلام كوآب طالع الله عزوجل دين اسلام كوآب طالع الله کے ذریعے مضبوط فرمائے اور جب مسلمان مکہ میں خوف میں مبتلا تصے تو آپ رہائٹیڈ نے اسلام قبول کیا اور اللہ عز وجل نے آپ طالعًا کے ذریعہ دین اسلام کو تقویت بخشی۔ آپ طالعہا ا نے ہجرت کی اور آپ رٹائنڈ کی ہجرت ہم مسلمانوں کے لئے فتح مکہ کا پیش خیمہ ٹابت ہوئی۔حضور نبی کریم ﷺ کے شانہ بثانه آپ طالغن مرغزوہ میں شامل رہے اور اپنی بہادری کے جوہر دکھائے۔حضور نبی کریم مضرکتے استان کے بعد حضرت ابو بمرصد این طالفن نے آپ طالفن کو اینا وزیر مقرر کیا اور ان کے وسال کے بعد آیہ ڈالٹٹھ خلافت کے سب سے زیادہ اہل تھے۔ آپ رٹائنڈ نے اللہ عزوجل کے دین کا پرچم عرب سے نکال کر عجم میں بھی بلند کیا اور آپ مٹائٹنڈ کی کوششوں سے

بے شارلوگ دائرہ اسلام میں داخل ہوئے۔ اللہ عزوجل نے آپ دائرہ اسلام میں داخل ہوئے۔ اللہ عزوجل نے آپ دائوں کے ذریعے اپنے دین کو وسعت عطا فرمائی یہاں تک کہ آپ دائوں کو مرتبہ شہادت پر فائز کیا۔''

حضرت عبداللہ بن عمر رظافہ نا فرماتے ہیں والد بزرگوار نے جب حضرت عبداللہ بن عباس رظافہ نا کا کلام سنا تو فرمایا۔

> ''اے عبداللہ (ولائنٹ)! کیاتم روزِ محشر میرے لئے گواہی دو گے؟''

حضرت عبداللہ بن عمر رہائی فہا فرمات ہیں حضرت عبداللہ بن عباس طالفہٰنا نے فرمایا ہے شک۔ والد بزرگوار نے فرمایا۔

" سب تعریفیں اللہ عزوجل کے لئے ہی ہیں۔"

حضرت عبداللہ بن عمر رہائی خمنا فرماتے ہیں کہ پھر والد برزرگوار مجھ سے فرمایا میرا رخسار زمین سے ملا دو اور پھر انہوں نے اپنا رخسار اور داڑھی زمین پر ٹیک دی۔اس کے بعد آب رہائین وصال فرما گئے۔

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق رظائین کا وصال کا وقت قریب آیا تو صحابہ کرام رضائین کی ایک جماعت نے آپ رظائین سے خلیفہ کی نامزدگی کا مطالبہ کیا۔ آپ رظائین نے حضرت عبداللہ بن عباس رظائین سے فرمایا تم جا کر حضرت عثان غنی ، حضرت علی المرتضلی ، حضرت طلحہ بن عبید اللہ ، حضرت زبیر بن العوام ، حضرت عبدالرحمٰن بن عوف اور حضرت سعد بن الی وقاص رشی گئین کو بلا لاؤ۔ جب بید حضرات خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ رظائین نے فرمایا۔

"میں خلافت کا امرتمہارے سیرد کرتا ہوں کہ حضور نبی کریم

حضرت عمر فاروق طلیفی نے اپنے بعد آنے والے خلیفہ کونصیحت کرتے ہوئے فرمایا۔

> ''الله عزوجل کی حمد و ثناء اور حضور نبی کریم منظر کیا ہے۔ شار درود وسلام۔

اما بعد! میں اینے بعد منتخب ہونے والے کو خلیفہ مہاجرین اولین کے بارے میں وصیت کرتا ہوں کہ ان کے حقوق کو بہجانے اوران کی عزت اور بڑائی کا خیال رکھے اور انصار کے بارے میں وصیت کرتا ہوں یہ وہ لوگ ہیں جنہوں نے حضور نبی کریم ﷺ اور مہاجرین ہے قبل اینے گھروں میں ٹھکانا دیا۔ میں اس بات کی وصیت کرتا ہوں کہ ان کے بھلوں کی باتیں مانیں اور ان میں لغزش کرنے والوں سے درگز رکریں اور میں اس کو سیجھی وصیت کرتا ہوں کہ اہل شہر کے ساتھ حسن اخلاق ہے بیش آئے اور بیاوگ اسلام کے لئے حفاظتی دستہ اور مال کا **ذخیرہ کرنے والے اور دشمنوں کے لئے ماعث نحظ وغضب** ہیں اور بید کہ ان سے پچھ نہ لیا جائے مگر جو ان کے باس زائد ہواور وہ بھی ان کی رضامندی سے اور میں اعراب کے بارے می معمل الله الله كارنے كى بھى وصيت كرتا ہوں اس لئے كہ بھى لوگ عرب کی جڑ اور اسلام کا سرچشمہ ہیں۔ ان کے مال سے ان کے جانوروں کی زکوۃ لے کر انہیں کے نقراء پرتقیم کر دے۔ اللہ عز وجل اور اس کے رسول منظیمیا کی طرف سے ان پر جو ذمہ داریاں عائد ہوتی ہیں۔ میں منتخب ہونے والے خلیفہ کو وصیت کرتا ہوں لوگوں کے لئے جیسا کہ ان سے معاہدہ ہے اس کو پورا کرے اور جو دہمن ان کے چیچے ہیں ان کو بھیج کر ان سے جہاد کرے اور کو دہمن کو اس کی طاقت سے زیادہ تکلیف نہ دے۔ "

"اس آدمی کو جواس خلافت کا والی ہوگا اسے معلوم ہوتا چاہئے
اس سے خلافت کو قریب اور جلد سب واپس لینے کا ارادہ کریں
گے۔ میں لوگوں سے اپنے لئے خلافت باقی رکھنے میں لڑتا
رہوں گا اور اگر میں جان لیتا کہ لوگوں میں سے کوئی اس کام
کے لئے زیادہ قوی ہے تو میں اس کو آگے بڑھا تا کہ وہ
میری گردن مار دیتا' یہ بات مجھے زیادہ پسند ہنسبت اس کے
میری گردن مار دیتا' یہ بات مجھے زیادہ پسند ہنسبت اس کے
کہ میں اس کا والی ہوتا۔'

امام احمد بڑائنے نے مسندامام احمد میں روایت بیان کی ہے حضرت عمر فاروق بڑائنے سے دوست میں اوایت بیان کی ہے حضرت عمر فاروق بڑائنے سے دوست فرمایا جب ان سے خلیفہ مقرر کرنے کے متعلق دریا دنت کیا گیا گیا کہ میں اپنے بعد حضرت ابوعبیدہ بن الجراح بڑائنے کی کوخلیفہ مقرر کرتا مگر دہ مجھ

سے پہلے وصال فرما گئے اور میں حضرت سالم ڈاٹٹیڈ کوخلیفہ مقرر کرتا اور وہ بھی مجھ سے پہلے وصال فرما گئے۔

حضرت انس بن مالک رہائیؤ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت مرفاری کے واروق والنیوز نے حضرت ابوطلحہ انصاری رہائیؤ کو بلایا جس وقت آپ رہائیؤ کو زخمی کیا گیا تھا آپ رہائیؤ نے حضرت ابوطلحہ انصاری رہائیؤ سے فرمایا کہتم انصار کے بچاس افراد کو لیے کہ ان اصحابِ شور کی کے ہمراہ رہنا اور مجھے قوی امید ہے بیعنقریب کسی گھر پر جمع ہوں گے اور تم اس گھر کے درواز ہے پر رکے رہنا یہاں تک کہ تین دن گزر جا کیں اور اس دوران کسی کو کسی بھی صورت اس گھر کے اندر داخل نہ ہونے دینا۔ اندر داخل نہ ہونے دینا۔ اندر داخل نہ ہونے دینا۔

حضرت عثان غني طالنيز كاخليفه منتخب مونا:

حضرت عمرو بن میمون بطائفیہ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق بطائفیہ کے وصال کے بعد حضرت عثمان عنی، حضرت علی المرتضی، حضرت طلحہ بن عبیداللہ، حضرت زبیر بن العوام، حضرت عبدالرحمٰن بن عوف اور حضرت سعد بن الی وقاص رہائیہ ایک جگہ جمع ہوئے۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بطائفیہ نے فرمایا اپنے اس کام کو تین کے حوالے کر دو چنانچے حضرت زبیر بن العوام بطائفیہ نے اپنی رائے حضرت علی المرتضی بطائفیہ کے حوالہ اور حضرت طلحہ بن عبیداللہ جائٹی نے اپنی رائے حضرت عثمان عنی برائفیہ کے حوالہ اور حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائٹی نے اپنی رائے حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بطائفی کے حوالے کر دی۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بطائفی نے موالے کر دی۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بطائفی نے یہ موالے حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بطائفی نے حوالے کر دی۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بطائفی نے حوالے اور حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بطائفی نے کے حوالے اور کے دائوں کے کا ہاتھ پکڑا اور آنہیں ایک طرف لے گئے عوف بطائفی نے حضرت علی المرتضی ہوئے کا ہاتھ پکڑا اور آنہیں ایک طرف لے گئے

المنت مُنت و اروق كيديل

اور كبااً راآب براتين كوخليف مقرركيا جائة توكيا آب براتين انصاف سے كام ليل كے اور اگر حضرت عثمان عنی براتين كوخليف مقرركيا جائے تو ان كی اطاعت كريں گئي حضرت علی المرتضی براتين نے فرمايا بال اس كے بعد حضرت عبدالرحمٰن بن عوف براتين نے خرمايا بال اس كے بعد حضرت عبدالرحمٰن بن عوف براتين نے خضرت عثمان عنی براتين كا باتھ تھاما اور ان كو ايك طرف لے گئے اور كہا اگر آب براتين كوخليف مقرركيا جائے توكيا ان كی اطاعت كريں گے وراگر حضرت علی المرتضی براتين كوخليف مقرركيا جائے توكيا ان كی اطاعت كريں گے؟ حضرت عثمان عنی براتين كوخليف مقرركيا جائے توكيا ان كی اطاعت كريں گے؟ حضرت عثمان عنی براتين نے فرمايا بال اس اس كے بعد حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بڑائین نے حضرت عثمان عنی براتين كے دست حق پر بيعت كر لی جس كے بعد حضرت علی المرتضی مشان عنی براتين خلی منان عنی براتین خلی براتین کے دست حق پر بیعت كی اور حضرت عثمان عنی براتین خلی براتین خلی براتین خلی بوئین خلیف منتف ہوئے۔

حضرت عثمان غنی رظائفیہ محرم الحرام ۲۲ ہمیں مسند خلافت پر بیٹھے اور مجمع علم سے بیعت حاصل کی۔ آپ رظائفیہ جب منصب خلافت پر فائز ہوئے اس وقت آپ رظائفیہ جب منصب خلافت پر فائز ہوئے اس وقت آپ رٹائفیہ کی عمر مبارک قریباً ارسٹھ (۲۸) برس تھی۔

O....O....O

مزید کتب پڑھنے کے لئے آئ بی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

منت عملات و ارق رفيها

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی دزے کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

حضرت عمر فاروق طالتكؤ كاخاندان

حضرت عمر فاروق طالفیڈ کی بیویوں کی تعداد سات ہے۔

حضرت زينب طالفينا بنت مظعون

قرمبة بنت ابي اميه مخزومي ۲

مليكه بنت جرول الخزاعي ٣

حضرت ام حكيم وللنجنّا بنت الحرث سم

حضرت جميله والنفخ بنت عاصم بن ثابت انصاري والنفؤة _۵

> حضرت عاتكه والنينا بنت زيد والنيز _4

حصرت ستيده ام كلثوم خالفينا بنت على بنالفذ

حضرت عمر فاروق طالننذ کی نیبلی بیوی حضرت زینب طالنینا بنت مظعون ہیں۔آپ ذائفینا،حضرت عثان دائفیز بن مظعون کی ہمشیرہ ہیں۔ آپ دائیریا کے بطن سے حضرت عبداللہ بن عمر، حضرت عبدالرحمٰن بن عمر اور ام المومنین < عشرت سیّدہ حفصہ رہی کیٹی تولد ہوئے۔آپ رہی ہونا نے مکہ مکرمہ بجرت ہے بل اسلام قبول کیا۔

حضرت عمر فاروق بنالفن كى دوسرى بيوى قرمبة بنت الى اميه مخزومى بيل بیام المونین حضرت سیده ام سلمه ذانیجهٔ کی بهن تھیں مگر اسلام کی دولت ہے محروم ر ہیں۔ جب حضور نبی کریم مضافظام نے معاہدہ حدیبیہ کے بعد فرمان جاری کیا کہ

مشرک عورتوں سے نکاح جائز نہیں تو آپ رخان نے انہیں طلاق دے دی۔
حضرت عمر فاروق رخان کی تیسری بیوی ملیکہ بنت جرول الخزاع ہیں۔
آپ رخان کا ملیکہ بنت جرول الخزاع سے نکاح زمانہ جابلیت میں ہوا تھا۔ جب حضور نبی کریم ہے ہے نہوت کا اعلان کیا تو ملیکہ بنت جرول الخزاع نے بھی اسلام قبول کرنے ہے انکار کر دیا جس کی وجہ ہے آپ رخان نے انہیں طلاق وے دی۔ اسلام قبول کرنے سے انکار کر دیا جس کی وجہ ہے آپ رخان نے انہیں طلاق وی۔ دی۔ ان کے بطن سے حضرت عبید اللہ رخان نے تولد ہوئے۔

حضرت عمر فاروق میلانیو کی چوتھی بیوی حضرت ام حکیم برانیو بنت الحرث بن ہشام مخزومی ہیں۔ جن سے حضرت فاطمہ والفونیا تولد ہوئیں۔

حضرت عمر فاروق رائین کی بانچویں ہوی حضرت جمیلہ رائین بنت عاصم بن ثابت انصاری رائین بنت عاصم بن ثابت انصاری رائین بیں۔ آپ رائین کا تکاح حضرت عمر فاروق رائین سے جمرت کے بعد ہوا۔ آپ رائین سے حضرت عاصم رائین تولد ہوئے۔ حضرت عمر فاروق رائین نے بند ناگزیر وجو ہات کی بناء پر آپ رائین کوطلاق دے دی تھی۔

حضرت عمر فاروق و النفية كى چھٹى بيوى كا نام حضرت عاتك و النفية بنت زيد و النفية بنت زيد و النفية بنت راب النفية بنا كا بہلا نكاح حضرت عبدالله بن الى بكر و النفية بنا سے ہوا تقام كر جب حضرت ابو بكر صديق و النفية نے ديكھا كدان كے صاحبزاد ہے اپنى بيوى تقام كر جب حضرت ابو بكر صديق و النفية نے ديكھا كدان كے صاحبزاد ہے اپنى بيوى سے محبت كى وجہ سے عبادت ميں لا پرواہى برستے ہيں تو انہوں نے بيٹے كو تكم ديا وہ اپنى بيوى كو طلاق دے دے د حضرت عمر فاروق و النفية سے آپ و النفیة كا نكاح ١٢ھ ميں ہوا۔

حضرت عمر فاروق بلائف کی ساتویں بیوی حضرت علی المرتضی برایفنی کی ساتویں بیوی حضرت علی المرتضی برایفنی کی صاحبزادی حضرت سیدہ ام کلتوم برایفنی بین جن سے آپ برایفنی کا نکاح کا الم میں

ہ وا۔ حضرت سیدہ ام کلثوم بنائیڈا، حضور نبی کریم ﷺ کی نواسی اور حضرت سیدہ ا فاطمہ الزبرا بنائیٹا کی صاحبز ادمی تھیں۔ حضرت سیدہ ام کلثوم بنائیٹا سے حضرت رقیہ بنائیٹا اور حضرت زید بنائیڈ تولد ہوئے۔

اولاد:

حضرت عمر فاروق طِلْعُنْهُ کشیراولا دینھے ذیل میں آپ طِلْعُنْهُ کی ان اولا د کا ذکر کیا جارہا ہے جن کا تذکرہ روایات میں موجود ہے۔

ام المومنین حضرت حفصہ برات نبی بعث نبوی سے بیانی بیست بیانی برس قبل تولد ہو کمیں اور اس وقت قریش خانہ کعبہ کی تعمیر میں مصروف تنھے۔ جب آپ براتی نبی المومنی کے والدہ اور گھر کے والد حضرت عمر فاروق براتی نبی نبی اسلام قبول کیا تو آپ براتی نبی والدہ اور گھر کے ویکر افراد کے ہمراہ آپ براتی نبی اسلام قبول کرلیا۔

ام المونین حضرت حفصہ ولی پہلا نکاح حضرت جینس بن خذافہ ولی پہلا نکاح حضرت جینس بن خذافہ ولی پہلا نکاح حضرت جوا۔ آپ ولی پہلا نے اپنے شوہر حضرت حینس بن خذافہ ولی پہر مہر مہ لوٹ حیشہ کی جانب ہجرت کی اور پھر ہجرت مدینہ سے بچھ عرصہ قبل واپس مکہ مگر مہ لوٹ آئیں اور پھر جب مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کا حیم ہوا تو آپ ولی پہلا نے اپنے شوہر کے ہمراہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کی ہے میں غزوہ بدر میں حضرت حیس شوہر کے ہمراہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کی ہے ہے میں غزوہ بدر میں حضرت حیس بن خذافہ ولی پینی مالی ہوگیا۔

من خذافہ ولی پینی میں ہو گئے اور انہی زخموں سے آپ ولی پینی کی وہ بدر میں زخمی ضرور ہوئے تھے اور آپ ولی پینی خرات کی درست ہو گئے تھے اور آپ ولی پینی خرار میں خرار ہونے کے مطابق حضر یہ وہ کے نظاور آپ ولی کے شمرور ہوئے تھے اور آپ ولی کی میں بچھ گہرے زخم

آئے اور ان زخموں کی تاب نہ لاتے ہوئے آپ طالفنے نے جام شہادت نوش فرمایا۔

ام المونین حضرت حفصہ خلیجیا، حضرت عمر فاروق برالیجی کی صاحبزادی بین اور آپ برائی کا پہلا نکاح حضرت حینس بن خذافہ برائیجی سے ہوا۔ آپ برائیجی نے اپنے شوہر حضرت حینس بن خذافہ برائیجی کے ہمراہ حبشہ کی جانب ہجرت کی اور پھر ہجرت مدینہ سے بچھ عرصہ قبل واپس مکہ مکرمہ لوٹ آئیں اور پھر جب مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کا حکم ہوا تو آپ برائیجی نے اپنے شوہر کے ہمراہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کا حکم ہوا تو آپ برائیجی نے اپنے شوہر کے ہمراہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کی۔ ۲ ھیں غزوہ بدر میں حضرت حبیس بن خذافہ برائی فرجہ سے شریک ہوئے اور انہی زخموں کی وجہ سے شریک ہوئے اور انہی زخموں کی وجہ سے حضرت حبیس بن خذافہ برائی کی وصل ہو گیا۔

ایک روایت کے مطابق حضرت حنیس بن خذافہ طالفیز غزوہ بدر میں زخمی ضرور ہوئے تھے مگر بعد میں آپ طالفیٰ کے زخم درست ہو گئے تھے اور آپ طالفیٰ نے پھرغزوہُ احد میں بھی شمولیت اختیار کی اور اس مرتبہ جنگ میں پچھ گہرے زخم آئے اور ان زخموں کی تاب نہ لاتے ہوئے آپ طالفیز نے جام شہادت نوش فرمایا۔ حضرت عبدالله بن عمر ظائفها سے مروی ہے فرماتے ہیں جب میری بہن حضرت حفصہ والنینا، حضرت حتیس بن حذافہ سہی والنین کے وصال کے بعد بیوہ ہوئیں تو والد بزرگوار حضرت عثان غنی بٹائٹنڈ سے ملے اور ان سے کہا کہ اگرتم جا ہوتو میں تمہارا نکاح حفصہ (بنائن) سے کر دوں۔حضرت عثمان غنی شائن نے جوایا فرمایا مجھے اس معاملہ میں غور کرنے دو۔ جب سیجھ دن گزرنے کے بعد آپ بٹائنڈ نے حضرت عثمان غنی طالعیٰ سے اس معالمے میں دریافت کیا تو انہوں نے انکار کر دیا۔ حضرت عبدالله بن عمر بَالْغَفِهُا فرمات بين والديزرگوار نے حضرت عثان غنی طالعن کے اس انکار کے بعد حضرت ابو بمرصد بق طالعن کے اس معاملے میں

الاصنات مم النات الموق كر فيسل المعلق الموق كر فيسل

بات کی اور انہیں کہا اگر وہ جا ہیں تو میں ان کا نکاح اپنی بٹی حفصہ (طلیخیا) ہے کر دیتا ہوں۔حضرت ابو بکرصدیق طلیخیا ان کی بات سن کر خاموش ہو گئے۔

حضرت عمر فاروق رنگانی بارگاہِ رسالت سٹے بیٹے میں حاضر ہوئے اور تمام ماجرا حضور نبی کریم شنے بیٹائے گوش گزار کرتے ہوئے حضرت عثمان عنی رنگانی کی شکائی کی شکائی کی شکائی کی شکائیت کی حضور نبی کریم میں بیٹائے کے فرمایا۔

> '' تمہاری بیٹی کے لئے اللہ عزوجل نے بہتر رشتہ طے کیا ہے اورعثان (بڑالفیٰ) کے لئے بھی بہتر رشتہ ہے۔''

حضرت عبداللہ بن عمر ظافینا فرماتے ہیں چنانچہ کچھ عرصہ کے بعد میری بہن کا نکاح حضور کی بعد میری بہن کا نکاح حضور بہن کریم مطبق اللہ کا نکاح حضور بہن کریم مطبق کی دوسری صاحبزادی حضرت ام کلثوم ذائعینا ہے ہوا۔

مہاری بی سے سے ایک جہر رشہ کئے بھی ایک بہتر رشتہ ہے۔''

چنانچ حضور نی کریم بیشن اندام المونین حضرت حفصہ والنفیا ہے نکاح کرلیا اور حضرت عثمان عنی دالنفیا کا نکاح اپنی صاحبز ادی حضرت سیدہ ام کلتوم والنفیا کرلیا اور حضرت عثمان عنی دالنفیا کا نکاح اپنی صاحبز ادی حضرت سیدہ ام کلتوم دالنفیا کے نکاح کے سے کردیا۔حضرت عصمہ ذالنفیا کے نکاح کے

"جبتم نے مجھ سے ان کے نکاح کی خواہش ظاہر کی تو ہیں خاموش رہا اس لئے کہ حضور نبی کریم میں ہے ہے۔ ان کا خاموش رہا اس لئے کہ حضور نبی کریم میں ہے ہے۔ ان کا ذکر کیا تھا اور میں حضور نبی کریم میں ہے ہے۔ کا رازتم پر بھی فاش نہیں کرنا جا ہتا تھا۔"

روایات میں آتا ہے کہ ام المومنین حضرت حفصہ برائی اور ام المومنین حضرت عائشہ درائی اور ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ برائی نے نے نفلی روزہ رکھا۔ شام کو ہدید کے طور پر پچھ کھانا آیا تو آپ برائی نے روزہ افطار کرلیا۔ پھر جب حضور نبی کریم میں ہے ہے۔ تشریف لائے تو ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ برائی اللہ کے تانے المومنین حضرت عائشہ صدیقہ برائی کو تمام واقعہ بیان کردیا کہ ہم نے نفلی روزہ رکھا تھا جب افطار کا وقت ہوا تو پچھ کھانا ہدیہ آگیا جس سے ہم نے روزہ افطار کرلیا۔ حضور نبی کریم سے بھائے نہ مایا کہ تم اس کفارے کے لئے ایک روزہ اور رکھا و المومنین حضرت عائشہ صدیقہ برائی نا میں سبقت کے لئے ایک روزہ اور رکھا کہ المومنین حضرت عائشہ صدیقہ برائی نے آپ برائی اور وہ سبقت کیوں نہ لیتیں آخرہ وہ طبحہ المومنین حضرت عائشہ صدیقہ برائی نے آپ برائی اور وہ سبقت کیوں نہ لیتیں آخرہ وہ المومنین رحضرت عرفاروق برائی کی بیٹی ہیں۔

حضرت ابو بکر صدیق و النیم کے زمانہ خلافت میں قرآن مجید کی تدوین عمل میں آئی اور قرآن مجید کا وہ نسخہ حضرت ابو بکر صدیق و النیم کی تحویل میں تھا۔ حضرت ابو بکر صدیق و النیم کی تحویل میں آگا اور ابو بکر صدیق و النیم کی تحویل میں آگیا اور ابو بکر صدیق و النیم کی تحویل میں آگیا اور حضرت عمر فاروق و النیم کی تحویل میں آگیا اور حضرت عمر فاروق و النیم کی تحویل میں آگیا اور المونین حضرت حفصہ و النیم فاروق و النیم کی تعالیم کی استفادہ کرتا ہوتو و النیم کی استفادہ کرتا ہوتو

الاستان اوق كافيل

وہ اس سے استفادہ کرسکتا ہے۔حضرت عثمان عنی بیانیمڈ نے وہ نسخہ آپ بیانیما سے عاریماً لیا اور اس کی نقول تیار کروائیں اور انہیں مختلف مقامات پر روانہ کیا۔ یہ نسخہ آپ بیانیما کے اور انہیں مختلف مقامات پر روانہ کیا۔ یہ نسخہ آپ بیانیما کے وصال کے بعد حضرت عبداللہ بن عمر بیانیما کے پاس آیا جے بعد میں مروان نے ضائع کردیا۔

ام المونین حضرت حفصہ بی قیا کو دجال ہے تخت خوف محسوس ہوتا تھا اوراس وقت مدینہ منورہ میں صیاد نامی ایک شخص تھا جس میں دجال کی ہے شار علامات پائی جاتی تھیں یہاں تک کہ حضور نبی کریم سے پہتے نے بھی اس کے متعلق شک کا اظہار کیا تھا۔ ایک دن صیاد کی ملاقات حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص ہے ہوئی اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص کا راس نے حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص کا راستہ روک لیا جس پر حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص کا راستہ روک لیا جس پر حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص کے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا اور حضرت عبداللہ بن عمر بی شخص نے سامنے آگیا ہے نہ سا

ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ بھی فرماتی ہیں حضور نبی کریم سے بھی اپنی اللہ میں حضور نبی کریم سے بھی اللہ صحابہ کرام دی الفیم کے ہمراہ تشریف فرما تھے کہ ام المونین حضرت حفصہ بھی نبی کے معانا تیار کیا اور میرے کھانا بھجوانے سے پہلے ہی کھانا بھجوا دیا۔ میں نے لونڈی سے کہا کہتم جلدی سے جاؤ اور ان کے برتن کو گرا دو۔ لونڈی گئی اور اس وقت آپ سے کہا کہتم جلدی سے جاؤ اور اس نے اسے گرا دیا اور کھانا بھر گیا۔ حضور نبی طاقہ کا پیالہ رکھا جانے والا تھا اور اس نے اسے گرا دیا اور کھانا بھر گیا۔ حضور نبی

کریم ﷺ کے اس کھانے کو جمع کیا اور پھرسب نے وہی کھانا کھایا جبکہ میرا پیالہ آپ نظائی کو بھجوا دیا اور فرمایا میہ برتن تمہارے برتن کے بدلہ میں ہے اسے رکھالو اور اس میں جو ہے وہ کھالو۔

ام المومنين حضرت عا كشه صديقته والغُجنًا اورام المومنين حضرت حفصه وَالغُجنًا کے مابین بہت زیادہ پیارتھا اور دونوں کا ایک دوسرے نے رشتہ نہایت احترام و محبت كانقار روايات ميس آتا ہے كه ايك مرتبدام المومنين حضرت عائشه صديقه اور ام المومنین حضرت حفصه بزائن دونوں ہی حضور نبی کریم م<u>نشوک</u>یؤنا کے ساتھ شریک سفر تھیں اور حضور نبی کریم مطفظ کیا معمول کے مطابق ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ ٹری گھٹا کے اونٹ کے ساتھ چل رہے تھے اور ان سے باتیں فرمارہے تھے۔ ایک دن دورانِ سفر ام المومنين حضرت حفصه والنجنًا نے ام المومنين حضرت عائشه صديقه ظی الناخ سے کہا کہ آج رات میں تمہارے اونٹ پرسوار ہو جاؤں اور تم میرے اونٹ پر سوار ہو جاؤ۔ ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ خلیجا نے بات مان لی اور پھر جب سفر شروع ہوا تو حضور نبی کریم مطفظ تیا اس خیال سے کدام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ ظانی السینے اونٹ پر ہیں ان سے باتیں کرتے رہے جبکہ وہ ام المومنین حضرت حفصه وناتنجنًا تحقيس اور پھر جب قافلہ اپنی آگلی منزل پر پہنچا تو حضور نبی کریم ين ينه الله الله الموا اورام المونين حضرت عائشه صديقه والفينا الس دوران بريشان تھیں حضور نبی کریم مشر کھیں ان کے ساتھ نہیں آئے چنانچدام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ ظانفٹا اذخرگھاس پراینے یاؤں پھیلاتے ہوئے بولیں۔

''اے اللہ! کسی سانپ یا بچھو کو مقرر کرجو مجھے ڈس جائے۔'' ام المونین حضرت حفصہ بڑائیڈنا علم اور تفقی سے معروف تھیں اور آپ

الانت المحافظة في الموق كي المعالي المعالية المع

حضرت عبداللہ بن عمر فرائی ہیں جوام المونین حضرت حفصہ فرائی ہیں ہیں وہ اکثر و بیشتر مسائل واحکامات کے سلسلے میں آپ فرائی ہیں سے رجوع کیا کرتے سے اور آپ فرائی ہیں ہے وہ اکثر و بیشتر مسائل واحکامات کے سلسلے میں آپ فرائی ہیں البندا وہ حضور نبی کریم سے ایک ہیں تھیں لبندا وہ حضور نبی کریم سے ایک ہیں تھیں لبندا وہ حضور نبی کریم سے ایک معلق معلومات حاصل کرتے ہے اور میں ہیں وجہ ہے سنت رسول اللہ سے ایک ماخذ میں حضرت عبداللہ بن عمر فرائی ہیں کا نام ایک معتبر اور سندگی حیثیت رکھتا ہے۔

ام المومنین حضرت حفصہ طالعین کا حافظ بےمثل تھا اور آپ طالعین سے بھاراحادیث مروی ہیں جواحادیث کی معتبر کتب میں روایت کی گئی ہیں۔
جشاراحادیث مروی ہیں جواحادیث کی معتبر کتب میں روایت کی گئی ہیں۔
حضرت عمرو بن رافع طالعیٰ کہتے ہیں میں ام المومنین حضرت حفصہ طالعیٰ ہا کہ لئے احادیث کا ایک مصحف لکھا کرتا تھا اور اس میں آپ طالعیٰ سے مروی ساٹھ احادیث تھیں۔
احادیث تھیں۔

ام المونین حضرت حفصه ولینجیا عبادت و ریاضت میں بھی بے مثل تھیں اور آپ ولینجیا اکثر و بیشتر روزہ رکھا کرتی تھیں اور آپ ولینجیا فرض نمازوں کے علاوہ نفل نمازیں بھی بکشرت پڑھا کرتی تھیں۔آپ ولینجیا دن کوروزہ رکھتی تھیں اور رات کوعبادت خداوندی میں مشغول رہتی تھیں اور عبادت و ریاضت ہے آپ ولینجیا کے شغف کا اندازہ بول لگایا جا سکتا ہے کہ آپ ولیجیا کا جب وصال ہوا آپ ولینجیا اس وقت روزہ سے تھیں۔

المنتزعم المنتواروق كي فيهل المنافق ال

ام المومنین حضرت حفصه رئی اینجانے ۲۵ ه میں تربیق برس کی عمر میں مدینه منوره میں وصال فرمایا اور بید حضرت امیر معاویہ رئی النظام کا دورِ خلافت تھا۔ آپ رہی اللہ بوقت وصال روزہ سے تھیں۔ آپ رہی بینجا نے بوقت وصال اینے بھائی حضرت عبداللہ بن عمر دلی بین کی کہ میرا تمام ترکہ فروخت کر کے اس کی رقم صدقہ کردیا۔

بن عمر دلی بینا کو وصیت کی کہ میرا تمام ترکہ فروخت کر کے اس کی رقم صدقہ کردیا۔

ام المومنین حضرت حصمہ رہی بینجا کی نماز جنازہ مروان بن الحکم نے پڑھائی اور ان جو اس وقت مدینہ منورہ کا گورنر تھا۔ آپ رہی بینجا کو حضرت عبداللہ بن عمر وہی بینجا اور ان کے صاحبز ادوں حضرت عاصم، حضرت سالم، حضرت عبداللہ اور حضرت میزہ رہی گئیز کے صاحبز ادوں حضرت عاصم، حضرت سالم، حضرت عبداللہ اور حضرت میزہ رہی گئیز کے صاحبز ادوں حضرت عاصم، حضرت سالم، حضرت عبداللہ اور حضرت میزہ رہی گئیز کے صاحبز ادوں حضرت عاصم، حضرت سالم، حضرت عبداللہ اور حضرت میزہ رہی گئیز کی سالم کا تارا۔

حضرت عمر فاروق رفی این کے جلیل القدر فرزند حضرت عبداللہ بن عمر بھی اللہ بن عمر بھی اللہ بن عمر بھی اللہ بن اللہ بزرگوار کے ہمراہ دائرہ اسلام میں داخل ہوئے اور بہ اللہ معرکوں میں حضور نبی کریم سے کھی اللہ بن خطابت اور فصاحت و بلاغت میں ابنی مثل آپ تھے۔ آپ رفی الله کی وین اسلام سے کھی آگاہی کی بناء پر تمام خلفاء نے آپ رفی این مشیر رکھا۔ آپ رفی الله سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم حضرت عبداللہ بن عمر بھی اگر کوئی شخص خواب دیکھا تو وہ اپنا خواب آپ سے الله اللہ کی خاہری زندگی میں اگر کوئی شخص خواب دیکھا تو وہ اپنا خواب آپ سے اللہ کی خاہری زندگی میں اس وقت جوان تھا اور میں اس وقت جوان تھا اور جھے بردی خواہش تھی کہ میں بھی کوئی خواب دیکھوں اور وہ خواب آپ سے بیان کروں۔

حفرت عبداللہ بن عمر رہ الفینا فرماتے ہیں کہ میں حضور نی کریم مضافی آئے۔ زمانہ میں مسجد میں ہی سویا کرتا تھا اور میں نے ایک رات خواب میں دیکھا دوفر شیے آئے اور وہ مجھے پکڑ کر دوز خ کی جانب لے گئے اور میں نے وہاں پچھ لوگوں کو

الانت المستون وق كيسل

دیکھا جنہیں میں بہچانتا تھا اور پھر میں انہیں دیکھ کر کہنے لگا اللہ عزوجل کی پناہ
دوزخ سے اور پھرایک فرشتہ میرے پاس آیا اور مجھ سے کہنے لگاتم خوفزدہ نہ ہو۔
حضرت عبداللہ بن عمر فرالتے ہیں میں نے اپنے اس خواب کا ذکر
اپنی بہن ام المومنین حضرت ام حفصہ فرالتی اسے کیا اور انہوں نے یہ خواب حضور نبی
کریم سے کیے کو سایا۔حضور نبی کریم سے کیے اگر ایا عبداللہ (وٹائٹی) اچھا آدمی ہے
اگر وہ رات کو تبجہ بھی پڑھے۔

راوی کہتے ہیں حضرت عبداللّٰہ بن عمر نظافیٰ اس واقعہ کے بعد رات کو بہت کم سوتے تھے اور تمام رات عبادت میں مشغول رہنے تھے۔

روایات میں آتا ہے جہاج بن بوسف نے حضرت عبداللہ بن عمر پر الفینا کو ایک مکتوب لکھا کہ مجھے خبر ہوئی کہ آپ جو النفیٰ کو خلافت کا شوق ہے حالا نکہ جو شخص غیور ہو، بخیل ہواور کلام سے عاجز ہوا ہے خلافت کی قطعی ضرورت نہیں ہوتی۔ آپ بالنفیٰ نے جوابا لکھا میں بھی بھی خلافت کا طلبگار نہیں رہا اور جوتم کہتے ہو کہ میں کلام سے عاجز ہوں تو یا در کھو قرآن مجید کا حافظ بھی بھی کلام سے عاجز نہیں ہوتا اور جبال تک تم نے غیور جو شخص اپنے مال کی زکو قدیتا ہو دہ بھی بخیل نہیں ہوتا اور جبال تک تم نے غیور ہونے کی بات کی ہے تو جس بات پر میں نے غیرت کی ہے وہ اس کی حقد ار ہے ہونے کی بات کی ہے تو جس بات پر میں نے غیرت کی ہے وہ اس کی حقد ار ہے کہ میری اولا دمیر ہے ساتھ کی اور کوشریک نہ کر ہے۔

حضرت طفیل بن ابی بن کعب والفخها فرماتے ہیں میں اکثر حضرت عبداللہ بن عمر والفخها کی خدمت میں حاضر ہوتا تھا اور آپ والفؤ میرے ساتھ بازار جاتے سے اور آپ والفؤ میرے ساتھ بازار جاتے سے اور آپ والفؤ میرے ساتھ بازار جاتے ہے۔ سے اور آپ والفؤ بازار میں جس کے پاس سے بھی گزرتے اسے سلام کرتے تھے۔ ایک مرتبہ میں آپ والفؤ کے پاس گیا اور آپ والفؤ وجھے لے کر بازار کی جانب

المناسة عملين وارق كانسك

چلے تو میں نے عرض کیا آپ طالغی بازار کیوں جاتے ہیں جبکہ آپ بڑالغی کی تھے بھی خرمی کے آپ بڑالغی کیے بھی خرمی است خریداری نہیں کرتے؟ آپ طالغی نے فرمایا میں تو سلام کرنے کی غرض سے بازار جاتا ہوں اور جو بھی ملتا ہے اسے سلام کرتا ہوں۔

حضرت نافع والنفر فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عمر والنفر کو اکور کھانے کی خواہش ہوئی اور اس وقت آپ والنفر ہیار تھے۔ میں ایک درہم کے بدلہ میں ایک خوشہ انگوروں کا لے آیا اور آپ والنفر کے ہاتھ پر رکھ دیا۔ اس دوران دروازے پر ایک سائل نے آواز لگائی آپ والنفر نے وہ انگوروں کا خوشہ مجھے دیا اور فرمایا یہ اسے دے آؤ۔ میں نے کہا آپ والنفر اس میں سے بچھ چکھ لیں۔ آپ والنفر نے فرمایا میں اسے بیس چکھوں گائم ہواسے دے دو۔

حضرت نافع دخل فی ایک اور خوشہ نے وہ خوشہ اس سائل کو دے دیا اور اس کا ایک اور خوشہ خرید لایا اور آپ دخلفوہ کی خدمت میں چش کیا۔ ابھی آپ دخلفوہ اس کا ایک اور خوشہ خرید لایا اور آپ دخلفوہ کی خدمت میں چش کیا۔ ابھی آپ دخلفوہ اس خوشے سے انگور کھانا چاہتے تھے کہ اس سائل نے پھرصدالگائی اور آپ دخلفوہ نے جھے بھے لیس۔ آپ دخلفوہ نے فرمایا بیہ خوشہ اس سائل کو دے آؤ۔ میں نے عرض کیا اس میں سے بچھ پھے لیس۔ آپ دخلفوہ نے فرمایا نہیں تم بیہ ہے دے دو۔ دو۔ حضرت نافع دخلفوہ فرماتے ہیں مین نے وہ خوشہ اس سائل کو دے دیا اور بازار جا کرایک مرتبہ پھر آیا کہ درہم کا انگوروں کا خوشہ خرید لایا اور اس سائل نے ایک مرتبہ پھر آ واز لگائی اور حضرت عبداللہ بن عمر رہنا ہے نے وہ خوشہ اسے دے دیا اور ایسائل مرتبہ بھر آ واز لگائی اور حضرت عبداللہ بن عمر رہنا ہے جا بہتیں آتی اور وہ سائل کی مرتبہ ہوا۔ پھر میں نے تنگ آ کر اس سائل سے کہا تجھے حیا یہیں آتی اور وہ سائل چلا گیا۔ میں پھر بازار گیا اور انگوروں کا خوشہ لایا جے آپ دخلفوہ نے تناول فر مایا۔ وایا تیس پھر بازار گیا اور انگوروں کا خوشہ لایا جے آپ دخلفوہ نے تناول فر مایا۔ میں دوایات میں آتا ہے حضرت عبداللہ بن عمر رہنا پھیا جب مکہ مرمہ جاتے تھے دوایات میں آتا ہے حضرت عبداللہ بن عمر رہنا پھیا جب مکہ مرمہ جاتے تھے دوایات میں آتا ہے حضرت عبداللہ بن عمر رہنا پھیا جب مکہ مرمہ جاتے تھے دوایات میں آتا ہے حضرت عبداللہ بن عمر رہنا پھیا جب مکہ مرمہ جاتے تھے

المنت ممنت والمسلم المسلم المس

تو اینے ساتھ ایک گدھا بھی رکھتے ہتے اور جب اونمنی پر سفر کرتے ہوئے تھک جاتے تو آرام کی غرض ہے اس گدھے یہ سوار ہوجائے تھے اور ایک عمامہ بھی آپ طنائنے کے باس ہوتی تھی جسے بوقت ضرورت سریر باندھ لیتے تھے۔ ایک دن آپ منابعی کا میں ہوتی تھی جسے بوقت ضرورت سریر باندھ لیتے تھے۔ ایک دن آپ طِنْ النَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الل ہوں۔آپ بٹائٹؤ نے اپنا گدھااسے دے دیا اور فرمایاتم اس پرسوار ہو جاؤ اور پھر ا پنا عمامہ اسے دیتے ہوئے فرمایا بی بھی اینے سریر باندھ لو۔ آپ طالعہٰ کے رفقاء میں سے کسی نے بوجھا آپ طالفیز نے اپنی سواری کا گدھا اسے دے دیا اور ساتھ بی اپنا عمامہ بھی اے دے دیا اللہ عزوجل آپ طالفیز کی مغفرت کرے آپ طالفیز نے ایسا کیوں کیا؟ آپ رہائنڈ نے فرمایا میں نے حضور نی کریم مطابقیم سے سنا ہے بندہ کی نیکیوں میں سے ایک نیکی رہجی ہے کہ وہ اینے والدین کے وصال کے بعد ان سے تعلق رکھنے والوں ہے اچھا سلوک کرے اور بید دیہاتی میرے والد ک

حضرت عبداللہ بن عمر بلافہنا کو بیعت رضوان کے موقع پر اپنے والد حضرت عمر فاروق بلائی ہے جا حضور بی کریم سے بیت کرنے کی سعادت حاصل ہوئی۔ اس ضمن میں حضرت نافع بلائی سے مروی ہے فرمات جیں حضرت مم فاروق بلائی نے اس خضرت عبداللہ بلائی کو حدیبہ کے دن ایک انصاری فاروق بلائی نے اپنے جئے حضرت عبداللہ بلائی کو حدیبہ کے دن ایک انصاری کے پاس اپنا گھوڑا لانے کے لئے بھیجا تا کہ اس پر سوار ہوکر جباد کر سکیس۔ آپ بلائی نظے تو معلوم ہوا کہ حضور نبی کریم سے بیت اور خت کے نیچ صحابہ کرام بنی لیا کھی جنانی بیت کرد ہے ہیں اور حضور نبی کریم سے بیت اور خت کے خبر نہی جنانی بیت کرد ہے ہیں اور حضرت عمر فاروق بلائی کواس وقت بیعت کی خبر نہی چنانی بیعت کرد ہوں جنانی جنانی

آپ بڑائیڈ نے آگے بڑھ کرحضور نبی کریم مضافیہ سے بیعت کر لی اور پھر اس انصاری کے پاس گھوڑا لینے گئے اور پھر جب گھوڑا لیے کر واپس لوٹے تو حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کوخبر عمر فاروق بڑائیڈ کوخبر موئی کہ حضور نبی کریم مضافیہ اور اس وقت حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کوخبر موئی کہ حضور نبی کریم مضافیہ اس وقت مصرت عمر فاروق بڑائیڈ اس وقت حضرت عمر فاروق بڑائیڈ ،آپ بڑائیڈ کے امراہ حضور نبی کریم مضافیہ کے پاس گئے اور بیعت کر رہے ہیں جنائیڈ کے اس گئے اور بیعت کر رہے ہیں جنائیڈ کے باس گئے اور بیعت کی۔

حضرت نافع برائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عمر براگافیا جب بھی مدینہ منورہ آتے تو سب سے پہلے حضور نبی کریم ہے ہے۔ کی قبر مبارک پر حاضر ہوتے اور قبلہ رو ہو کر درود وسلام پڑھتے اور بارگاہ خداوندی میں دعا کرتے اور پھر حضرت ابو بکر صدیق برائیڈ کی قبر پر حاضر ہوتے اور ان پر سلام بھیجتے اور اللہ عزوجل کی بارگاہ میں دعا مائے تھے اور پھر اپنے والد حضرت عمر فاروق بڑائیڈ کی قبر پر حاضر ہوتے اور قبلہ رو ہو کر ان پر سلام بھیجتے اور دعا مائے تے اور فرماتے تھے اے ابا پر حاضر ہوتے اور قبلہ رو ہو کر ان پر سلام بھیجتے اور دعا مائے تے اور فرماتے تھے اے ابا بان!

حضرت عبدالله بن عمر خلیجهٔ کوعبدالملک بن مروان کے زمانہ خلافت میں شہید کہا گیا۔

حضرت عبدالرحمٰن بن عمر رفائخہا بھی حضرت عمر فاروق رفائغہ کے بیٹے ہیں۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عمر رفائغہ اسے مروی ہے فرماتے ہیں میرے بھائی عبدالرحمٰن رفائغہ اور ان کے ساتھ ابوسروعہ رفائغہ نے شراب پی اور بدمست ہوگئے۔ اس وقت سے دونوں مصریں تھے۔ والد بزرگوار حضرت عمر فاروق رفائغہ کی خلافت کا زمانہ تھا۔ حضرت عمرو بن العاص رفائغہ جو کہ مصر کے گورنر تھے ان کو جب اس واقعہ کی اطلاع مصرت عمرو بن العاص رفائغہ جو کہ مصر کے گورنر تھے ان کو جب اس واقعہ کی اطلاع

المنت عمر المنت المولى كيابيل

ملی تو انہوں نے ان دونوں حضرات کو بلایا اور ان کے سر منڈوا دیئے۔ والد ہزرگوار کو اس واقعہ کی اطلاع ہوئی تو انہوں نے حضرت عمر و بن العاص بڑائیئے ہے کہلوا بھیجا کہ عبدالرحمٰن (خالفیٰۃ) کو اونٹ کے کجاوے پر بٹھا کر میرے پاس بھیجو چنا نچہ جس وقت عبدالرحمٰن (خالفیٰۃ) کہ مینہ منورہ پہنچ تو آب خالفیٰۃ نے انہیں اس کوڑے لگائے۔ اس واقعہ کے ایک ماہ بعد عبدالرحمٰن (خالفیٰۃ) وصال فرما گئے۔

حضرت عاصم بنائنی کا شار حضرت عمر فاروق بنائی کے قابل بیوں میں موتا ہے۔ آپ بنائی اسپے والد بزرگوار کی طرح دراز قد اور بارعب شخصیت کے مالک تھے۔ حضرت عمر بن عبدالعزیز بنائنی ، آپ بنائنی کے نواسے تھے۔

حضرت عبیداللہ بن عمر والفظما کا شار بھی حضرت عمر فاروق ٹالفظ کے بہادر اور نڈر بیٹوں میں ہوتا ہے۔ آپ والفظ نے نے فن پہلوانی میں شہرت حاصل کی اور لیے شار غزوات میں بھی شرکت فرمائی۔

Q____O

حضرت عمر فاروق طالتين كى شهادت

حضرت عمر فاروق وظائفيز كى حالت شديد زخى ہونے كى بناء برآ ہستہ آہستہ مزيد خراب ہونے گئى۔ آپ وظائفیز نے اپنے فرزند حضرت عبداللہ بن عمر وظائفینا كوام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ وظائفینا كے پاس بھیجا كہ وہ انہیں حضور نبى كريم مضائفینا كے باس بھیجا كہ وہ انہیں حضور نبى كريم مضائفینا كے اور حضرت ابو بمرصد بق وظائفینا كے بہلو میں سپر دِ خاك ہونے كى اجازت مرحمت فرما ديں۔ حضرت عبداللہ بن عمر وظائفینا جب ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ وظائفینا كے باس بہنچ اور ان سے والد بزرگواركى خواہش كا اظہاركيا تو ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ ولئفینا نے فرمایا۔

'' بیرجگہ تو میں نے اپنے لئے رکھی ہوئی تھی کیکن میں عمر فاروق طالفیٰ کی ذات کوخود پرترجیح دیتی ہوں اور بیرجگہ ان کوعطا کرتی ہوں۔''

حضرت عمر فاروق والنفظ كو جب بتایا گیا كه ام المومنین حضرت عائشه صدیقه والنفظ منظم مرحمت فرما وی به تو آب والنفظ نے ابیع بینے حضرت عبدالله بن عمر والنفظ سے فرمایا۔

''میرے سرکے نیچے سے تکیہ ہٹا دو تا کہ میں اپنا سرز مین سے لگا سکوں اور اللہ عزوجل کاشکر اوا کروں۔''

الاستراعم المنظري الموق كي أيسل

حضرت عبداللہ بن عمر رہائی اسے مروی ہے فرماتے ہیں کہ والد بزرگوار حضرت عمر فاروق رہائی اند بن عمر رہائی اسے مروی ہے اور ان پرنزع کی کیفیت طاری تصاری تھے اور ان پرنزع کی کیفیت طاری تھی مجھ سے فرمایا تم امال عائشہ (جہائی ا) کے پاس جاؤ اور ان ہے کہو کہ میری یہ خواہش ہے کہ میں حضور نبی کریم میں اور حضرت ابو بکر صدیق جہائی آباد میں فواہش ہے کہ میں حضور نبی کریم میں اور حضرت ابو بکر صدیق جہائی آباد میں فواہد فن ہوں۔

حضرت عبداللہ بن عمر زلی فینا فرماتے ہیں میں ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ بلیفینا کے پاس گیا اور ان سے والد بزرگوار کی خواہش کا ذکر کیا۔ آپ بلیکنا نے فرمایا وہ جگہ تو میں نے اپنے لئے رکھی تھی مگر میں تمہارے باپ کوخود پرتزجیح دیتی ہوں اور بہ جگہ انہیں وہتی ہوں۔

حفنرت عبدالله بن عمر وللفخها فرماتے ہیں میں نے واپس آکر والد بزرگوار کو بیہ بات بتائی تو آپ ولائن بطور شکرانہ تجدہ میں جلے گئے۔

حضرت عمرو بن میمون ولائنوز سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق ولائنوز نے بوقت وصال اپنے بیٹے حضرت عبداللہ بن عمر رفائنوز سے کہا دیکھو میرے ولائنوز نے بیت المال کا کتنا قرض ہے؟ انہوں نے فرمایا کہ چھیاسی ہزار۔ آپ دلائنوز نے فرمایا۔

"تم میرا تمام مال فروخت کر کے رقم بیت المال میں جمع کرا دیا اور اگر بیرتم ناکافی ہوتو پھر اپنے مال ہے اس کو ادا کرنا اور اگر پھر بھی ناکافی ہوتو بی عدی بن کعب ہے لے لینا اور اگر پھر بھی قرضہ پورا نہ ہوتو قریش ہے قرض کی ادا کیگی کا سوال کرنا اور ان کے علاوہ کسی ہے نہ کہنا۔"

المنت عمر المال كيديل الموق كي أيديل

حضرت عمرو بن میمون بنائیڈ فرماتے ہیں پھر جضرت عمر فاروق بنائیڈ نے اینے بیٹے حضرت عبداللہ بن عمر بنائیڈ سے فرمایا۔

''تم ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ بنائی کے پاس جاؤ اور ان سے میراسلام کہنا اور ان سے عرض کرنا مجھے حضور نبی کریم سے بیٹا اور ان سے عرض کرنا مجھے حضور نبی کریم سے بیٹا اور حضرت ابو بکر صدیق بنائی کے پہلو میں سپر دِ خاک کرنے کی اجازت مرحمت فرما ئیس اور اگر وہ اجازت دے دیں تو ٹھیک ہے ورنہ مجھے جنت البقیع میں دفن کر دینا۔''

حضرت عمرو بن میمون طالعین فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عمر طالعین نے اسپے ام المونین حضرت عائشہ میمون طالعین فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عمر طالعین کے اسپے والد بزرگوار حضرت عمر فاروق طالعین کی خواہش کا اظہار کیا۔ ام المونین حضرت عاکشہ طالعین حضرت عاکشہ طالعین اور فرمایا۔

'' وہ جگہ میں نے اپنے لئے رکھی تھی لیکن میں عمر (طالفیٰ) کوخود پر فوقیت دیتی ہوں۔''

حضرت عمرو بن میمون بڑائیئہ فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عمر بڑائیئہ فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عمر بڑائیئہ فرما ہے واپس آکر بیہ بات حضرت عمر فاروق بڑائیئہ کو بتائی تو آپ بڑائیئہ نے اللہ عزوجل کا شکرادا کیا۔

حضرت عمر فاروق ہٹائنٹۂ نے حضرت عبداللہ بن عمر بٹائنٹۂ کو وصیت کرتے ہوئے فرمایا۔

> '' بیٹا! جب میں مرجاؤں تو میری آئکھیں بند کر دینا اور میرے کفن میں میانہ روی اختیار کرنا اور اسراف نہ کرنا کیونکہ اگر

الانت تركيس كيسل كالمال الماليس المالي

میں اللہ عزوجل کی بارگاہ میں مقبول ہوا تو مجھے و نیا ہے بہتر کفن مل جائے گا اور اگر میں اللہ عزوجل کی بارگاہ میں مقبول نہ ہوا تو یہ گفن میں میرے پائ نہیں رہے گا اور مجھ ہے چیمین لیا جائے گا۔ میری قبر کو زیادہ لمبی اور چوڑی نہ کرنا کیونکہ اگر میں اللہ عزوجل کے نزدیک معتبر ہوا تو وہ میری قبر کو حد نگاہ وسیق کر دے گا ورنہ میری قبر جتنی مرضی چوڑی ہو وہ اتن تگل کردی جائے گی کہ میری پسلیاں ٹوٹ جائیں۔''

حضرت عمر فاروق برالنین ۲۷ ذی الحبه ۲۳ ه کو زخمی ہوئے تھے۔ آپ برالنین کا مرمبارک کا وصال کیم محرم الحرام ۲۲ ھ بروز ہفتہ ہوا۔ بوقت وصال آپ برالنین کی عمر مبارک قریباً تربیع برس تھی۔ آپ برالنین کو حضرت ابو بکر صدیق برالنین کے پہلو میں وفن کیا گیا۔ آپ برالنین کو بیری کے پتوں میں الجے ہوئے بانی سے تین مرتبہ شل دیا گیا۔ آپ برالنین کو بیری کے پتوں میں الجے ہوئے بانی سے تین مرتبہ شل دیا گیا۔ آپ برالنین کی نماز جنازہ حضرت صہیب رومی برالنین نے پڑھائی جو حضور نبی کریم سے براور مزار کے درمیان ریاض الجنة میں اداکی گئی جبکہ حضرت عثمان غنی ، مضرت علی المرتضی ، حضرت عثمان غنی ، حضرت علی المرتضی ، حضرت زبیر بن العوام ، حضرت عبدالرحمٰن بن عوف اور حضرت عبداللہ بن عمر بری النین کو قبر مبارک میں اتارا۔

صحابه كرام شي تنتم كاغم:

حضرت عبدالله بن عباس دلافخها سے مردی ہے فرماتے ہیں میں ان لوگوں میں کھڑا تھا جوحضرت عمر فاروق دلافخها کے لئے دعائے مغفرت کررہے ہے اور اس وقت حضرت عمر فاروق دلافخه کا جنازہ رکھا ہوا تھا۔ اس دوران ایک فخص میر ب بیجھے آیا اور اس نے میرے کندھے پراپی کہنی ٹکائی اور قرمایا اللہ عزوجل ان پررحم

منت ممسور وق كرفيدل المعلق الم

کرے اور میں اللہ عزوجل ہے امید رکھتا تھا اللہ عزوجل انہیں ان کے دونوں ساتھیوں کے ہمراہ رکھے گا لیمنی حضور نبی کریم <u>متن سے اور حضرت ابوبکر صدیق نباتی</u> اور پھراس شخص نے فرمایا میں نے حضور نبی کریم ﷺ سے سنا ہے میں ہوں، ابو بکر خالفَیْ ہے اور عمر خالفیٰ ہے اور میں نے بید کیا ، ابو بکر جنالفیٰ نے بید کیا اور عمر جالفیٰ نے بیہ کیا اور میں چلا، ابو بمر بنالٹنی بھی جلے اور عمر بنالٹیئ بھی جلے اور پھر اس شخص نے فرمایا مجھے قوی امید ہے کہ اللہ عز وجل انہیں ان کے ہمراہ رکھے گا۔حضرت عبداللہ · بن عباس بنافخینا فرماتے ہیں میں نے مڑ کر دیکھا کہ وہ کون ہے جومیرے کندھے پر تحمني نكائے اليي گفتگو كرر ہا ہے تو وہ حضرت على المرتضى طالنين يتھے۔ حضرت علی المرتضلی مِثَالِیَّنِ نے حضرت عمر فاروق مِثَالِیْنِ کے وصال پر فر مایا۔ " دنیا میں مجھے جو شخص حضور نبی کریم منظر کا اور حضرت ابو بکر

صدیق طالغیز کے بعدسب سے زیادہ محبوب تھا وہ مخص آج کفن میں لیٹا ہوا ہے۔''

روایات میں آتا ہے حضرت علی الرئضنی طائفۂ نے حضرت عمر فاروق طائفۂ کے وصال پر فر مایا۔

> '' میری خواہش ہے میں مرتے وقت حضرت عمر فاروق طالعُمُهُ ؛ جیسے اعمال لے کر اللہ عزوجل کی بارگاہ میں پیش ہوں۔ دنیا میں مجھے جو مخص حضور نبی کریم منظر کا اور حضرت ابو بمرصدیق طیاننی کے بعد سب سے زیادہ محبوب تھا وہ شخص آج کفن میں ليڻا ہوا ہے۔''

حضرت عبدالله بن مسعود رُالغُفِهٰ نے حضرت عمر فاروق رِنابغُون کے وصال پر

_ www.iqbalkalmati.blogspot.com المنت ممثقر في رقى كي فيدلا

فرمایا۔

'' عمر (بنائیوُ) اسلام کا قلعہ تھے جو بھی اس قلعے میں داخل ہوتا تھا وہ محفوظ ہو جاتا تھا آج ان کے وصال کے بعد یہ قلعہ کمزور پڑ گیا ہے۔''

حضرت عبداللہ بن سلام بیانی جو کہ حضرت عمر فاروق بیانی کی نماز جنازہ میں کسی مجبوری کی دوجہ سے شریک نہ ہو سکے شھے انہوں نے آپ جائی کی قبر مبارک کے وجہ سے شریک نہ ہو سکے شھے انہوں نے آپ جائی کی قبر مبارک کے یا بھی کھڑے ہوکرفر مایا۔

''عمر (بنائیڈ) ہمارے بہترین اسلامی بھائی ہے، حق کے بارے میں بے حدیجی ہے اور باطل کے بارے میں نہایت بخت اور ائڈ عزوجل کی رضا میں راضی رہنے والے تھے۔''

حضرت سعید بن زید جلائفۂ نے حضرت عمر فاروق جلائفۂ کی میت پررو تے ہوے فرمایا۔

> "آج میں اسلام پر رور ہا ہوں کیونکہ عمر (بنائیڈ) کی موت نے اسلام کی عمارت میں ایسی دراڑ ڈال دی ہے جو قیامت کے برنہیں ہو سکے گی۔"

> > حضرت ام ایمن طلبینا نے فرمایا۔

" آج عمر (الله الله الله عنه الله الله مكر و ربو كيا ب- "

حضرت عثمان عنی بالغیز نے مضرت عمر فاروق بیالغیز کے بارے میں

فرمایا۔

،''اللّٰهُ عمر (ﷺ) کی قبر کوروش کرے جنہوں نے تراوی کی

المسترف روق كيسل

انما: قائم كرك ماجدكوم يدكر ديا_"

حضرت سلمان بن بیبار طلیبیٔ فرمات میں کہ حضرت عمر فاروق میلیان کی وفات پیجنوں نے نوحہ لیا تھا۔

حضرت ہا لک من دینار عملیہ فرماتے ہیں جب حضرت عمر فاروق طالیۃ؛ کوشہید کمیا گیا تو تاا۔ بہاڑنے بیشعر پڑھے۔

> لبيك على الاسلام من كان باكيا فقد اوشكو اهلكى وما قدم العهد و اذبرت الدنيا و اذبر خيرها وقد ملها من كان يوقن بالوعبد

''رونے والوں کو اب اسلام پر رونا چاہئے اور شخفیق انہوں نے میری ہلاکت کا شکوہ کیا اور جو وقت آ رہا۔ ہے اور دنیا اور اس کی خیر نے منہ موڑ لیا ہے اور جو وعد بے پر اعتبار کرتا ہے وہ غفلت میں مبتلا ہے۔''

حضرت ما لک بن دینار عمینید فرماتے ہیں کہ لوگوں نے تبالہ بہاڑکی جانب دیکھا مگرانہیں وہاں کوئی دکھائی نددیا۔

O.....O.....O



حليهمباركه

حضرت مم فاروق بینی این عادات واطوار کے اعتبار سے حضور نبی کریم خابید کی سنت کریمہ پیمل پیرا تھے۔ آپ بینی کا حلیہ، رہین میں حتی کہ زندگی کا برایک پیلوحضور نبی کریم مضید پیما سوؤ حسنہ کا بہترین نمونہ تھا۔

حضرت عمر فاروق برائین کا قد مبارک دراز تھا اور ہزاروں آ دمیوں کے مجمع میں بھی آپ برائین نظر آتے ہے۔ ایسا معلوم ہوتا تھا آپ برائین سواری پرسوار ہیں اور باقی اوگ پیدل چل رہے ہیں۔

روایات میں آتا ہے کہ ایک مرتبہ فتوحات کے زمانہ میں کپڑوں کے کچھ تھان بطور مال نفیمت آئے اور حضرت عمر فاروق بنائنٹیز نے مسجد نبوی سے بھٹا میں کھڑے ہوگان بطور مال نفیمت آئے اور حضرت عمر فاروق بنائنٹیز کے مسجد نبوی ایک ایک کپڑ اتقسیم فرمایا اور آپ بنائنٹیز کے حصہ میں بھی ایک کپڑا آیا مگر آپ بنائنٹیز کے فاکہ درازقد تھے لہذا اس ایک کپڑے سے آپ بنائنٹوز کا

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

الرست المستون الوق ك فيهل

جوڑانہیں بنتا تھا۔ آپ بڑھی کے فرزند حضرت عبداللہ بن مر بڑھی نے اپ حصہ کا کیڑا بھی آپ بڑائی کو دے دیا اور یوں آپ بڑی کا دو کیڑوں سے جوڑا تیار ہو گیڑا بھی آپ بڑائی کو دے دیا اور یوں آپ بڑی کا دو کیڑوں سے جوڑا تیار ہو گیا۔ پھر جب آپ بڑی وہ نیا لباس زیب تن کئے ہوئے جمعہ کا خطبہ دین مبر پر تشریف ایائے تو ایک شخص نے اعتراض کیا کہ آپ بڑی نے انصاف سے کام نہیں لیا اور دو کیڑے رکھے ہیں۔ آپ بڑائی کی جانب سے آپ بڑائی کے فرزند نے کھڑ سے ہو کر کہا کہ میں نے اپنا کیڑا والد ہزر گوار کو دیا تی جس سے ان کا جوزا تیار ہوااور انہوں نے بھی انصاف سے منہیں موڑا۔

﴿ مُنترت عمرِ فَارُوقَ مِنْ اللَّهُ كَلُّ كَا يَكُونِ مِنْ إِن اور بارعب تقين _ آب مِنْ اللَّهُ وَ جس کی جانب ایک نظر و تکھتے وہ اپنی نظریں جو کالیتہ تفا۔ آپ مزاہیؤ کے سرکے بال ملکے تھے۔ آپ بن تر کے چبرے کا رنگ گندمی تھا جس میں سرنی نمایاں تی۔ آپ طلقیٰڈ کے رخسار زیادہ تھرے ہوئے نہ تھے۔ آپ بڑتنے کی داڑھی مہارک تھنی تھی جس میں خضاب لگاتے تھے۔ آپ ٹناٹنڈ کا سینہ کشادہ اورصورت بارعب تھی۔ طبقات ابن سعد میں روایت ہے کہ حضرت ابو بکرصدیق بڑھنڈ کے جسم پر بال بہت زیادہ تھے۔حضرت عمر فاروق بنائٹیز ہے ایک مرتبہ یو جھا گیا کہ بال زیادہ التھے ہوئے بیں یا تھوڑے؟ آپ بٹائٹن نے فرمایا بال زیادہ التھے ہوتے ہیں اور اس جواب میں آپ بٹائٹر کی حکمت میھی کہ آپ بنائیز کے جسم کے بال کم تھے اور حضرت ابوبكرصديق بناتفيُّه كے جسم مبارك بريال زيادہ تنھ آپ بنائليُّه كوخيال كزرا تهمیں بیسوال میرے اور حضرت ابو بکر صدیق خاتین کے متعلق نہ ہو کہ ہم میں ہے بهترکون ہیں لہٰذا یہ جواب دیا۔

O.....O......O



ارشادات

- جو شخص گناه کریت وقت الندعز وجل ہے ڈرتا ہے اللہ عز وجل اسئے
 آفات ہے محفوظ رکھتا ہے۔
- جبتم سی عالم کو د نیا کی جانب ماکل دیکھوتو جان لو کہ اس کے دین میں
 نقص ہے۔
 - اللّدعز وجل ال شخص كا بھلا كرے جومير _ے عيب مجھ پر ظاہر كرتا ہے۔
- صمومن الله عزوجل اور اس کے رسول الله سطانی کے دشمنوں سے ہرگز دوسی نہیں کرتا اگر چہوہ اس کے والدین اور اولا دہی کیوں نہ ہو۔
 - کسی کی تعریف کرنا اے ذیح کرنے کے مترادف ہے۔
 - اینے نفوں کا حساب لیا کرو بیشتر اس کے کہ ذوہ تمہارا حساب لے۔
- اینے مسلمان بھائی کی بات میں جب تک کوئی شرارت نظر نہ آئے اس
 بات کو درست سمجھو۔
 - دنیا کی ٔ جانب متوجه ہونا آخرت کونقصان پہنچانا ہے۔
 - اگر مجھے حساب کا خوف نہ ہوتا تو عمرہ کھا تا اور بہترین کیڑ ہے پہنتا۔
 - 🔾 ہمیشہ عور تول کی رائے کے خلاف کام کرو۔
- زاہدوں کی باتیں لکھ لیا کرواللہ عزوجل ان پر فرشتے مقرر کر دیتا ہے اور



جو ہائت ان کے منہ سے نکلتی ہے وہ انمول موتی ہے۔

- ں عالموں کی صحبت میں جیٹا کروان کی نفیحت دل پراٹر کرتی ہے۔
 - بربات میں میاندروی افتیار برو۔
 - 🔾 علم کےشیدائی بنواور برد باری اور وقار حاضل کرویہ
- لوگول کو بھلائی کا تنم دواور برائی ہے رو ورندتم پر ظالم حاکم مسلط کر دیا
 حائے گا۔
- امام کے علم سے زیادہ کوئی علم القدعز وجل کو پیارانہیں اور امام کی جہالت سے زیادہ کوئی بری اور معنر شے نہیں ہے۔
 - جو پرہیز گارنبیں اس کا دل مردہ ہے۔
 - جو محض الله ہے ڈرتا ہے اللہ اسے بچائے رکھتا ہے۔
 - توبة النصوح كے معنى بير بيں كەكسى برے كام سے اليى توبدكى جائے كە
 دوبارہ اس كى جانب متوجہ نہ ہو۔
 - دنیا کی عزت مال ہے اور آخرت کی عزت نیک اعمال ہیں۔
 - بخیل الله عز وجل کارنمن ہے۔
 - O سخی الندعز وجل کا دوست ہے۔
 - احمق شخص نفع کے ارادے ہے بھی نتصان پہنچا تا ہے البذا اس کی دوسی ہے۔
 سے بیچنے کی کوشش کرو۔

O____O



كتابيات

صحيح بخارى صحيح مسلم منتدرك الحاكم سنن ابوداؤ د تاریخ طبری 9۔ تفسیرابن کثیر مشكوة شريف تر مذی شریف ا- تفسيرروت المعاني

تفسيرخزائن العرفان

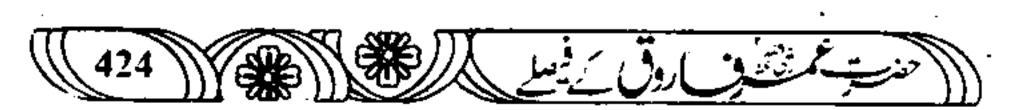
سيرت حضرت عمر فاروق بنالغؤ

فقه عمر بنالغيز

ساار

_114

۵ال



٠ ١٦ و شرح فقه اكبري

<u>ا</u> کنز العمال

۸آ۔ اسدالغابہ

19۔ شعب الایمان

۲۰ تفسیر کبیر

۲۱۔ تفسیر فازن

۴۲ - الاصابه في تميز الصحابه

۲۳ تاریخ الخلفاء

٣٣٠ ترامات صحابه شائنتم

۱۳۵ به طبقات ابن سعد

٢٦ - حلية الاولياء

٢٧_ . نزمة الجالس

۲۸_ سنبرے ^وینلے

٢٩_ الصواعق المحرقه

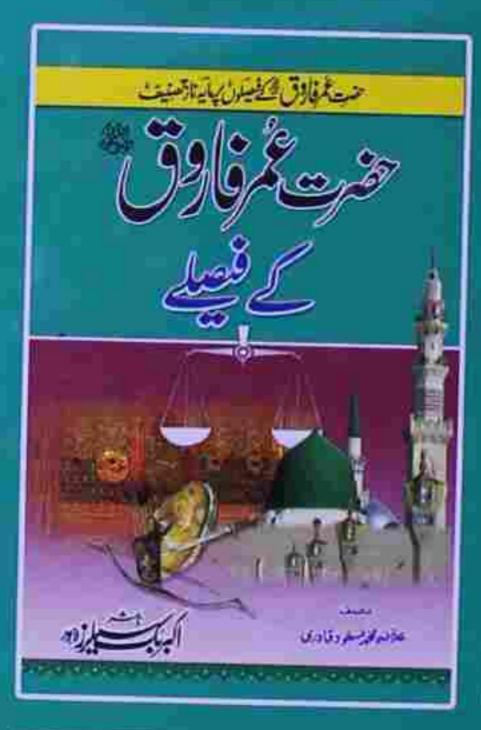
٣٠ مدارج النبوة

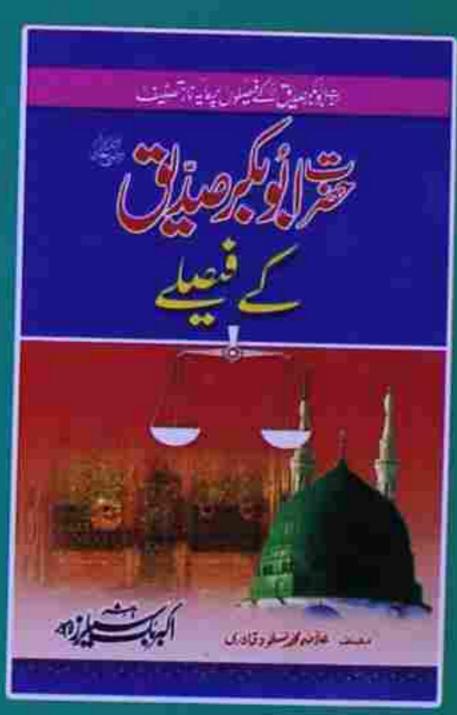
اس شوامد النبوي

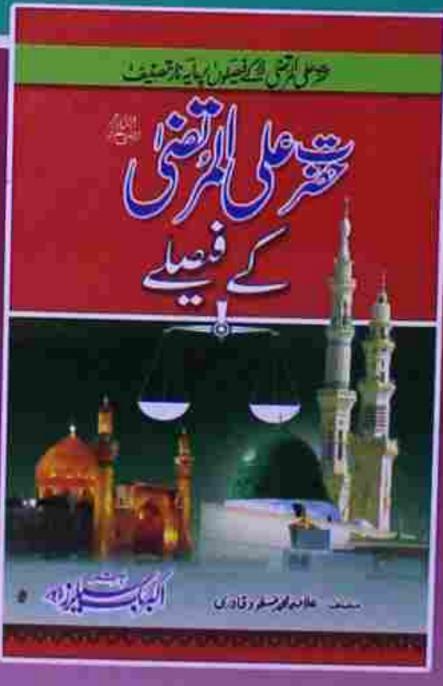
٣٢ رياض النضرة

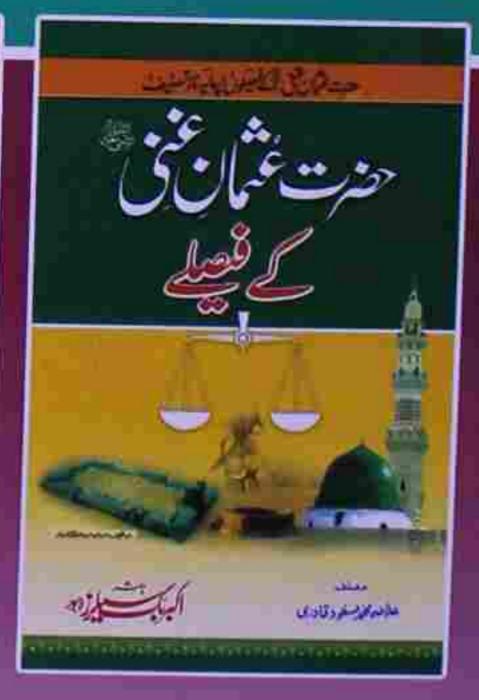
٣٣٥ حضرت ابو بمرصد اق بنائليَّة ك فيصلح

O.....O.....O









www.iqbalkalmati.blogspot.com: ﴿ يَرُكُ النَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

